SUB | NIEDERSÄCHSISCHE STAATS- UND UNIVERSITÄTSBIBLIOTHEK GÖTTINGEN

## Werk

**Titel:** Astrologia Aphoristica Ptolomaei, Hermetis, Ludovici De Rigiis, Almansoris, Hiero
**Verlag:** Lanovus
**Ort:** Ulmae
**Jahr:** 1674
**Kollektion:** VD17-nova
**Digitalisiert:** Niedersächsische Staats- und Universitätsbibliothek Göttingen
**Werk Id:** PPN81782068X
**PURL:** http://resolver.sub.uni-goettingen.de/purl?PPN81782068X
**OPAC:** http://opac.sub.uni-goettingen.de/DB=1/PPN?PPN=81782068X

## Terms and Conditions

The Goettingen State and University Library provides access to digitized documents strictly for noncommercial educational, research and private purposes and makes no warranty with regard to their use for other purposes. Some of our collections are protected by copyright. Publication and/or broadcast in any form (including electronic) requires prior written permission from the Goettingen State- and University Library.
Each copy of any part of this document must contain there Terms and Conditions. With the usage of the library's online system to access or download a digitized document you accept the Terms and Conditions.
Reproductions of material on the web site may not be made for or donated to other repositories, nor may be further reproduced without written permission from the Goettingen State- and University Library.

For reproduction requests and permissions, please contact us. If citing materials, please give proper attribution of the source.

## Contact

Niedersächsische Staats- und Universitätsbibliothek Göttingen
Georg-August-Universität Göttingen
Platz der Göttinger Sieben 1
37073 Göttingen
Germany
Email: gdz@sub.uni-goettingen.de

8° Astron. II, 6489

SUB Göttingen
113 871 015
7

# ASTROLOGIA APHORISTICA

PTOLOMAEI, HERMETIS, LVDOVICI DE RIGIIS, ALMANSORIS, HIERONYMI CARDANI, ET AVTORIS INNOMINATI.



VLMAE, MDCLXXIV.

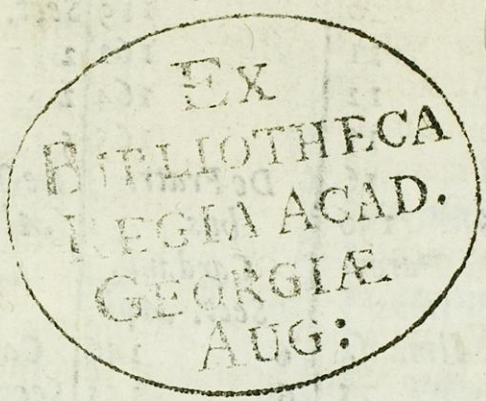
Apud Lodovicum Lanouii.

# Ad Lectorem.

EOrum, qui Aphoristicam Doctrinam tradidere, mos semper fuit hinc inde dispersas & non connexas sententias exponere. Ita huius libelli Auctores cum velint suam Astrologiam tradere more aphoristico, nullum in tradendis sententijs ordinem seruant, cum autem ad conficienda Iudicia alicuius genituræ, reuolutionis, aut decubitus (ut & aliarum figurarum) requiratur dispositio, & ordo doctrinæ, etiam opus fuit dispersas hinc inde sententias & Aphorismos ad sua Capita reuocare. Ea vero, circa quæ versantur hi Auctores, magis pertinent ad Hominum Natiuitates; & ideo cum Tractatus iste sit pulcherrimus, selecti sunt ad sua Capita Aphorismi attinentes ad natiuitates, ordine Capitum IV. Quadrip. Ptol. seruato. Veruntamen cum ad Iudicia natiuitatum valde conferant reuolutionum Iudicia; ideo & Aphorismos ad Reuolutiones pertinentes suo loco disponuntur. Ceterum cum ad cognitionem Vitæ, seu Mortis natorum spectet quoque decubitorum cogni-

tio.

tio. Ideo & pro decubitu series Aphorismorum in hoc libello extructa fuit. At quia multi Aphorismi sub nullo Capite positi neglecti fuissent; hi videlicet qui ad nullum superiorum ordinem reduci possunt; idcirco hi collecti fuere sub Aphorismorum Notabilium titulo. Tu poteris studiose Lector ex Ptolomęi cognitione & horum Aphorismorum perlustratione optime figuras natiuitatum diiudicare.



# APHORISMI
## Pertinentes ad Natiuitates.

De Rectificatione Horoscopi

Centiloquij Aph.
51

Ludou. de Rig.
48
63

Cardani. Sect. Aph.
3 141
4 9
4 10
4 11
4 12
4 15
4 16
6 156

De Parentibus Almanſ.
75
76
95

Cardani. Sect. Aph.
3 44
3 68
3 75
3 76
3 143
3 144
5 75
5 109
5 107
5 124
6 155

Auct. Inc.
119
162
164
165

De Fratribus. Cardani. Sect. Aph.
6 150
6 151
7 9
7 10

De Masculis & Fe-

mellis nulli sunt in hoc libello Apho.

De Gemin. Cardani. Sect. Aph.
2 26
3 66

Incerti
114
116
121

De Monſtr. Cardani. Sect. Apho.
2 34
2 35
5 147

De Nutrit. Almanſ.
37
97

Cardani. Sect. Apho.
1 72
2 5
2 37
2 38

Sect. Aph.
2 39
2 41
2 42
2 43
2 58
2 197
3 66
4 114
4 115
5 58
5 74
5 112
5 113
5 145
5 146
5 148
5 149
5 150
5 151
5 153
5 154
5 155
5 158
6 152
6 155
De Vitæ Spatio.
Cētiloquij.
17
72
Hermetis.
1
Ludou. de Rig.
18
20
23
62
Almanſ.
10
35
96
104
105
Cardani.
Sect. Aph.
2 19
2 40
2 42
2 44
2 48
3 2
3 3
3 7
3 108
3 109
3 110
3 111
3 112
3 113
3 116
3 124
3 170
4 106
5 29
5 143
5 151
5 152
6 1
7 1
7 172
Incerti.
86
De Forma & Temp. corporis.
Centiloquij
23
52
53
56
61
37
Hermetis
60
Almanſ.
63
Cardani.
Sect. Aph.
1 91
2 10
2 27
46

| Sect. | Aph. |
|---|---|
| 2 | 46 |
| 2 | 47 |
| 2 | 49 |
| 2 | 55 |
| 2 | 84 |
| 2 | 89 |
| 2 | 180 |
| 2 | 181 |
| 3 | 24 |
| 3 | 67 |
| 3 | 120 |
| 3 | 167 |
| 4 | 2 |
| 4 | 86 |
| 4 | 102 |
| 4 | 102 |
| 4 | 120 |
| 4 | 121 |
| 4 | 123 |
| 4 | 124 |
| 4 | 129 |
| 5 | 1 |
| 5 | 30 |
| 5 | 31 |
| 5 | 157 |
| 6 | 123 |

*Incerti.*

12
13
14
112
129
176

*De Lesionibus, & morbis Corporum.*

*Centiloquij.*

27
68
69
74

*Hermetis.*

60
87

*Almanf.*

14

*Cardani.*

| Sect. | Aph. |
|---|---|
| 2 | 78 |
| 2 | 80 |
| 2 | 92 |
| 2 | 182 |
| 3 | 12 |
| 3 | 13 |
| 3 | 14 |
| 3 | 46 |
| 3 | 58 |
| 3 | 63 |
| 3 | 72 |
| 3 | 100 |
| 3 | 101 |
| 3 | 114 |
| 3 | 115 |
| 4 | 66 |
| 4 | 69 |
| 4 | 71 |
| 4 | 72 |
| 4 | 73 |
| 4 | 74 |
| 4 | 153 |
| 5 | 94 |
| 5 | 101 |
| 5 | 102 |
| 5 | 103 |
| 5 | 104 |
| 5 | 105 |
| 5 | 111 |
| 5 | 144 |
| 6 | 2 |
| 6 | 4 |
| 6 | 8 |
| 6 | 97 |
| 6 | 98 |
| 6 | 99 |
| 6 | 126 |
| 6 | 127 |
| 6 | 128 |
| 6 | 130 |
| 7 | 2 |

*Incerti.*

71
93
138
172
188
189

*De Vitijs Linguæ.*

*Hermetis.*

63

*Almanſ.*

69

*Cardani*

*Sect. Aph.*

2 25
2 80
2 83
2 85
4 70
5 8
5 110

*De Læſionibus Oculorum.*

*Cētiloquij.*

69
71

*Almanſ.*

15

*Cardani.*

*Sect. Aph.*

4 67
4 130
6 8
6 97
6 98
6 99
6 101
6 102

*Incerti.*

106
139
140

*De Qualitatibus Animæ.*

*Centiloquij.*

3
38
40
45
80

*Hermetis.*

6
25
37
45
46
52
63

64
67

*Lud. de Rig.*

5
11
12
14
15
21
38
56
61

*Almanſ.*

12
17
18
20
30
33
34
63

*Cardani.*

*Sect. Aph.*

1 79
1 82
2 20
2 30
2 32
2 55

| Sect. | Aphor. | sec. | Aph. | Sect. | Apho. |
|---|---|---|---|---|---|
| 2 | 57 | 3 | 30 | 4 | 22 |
| 2 | 58 | 3 | 45 | 4 | 23 |
| 2 | 59 | 3 | 47 | 4 | 24 |
| 2 | 60 | 3 | 51 | 4 | 25 |
| 2 | 65 | 3 | 64 | 4 | 26 |
| 2 | 66 | 3 | 65 | 4 | 27 |
| 2 | 75 | 3 | 69 | 4 | 28 |
| 2 | 82 | 3 | 70 | 4 | 29 |
| 2 | 87 | 3 | 71 | 4 | 30 |
| 2 | 90 | 3 | 78 | 4 | 32 |
| 2 | 92 | 3 | 81 | 4 | 33 |
| 2 | 93 | 3 | 82 | 4 | 34 |
| | 98 | 3 | 99 | 4 | 35 |
| | 100 | 3 | 106 | 4 | 36 |
| | 101 | 3 | 125 | 4 | 37 |
| 2 | 103 | 3 | 126 | 4 | 38 |
| 2 | 136 | 3 | 127 | 4 | 39 |
| 2 | 137 | 3 | 128 | 4 | 41 |
| 2 | 138 | 3 | 138 | 4 | 42 |
| 2 | 170 | 3 | 141 | 4 | 43 |
| 2 | 171 | 3 | 142 | 4 | 45 |
| 2 | 173 | 3 | 149 | 4 | 46 |
| 2 | 174 | 3 | 162 | 4 | 47 |
| 2 | 176 | 3 | 163 | 4 | 48 |
| 2 | 183 | 3 | 167 | 4 | 49 |
| 3 | 6 | 4 | 4 | 4 | 50 |
| 3 | 8 | 4 | 6 | 4 | 51 |
| 3 | 9 | 4 | 7 | 4 | 52 |
| 3 | 15 | 4 | 14 | 4 | 53 |
| 3 | 24 | 4 | 17 | 4 | 54 |
| | | | | 4 | 55 |

| Sect. | Aph. | Sect. | Aph. | Sect. | Aph. |
|---|---|---|---|---|---|
| 4 | 55 | 4 | 153 | 5 | 183 |
| 4 | 56 | 4 | 154 | 5 | 184 |
| 4 | 57 | 5 | 3 | 6 | 6 |
| 4 | 86 | 5 | 12 | 6 | 7 |
| 4 | 98 | 5 | 20 | 6 | 12 |
| 4 | 101 | 5 | 24 | 6 | 13 |
| 4 | 102 | 5 | 25 | 6 | 26 |
| 4 | 106 | 5 | 36 | 6 | 27 |
| 4 | 108 | 5 | 37 | 6 | 73 |
| 4 | 110 | 5 | 38 | 6 | 118 |
| 4 | 112 | 5 | 39 | 6 | 119 |
| 4 | 120 | 5 | 50 | 6 | 124 |
| 4 | 121 | 5 | 77 | 6 | 125 |
| 4 | 123 | 5 | 93 | 6 | 156 |
| 4 | 124 | 5 | 110 | 6 | 168 |
| 4 | 125 | 5 | 128 | 7 | 151 |
| 4 | 126 | 5 | 162 | *Incerti.* | |
| 4 | 127 | 5 | 163 | | 146 |
| 4 | 128 | 5 | 164 | | 157 |
| 4 | 129 | 5 | 165 | *De Morbis* | |
| 4 | 130 | 5 | 166 | *Animæ* | |
| 4 | 131 | 5 | 167 | *Centiloquij.* | |
| 4 | 132 | 5 | 168 | | 70. |
| 4 | 133 | 5 | 169 | *Almanſ.* | |
| 4 | 134 | 5 | 172 | | 16. |
| 4 | 137 | 5 | 173 | *Cardani.* | |
| 4 | 138 | 5 | 174 | *Sect. Aph.* | |
| 4 | 139 | 5 | 175 | 3 | 48 |
| 4 | 149 | 5 | 176 | 3 | 56 |
| 4 | 150 | 5 | 182 | 3 | 60. |
| | | | | 5 | 6. |

| Sect. | Aph. |
|---|---|
| 3 | 61 |
| 3 | 62 |
| 3 | 63 |
| 3 | 101 |
| 3 | 170 |
| 4 | 74 |
| 4 | 153 |
| 6 | 112 |
| 6 | 113 |
| 6 | 114 |
| 6 | 115 |
| *Incerti.* | |
| | 144 |
| | 147 |
| *De Diui-* | |
| *tijs.* | |
| *Cētiloquij.* | |
| | 78 |
| *Ludou. de* | |
| *Rig.* | |
| | 36 |
| | 43 |
| | 58 |
| | 59 |
| | 61 |
| *Almanſ.* | |
| | 13 |
| | 27 |
| | 63 |
| | 88 |
| | 90 |
| | 103 |
| | 118 |
| | 121 |
| | 163 |

*Cardani.*

| Sect. | Aph. |
|---|---|
| 2 | 4 |
| 2 | 6 |
| 2 | 20 |
| 2 | 21 |
| 2 | 32 |
| 2 | 33 |
| 2 | 51 |
| 2 | 52 |
| 2 | 62 |
| 2 | 63 |
| 2 | 64 |
| 2 | 70 |
| 2 | 71 |
| 2 | 72 |
| 2 | 73 |
| 2 | 74 |
| 2 | 75 |
| 2 | 141 |
| 2 | 143 |
| 3 | 11 |
| 3 | 20 |
| 3 | 28 |
| 3 | 55 |
| 3 | 73 |

| Sect. | Aph. |
|---|---|
| 3 | 74 |
| 3 | 79 |
| 3 | 95 |
| 3 | 134 |
| 3 | 140 |
| 3 | 169 |
| 4 | 40 |
| 4 | 119 |
| 4 | 123 |
| 4 | 125 |
| 4 | 127 |
| 4 | 129 |
| 4 | 130 |
| 4 | 131 |
| 4 | 132 |
| 4 | 136 |
| 4 | 156 |
| 5 | 4 |
| 5 | 9 |
| 5 | 10 |
| 5 | 13 |
| 5 | 14 |
| 5 | 18 |
| 5 | 22 |
| 5 | 23 |
| 5 | 33 |
| 5 | 83 |
| 5 | 96 |
| 6 | 3 |
| 6 | 19 |

6 44
6 46
6 47
6 48
6 49
6 51
6 111
6 144
6 146
6 149
6 153
6 154
7 165

*Incerti.*
125
150

*De Honoribus.*

*Cetiloquij.*
16
18
29
30
37
46

*Herm.*
2
3
14
59
62

88
89

*Ludou. de Rig.*
8
13
30
37
38
52
57
60
80
94

*Almanſ.*
40
59
64
71
72
101
102
103
114
118
135
136
137
138

*Cardani.*

*Sect. Aph.*
2 122
2 123
2 124
2 125
3 49
3 50
3 52
3 54
3 89
3 135
4 60
4 99
4 130
4 145
4 148
5 10
5 14
5 17
5 35
5 39
5 57
5 66
5 70
5 71
5 72
5 73
5 76
5 78
5 79
5 84

| Sect. | Aph. |
|---|---|
| 5 | 84 |
| 5 | 90 |
| 5 | 94 |
| 5 | 95 |
| 5 | 106 |
| 5 | 107 |
| 5 | 127 |
| 5 | 159 |
| 6 | 5 |
| 6 | 19 |
| 6 | 22 |
| 6 | 23 |
| 6 | 50 |
| 6 | 51 |
| 6 | 53 |
| 6 | 54 |
| 6 | 55 |
| 6 | 56 |
| 6 | 57 |
| 6 | 58 |
| 6 | 59 |
| 6 | 60 |
| 6 | 120 |
| 6 | 138 |
| 6 | 142 |
| 6 | 143 |
| 6 | 145 |
| 7 | 1 |
| Incerti. | |
| | 35 |
| | 65 |
| | 66 |
| | 77 |
| | 87 |
| | 105 |
| | 107 |
| | 108 |
| | 109 |
| | 123 |
| | 124 |
| | 148 |
| | 149 |
| | 151 |
| | 152 |
| De Magisterio. | |
| Centiloquij. | |
| | 95 |
| Hern. | |
| | 41 |
| Almans. | |
| | 28 |
| | 63 |
| Caruani. | |
| Sect. | Aph. |
| 2 | 36 |
| 3 | 135 |
| 3 | 140 |
| 4 | 53 |
| 4 | 63 |
| 4 | 113 |
| 4 | 122 |
| 5 | 50 |
| 5 | 168 |
| 5 | 181 |
| 5 | 185 |
| 6 | 28 |
| 6 | 29 |
| 6 | 30 |
| 6 | 31 |
| 6 | 32 |
| 6 | 33 |
| 6 | 34 |
| 6 | 35 |
| 6 | 36 |
| 6 | 37 |
| 6 | 38 |
| 6 | 39 |
| 6 | 40 |
| 6 | 41 |
| 6 | 42 |
| 6 | 43 |
| 6 | 45 |
| 6 | 116 |
| 6 | 117 |
| 7 | 130 |
| 7 | 131 |
| 7 | 132 |
| Incerti. | |
| | 137 |

De

*De Coniugijs.*
*Herm.*
61
*Cardani.*
*Sect. Aph.*
2 77
2 142
2 207
3 28
4 127
4 132
5 23
5 34
6 61
6 62
6 63
6 64
6 65
6 66
6 67
6 68
6 69
6 70
6 71
6 72
6 111
6 122
6 169
6 170
6 172

*Incerti.*
141
145
153
154
155
156
*De Liberis*
*Herm.*
56
*Ludou. de*
*Rig.*
64
*Cardani.*
*Sect. Aph.*
2 24
3 20
3 139
4 68
4 127
5 22
5 23
5 40
5 178
6 18
6 160
6 161
6 162
6 163
6 164
6 165

*Sect. Aph.*
6 166
6 167
7 9
7 12
7 13
7 14
*Incerti.*
130
136
142
158
*De Amicis & Inimicis*
*Cētiloquij.*
32
33
47
*Almanſ.*
21
*Cardani.*
*Sect. Aph.*
2 92
2 146
3 22
3 23
3 83
3 121
3 123
5 71
6 172

| Sect. Aph. | Sect. Aph. | Sect. Aph. |
|---|---|---|
| 6 172 | 4 130 | 2 7 |
| De Seruis. | 5 4 | 2 50 |
| Cẽtiloquij. | 5 139 | 2 52 |
| 48 | 5 140 | 2 53 |
| 49 | 5 159 | 2 78 |
| 79 | 5 179 | 2 104 |
| Cardani. | 7 18 | 2 105 |
| Sect. Aph. | Incerti. | 2 106 |
| 2 99 | 149 | 2 107 |
| 2 177 | 160 | 2 108 |
| 2 178 | 161 | 2 109 |
| 2 179 | De Genere | 2 110 |
| 3 42 | Mortis. | 2 111 |
| 7 16 | Cui adne- | 2 112 |
| De Pere- | ctitur de | 2 113 |
| grinatione. | Carceribus. | 2 114 |
| Almanſ. | Centiloquij. | 2 115 |
| 22 | 37 | 2 116 |
| Cardani. | 73 | 2 117 |
| Sect. Aph. | 75 | 2 118 |
| 2 3 | 76 | 2 119 |
| 2 79 | Herm. | 2 120 |
| 2 134 | 58 | 2 121 |
| 3 84 | 90 | 2 198 |
| 3 86 | 95 | 2 199 |
| 3 87 | Almanſ. | 3 1 |
| 3 88 | 19 | 3 25 |
| 3 92 | Cardani. | 3 27 |
| 3 93 | Sect. Aph. | 3 55 |
| 4 14 | 2 1 | 3 90 |

| Sect. | Aph. |
|---|---|
| 3 | 91 |
| 3 | 94 |
| 3 | 102 |
| 3 | 103 |
| 3 | 104 |
| 3 | 105 |
| 3 | 111 |
| 4 | 5 |
| 4 | 31 |
| 4 | 61 |
| 4 | 82 |
| 4 | 118 |
| 4 | 129 |
| 4 | 130 |
| 4 | 136 |
| 5 | 61 |
| 5 | 159 |
| 5 | 161 |
| 5 | 177 |
| 6 | 15 |
| 6 | 19 |
| 6 | 75 |
| 6 | 76 |
| 6 | 78 |
| 6 | 79 |
| 6 | 81 |
| 6 | 82 |
| 6 | 83 |
| 6 | 84 |
| 6 | 85 |

| Sect. | Aph. |
|---|---|
| 6 | 86 |
| 6 | 87 |
| 6 | 88 |
| 6 | 89 |
| 6 | 90 |
| 6 | 91 |
| 6 | 92 |
| 6 | 93 |
| 6 | 94 |
| 6 | 95 |
| 6 | 96 |
| 6 | 121 |
| 6 | 138 |
| 6 | 171 |
| 6 | 173 |
| 6 | 174 |
| 7 | 157 |
| 7 | 167 |

*Incerti.*

| | |
|---|---|
| | 126 |
| | 132 |

*De Carceribus.*

*Herm.* 95

*Cardani.*

*Sect. Aph.*

| | |
|---|---|
| 4 | 118 |
| 5 | 111 |
| 5 | 126 |
| 6 | 141 |

*APHOR. pertinentes ad Reuolutiones.*

*Lud. de Rig.*

| | |
|---|---|
| | 50 |
| | 51 |

*Cardani.*

| Sect. | Aph. |
|---|---|
| 1 | 77 |
| 1 | 84 |
| 1 | 85 |
| 2 | 15 |
| 2 | 31 |
| 2 | 144 |
| 3 | 5 |
| 3 | 7 |
| 3 | 8 |
| 3 | 54 |
| 3 | 80 |
| 4 | 29 |
| 5 | 28 |
| 5 | 29 |
| 5 | 34 |
| 5 | 101 |
| 6 | 1 |
| 6 | 4 |
| 6 | 10 |
| 6 | 11 |
| 6 | 25 |
| 6 | 29 |

| Sect. | Aph. |
|---|---|
| 6 | 77 |
| 6 | 127 |
| 7 | 137 |
| 7 | 144 |
| 7 | 149 |
| 7 | 152 |
| 7 | 161 |
| 7 | 169 |
| *Incerti.* | |
| | 173 |
| | 174 |
| | 175 |
| | 177 |
| | 178 |
| | 179 |
| | 180 |
| | 181 |
| | 182 |
| | 183 |
| | 184 |
| | 185 |
| | 186 |
| | 187 |

APHOR. pertinētes ad dies Criticos, aut Decubitus Aegrorū. Cētiloquij.

| | |
|---|---|
| | 20 |
| | 21 |
| | 42 |
| | 44 |
| | 57 |
| | 91 |
| | 92 |
| *Hermetis.* | |
| | 40 |
| | 71 |
| | 74 |
| | 76 |
| *Ludou. de Rig.* | |
| | 62 |
| | 80 |
| | 81 |
| | 82 |
| | 83 |
| | 84 |
| | 85 |
| *Almanſ.* | |
| | 24 |
| | 25 |
| | 32 |
| *Cardani.* | |

| Sect. | Aph. |
|---|---|
| 1 | 32 |
| 1 | 80 |
| 1 | 81 |
| 1 | 86 |
| 1 | 87 |
| 1 | 88 |
| 1 | 89 |
| 1 | 90 |
| 1 | 91 |
| 1 | 92 |
| 1 | 93 |
| 1 | 94 |
| 1 | 97 |
| 1 | 98 |
| 2 | 147 |
| 2 | 148 |
| 2 | 149 |
| 2 | 150 |
| 2 | 151 |
| 2 | 152 |
| 2 | 165 |
| 3 | 4 |
| 3 | 63 |
| 3 | 133 |
| 4 | 61 |
| 4 | 64 |
| 4 | 83 |
| 4 | 87 |
| 4 | 88 |
| 4 | 90 |
| 4 | 91 |
| 4 | 92 |
| 4 | 114 |
| 7 | 3 |
| 7 | 4 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| *Incerti.* | 198 | 210 | 223 |
| 188 | 199 | 211 | 224 |
| 189 | 200 | 212 | 225 |
| 190 | 201 | 213 | 226 |
| 191 | 202 | 214 | 227 |
| 192 | 203 | 215 | 228 |
| 193 | 204 | 216 | 229 |
| 194 | 206 | 217 | 233 |
| 195 | 207 | 218 | 234 |
| 196 | 208 | 219 | |
| 197 | 209 | 220 | |


## APHORISMI,

Qui ad Caſuia, pertinentia ad natiuitates, ad reuolutiones, & de Decubitu, reduci non potuere hic ponuntur ſub titulo Aphoriſmorum Notabilium cũ digne obſeruatione ſint, & qui à Lectore perlegantur.


| | | | |
|---|---|---|---|
| *Aphoriſmi* | 9 | 28 | 59 |
| *notabiles* | 10 | 31 | 60 |
| *Cẽtiloquij* | 11 | 34 | 62 |
| 1 | 12 | 35 | 63 |
| 2 | 13 | 36 | 64 |
| 3 | 14 | 39 | 65 |
| 4 | 15 | 41 | 66 |
| 5 | 22 | 43 | 67 |
| 6 | 24 | 54 | 77 |
| 7 | 25 | 55 | 81 |
| 8 | 26 | 58 | 82 |


83

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 83 | 21 | 68 | | 6 | | | |
| 84 | 22 | 69 | | 7 | | | |
| 85 | 23 | 70 | | 9 | | | |
| 86 | 24 | 72 | | 10 | | | |
| 87 | 26 | 73 | | 16 | | | |
| 88 | 27 | 75 | | 17 | | | |
| 89 | 28 | 76 | | 19 | | | |
| 90 | 29 | 77 | | 20 | | | |
| 93 | 30 | 78 | | 22 | | | |
| 94 | 31 | 79 | | 24 | | | |
| 96 | 32 | 80 | | 25 | | | |
| 97 | 33 | 81 | | 26 | | | |
| 98 | 34 | 82 | | 27 | | | |
| 99 | 35 | 83 | | 28 | | | |
| 100 | 36 | 84 | | 29 | | | |
| *Herm.* | 38 | 85 | | 31 | | | |
| 4 | 39 | 86 | | 32 | | | |
| 5 | 41 | 91 | | 33 | | | |
| 7 | 42 | 92 | | 34 | | | |
| 8 | 44 | 93 | | 35 | | | |
| 9 | 47 | 94 | | 39 | | | |
| 10 | 48 | 97 | | 40 | | | |
| 11 | 49 | 98 | | 41 | | | |
| 12 | 50 | 99 | | 42 | | | |
| 13 | 51 | 100 | | 44 | | | |
| 15 | 53 | *Lud. de* | | 45 | | | |
| 16 | 54 | *Rig.* | | 46 | | | |
| 17 | 55 | 1 | | 47 | | | |
| 18 | 57 | 2 | | 49 | | | |
| 19 | 65 | 3 | | 50 | | | |
| 20 | 96 | 4 | | 53 | | | |
| | | | | 54 | | | |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 54 | *Alman.* | | 55 | 98 |
| 56 | 1 | | 56 | 99 |
| 65 | 2 | | 57 | 100 |
| 66 | 3 | | 58 | 106 |
| 67 | 4 | | 60 | 107 |
| 68 | 5 | | 61 | 108 |
| 69 | 6 | | 62 | 109 |
| 70 | 7 | | 64 | 110 |
| 71 | 8 | | 65 | 111 |
| 72 | 9 | | 66 | 112 |
| 73 | 23 | | 67 | 113 |
| 74 | 24 | | 68 | 115 |
| 75 | 29 | | 70 | 116 |
| 76 | 31 | | 73 | 117 |
| 77 | 36 | | 74 | 120 |
| 78 | 38 | | 77 | 122 |
| 79 | 39 | | 78 | 124 |
| 86 | 41 | | 79 | 125 |
| 87 | 42 | | 80 | 126 |
| 88 | 43 | | 81 | 127 |
| 89 | 44 | | 82 | 128 |
| 90 | 45 | | 83 | 129 |
| 91 | 46 | | 84 | 130 |
| 92 | 47 | | 85 | 135 |
| 93 | 48 | | 86 | 132 |
| 95 | 49 | | 87 | 133 |
| 96 | 50 | | 89 | 134 |
| 97 | 51 | | 91 | 139 |
| 98 | 52 | | 92 | 140 |
| 99 | 53 | | 93 | 141 |
| 100 | 54 | | 94 | 142 |
| | | | | 143 |

| | Se. | Ap. | Se. | Ap. | Se. | Ap. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 143 | | | | | | |
| 144 | 1 | 23 | 1 | 54 | 2 | 2 |
| 145 | 1 | 24 | 1 | 55 | 2 | 8 |
| 146 | 1 | 25 | 1 | 56 | 2 | 9 |
| 147 | 1 | 26 | 1 | 57 | 2 | 11 |
| 148 | 1 | 27 | 1 | 58 | 2 | 12 |
| 149 | 1 | 28 | 1 | 59 | 2 | 13 |
| 150 | 1 | 29 | 1 | 60 | 2 | 14 |
| Cardan. | 1 | 30 | 1 | 61 | 2 | 23 |
| Sect. Aph. | 1 | 31 | 1 | 62 | 2 | 28 |
| I 1 | 1 | 32 | 1 | 63 | 2 | 29 |
| I 2 | 1 | 33 | 1 | 64 | 2 | 44 |
| I 3 | 1 | 34 | 1 | 65 | 2 | 45 |
| I 4 | 1 | 35 | 1 | 66 | 2 | 54 |
| I 5 | 1 | 36 | 1 | 67 | 2 | 61 |
| I 6 | 1 | 37 | 1 | 68 | 2 | 67 |
| I 7 | 1 | 38 | 1 | 69 | 2 | 68 |
| I 8 | 1 | 39 | 1 | 70 | 2 | 69 |
| I 9 | 1 | 40 | 1 | 71 | 2 | 70 |
| I 10 | 1 | 41 | 1 | 73 | 2 | 71 |
| I 12 | 1 | 42 | 1 | 74 | 2 | 72 |
| I 13 | 1 | 43 | 1 | 75 | 2 | 76 |
| I 14 | 1 | 44 | 1 | 76 | 2 | 86 |
| I 15 | 1 | 45 | 1 | 78 | 2 | 88 |
| I 16 | 1 | 46 | 1 | 83 | 2 | 91 |
| I 17 | 1 | 47 | 1 | 84 | 2 | 94 |
| I 18 | 1 | 48 | 1 | 95 | 2 | 95 |
| I 19 | 1 | 49 | 1 | 96 | 2 | 96 |
| I 20 | 1 | 50 | 1 | 100 | 2 | 97 |
| I 21 | 1 | 51 | 1 | 101 | 2 | 102 |
| I 22 | 1 | 53 | 1 | 102 | 2 | 126 |

| Se. | Ap. | Se, | Ap. | Se. | Ap. | Se. | Ap. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | 127 | 3 | 16 | 3 | 117 | 4 | 1 |
| 2 | 128 | 3 | 17 | 3 | 118 | 4 | 3 |
| 2 | 129 | 3 | 18 | 3 | 119 | 4 | 8 |
| 2 | 130 | 3 | 21 | 3 | 122 | 4 | 18 |
| 2 | 131 | 3 | 25 | 3 | 129 | 4 | 19 |
| 2 | 135 | 3 | 26 | 3 | 130 | 4 | 20 |
| 2 | 139 | 3 | 29 | 3 | 131 | 4 | 22 |
| 2 | 140 | 3 | 31 | 3 | 132 | 4 | 58 |
| 2 | 145 | 3 | 32 | 3 | 136 | 4 | 59 |
| 2 | 146 | 3 | 33 | 3 | 137 | 4 | 62 |
| 2 | 160 | 3 | 34 | 3 | 145 | 4 | 65 |
| 2 | 161 | 3 | 35 | 3 | 146 | 4 | 75 |
| 2 | 164 | 3 | 36 | 3 | 147 | 4 | 76 |
| 2 | 188 | 3 | 37 | 3 | 148 | 4 | 77 |
| 2 | 189 | 3 | 38 | 3 | 150 | 4 | 78 |
| 2 | 190 | 3 | 39 | 3 | 151 | 4 | 79 |
| 2 | 191 | 3 | 40 | 3 | 152 | 4 | 80 |
| 2 | 192 | 3 | 41 | 3 | 153 | 4 | 81 |
| 2 | 193 | 3 | 43 | 3 | 154 | 4 | 84 |
| 2 | 194 | 3 | 51 | 3 | 155 | 4 | 85 |
| 2 | 195 | 3 | 53 | 3 | 156 | 4 | 89 |
| 2 | 196 | 3 | 57 | 3 | 157 | 4 | 93 |
| 2 | 200 | 3 | 77 | 3 | 158 | 4 | 94 |
| 2 | 201 | 3 | 85 | 3 | 159 | 4 | 95 |
| 2 | 202 | 3 | 96 | 3 | 160 | 4 | 96 |
| 2 | 203 | 3 | 97 | 3 | 161 | 4 | 97 |
| 2 | 204 | 3 | 98 | 3 | 164 | 4 | 100 |
| 2 | 205 | 3 | 106 | 3 | 165 | 4 | 101 |
| 2 | 206 | 3 | 107 | 3 | 166 | 4 | 103 |
| 2 | 208 | 3 | 108 | 3 | 172 | 4 | 104 |

| Se. | Ap. | Se. | Ap. | Se. | Ap. | Se. | Ap. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | 105 | 5 | 46 | 5 | 99 | 5 | 186 |
| 4 | 107 | 5 | 47 | 5 | 100 | 5 | 187 |
| 4 | 109 | 5 | 48 | 5 | 108 | 6 | 9 |
| 4 | 110 | 5 | 49 | 5 | 114 | 6 | 10 |
| 4 | 116 | 5 | 52 | 5 | 115 | 6 | 11 |
| 4 | 117 | 5 | 54 | 5 | 116 | 6 | 14 |
| 4 | 135 | 5 | 55 | 5 | 117 | 6 | 16 |
| 4 | 143 | 5 | 56 | 5 | 118 | 6 | 17 |
| 4 | 144 | 5 | 59 | 5 | 119 | 6 | 20 |
| 4 | 146 | 5 | 60 | 5 | 120 | 6 | 21 |
| 4 | 147 | 5 | 61 | 5 | 121 | 6 | 22 |
| 4 | 151 | 5 | 62 | 5 | 122 | 6 | 24 |
| 4 | 152 | 5 | 63 | 5 | 123 | 6 | 52 |
| 4 | 155 | 5 | 64 | 5 | 125 | 6 | 62 |
| 5 | 2 | 5 | 65 | 5 | 129 | 6 | 74 |
| 5 | 5 | 5 | 67 | 5 | 130 | 6 | 90 |
| 5 | 6 | 5 | 68 | 5 | 131 | 6 | 103 |
| 5 | 7 | 5 | 69 | 5 | 132 | 6 | 104 |
| 5 | 11 | 5 | 80 | 5 | 133 | 6 | 105 |
| 5 | 15 | 5 | 81 | 5 | 134 | 6 | 106 |
| 5 | 16 | 5 | 82 | 5 | 135 | 6 | 108 |
| 5 | 19 | 5 | 85 | 5 | 136 | 6 | 109 |
| 5 | 21 | 5 | 86 | 5 | 137 | 6 | 110 |
| 5 | 26 | 5 | 87 | 5 | 138 | 6 | 129 |
| 5 | 27 | 5 | 88 | 5 | 142 | 6 | 131 |
| 5 | 41 | 5 | 89 | 5 | 156 | 6 | 133 |
| 5 | 42 | 5 | 91 | 5 | 160 | 6 | 134 |
| 5 | 43 | 5 | 92 | 5 | 170 | 6 | 135 |
| 5 | 44 | 5 | 97 | 5 | 171 | 6 | 136 |
| 5 | 45 | 5 | 98 | 5 | 180 | 6 | 137 |

| Se. | Ap. | Se. | Ap. | Se. | Ap. | Se. | Ap. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 | 139 | 7 | 38 | 7 | 69 | 7 | 99 |
| 6 | 140 | 7 | 39 | 7 | 70 | 7 | 100 |
| 6 | 147 | 7 | 40 | 7 | 71 | 7 | 101 |
| 6 | 149 | 7 | 41 | 7 | 72 | 7 | 102 |
| 6 | 157 | 7 | 42 | 7 | 73 | 7 | 103 |
| 6 | 158 | 7 | 43 | 7 | 74 | 7 | 104 |
| 6 | 159 | 7 | 44 | 7 | 75 | 7 | 105 |
| 7 | 5 | 7 | 45 | 7 | 76 | 7 | 106 |
| 7 | 6 | 7 | 46 | 7 | 77 | 7 | 107 |
| 7 | 7 | 7 | 47 | 7 | 78 | 7 | 108 |
| 7 | 17 | 7 | 48 | 7 | 79 | 7 | 109 |
| 7 | 19 | 7 | 49 | 7 | 80 | 7 | 110 |
| 7 | 20 | 7 | 50 | 7 | 81 | 7 | 111 |
| 7 | 21 | 7 | 51 | 7 | 82 | 7 | 112 |
| 7 | 22 | 7 | 52 | 7 | 83 | 7 | 113 |
| 7 | 23 | 7 | 53 | 7 | 84 | 7 | 114 |
| 7 | 24 | 7 | 54 | 7 | 85 | 7 | 115 |
| 7 | 25 | 7 | 55 | 7 | 86 | 7 | 116 |
| 7 | 26 | 7 | 56 | 7 | 87 | 7 | 117 |
| 7 | 27 | 7 | 58 | 7 | 88 | 7 | 118 |
| 7 | 28 | 7 | 59 | 7 | 89 | 7 | 119 |
| 7 | 29 | 7 | 60 | 7 | 90 | 7 | 120 |
| 7 | 30 | 7 | 61 | 7 | 91 | 7 | 121 |
| 7 | 31 | 7 | 62 | 7 | 92 | 7 | 122 |
| 7 | 32 | 7 | 63 | 7 | 93 | 7 | 123 |
| 7 | 33 | 7 | 64 | 7 | 94 | 7 | 124 |
| 7 | 34 | 7 | 65 | 7 | 95 | 7 | 125 |
| 7 | 35 | 7 | 66 | 7 | 96 | 7 | 126 |
| 7 | 36 | 7 | 67 | 7 | 97 | 7 | 127 |
| 7 | 37 | 7 | 68 | 7 | 98 | 7 | 128 |

| Se. | Ap. |
|---|---|
| 7 | 129 |
| 7 | 133 |
| 7 | 134 |
| 7 | 135 |
| 7 | 136 |
| 7 | 138 |
| 7 | 139 |
| 7 | 140 |
| 7 | 141 |
| 7 | 142 |
| 7 | 143 |
| 7 | 145 |
| 7 | 146 |
| 7 | 147 |
| 7 | 149 |
| 7 | 150 |
| 7 | 153 |
| 7 | 154 |
| 7 | 155 |
| 7 | 156 |
| 7 | 158 |
| 7 | 159 |
| 7 | 160 |
| 7 | 162 |
| 7 | 163 |
| 7 | 164 |
| 7 | 166 |
| 7 | 168 |

| Se. | Ap. |
|---|---|
| 7 | 170 |
| 7 | 171 |
| 7 | 173 |
| *Incerti.* | |
| | 1 |
| | 2 |
| | 3 |
| | 4 |
| | 5 |
| | 6 |
| | 7 |
| | 8 |
| | 9 |
| | 10 |
| | 11 |
| | 12 |
| | 13 |
| | 15 |
| | 16 |
| | 17 |
| | 18 |
| | 19 |
| | 20 |
| | 22 |
| | 23 |
| | 25 |
| | 26 |
| | 27 |

| | | |
|---|---|---|
| 28 | 58 | 101 |
| 29 | 59 | 102 |
| 30 | 60 | 103 |
| 31 | 61 | 104 |
| 32 | 62 | 117 |
| 33 | 63 | 118 |
| 34 | 64 | 120 |
| 36 | 70 | 122 |
| 37 | 72 | 133 |
| 38 | 73 | 134 |
| 39 | 74 | 166 |
| 40 | 75 | 167 |
| 41 | 80 | 168 |
| 42 | 81 | 169 |
| 43 | 82 | 170 |
| 44 | 83 | 171 |
| 45 | 84 | 205 |
| 46 | 85 | 221 |
| 47 | 88 | 222 |
| 48 | 89 | 230 |
| 49 | 90 | |
| 50 | 91 | |
| 51 | 92 | |
| 52 | 94 | |
| 53 | 95 | |
| 54 | 96 | |
| 55 | 97 | |
| 56 | 98 | |
| 57 | 100 | |

*Vsque ad finem Libri.*

# CL. PTOLOMÆI

## Centum Dicta, siue Fructus Librorum suorum.

1 Ante, & à scientia. Fieri enim nequit, vt qui sciens est, particulares rerum formas pronunciet, sicuti nec sensus particularem, sed generalem quandam suscipit sensibilis rei formam, oportetque tractantem hæc, rerum coniectura vti, soli autem numine afflati prædicunt particularia.

2 Cum is qui consultat, ipsum melius scrutabitur, inter id & eius formam nulla rerum differentia erit.

3 Quiad rem quampiam aptus est, habebit profecto, & huiusmodi significationis Stellam admodum potentem in sua genitura.

4 Anima ad cognitionem apta veri, plus assequitur, quam qui supremum in modum se in scientia exercuit.

5 Potest qui sciens est, multos Stellarum effectus auertere, quando naturam earum nouerit, ac se ipsum

ante illorum euentum præparare.

6 Tunc dierum prodest, & horarum electio, cum tempus à genitura bene constitutum est. Si enim contrarium est, nequaquam profecerit, quamuis bonum fortasse exitum respexerit.

7 Non potest quispiam Stellarum mixturas percipere, nisi naturales prius differentias mixturasque cognouerit.

8 Sapiens anima confert cælesti operationi, vt optimus agricula arando, expurgandoque confert naturæ.

9 In generatione atque corruptione formæ afficiuntur a cælestibus formis. Iccirco qui imagines faciunt, ijs vtuntur, cum eò stellæ ingressæ fuerint obseruantes.

10 In dierum horarumque electionibus vtere maleficis, perinde vt optimus Medicus ad curationem venenis vtitur moderatè.

11 Diem horamque non ante eligas, quam propositæ rei noueris qualitatem.

12 Amor odiumque ne vera eueniant iudicia prohibent, siquidem minuunt maxima, augent minima.

13 Cum cælestis constitutio quippiam significauerit, adiutricibus etiam

cor-

corruptiuis Stellis, hoc est secundarijs vtere.

14 Quantis in erroribus versatur Astrologus cum locus septimus ac eius Dominus afflicti erunt.

15 Ascendentia inimicorum regni, sunt signa ab ipsius regni ascendente declinantia. Amicorum vero ascendentia sunt cardines locaque succedentia. Idem & in dogmatibus.

16 Cum octauo loco beneficæ præfuerint, damnum à viris bonis afferunt, quæ si benè affectæ fuerint, illud dimouebunt.

17 Cum de senis cuiuspiam vita iudicas, non ante iudicium feres, quam dimensus fueris, quot ille annos viuere possit.

18 Cum ambo Luminaria in eodem minuto fuerint, si ascendit benefica natus æquè sanè in omnibus quæ inciderint, benè fortunatus erit, simili modo, si & inuicem opponentur ab ortu atque occasu, sin malefica est in ascendente, contrarium sentias.

19 Vis purgationis hebetatur, cum Luna fuerit Ioui coniuncta.

20 Membrum ferro ne percutito, cum Luna signum tenuerit, quod membro illi dominatur.

21 Cum ☉ fuerit in ♑ aut ♓

Dominusque alcendentis Stellæ sub terram positæ copulabitur, bonum est purgationis vti. Si vero copulatur Stellæ supra terram constitutę, potionem qui sumpserit euomet.

22 Vestem nec primum induas nec incidas vbi ☉ fuerit in ♌ collocata. Est autem peius si eadem malè affecta fuerit.

23 Lunæ ad Stellas figuratio, natum benè agilem facit, quæ si potentes fuerint, effectiuam, sin imbecilles, inertem ad agendum commotionem indicant.

24 Defectus Luminarium in cardinibus geniturarum, annuarumve conuersionum noxius est. Accipiunt autem locum ab interuallo ascendentis ac loci defectus. Vt autem ab hora Solaris Eclipsis Annos, sic ab Eclipsis Lunaris horis menses capis.

25 Dominatoris progressionem cum in medio Cæli positus est, per Sphæræ ascensiones, cum vero in ascendente constitutus est, per climatis ascensiones facito.

26 Latet planè res, cum Stella eam significans, aut sub terra, aut in loco alieno Soli coniungitur; contra patet cum è depressione in altitudinem tol-

tollitur, proprioque in loco collocatur.

27 Venus voluptatem affert membro, cui signum in quo est dominatur. Idem & in cęteris Stellis.

28 Cum præstare non poteris, vt duabus Lunam Stellis coniungas, id præsta, vt Stellæ fixæ eam coniungas, illarum mixturam habenti.

29 Stellæ fixæ irrationabiles atque admirabiles fœlicitates afferunt, quas tamen plerunque calamitatibus insigniunt, nisi & Planetæ ad fœlicitatem conueniant.

30 Inspice primorum generis Regum creationes. Si enim ascendens creationis conuenit cum ascendente geniturę Regis filij, is Regis successor erit.

31 Cum Regni dominator in locum climactericum inciderit, tunc aut Rex aut è Regni Principibus magnus quispiam morietur.

32 Concordiam inter duos facit conueniens Stellarum figuratio, speciem rei significantium, ex qua beneuolentia in vtriusque genitura constituta est.

33 Amor odiumque tum ex luminarium concordia, discordiaque tum ex vtriusque geniturę ascendentibus

deprehenditur. Adaugent autem beneuolentiam obedientia signa.

34 Dominator, seu hospitator interlunij si cardinalis fuerit, quæcumque illo mense futura sint significat.

35 Sol cum in alicuius Stellæ locum deuenerit, vim eius excitat, quam in aere habet.

36 In condendis Vrbibus Stellis fixis, quę conferre habeant, vtere. In ædificandis vero domibus, erraticis. Reges cuiuscunque Vrbis quę Martem culminantem habuerint, gladio plerumque pereunt.

37 Qui ♍ aut ♐ horoscopum habent, ij potestatis suæ causa erunt. Quorum autem ascendens erit ♈ aut ♎ ij mortis suæ causa erunt. Eodem modo in cæteris signis ratiocinaberis.

38 Cum ☿ in altera domorum ♑ constitutus, potens fuerit, coniecturatiuum nato dat intellectum, ac rerum scrutationem. In ♂ verò domo, ac præsertim in ♈ facundiam.

39 Afflictio vndecimi loci in creatione Regis, detrimentum significat, & domesticorum eius, & pecuniarum. Secundi autem loci afflictio, pecuniarum ouilis eius detrimentum significat.

40 Cum

40 Cum ascendens a maleficis oppressum fuerit, qui tunc natus est, sordidis rebus delectabitur, ac malè olentes odores probabit.

41 Loci octaui dominique eius afflictionem, tempore discessus caueto, at secundi atque eius Domini tempore reditus.

42 Morbus, qui cœpit, cum ☉ fuerit in eo signo, quod malefica aliqua tenuit in genitura siue in □ aut ☍ eius grauissimus futurus est. Si autem malefica respicit, periculosus, sin in loco, vbi genituræ tempore benefica fuerit sine periculo erit.

43 Maleficas gentis figuras, contrarię temporum figurationes intendunt.

44 Noxium est, cum ægris ascendens, genituræ ipsius figuris refragatur, neque ad beneficum aliquem tempus peruenerit.

45 Quisquis genituræ suæ dominatores, aut ascendens in signis humanis non habet, ab humanitate alienus etiam sibi ipsi erit.

46 Magnæ in genituris fœlicitates conferuntur, tum à Stellis fixis, tum ab interluniorum cardinibus, tum à locis partis fortunæ Regni, cum horoscopus in eis repertus fuerit.

47 In genitura cum malefica in locum beneficæ in alterius genitura inciderit, is qui beneficam habet, ab eo qui habet maleficam, detrimento afficietur.

48 Quando culmen Domini, hoc est Principis fuerit horoscopus subiecti, aut dominatores beneuola configurabuntur figura, diu inseparabiles permanebunt. Idem est, cum sextus locus serui inuentus fuerit horoscopus Principis.

49 Cum ascendens subiecti fuerit culmen in genitura Domini, tantam subiecto illi fidem Dominus habebit, vt ei ab illo imperetur.

50 Ne prætermittas 119. coniunctiones, in his enim posita est cognitio eorum quæ fiunt in mundo, & generationis, & corruptionis.

51 In quo signo ☉ est genituræ tempore, illud in conceptu fac ascendens, & in quo signo inuenta fuit in conceptu, illud aut eius oppositum fac ascendens in partu.

52 Domini genituræ hominum proceræ staturę in sublimitatibus sunt, & ipsorum horoscopi in signorum principijs. Eorum verò qui sunt breuis staturæ, in humilitatibus inueniuntur. Ad hæc inquirito signa ne

recta,

recta, an obliqua sint.

53 Domini genituræ macilentorum hominum, latitudinem non habent, pinguium autem habent, Quod si latitudo australis est, agiles erunt, sin borealis inagiles.

54 Dominatores in ædificationibus vbi copulantur Stellę subterraneę, ædificij erectionem impediunt.

55 Martis aduersus naues noxia vis imminuitur, cum neque in cœli medio, neque in XI. loco est. In his enim locis nauem corrumpit, prædonibus per vim occupantibus. Incendetur autem nauis, si ascendens ab aliqua Stella fixa quę ex ♂ mixtura sit, affligetur.

56 Cum ☉ est in primo quadrangulo, hoc est ex quo à Solis coniunctione recessit, corporum humiditates ad secundum vsque effluunt, in reliquis autem decrescunt.

57 Cum septimum locum atque eius Dominum in ægritudine afflictum videris, medicum mutato.

58 Coniunctionis locum, quo in loco ab anni ascendente est, inspice, si quidem cum profectio illuc peruenerit, tunc euentus erit.

59 De absente quod occiderit, ne pronunciato, antequam videris an-

mulentus factus sit, neque quod vulnus acceperit, antequam exquisieris an sanguis ei missus fuerit, neque quod thesauros inuenerit, priusquam scrutatus fueris, ne forte depositum acceperit, cum omnium figuræ similes sint.

60 Super ægrotis criticos dies inspice, ac ☾ peragrationem in angulis figuræ sexdecim laterum: vbi enim eos angulos bene affectos inueneris, bene erit languenti, contra male, si afflictos inueneris.

61 ☾ significat ea quæ corporis sunt, vt quæ ei pro motu similia sunt.

62 Cum minutum coniunctionis principium facies, potes de mutatione aeris in mense illo iudicare, erit enim iudicium iuxta dominatorem anguli figuræ cuiusq; vincit enim hic aeris naturam, assumens in his etiam præsentis temporis qualitatem.

63 Cum ♃ ac ♀ coniunguntur, vter eorum sublimior sit vide, ac iuxta illius naturam pronunciato. Idem etiam in cæteris Stellis facito.

64 Vbi scisitationis dominatorem inspexeris, quam hic in Anni conuersione, seu in ascendente nouilunii potestatem habet inspice, ac se-

cum-

cundum hęc pronuncia.

65 In minima coniunctione, differentia mediæ coniunctionis, & in media maximæ coniunctionis differentia.

66 Sola profectione ne vtare, sed etiam attributionibus, & ademptionibus Stellarum.

67 Diminuuntur Anni ob excipientis imbecillitatem.

68 Male fica cum matutina est, casum, vespertina vero morbum significat.

69 Erit in visu nati vitium, cum ☉ Soli aduersa est, ac nebulosis Stellis coniungitur. Item cum ☉ est in occiduo cardine ambæque maleficæ Stellæ in cardine orienti, Sol quoque si cardinalis est, natus ipse oculis capietur.

70 In furentibus Luna Mercurio non copulatur, neuterque ascendenti, in dęmoniacis, in hac figura Saturnus quidem noctu, ♂ autem interdiu cardinem tenebit, maximeque in ♋ ♍ ac ♓.

71 In marium genituris, cum vtrumque luminare in signis fuerit masculinis, actiones eorum secundum naturam erunt. In genituris vero mulierum, actiones ipsę intendentur. Idem

de ♂ ac ♀, matutini nanque masculescunt, vespertini fœminescunt.

72 Quæ sunt educationis, à Dominis △ triangularitatis ascendentis capito. Quæ vitæ à Dominis triangularitatis Luminaris conditionarij.

73 Sol vbi repertus fuerit cum capite Gorgonis, si neque aspicitur à benefica Stella, neque benefica octauo loco præest, Dominusque conditionarij Luminaris Marti opponetur aut eum è quadrato percutit, nato caput truncabitur. Quod si Luminare culminabit, corpus eius sauciabitur. Sin copulatio à ♊ aut ♐ fuerit, manus ac pedes eius amputabuntur.

74 Quicumque Martem ascendentem habet, omnino cicatricem in facie habebit.

74 Cum ☉ ascendentis Domino coniungitur in ♌, nec ♂ aliquam in ascendente prærogatiuam habet, nec benefica in octaua est, qui natus est exuretur.

76 Cum ♄ cœli medium tenet, opponiturque ei conditionarium Luminare, ac signum terreum est infimo, sic natus ædificiorum ruina interibit. Quod si humidum signum est, aquis suffocabitur. Si vero humanum, ab hominibus strangulabitur,

aut

aut laqueo flagelliſve peribit. Verum ſi benefica octauo in loco eſt, propior his erit, non tamen morietur.

77 Aſcendentis profectionem pro ijs quæ corporis ſunt, facito. Partis fortunæ pro ijs quæ ſunt externa, Lunæ pro corporis animęque connexione, Medium cęli pro actionibus.

78 Exercet ſępe vires, Stella in loco, in quo nullas habet vires, lucrum inexpectatum nato afferens.

79 Mars cum in XI. eſt loco, qui hunc ſic habet, Domino ſuo non dominatur.

80 Cum Venus iungitur Saturno, habetque hoſpitatorem aliquem in loco ſeptimo, qui natus eſt, ſordidi coitus erit.

81 Tempora modis ſeptem deprehenduntur; ab interuallo duorum dominatorum, ab interuallo configurationum inter ſe, ab acceſſu alterius ad alterum, ab interuallo inter ſe alterius ipſorum, & loci rem quæſitam ſignificantis, ab occaſu Stellæ, cum additione atque ademptione, & à mutatione dominatoris, & ab acceſſu Planetæ in locum ſuum.

82 Cum figuræ æquales erunt nouilunij aut plenilunij, Horoſcopum inſpice, quæ ſi etiam æqualis fuerit,

ad ferendam sententiam ne properes.

83 Tempus impetrationis inter impetrantem ac Regem affectionem indicat. Cathedra autem indicat ea quæ actionis sunt.

84 Mars cum est ascendentis Dominus tempore captæ possessionis, præestque secundo loco, aut copulatur Domino secundi, multum damnum affert.

85 Cum ascendentis Dominus secundi loci Domino configurabitur, sponte Princeps multas impensas faciet.

86 Sol est fons vitalis potentiæ, Luna naturalis.

87 Mensium conuersiones fiunt ex diebus 28. horis 2. ac minutis circiter 18. Quidam autem à peragratione Solis iudicant, cum partiliter exæquatus est gradui ac minuto, quod in initio obtinet.

88 Cum partis fortunæ profectionem in toto reuolutionis Anno facere volumus, à Sole in ☉, ac tantundem ab ascendente capimus.

89 Quæ sunt Aui, septimo à loco, quæ autem Patrui à sexto vide.

90 Cum Dominator ascendens viderit, res quæ occulta est secundum

ascen-

ascendentis naturam erit. Quod si non videt illud erit secundum naturam loci in quo ipse est Dominator, & horę quidem Dominus colorem eius, Lunę vero locus tempus demonstrat, eritque res noua, si supra terram, sin sub terram, vetus. Fortunæ pars quantitatem eius longane an breuis sit demonstrat. Dominus finium, imi ac medij Cęli, item Lunæ substantiam eius demonstrat.

91 Malum signum est cum ægroti dominator combustus est, maxime si fortunæ pars affligitur.

92 ♄ Orientalis non adeo nocet ęgro, sicuti nec ♂ occiduus.

93 Ex figuris non ante iudicabis, quam coniunctionem feceris. Principia enim in vnaquaque coniunctione transmutantur, quocirca ambas misceto nec errabis.

94 Locus potentioris ex dominatoribus, ea quæ in cogitatione scisciantis sunt, indicat.

65 Quæ cum singulis oriuntur decurijs, ea nati voluntatem ad artem, quam tractant, comprobant.

96 Significantia Eclipsis decreta, sunt eius, quę propius cardines. Considera etiam naturam Stellarum simul consistentium, tum erraticarum, tum

fixa-

fixarum, ac etiam simulacra coorientia, & secundum hęc pronuncia.

97 Res de qua est sciscitatio, breui perficitur, cum nouilunij seu pleniluniij dominus cardinalis est.

98 Traiectiones atque Crinitæ secundas partes in iudicijs ferunt.

99 Traiectiones aeris siccitatem indicant, quæ si ad vnam partem feruntur, ab angulo illo ventum indicant. Sin in diuersas feruntur partes, aquarum imminutiones, Aeris turbationes, & exercituum incursiones indicant.

100 ♂ ♄ ♐ & ♂ in signis humidis pluuias facit, & niues.

# HERMETIS CENTVM APHORISMORVM LIBER.

1 SOl & Luna post Deum, omniū viuentium vita sunt. Multorum quidem natiuitates non habent hyleg. sed quia Sol & Luna, ascendens eorum ex dilectione aspiciunt, eodem libero existente, eorum vita diutius elongatur.

2 Omnes natiuitates diurnę confortantur per Solem, quando idem configuratur beneuolis. Nocturnæ verò per Lunam, quando ipsa aspicitur à beneuolis: & si hoc non fuerit, si tamen fuerint boni planetæ in angulis, sic natiuitas est fortunata.

3 ♂ cum fuerit dominus ascendentis in decima præbet nato dignitatem atque potentiam, quibus cum iniuria & crudelitate vtetur, & hoc verò infortunium dicitur potius, quam fortuna.

4 ♄ configuratus maleuolis, mutat eorum malitiam in bonum. ♀

non

non potest hoc facere nisi adiuuetur à ♃ & ideo in augendo bonum, & in prohibendo malum ♃ multo melior ♀ reperitur.

5 Non potest facere Astrologus commixtionem Stellarum significationum, antequam cognoscat amicitias & inimicitias earum. Amicitia quidem, & inimicitia earum est triplex, vna quidem secundum naturam, alia secundum domos, & tertia secundum aspectus.

6 Opponitur ♀ Mercurio: hic quidem sermones, & disciplinas, illa vero voluptates, & delectationes amplectitur. Similiter ♃ Marti, hic quidem vult misericordiam, & iustitiam, ille vero impietatem, & crudelitatem.

7 Magnorum Principum facias significatorem Solem, vel aliquem de superioribus. Scribarum vero, & rusticorum inferiores Planetas, & præcipue Lunam.

8 Aspectus non potest diminuere significationem coniunctionis. Coniunctio verò diminuit significationem aspectus, nam coniunctio fortior est aspectu.

9 Non definias vel eligas aliquid, existente ♌ in ascendente, nec cum angu-

anguli sunt obliqui, aut si ♂ sit in eis, falsus enim eueniet deffinitionis euẽtus, & pręcipuè quia ☍ falsitatis est signum.

10 Fert à 6. vel à duodecima loca mala beneuolis, cum ibi fuerit à malis impeditus.

11 Rumores dicti ☾ existentes in prima facie ♌ mendaces sunt & compositi.

12 Eueniunt quandoque in quęstionibus Astrologorum iudicia non vera, vel propter errorem instrumentorum eorum, vel propter interrogantis insipientiam, vel quando Sol est circa gradum medij cœli, vel quando figuræ quę rem concedunt, vel denegant, sunt ęquales.

13 Dum ☾ erit meridionalis, descendens in ♌ vel ♓ non incipias fabricare, cito enim huiusmodi fabrica diruitur.

14 Oportet ♃ per loca consona, & per configurationes aliarum Stellarum in natiuitatibus esse fortem, ad hoc quod natus habeat dignitatem ♃ enim per se planeta debilis est.

15 In signis quidem duorum corporum victoria bona, deuictio autem mala, vtraque siquidem dũplicatur.

16 Non definias aliquid antequam

scias intentionem quærentis, multi quidem interrogare nescíunt, nec possunt exprimere quod intendunt.

17 Cum interrogatus fueris de Patre, aspice quartũ, de fratre tertium, de filio quintum, de vxore septimum, si vero interrogatus fueris pro ęgro, tantum ascendens aspicias.

18 ☾ cùm peruenerit ad beneuolorum vel maleuorum quadratos, & impedimentum, & auxilium erit dubium, & timendum est ne forte maleuoli quidem impediant, & beneuoli adiuuare nequeant.

19 In inceptione itinerum & redituum, non sit ☾ in ascendente vel in quarto, vel in nono, & si non fuerit impedita. In introitu vero ciuitatis non sit in ascendente vel secundo, vel quarto.

20 Tribus modis prędsciuntur accidentia hominum, vel ex natiuitate propria, vel primogeniti filij, vel ex interrogatione cum affectu & solicitudine cognita.

21 Omnis inceptio facta cũ Planeta retrogrado, si ☾ fuerit coniuncta, cito destruitur, & ad peius esse deuenit, cum fuerit impedita.

22 Regum atque Principum esse accipitur à ♄ & ☉, & à planeta exi-

existente in decimo auxiliatorum vero Regis ab vndecimo, & auxiliatorum rusticorum à secunda.

23 Exitus Regis aut Principis ad itinera penitus reprobatur cum ☋ erit in ascendente.

24 ♊ & ♐ obediunt Capiti draconis, & Caudę magis quam alia signa, & ideo grauiora mala in eis faciunt, quam in alijs signis.

25 In natiuitatibus mulierum, cum fuerit ascendens aliqua de domibus ♀, ♂ existente in eis, erit mulier impudica, idem erit si in ascendente ☽ habuerit.

26 Sol recipit Planetarum virtutes quando in ascendente, vel in domo medij cœli iungitur cum eisdem, hoc in nocte Luna facit similiter, cum eisdem locis iuncta fuerit cum prędictis.

27 ♃ soluit ♄ malitiam, & ♀ Martis.

28 Cum fuerit interrogatio pro muliere, simpliciter accipe significationem à ♀, determinatè vero à septima, & si pro inimico absolutè quidem à duodecima, determinatè vero à septima.

29 In exitu cuiuscunq; ad pugnam, sed specialiter Regum, sit ascendens

ali-

aliqua domus superiorum Planetarum, vel ☼ & sit tam ipse quam dominus eius fortis. Dominus vero septimæ debilis, & impeditus à malis.

30 ☽ ♄ vel ♆ iuncta lumine & numero aucta ad omnia erit bona. Si vero minuta fuerit, ad omnia erit mala, totum contrarium intelligas in ♀ & ♂.

31 In mutuis, & depositis caueas, ne sit sub radijs ♆, vel impeditus à malis. Quod si sic fuerit, nec ab impeditione receptus, nulla vel modica restitutio sequetur.

32 Euntes ad configurationem malorum beneuolæ, ex quacunque figura diminuunt aliquid eorum malitiæ, & per bonas quidem figuras magis, per malas verò minus. Maleuolæ verò euntes ad configurationem bonorum ex quadrato quidem vel opposito diminuunt aliquid bonitatis earum, ex alijs vero aspectibus nihil.

33 ♄ quidem transeunte ab vno signo in aliud, fiunt in Cœlo diachohontes, quod Arabes vocant Assub; vel quædam alia signa, de natura ignis.

34 Temperantia aeris ex ♂ ♆ &

☼

☉ contingit, maxime cum ipsa ☌ fit in signis aereis. Ex ☌ ♄ & ☉ fit frigus, ex ☌ ☉ & ♂ in signo bicorporeo, & in tempore veris fit tenebrositas aeris, & infirmitates frequenter contingunt.

35 Æstiuo tempore cum ☉ ingreditur terminum ♂ fit æstus, in hyemali siccitas, & paucitas pluuiarum aderit.

36 Facias in natiuitatibus, & quæstionibus virorum Hyleg, & Alchocoden & directiones eorum, & maximè in quæstionibus Regum, & Magnatum. Per ea enim sciuntur accidentia eorum siue bona, siue mala.

37 Ascendens cum fuerit boni esse, & Dominus eius mali, sanitatem quidem corporis indicat, anxietatem uero, & tristitiam animi, si verò fuerit econuerso, diffinias econuerso.

38 Notabis semper configurationem Stellarum, non per signa, sed per radios.

39 Vtere ☽ in curandis oculis cum fuerit aucta lumine, & libera à malorum aspectu.

40 Si pars fortunæ fuerit cum malo in quarto, vel nono, vel decimo mortem indicat ægrotanti.

41 Durabilia erunt bona, vel ma-

la, cum fuerit significator stationarius, & in angulo. De facili verò mutabilia, cum fuerit idem retrogradus, & in cadentibus angulorum.

42 Eandem in impediendo vim habet dominus secundæ, quam dominus octauæ, similiter dominus sextæ eandem, quam dominus duodecimæ.

43 ♂ occidentali in ♋ non aspiciente ♄ nec ♃ nec ♀ nec ☉ erit Phlebotomator. Eodem vero ♂ existente in ♌ erit corruptor hominum, & sanguinis effusionis amator.

44 Errare contingit peritum Astrologum, quando de significatore eius, cui eligit, est ignarus.

45 ♅ per □ super ♀ eleuatus facit natos impudicos, & in mulieribus impatientes. Si vero ♀ super ♄ eleuata fuerit, faciet faciles ad mulieres, & pronos.

46 Si fuerit in natiuitate alicuius ☿ in ascendente orientalis, & velox, tunc natus sit eloquens, & in scientijs liberalibus doctus. Idem erit etiam, si fuerit in ♐ in proprijs terminis tali modo.

47 Angulorum primus est horoscopus, secundus M. C. tertius, Occidens, quartus Angulus terræ. Reli-

quo-

quorum vero locorum primus est vndecimus, deinde secunda, post quinta, deinde nona, post tertia, post quæ octaua, sexta verò ac duodecima sunt pessimi.

48 Nisi beneuolus Planeta prohibeat, quandocunque dat ♂ reuocat.

49 Ad personas quibus supplicabis, adaptabis Planetas.

50 Horoscopus vel Planeta, dum inuenitur in 30. gradu signi, significatio eius est in signo sequenti, si vero in 29. erit in signo; virtus enim planetæ in tribus consideratur gradibus scilicet in quo est, & in præcedenti, ac succedenti.

51 Oportet futura considerare à coniunctionibus planetarum, præsens verò vel præteritum à separationibus eorundem.

52 Si ☿ fuerit in ♋ remotus ab ascendente, nec impeditus ab aliquo, erit quidem natus rationabilis, & in scientia valde peritus, diliget tamen solitariam vitam, nec habebit laudem de scientia sua.

53 Fiunt in mundo multa incommoda, quando erit in vno mense vtriusque Luminaris Eclipsis, & præcipuè in his locis, quibus est significatio eorum specialis.

54 ☉ tempore inceptionis itineris cum fuerit in via combusta ægrotabit peregrinus in peregrinatione sua, vel aliquas graues molestias patietur.

55 Oportet in erraticarum directionibus, & non erraticarum tempus considerare.

56 Res paterna transit in filium dum ♄ fuerit fortunatus, & ex dilectione aspexerit dominum ascendentis: magis ac amplius si fuerit dominus quarti loci.

57 Existentibus beneuolis in signis, in quibus non habent dignitatem transfundetur eorum benignitas.

58 Si ♂ fuerit almutaz in natiuitate, & non fuerit iunctus beneuolis, significat quod natus incendium patietur.

59 Donat fœlicitatem immensam planeta beneuolus cum fuerit in propria domo receptus, malus vero abstinet se à malitia multa, dum fuerit taliter receptus.

60 Æger erit natus, & debilis cum ♂ super ♄ fuerit eleuatus, si vero super ♂ ♄, erit fortis, & pinguis.

61 Si pars coniugij viri ceciderit in signis obedientibus, mulieris autem in imperantibus, mulier quidem impera-

perabit viro, vir autem obediet mulieri, sin autem contra, dic contra:

62 Ex dilectione si fuerint Domini triplicitatis coniunctionalis luminis coniuncti ad inuicem, primus secundo, & secundus tertio, permansibilem prosperitatem, & tristitiarum liberationem significant.

63 Cum ☿ erit in ♓ in gradibus putei facit natos insipientes, vel mutos. ♃ vero in domibus ♂, & in gradibus putei, facit sordidos, & egenos, & a militibus læsos. In domibus autem ♄ & præcipuè in ♑ & in gradibus putei facit rigidos, & omnibus odiosos.

64 Recipit naturam ♂ ☿ in domibus illius existens, & si fuerit configuratus eidem cadenti ab angulo, erit natus amator venationis, diliget ludere taxillis: si verò non fuerit cadens erit bellicosus, & miles.

65 Existentibus Planetis sub radijs, cum infra duodecim gradus Soli proximi fuerint infortunantur, nisi fuerint in eodem gradu cum eo, cum verò duodecim gradus transierint, existentes orientales sunt fortes.

66 Terribilia mala operatur ☊ cum malis, auget enim eorum malitiam, multa verò bona cum bonis,

per ipsum enim augetur eorum benignitas. ☿ verò sicut in situ, sic & significationibus obijcitur Capiti.

67 In loco sexto natiuitatis suæ si aliquis habet ☌, conuertetur à fide sua in aliam. Et qui partem felicitatis habuerit impeditam, hic non erit firmus in fide sua.

68 Signum primum in significationibus habet dominium, quando per duo signa significatio rei fiet.

69 A ☉ initium omnis rei accipitur, omnis finis vero a domino domus suæ.

70 Si ♃ in reuolutione annorum mundi fuerit in propria domo, vel exaltatione orientalis in angulo, & expeditus à malis penuriam annonæ significat.

71 Timetur ægrotantibus, cum ☉ & domibus ascendentis fuerint ab octaui loci domino impediti.

72 Rixam contentionem, aut litem nullo modo incipias, cum ☉ fuerit mali esse, nam si tali modo contigerit, eris proculdubio superatus.

73 Omnis rebellis, incipiens rebellare in principio Anni, obtinebit sine difficultate dominium.

74 ☉ existente in signis ruminantibus, vel coniuncta planetæ retro-

gra-

grado, non est bonum purgationibus vti, hæc enim vomitum inferunt vel alias læsiones.

75 Orientales planetæ bona exhibentes vel mala, cito dant; occidentales verò tardè.

76 Gradus coniunctionis luminaris, est media mora Eclipsis.

77 In reuolutione annorum mundi, multæ difficultates erunt, & prælia, cum in exaltationibus suis fuerint ♀ & ♄.

78 Esto suspiciosus atque solicitus, quando benevolus est cum malevola, nec valde confidas, quod mali malitia penitus auertatur.

79 Duodecim signa ab ascendente dependent, & ascendens quidem significat corpus, dominus vero animum. Studeas igitur omni modo vt non sint ascendens, & eius dominus impediti.

80 In signis fixis planetæ dum fuerint, rem durabilem significant, in bicorporeis vero dubiam, in mobilibus conuertibilem vel ad bonum, vel ad malum.

81 Vtere in rebus clandestinis ☉ sub radijs non eunte, sed exeunte.

82 Incidere vel induere nouas vestes ☉ existente in signo fixo, & præ-

sertim in ☊, horribile, & periculosum est etiam cum fuerit in coniunctione vel ☌ ☉, aut a malis impedita.

83 Habet in interrogationibus ☽ magnam potentiam, nisi fuerit ascendens ☊ aut ♐ vel ♒ deinde quidem eorum auferunt significationem ipsius, & præcipuè cum fuerint in ☊ vel ♒.

84 Est adhuc ♄ sub radijs, dum infra eundem, & ☉ 15. gradibus distantia fuerit. Idem de ♅.

85 Reprobatur in matrimonijs penitus ☽ in ♋, similiter, & in ♍, præterquam in matrimonijs viduarum.

86 Maleuolus eum erit orientalis in domo propria, vel exaltatione, melior est retrogrado & impedito beneuolo.

87 Erit impedimentum circa illam partem corporis, quam significat signum quod fuerit natiuitatis tempore impeditum.

88 Tunc fiunt prosperitates immensæ, quando domini triplicitatis Luminaris, cuius fuerit auctoritas sunt in angulis vel succedentibus angulorum, in locis proprijs, & ab aspectu malorum remoti. Et si dominus ascendentis fuerit boni esse, maius

lon-

longè erit bonum.

89 Idem faciunt planetæ per △ quod faciunt per ✶ minus tamen in bonis vel malis infert sextilis aspectus quam trinus.

90 ♄ infert mala cum tarditate, ♂ verò subito, & ideo ♂ reputatur Saturno deterius in nocendo.

91 Tunc dicitur magna coniunctio, quando tres superiores planetæ in vno de signis Regijs coniunguntur, & tunc Regna potentissima faciunt, quando aspiciuntur à Sole.

92 Reuelatur statim verbum occultũ, quod quæritur, quando ☉ & planeta cui applicat, sunt in signis vocem habentibus, & in quinto, vel tertio, vel in ♌ eorum.

93 Auget in octauo maleuolus suam malitiam, beneuolus vero ibidem neque bona exhibet neque mala.

94 Nunquam perficietur bonum vel malum, nisi quando planetæ boni vel mali in natiuitate vel in reuolutione ☉ asperint per quadratum.

95 Si ☿ in sexta fuerit impeditus, natus in carcere morietur. Si ♄ in duodecimo includetur, & ♀ in octauo præcipitium patietur.

96 Timendum est in principio ægritudinis, cum ☽ in die, ac ☉ in no-

nocte fuerint impediti.

97. Variantur semper significationes Stellarum, quando in configurationibus earum adinuicem ipsarum latitudines variantur.

98 ☾ in quarto, septimo, nono, vel duodecimo indicat causam illam, iam interrogatam fuisse. Idem indicat, si separata fuerit à ☿. Si vero fuerit ascendens signum bicorporeum, & ☾ similiter in signo bicorporeo, iterum ipsa causa quæritur.

99 In propria domo vel exaltatione si fuerit malus licet cum tarditate tamen exhibet bonum finem. Si vero idem in ascendente fuerit impeditus quamuis in domo propria, vel exaltatione, infert tamen impedimentum, & malum finem.

100 Terminatur finis euentuum omnis inceptionis, omniumque dubitabilium per hos significatores, videlicet per quartum, & dominum eius, & per planetam, si forte fuerit in eodem. Item per Luminare, cuius erit authoritas, & dominum eius, & per Planetam, cui Luminare ipsum coniungitur, & dominum eius.

His, & alijs, quæ tibi tradidi, clarissime vtere, & cum sobrietate vtendo, nunquam errabis, cum Dei auxilio,

FINIS.

# APHORISMI ASTROLOGICI LVDOVICI DE RIGIIS.

## Ad Patriarcham Constantinopolitanum.

1 IVdicia rerum futurarum non dantur, nisi expertis in esse planetarum suorum temporum, ex virtute tamen innata eorum. Errant quippe qui ex solo aphorismo iudicia pronunciant.

2 Mutata sunt loca Stellarum fixarum Augiumque, mutaturque quotidie, nec vultus cælestis aliter existens est.

3 Non certificandum est de esse alicuius Planetæ, nisi prius de dispositoribus loci illius te certificabis in esse mali, & tam exaltationis quam Dominij.

4 Paruum eurentum demonstra-

Planeta, si aliter significauerint dispositores in esse boni vel mali.

5 Leuem facit natum ♄ in domibus ♂. Si ♂ in ♌ & ☉ in ♈, non extiterit ibi ♄ existente, siue si ambos fortes, & in bono esse fortunarum non iudicaueris, hoc diximus de ♄. Nam magis vniuersalis planeta, & ad transmutationem naturæ suæ non est.

6 Remoueri significatores siue dominatores loci iudicium Planetæ, quamuis in aliqua parte ipse ad tempus naturam demonstrat.

7 Dominus horæ in omnibus formis figurisque considerandus est, ac dominus loci coniunctionis qui Anauba dicitur, sunt quoddam gubernaculum rei quæsitæ, velut qui dux magis potens, & fortis figuræ est.

8 Natiuitates quæ in apparitione Cometarum erunt, habentes angulum ascendentis illius siue medij Cœli signi in quo Cometa apparuerit, & Dominus domus, & Dominus exaltationis fortis illius anguli erit, natis indicabunt aliquid aliud singulare maximum venturum vltra significatum propriæ figuræ, & si ceciderit illud signum, & Cometa habens motum vehementem in decimo, siue in hemi-

spe-

sperio, Regem significabit venturum esse. Si in nono maximum Pontificem, si in vndecimo ductorem gentium. Et si hoc solum fortunæ disposuerint, sine damnatione infortuniorum, affirmandum est, aliquid diuum ex illo esse venturum, fortificanturq; significationes cum prope cingulum Zodiaci, aut in linea Zenith capitum nostrorum apparuerint.

9 Mutantur regna, & dominia, fides, sectæque ac opiniones hominum, dum mutantur auges planetarum de signo in signum, dico illarum gentium, quarum significator erit planeta augis permutatæ. Mutatioque erit ad bonum vel malum secundum naturam significatorum superiorum illorum temporum, & secundum naturam signi mutationis.

10 Durationes effectuum Prophetarum, erunt secundum annorum maximorum illorum significata. Si fortes extitetint in natiuitatibus eorum miscendo datum, domini domus, & domini exaltationis vna. Si debiles vero, quamuis illi boni essent, tamen tempus breue designat permanere leges, & dicta eorum.

11 Nunquam erit Propheta fidelis nec Pontifex, siue Dux ecclesiastico-

rum, qui ♄ retrogradum habuerit in nona vel in ascendente, quanquam omnes formæ bonorum essent in significatoribus cæteris, tam in secundis, quam in erraticis Stellis, nec credendum est verbis eorum, sed fugiendi sunt. Magna res est retrogradatio infortunarum, peiorq; extra domum suam, pessimeque in loco, in quo nullam habet dignitatem existentium in istis duobus locis.

12 Vehemens in Deum trahit caput in cuspide hemispherij, magisque dum dispositor loci fortis ex dignitate, & angulo extiterit, maximeque quando ♃ cum ipso erit parua latitudine, & in domibus suis, siue exaltatione sua, ij sancti sunt, & annexi virtute specifica Deo ex ventribus matrum. Hoc idem facit in ascendente sed non tanti nominis, & gloriæ.

13 Fœcunditas in prole designata ex dispositione quintæ, nulla aduersitate infortunarum ibi disponentium, siue radiantium existente, & Religio siue ducatus ecclesiasticorum raro, siue nunquam in vno subiecto assignandæ sunt. Si vero religio, & honestus ducatus fuerint assignandæ, transit virtus prolis siue V. adoptiuus

velut

velut pater multarum gentium, & pater Patriæ.

14 Dico ego quod ♃ in ♈ extra radios ☉, siue incombustus, ibi ☉ existente forti, fortique ♃ sine infortunio ♂ si in medio Cęli extitetit, facit vnum supremi ingenij sc ipso acquirentem scientiam, & forte si in ascendente ☊ & in secunda tenens gradu erit, poterit ex acumine ingenij, ex auri fonte aqua dulcissima manare, agilitatemque dat in scientia Stellarum, non tamen appreciati nominis est, nec ideo in bellicis erit famosus, vt multi iam affirmarunt, ♃ quidem per se planeta debilis est, tamen confortatur, & transmutatur in alterius naturam per dispositionem, & essentiam. Transmutatio vero optima est, si cum optimo transmutatur. Hanc quidem solum demonstrat ingenium nati in tempore partitionis sui dispositoris, secundum naturam sue essentiæ, magis, quam ante hoc tempus, in domo quidem propria, etiam ab incunabulis signum demonstrat.

15 Ille nunquam auarus fuit, qui non ex infortunis, vel ex domibus infortunarum significatum habuerit suarum diuitiarum, non enim auarus

fuit,

fuit, qui ex ☼ vel ☾ significatum diuitiarum habuerit.

16 Natiuitas non laudanda est, si fortior fuerit dominus duodecimi, domino ascendentis, non apprecianda est natiuitas, quando nullam dispositionem dominus ascendentis debilis de domino duodecimo habuerit. Natiuitas paruipendenda est, quando Dominus duodecimi disponit dominum ascendentis debilem, ipseque fortis, trahens ad se dispositionem formæ siue figuræ.

17 Nunquam te ipsum iudicabis; magis potens est Amor quam forma planetarum. Iudicia tui commenda perito magis natura quam arte, consilio periti huius scientiæ quiesce, si septimam ipse non impeditam ab infortunis habuerit.

18 Non confides dare iudicium de vita siue Alchocoden per iudicia domini domus Hylech, nisi prius cõsideraueris Dominum exaltationis. Vidi quidem ☾ in ☌ Hylech iunctam ♅ parua distantia in cuspide anguli quamuis septimæ, & mori antefinem octaui anni ☿ quidem in Scorpione fuit.

19 Planetarum aspectus non habentium latitudinem, sed manentium

in

in linea ecliptica gradus ipsius eclipticæ accipiendi sunt in eorum aspectu. Illi vero qui distant siue declinant in septentrione vel in Meridie, aspectus eorum erit distantia suorum centrorum vnius ab altero in linea æquinoctiali; quæ distantia non cum gradibus eclipticæ correspondet, nisi æqualiter essent in latitudine vna, oppositiones vero istorum tam existentium in ecliptica quam habentium diuersas latitudines, videlicet vnius Septentrionalem, alterius meridionalem, æqualiter in gradibus & minutis, oppositiones veræ sunt. Sed si omnes declinant in vna parte siue latitudine aliqua distantia, quamuis sint in gradibus oppositis, tamen inter eos nulla est oppositio, si distantia erit maior ab ecliptica quam corpus planetæ, & hoc accidit, quando nullus effectus oppositionis apparet, propter (vt diximus) eorum latitudines.

2o Oppositiones vero infortunarum in diuersis latitudinibus, terribilē habebunt effectum, demonstrabunt, inducentque effectus velociter interficientes, & auferentes vitam, siue dum alter duorum dispositor domini ascendentis fuerit siue nō, dum-

modo

modo auctoritatem in octaua habuerit non tamen inducunt effectus, si leuior iam recesserit ab oppositione, quamuis paucis gradibus, sed timorem, & extremum periculum inducunt. Alleuiant hoc malum in parte, aliquando in totum, si ♃ ascendentis fuerit adiutorio tamen infortunarum manu tenet gradum ascendentem.

21 In omni re, potissimè in omnibus natiuitatibus imagines ascendentes horizonta considerabis, quia in animis earum effectus valde imprimuntur, maximè cum erraticæ cum ipsis assimulantur in natura, & in forma quando cum ipsis faciunt, idemque Stellæ fixæ primæ magnitudinis existentes in latitudine Zodiaci simul, & vna ascendentes cum ipsis, est quidem iudicium harum occultum, nec vidi his temporibus nostris aliquem, qui ad hoc verteret ingenium.

22 In omni esse Annis; cum ♂ peruenerit in signis humanis maximè in ♍ tempore quo ☉ erit in ♌ Si ☿ dominus loci ♂ & ♀ quæ exaltatur in opposito retrogradabuntur in ♌ morbum crudelissimum esse designat, potissime in illis locis, in

qui-

quibus erit vel ♍ vel ♌ vel ♐ in ascendente suarum radicum. Idem faciunt ♊ & ♎, si ♑ combustus in hac figura associatus erit.

23 Verum oppositio diametralis duarum infortunarum, vt diximus, interficientium, & auferentium vitam fortior est Sole, ipso hylech existente, & Alchocoden in cuspide dignior um angulorum, adhuc incertum est nostris experimentis. Ratio tamen, & vis naturæ cum ☉ est. Tamen tale esse oppositionis timendum est. Magnus quidem Tygris in modica Thyriaca.

24 Signa æquinoctialia, & Tropica sunt ascendentia Regnorum mundi per ea quæ imperia eorum principia habuerunt, & fundamenta earum vrbium, ciuitatesque cæteræ quo in principio suarum ædificationum ex istis habente in ascendente, omnes imperio proprio conantur dominari, regereque se: discordiæve Regnorum propter oppositiones signorum suorum ædificationum sunt, nec vnquam inter hos homines concordia est, quamuis debilior à potentiori funditus diruatur dominaturque.

25 Diuisiones, & intestina bella eo-

eorum eueniunt, quia quodlibet signum istorum dominum domus habet, & dominium exaltationis non vnius naturæ siue temperiei, ex hoc vt plurimum terminant in crudelitate, & sanguine per intestina bella, si non ante à potentiori, videlicet ab opposito eorum signorum diruantur, minus in hoc nocet ♋.

26 Imperia, & Reges eorum sunt ex signis medij Cœli, siue ex signis nonæ eorum: velut religiones fidelitatesque iustitiæve ab istis duobus locis sunt, nec in hoc te immemorem esse volo, quod Vrbs Romana à ♑, & religio Romanorum a ♎ principium sumpserint, velut Aphrica à ♋ & religio eorum à ♐ orta est.

27 Sunt amicitiæ, & concordiæ Regnorum, ideſt vnius cum altero, aut ab aspectibus eorum ascendentium amicitiæ aut concordia naturæ suorum dispositorum, vel à quadam forma substantiali suarum figurarum terminante in vno complexu.

28 Nunquam iudicia ascendentis dimittes, si etiam vltimum minutum signi ascenderit, nunquam obliuiscaris de signo participante in ascendentis partitione, quamuis alter sit ascendens in cuspide, nunquam im-

memor eris de natura mixta duorum signorum participantium in horizonta, est eademque ratio in omnibus dispositionibus eius.

29 Coniunctio duorum superiorum in terminis ♄ boni aspectus luminaris temporis & dispositoris, si in prima ceciderit cum aliquo aspectu ☿ directi ac velocis; demonstrabit natum supremi ingenij profundæque memoriæ, & summæ imaginationis & contemplationis. Si in X. famosum dominium vel magisterium tenere siue habere, vnde sic in omnibus locis circuli siue participationis designat natum ab illis præeminentem in significatione illius partitionis esse.

30 Rarò siue nunquam sublimantur homines, quamuis vilis progeniei reputentur siue aapparent, si non ab radice aliquorum præteritorum habuerint figuræ, eorum exordium siue radicem vel concordiam, & si aliter aduenerit, non finem bonum nec famosum nec quid dignum exiuerit ex eis. Nam formæ cælestium corporum, non in vno ictu, vt ita dicam, aliquid perfectum deducunt. Genera & species habent dignitates, virtutes & mores, ex quibus

bus causantur indiuidua earum quæ à longè in prope descendunt virtute vultus cælestis secundum formam & regulam omnium causatorum & indiuiduorum ex propria radice siue genere.

31 Diuisæ sunt generationes hominum per coniunctiones superiorum, maiores, mediæ, & minores, secundum quod magis in vno indiuiduo, quam in alio descendunt per participationem suarum figurarum, vnde supremi digni, & communes homines assumpserunt ab illis naturam conditionis, deinde per tempora rotantur secundum hanc dispositionem, & transmutationem figurarum corporum cœlestium. Cum ergo & aliquibus istorum generum erit figura nati configurata cum formis suorum principiorum renouatur illico illa sublimitas & gloria illius primæ demonstrationis, secundum vt diximus, naturas trium coniunctionum superiorum diuidentium species qualitatum hominum in trib. Sunt verè filij Dei qui à maxima coniunctione descenderunt, siue originem traxerunt, non hic de horoscopo, vt in libro de Ciuitate narrat, vno inconuenienti dato plura sequuntur.

32 De-

32 Deteriorantur genera hominum per transmutationes illarum magnarum, cum succedentes inimicabiliter configurantur cum figuris præteritarum, vnde vna rota ascendunt & descendunt, quæ perpetuo nec vno esse, nec vna forma rotantur.

33 Electiones Regum de hora intronizationis, aut de hora prælij vel de obsidione Vrbium, fac configurare cum radicibus suorum regnorum, aut cum radicibus coniunctionum superiorum propinquis à suis primis progenitoribus, & cum radice propria. Sed si configurationem bonam non inueneris in tuis temporibus, magis fac vt concordes cum radice sui regni siue suorum primorum quam cum cæteris figuris. Tamen si vnam formam vniuersalem conformem his radicibus optima conformitate non dubites de victoria, & gloria harum electionum.

34 Similiter Regna vel ædificationes Vrbium ♌ existente in octaua modicæ durationis sunt, & id quod in ædificationibus assignamus, idem de intronizationibus. Cauendum est igitur in omnibus rebus vel

figu-

figuris, ne in octaua ☼ ponas super electionem durationem temporis esse desideras.

35 Nulla diuisio circuli tam pessima, tamque crudelis in omnibus, quam octaua est, bene ergo fecerunt, qui de fortificatione octauæ per fortunas scripserunt illis, qui ad aliquem locum se transmutant causa lucri, siue vtilitatis. Sed quidem pessimum erit, si introeundo ibi, Solem cum suo significatore damnaueris, non reuertitur ad Patriam si hoc acciderit.

36 Nullum lucrum ab octaua habebis, nisi ex mortuis, aut à mulieribus tuis, quia secunda, à septima, est mulierum, nullum lucrum ab octaua inuenies, nisi dominus octauæ in secunda tua erit, & tamen fortuna nullum lucrum inuenire posses, nisi dominus octauę configurationem bonam secundum rem quæsitam tuam habuerint.

37 Dico ego, nunquam gloriam, & excellentiam completam habebis à ☼, nisi in his tribus locis, videlicet in prima, decima, & nona. In his tribus ex virtute specifica aliter infundit excellentiam propriam, quam in alijs angulis vel locis. Ideo in omni

na-

natiuitate in qua ☉ inuenies in vno istorum locorum, prudenter ipsum considerabis, nam iudicia ☉ non sunt obliuioni mandanda.

38 Quanto nobilior est ignea triplicitas, triplicitate aquea, tanto dignior est aerea triplicitas triplicitate terrea. Ideo cum videris tres planetas fortes in triplicitate ignea, non festines iudicium, nec idem tradas in rebus paruis, & maxime si ☉ & duo de superioribus in ipsa triplicitate manserint. Idemque vt diximus, si tres in aerea triplicitate cum ☿ manserint, de ingenio & sublimitate scientiæ testificabis tuo iudicio, præeminentes, sunt enim hæ duæ ab alijs duabus, prima quidem in celsitudine & gloria, secunda vero in bonitate, & profunditate ingenij.

39 Cum superioribus nunquam iudicia de paruis rebus trades, cumque inferioribus de rebus magnis. Vilescunt tamen superiores per dispositionem inferiorum, vti magnificantur, & amplificantur virtutes eorum inferiores per superiorum dispositionem.

40 Manent virtutes & significata erraticarum, si non combustas, &

re-

retrogradas has Stellas inuenerit, bona vero deteriora fiunt, malaque amplificantur, quando in his figuris & tali esse disposita sunt.

41 Omnes figuræ quæ fuerunt, vel sunt in tempore transmutationis augis sui significatoris aliquid aliud dignum additum est, quam significatum propriæ figuræ. Considerare ergo sapienter has transmutationes in omnibus iudicijs, ac formis necesse est. De his autem in alijs mentionem fecimus.

42 Fortificabis tua significata, si de loco vili, in dignum te transferes non enim effectus nobilis figuræ agnosces, si in locis in quibus exaltantur homines, secundum legem eorum locorum manseris, dum lex numerat subleuandos. Liber quidem hic diuum Cœlum est, tu quidem vero cum libris ingenium assuesce.

43 Erit quidem agricola, cum cœlestem formam optimam habuerit, maior in rure suo, velut ciuis idem fermè in Ciuitate. Filius vero Principis Dux, siue Rex suarum gentium, mutanturque hæc ad altiorem locum, si ad loca apta nata ad rem transmutantur. Ideo ex vna forma

sæpè

sæpè diuersa procedunt iudicia; de hoc autem in alijs diximus aphorismis.

44 Non solum per reuolutiones annorum Ciuitatis vel mundi aut sectæ cognitionem futurorum habueris, oportet enim directiones ipsorum principiorum considerare.

45 In reuolutione Anni mundi si Dominus Fridariæ est bonus, & in esse bono, annus erit bonus, & contra.

46 In qualibet reuolutione Ciuitatis vel Regni, in qua signum ascendentis ceciderit in partitione octauæ, & directio illius temporis ibi in octaua existens & ♂ crudelissimas esse dissensiones, & effusionem sanguinis iudicandum est.

47 Mouentur noua mala in Ciuitate quando directio peruenerit ad quadraturam, vel ad oppositiones infortunarum, peioraque, quando ad ipsas infortunas directio peruenerit retrogradantes, infortuna non existente significatrice in radice illa, scilicet ascendentis Ciuitatis, nam suis non tantum nocet. Pessimum omnium si directio ad ipsas infortunas simul cum ipsis, & ascendente, vt diximus in locis ti-

mendis ceciderit, & maximè in octaua.

48 Figura natiuitatis, erecta per instrumentum, siue per Astrolabium, & si discordauerit cum Animodar, tenenda est pro radice tamen iterum dirigenda est secundum loca Animodar, & ambabus vtere in reuolutionibus, vt per accidentia annorum te certifices, in fortiori hora dico quando distantiæ sunt non paruæ atque notandæ, cum mutantur facies vel signum.

49 Directiones etiam faciendæ sunt, per gradus æquales, veluti departæ fortunæ, vt magis rimatum iudicium perueniat, quanquam non sunt omnino omittendæ directiones antiquorum, iam superius descriptæ considerandæ namque sunt vtræque.

50 Fortiori est figura reuolutionis aut radicis, quam Fridariæ descriptæ, & diuisores a multis si simul contrariantur.

51 Nullus effectus siue paruus à reuolutione vel ab alijs significantibus erit quod non primum à radice habeat exordium. Iam in primis de hoc patefecimus; quare summa diligentia radices considerandę sunt.

52 Vni-

52 Vniuersaliores homines sunt habentes erraticas stellas in diuersis partitionibus, quam adunationem earum plurimarum in vna. Sed ij quidem in vna re, siue in re illa illius partitionis magis præeminentes erunt, dicimus hoc, cum in esse bono erunt vtræque formæ.

53 Fundamentum principale in reuolutionibus annorum mundi, est introitus Solis in primum punctum Arietis. Porrò multa necessaria ad hanc inquisitionem sunt, & scientia multorum experimentorum, & cognitionum superiorum præteritorum temporum, & magnatum Eclipsium, profectionumque.

54 Natiuitates quæ bonæ configurantur cum figuris annorum mundi, existente bono esse, iudicant nato præeminentiam ab alijs, & præcipuè si ☉ non extra principium ♈ habuerit.

55 Natiuitates, quæ configurantur cum coniunctionibus ♄ & ♂, & triplicitate ignea vel in ♐ deducunt viros ad animositatem, et ad arma magis quam in alijs locis siue triplicitatibus, & si cum hoc ♐ solque configurentur, deducunt ad principatum militiæ, & ad duca-

tum armorum ſtrenuè ſummave fœlicitate.

56 Cum ☾ in reuolutione Martı applicat, hæ interfectionem inter Reges ſignificat & deſcenſum nobilium de gradibus ſuis, & eleuationem vnius ſuperalium.

57 Natiuitates, quæ Solem cum vno trium ſuperiorum coniunctum eſſentialiter, & ſine latitudine planetæ illo eclipſato à Sole ſic in corde habent, ad altum gradum demonſtrant peruenire natos, ſi fortes in vno duorum dignorum angulorum extiterint, vel in gaudio Solis, ſecundum tamen naturam, cui coniunctus, ☉ erit.

58 Cauda in ſecunda vna cum ☾ virum facit diſpenſatorem ſubſtantiæ ſuæ ſecundum naturam tamen illius planetæ, qui ſigno dominabitur. Idemque ♂ in ſecunda & ☉ ſiue cum cauda ſint ſiue non ſint, ſed hoc dictum eſt, dum ♂ vel ☉ extra domum vel exaltationem ſuam erit. Vnus quidem in locis proprijs per rapinam & auaritiam deſignat ſubſtantiam, alter cum honore & laude acquirit, quanquam delectatur ſemper in dando, vt alter in

diſpen-

dispensando proprio appetitu sed nunquam sic dispositi paupertatem esignant.

59 Non solum per secundam prosperitates siue diuitias iudicabis. Sunt quidem dona, magisteria & dominia, quæ per secundam non iudicantur. Pars vero fortunæ etiam significationem propriam habet, dico de illa, quæ diu noctuque à ☉ in ☽ dirigitur affluere proprias diuitias, & assignare facit.

60 Per X. solum de dignitatibus pacificis, & honoribus non præsumas tradere iudicium, nisi prius ♃ considerabis. Porrò ipse per bonitatem suæ naturæ propriè has infert.

61 Si Dux natiuitatis ♃ erit, siue dispositor totius, fortisque ex angulo & existentia, pium, iustum, verum, fidelem iudicabis natum, venturum ad nullam penitus indigentiam victus, & hoc contrafaciunt infortunæ malæ dispositæ.

62 ☉ in ♈ in octaua indicat calidam infirmitatem in capite, & in pectore non euadet, in principio ægritudinis, si in hac dispositione fuerit, non perueniet ad XIX. diem. In natiuitatibus verò, si ipsa erit lu-

minare temporis in hac figura non longæuum designat, sed potius mori ante completam iuuentutem, siue ante ætatem effusionis spermatis siue seminis.

63 Mora in vtero matris maior, non vltra erit motum Solis per 9. partes circuli Zodiaci, videlicet, à primo puncto effusionis seminis vsque ad horam exitus de ventre, ne credas hoc aliter esse ex cursu naturæ, quanquam quamplurimi non hoc modo dixerunt, nescio qua ratione, qua radice quibusue experimentis, cursus quidem naturæ seruandus est, & ratio physica, Astronomica, vt demonstrauimus in opere Practicæ huius compositæ à nobis.

64 Maius impedimentum quam esse possit in dandis filijs, significator in quinta retrogradus est, siue combustus, quod peius est, pessimum quidem, si erit infortuna.

65 Coniunctiones totius Anni oppositionesque & quadraturas si de qualitate temporis iudicaturus sis, necesse est vt consideres. Per has autem causantur diuersæ transmutationes temporum.

66 Ne obliuiscaris Stellas fixas,

& gradus nonæ sphæræ immobiles, in quibus fiunt eæ coniunctiones, & quadraturæ, virtutes mansionum miscendo.

67 Effectus Eclipsis ☉ in gradibus ascendentis reuolutionum natiuitatum apparet in illis recto reuolutionibus, quæ ante horam Eclipsis erant non transcendit effectus talis Eclipsis, in quibus non est in hora, in qua fuit Eclipsis sine determinato medio. Non sentit pondus, vt ita dicam, talis vmbræ arbor vel semen, qui adhuc radicem non emisit, sed cum alterata sint ab Eclipsi elementa, & ea quæ in reuolutione anni naturæ existunt siue esse debent, alterantur. Alteranturque eæ, quas diximus reuolutiones ab illis elementis alteratis, dum non fortem hylech habuerint radices, vnde non immediatè qui tales reuolutiones habent, sed per talia media alterata alterantur. Vnde ad hoc fugienda sunt loca, in quibus effectus pestifer Eclipsis est.

68 Cum in aere apparuerint vapores densi, velut fumus, directi in altum forma rotunda & longa, velut strictæ pyramides perpendiculares, sintque

sintque erectæ in altum ascendentes, iudicabis cito terræmotus vehementissimos venturos esse. Sunt enim vapores de natura ♄ in domibus ♂ & præcipuè in ♋ erunt quippe terræmotus in illis partibus, in quibus videbis illos, vel longe parum à loco illo.

69 Non confidas de loco martis per calculationem solam, sed per instrumentum & per aspectum suæ coniunctionis cum altero Planeta, vel cum Stella fixa, non adhuc rectè inuentus est per tabulas verus locus eius sine errore, quam pluries error in esse Martis. Magnum quidem est & maximè eum de coniunctione eius iudicaturus sis, vel quando in corde ☉ ipsum reputabis.

70 Coniunctiones aliquorum corporum cum altero, non per lineam horizontis, siue per ascensiones regionis assignantur, sed per lineam diuidentem Zenith in duobus partibus, transeuntem per vtrosque polos. Quare persæpe non coniuncti in horizonte videntur, & verè sunt, instrumentum enim sphæræ solidæ facilè hoc certificat.

71 Summa diligentia quære coniunctionem ♄ & ♃ præcisè in minu-

tis

tis & secundis, & vltra si potes, vel vt potes, ne erres in signo ascendentis eorum coniunctionis hoc propter tarditatem motus ♄ Sin autem aliter, incideres in errorem maximum. Sunt idem constituendæ coniunctiones malorum in ♋.

72 Magis virtus Stellarum fundi-tur fixarum septentrionalium tur quam meridionalium: causa est propinquitas Zenith, & Virtutes quæ inter Zenith & lineam vitæ sunt magis, quam inter hanc lineam & Meridiem, propter vim perpendicularitatis: nec fortè virtus est perpendicularitatis, sed innata & specifica, velut illarum, quæ sunt in signis oppositis, & ipsæ inter se diametraliter oppositæ, quæ designant æquales parallelos in ascensionibus suis.

73 Si aliquam rem vis facere vel formare, summa virtute specifica apta quantum potes cum fortunis & cum figuris ad rem talem, qualem velis formam siue vultus cœli similem formæ siue rei faciendæ, nec discordare facies formam finis operis siue figuram cœlestem à forma principij, & si hoc erit medium, idem erit.

74 Non semper in omni tempore

quas quæris figuras cœlorum habebis. Tempus enim has inducit porrò melius est per totum tempus vitæ manere, quam rem vanam componere.

75 Si festines, apta formas, vt diximus in compositione operabilium, sed in imaginibus faciendis tempus oportet ad rem quæsitam. Non aliquid est, si perfectum non est, namque non omnes vno tempore fuere, nec vnam rem omnes facere, quamquam sciuissent.

76 Infortunis magis vtendum est, quam fortunis in rebus magicis, si honestè credimus esse; nec tamen neglige fortunas.

77 Res multæ sunt, quæ non videntur ratione naturali esse, effectus quidem earum, per formas superiorum corporum considerare possumus, habereque eas, si in tempore proprio inuestigatæ quæsitæque sint.

78 Non modicam scientiam superiorum habere conuenit, qui multa ad effectum ducere volunt, velut ignis & malleus artifici, ita hæc scientia ingenioso necessaria est.

79 Quare cum ipsa scientia Astrorum id, quia necesse est in omnibus ea vti. quærere contingit multa,

qui

qui à natura, & ab arte ad illam ducti sunt.

80 In omni morbo Luna considerandа, velut ♃ in omni gloria. ☽ in ♂ ♂ morbos venenatos inducit, sicut in signis igneis, terminanturque citò, & raro ad vitam ☽ iuncta ♂ in signis aereis, & præcipuè in ♊ incisionem fieri seu percussionem demonstrat.

81 Detestabilissimæ sunt figuræ infirmitatum, quando ambo Luminaria in oppositо duarum infortunarum ac vtraque malo aspectu.

82 Per applicationem ☽ ad fortunas non dispositas ab infortunis vincitur natura morbi, per separationemque ab illis, & applicationem ad esse infortunarum cautatur mors.

83 Fiunt quoque fortunę infortunę in morbis, quando ipse morbus de natura fortunarum siue de natura suarum significationum erit, & in hoc infortunæ fortunæ sunt, quia contraria contrarijs curantur.

84 Coniunctio Luminarium in signis ♂, vel in signis humanis, ♀ ac ☿ ibi ℞ morbos inducunt terminantes omnino ad mortem, & si illa ☌ erit in ♈ ducet infirmum extra mentem sine spe.

85 ♂ in ascendente hora infirmitatis in capite designat morbum siue in facie, vel in aliqua parte capitis esse, cognoscituruque per aspectum aliarum erraticarum. Infirmitas quidem erit ad mortem vel ad vitam secundum esse domini ascendentis & ☉. Hæ vero significationes infirmitatum paruam moram siue terminum habent.

86 Vapores accensi per aerem currentes siue in forma Cometæ siue in alijs formis infirmitates calidas acutęque naturæ designant, præliaque, & dissensiones Regnorum & ariditatem frontium, ac fluminum. Currentes vero hinc inde per omnes partes, malum vniuersale demonstrant, si in vna magis quam in alia, in illa erit magis significatum. Sed si omnes igneitates in vna parte discurrerint, in ipsa erit extremitas omnium malorum simul & fames.

87 Signa quæ videntur in Cœlo vel in ☉ aut cum alijs Stellis, quæ apparuerint extra motum & cursum naturæ, sed alio modo, vt ita dicam, ignoto, velut cruces, velut rutunditates circulares, vel sicut columnæ vel aliæ formæ, si horam considerabis, in qua hæc apparuerint, comprehendens,

cer-

certificabisque te in' significatione harum, quamuis quod nunquam eæ eueniunt sine magna mutatione Regnorum illius climatis in quo apparuerint.

88 Corpora monstruosa & portenta, quando vltra modum acciderint, hoc idem indicant, vt dictum est in alio, horaque ipsorum considerandæ est, nihil accidit, quin à corporibus supercelestibus designetur effectus.

89 Tempus omnium istarum rerum apparitionum quantum ad effectus earum cognoscitur per essentiam ♄ & ♃ & per ♂ Martis cum ipsis, & per retrogradationes eorum, directiones, atque combustiones, necnon per Eclipses maiorum, scilicet ☉ in ♌ vel ♈, quando totum corpus notabiliter obscuratur.

90 Genituræ Principium, maximę veræ, nec subiacent generalibus constitutionibus, nec priuatorum decretis, Procerum veræ, subiacent autem Cœlo. Pauperum & seruorum non adeo veræ; subiacent enim Cœlo, ideſt legibus genituræ Principum, & generalibus constitutionibus. Bene igitur dixerunt aliqui, Principum

fuc-

successus, astris non subiacere, puri enim sunt.

91 Sol vita naturæ magnipotens in ♌, sed quidem in ♈ virtus & origo nascentium est.

92 ☉ in ♋ velut ☽ in ♌, & in Tauro sicut ille in ♈ dignitatem tenet.

93 Potentes magis sunt Planetæ in angulorum cuspidibus carentes omnino dignitatibus, quam in cadentibus siue gaudijs in domibus & exaltationibus suis.

94 Dant dona sua in cuspidibus angulorum Planetæ, sine tamen honore & gloria peregrini.

95 Planeta in casu suo in cuspide digniorum angulorum, iudicium suum retardat, non tamen infortuna.

96 Melior est natiuitas fortis ex angulorum fortitudine, quam ex fortitudine dignitatis angulorum cadentium.

97 Interrogatio fortis est, dummodo significator rei fortis in re quæsita sit.

98 In vanum est interrogatio facta, quando figura extra propositum est.

99 Error maximus iudicantis est

cum

cum debilis est significator suæ radicis, & septima.

100 Vanè quidem interrogauit, & non ex corde, cum fortis Planeta in figura & diuisio circuli non idem bonum vel malum, vt petit, assignat.

# ALMANSORIS

## Astrologi Propositiones, ad Saracenorum Regem.

*Aphorismorum compendiolum, mi Rex, petijsti, vt tuis satisfaciam votis, laborem nequaquam subire recusaui. Scripsi, æquo animo accipias quæso.*

1 SIgnum dispositionum, vt dicam, ab ♈ fit initium, vnum scilicet est diurnum, alterum vero, nocturnum, vnum masculinum alterum femininum, vnum leue alterum graue.

2 Cuiusquam Planetarum 7. exaltatio in illo loco esse dicitur, in quo substantialiter patitur ab alio contrarium, veluti ☉ in ♈ qui ♄ casus est. Sol enim habet claritatem, ♄ tenebrositatem, & vt ♃ in ♋ in quo ♂ cadit, quorum alter cupit iustitiam, alter vero iniustitiam. Et

sic

sic ☿ in ♍ qui casus est ♀ alter namque significat scientiam & philosophiam, altera vero causat alacritates, & quicquid est saporiferum corpori.

3 Significatio partium circuli, ò Rex Magne, super vnum solum est, sicut signum igneæ partis, significat super ignem, terreæ vero super Terram, aereæ super aerem, & aquaticæ super aquas.

4 ♈ ♌ ♐ est triplicitas calida & sicca, amara, ignea, diurna, masculina, & significat choleram rubram, ♉, ♍, & ♑ triplicitas terrea frigida sicca nocturna, fœminina, & significat choleram nigram. ♊ ♎ & ♒ triplicitas est aerea calida, humida, & sanguinea, dulcis diurna. ♋ ♏ & ♓ aquatica triplicitas est frigida humida, phlegmatica, insipida, nocturna.

5 Fortunæ largæ sunt, & fideles infortunæ verò sunt auaræ & infideles.

6 Fortunæ nihil cum labore dabunt alicui. Infortunæ vero quicquid dabunt abbreuiabunt & auferent.

7 Quando duæ coniunguntur, infortunæ fit ex eis fortuna perfecta, sicut ex duarum fortunarum coniunctione, & hoc ex Ptolæmeo.

8 Om-

8 Omnium aſpectuum Planetarum, optimus eſt △ & ✶ deterrimus vero □ & ☍.

9 Non prodeſt aſpectus △ & ✶ infortunarum: ſicut nec obeſt □ & ☍ fortunarum.

10 Ex multis vitæ ſignificationibus in hyleg, ſignificatur multa, & longa vita, & purus intellectus maximuſque vigor.

11 Cuicunque fuerit Mercurius in radice natiuitatis in domo ♂, erit malæ ſuſpicionis, & feſtinus in ſuis negocijs.

12 Cuicunque fuerit ☿ in natiuitatis radice in domo ♄ erit magni intellectus, longęque cogitationis ſapiens, & Philoſophus.

13 Nunquam erit pauper, & inops, cuius natiuitatis dominus fuerit ☿.

14 Cuicunque fuerit ☿ in aſcendente infortunæ, turpem notam in facie patietur.

15 Non poterunt eius oculi euadere ab impedimento graui, cuius in natiuitate ambo Luminaria fuerint impedita.

16 Non amittet ſenſum, in cuius natiuitate ☉ iuerit ad ☿,

17 Cum fortunæ præfuerint natiuitati, erit natus largus & diligendus,

ſi

si autem infortunę prę fuerint, auarus erit, & abhorrendus.

18 Cui ♄ in natiuitate præfuerit sordidus: & cui ♂ fętidus.

19 In cuiuscunque natiuitate fuerint infortunæ in domo octaua, mala morte morietur. Si verò fortunæ ibidem fuerint, in lecto suo migraturus est.

20 Non congregabit pecuniam, nec thesaurizabit nisi ille, cuius ascendentis dominus, & dominus quarti fuerit idem planeta, sicut non lucrabitur pecunias nec diuitias, nec viuet splendidè, nisi cuius dominus ascendentis, & dominus decimæ fuerint idem.

21 Non poterit inter duos esse dilectio, nisi fuerint in radice natiuitatis Luminaria commutata: ideſt, vt sit vnum in loco alterius in natiuitate socij sui. Odiosi verò sunt ad inuicem, qui in oppositis horum nascuntur, & in oppositis signis vel quadratis, vel dominus illorum signorum existentibus in hunc modum, aut Luminaribus se conspicientibus illo modo.

22 ☿ significat madefactiones & pluuias, sicut ☿, itinera & mutationes ac peregrinationes significat.

23 Qui

23 Qui accesserit ad regem ☉ in ♒, nec recipitur, nec aliquo modo de eo curabit Rex. Si autem ad eum accesserit ipsa in ♐, auertet faciem suam ab ipso.

24 Non erit bona sanguinis minutio ☉ in ♊, sicut nec erit conueniens vti ventosis ☽ in ♉.

25 Meliora signa in accipiendis laxatiuis & purgatorijs sunt aquatica. Sed eorum optimus est ♒ deterrimus vero ♋.

26 Melius signum in societatibus est ♎, deterius vero ♈.

27 Stellæ fixæ dant dona grandia, & ex paupertate subleuant ad sublimitatem, quam non faciunt Planetæ 7.

28 Perfectus medicus erit, cui ♂ & ♀ fuerint in sexta Bonus vero cantor ille, cui ☿ ℞. cum ♀ in eodem signo.

29 ♀ in 1. grad. ♋ facit pluuias.

30 Cum Planetæ ponderosi fuerint occidentales à ☉, dabunt probitatem circa finem vitæ, & è conuerso.

31 Qui emerit aliquid ☽ à capite ♋ vsque in finem ♎ emit care, vendetque vili, contra à principio ♑ vsque in finem ♊.

32 Non

32 Non est bona circumcisio ☽ in ♑ sicut nec bonus vomitus in ♌.

33 Illius signi naturam, in quo ♀ fuerit, nato attribue: cum enim fuerit in ♌ dabit amorem: in ♉ cantus, & in ♑ coitum. Ratio est quia ♌ habet cor, ♉ guttur, & collum ♑ veretrum.

34 Cuicunque fuerit ☿ in 12. erit sapiens, & magnus Philosophus.

35 Cum in radice natiuitatis impedietur ☽, ceciderintque omnes domini triplicitatum 5. hyleg, maximeq; verò primus dominus triplicitatis ascendentis, fueritque in aliquo angulorum infortuna, indicat nato vitæ paucitatem.

36 Venus dissoluit quod ligat ♂. ♐ autem quæ ligat ♄, & hæc significatio est super res magnas.

37 Cum ceciderint omnes Domini Triplicitatum, fueritque in aliquo angulorum vna Stellarum fixarum exaltationis primæ vel secundæ, quæ sit ex natura dominorum triplicitatum, perficietur ei nutritio, & transibit eam.

38 Quod cadit super ☽ ex malitia ♂, & ipsa aucta lumine, equale est ei, quod cadit super eam ex malitia ♄, ipsa lumine diminuta. Hoc autem ca-

pitulum res grandes significat : nec scietur esse hæreticorum nisi ex ♆, sicut neç esse Regum nisi ex ☉.

39 In electionibus Regum commendantur signa planetarum altiorum, sicut in electionibus impotentum signa inferiorum planetarum commendantur.

40 Illa quæ fortunium altius indicant, sunt ♆, ☽, pars dominationis, domus quoque secunda, & qui in ea fuerit eiusque dominus. Dominus etiam triplicitatis luminaris, cuius fuerit auctoritatis, necnon dominus decimæ, & qui in ipsa fuerit.

41 Cum significator erit inter ascẽdens & decimam, erunt dies & horæ, cum inter decimam, & septimam erunt septimanę, & menses, inter 7. autem & 4. erunt Anni.

42 ♄ cum fuerit in signis fixis faciet mortalitatem & caristiam, hoc autem sapientes, experti sunt.

43 Cum volueris alicui eligere, nec poteris differre, si ☽ fuerit impedita, pone impedientem dominum ascendentis.

44 Melior ictisal est in longitudine & latitudine fortunę corroborant naturam boni, & vilificant naturam mali: infortunæ verum contrarium agũt,

45 Cu-

45 Cuiuscunque Planetarum natura superior fuerit, non cessabit eius actus, vsquequo sit ibidem eius contrarium.

16 Cum nequiueris electionem differre, ponas ascendens, & eius dominum saltos, necnon nomina fortunarum ponas in angulo, & quod melius est in X. non nocet ♂ in itinere per aquam, sicut nec ♄ per terram.

47 In itineribus caue signa fixa, mobilia elige.

48 Cum aspexerit infortuna significatorem, fueritque retrograda, & cadens, necnon in loco, in quo fuerit peregrina, idest in nulla dignitatum suarum, & in signo contrario suæ naturæ infert significatori malum, quod nullus curare poterit, nisi solus Deus.

49 Cum ♂ appropinquauerit terræ, pacificabitur cum ♃, ♄ quoque sic pacificabitur cum ♀, & ☉ cum terræ appropinquauerit, & est ascensio duarum partium in parte vna.

50 ☉ Soli concordat, cum fuerit aucta lumine & numero, omnis quoq; Stella luminosa ei concordat.

51 Quando ♂ debilitatur, ♀ confortatur, sicut ♃, ♄ debili, minuitur malitia infortunarum, cum in aliqua dignitatū suarum fuerit, & è cōuerso.

52 Cum

52 Cum recipit infortuna fortunam non impedit eam, maximè autem cũ non aſpexerit eam ex □ vel ☍, nec fuerit in eodem ſigno, maximum eſt Planetarum impedimentum, cum fuerit in locis peregrinus.

53 Omnis Planeta cum in eodem puncto ☌ coniunctus fuerit, ibi feſtinanter cum ad eum acceſſerit ibi pedetentim.

54 Fortius teſtimonium eſt ictiſal ☾ ad planetam, qui fuerit in X. vel aſcendente.

55 ♒ ſignificator eſt ſuper aquas multum mobiles, ♏ vero ſuper aquas currentes riuorum: ♓ quoque ſuper immobiles ſcilicet, vt lacunas, & puteos.

56 Omnis res quæ feſtinanter fit, & cito deſtruitur, & quæ reiteratur eſt in ſignificatione ♂.

57 Omne quod feſtinanter ſit, & ſubito deſtruitur, ac diu deſtructum permanet eſt de natura ♄ & ♂.

58 Quicunque fuerit ex ſtirpe regali, ſi in eius radice natiuitatis fuerint duo Soles, erit Regibus contrarius, ſeparabiturque ab eis in operibus ſuis.

59 Cuicunque fuerit ☾ hora natiuitatis in ♉ in minuto aſcenſionis

nis ad magnam exaltationem perueniet.

60 Ea, quæ accidunt in hoc sæculo, sciuntur & inuestigantur ex magna fortitudine superioris significatoris & ex sua eleuatione, & si ea non fuerit, exquiritur à planeta ad quem iuerint omnes alij planetæ.

61 Si quid significauerit alicuius planetarum in natiuitatis radice, cum diuisio & dominus ad eum peruenerit, apparebit eius significatio, seu bona seu mala fuerit.

62 Cum dominus X. retrogradabitur ab ictu sal domini ascendentis, non recipietur natus à domino suo. Cum Dominus ascendentis & ☉ fuerint in ascensione, & duæ fortunæ similiter aspexerint sese ad inuicem, erit natus multum fortis & potens, nullusque præteribit eius mandatum.

63 A gradu ascendentis scies accidentia corporis, à gradu partis Fortunæ esse substantiæ. A gradu vero ☉ esse corporis & anima à ☿ autem gradu valetudines eius, sed à gradu medij Cęli magisteria, & opera dignoices, vnicuique gradui da annum.

64 Fortunabitur, eritque boni esse, necnon potens ille, cuius annus reuolutionis similis fuerit radici, & cuius

circulus in eadem similitudine fuerit, in qua erit ipso anno radicis.

65 Diurnum esse nati accipitur ex directione, aliter ex motu domini, aliter de die in diem esse nati accipitur ex motu domini signi profectionis anni in terminis expositis domini signi alynthiæ anni ad terminos expositos.

66 Cum ♄ ascenderit in altiore parte sui circuli, idest, in sua Auge, coniungeturque ☉ Soli in extremo mensis, & ipsa fuerit ad eum, significabit augmentum rei, quæ fuerit ex natura signi, in quo ipse fuerit.

67 Cum fuerit planeta in ipso minuto gradus orientis, coniungeturque ei ☉ in eodem loco, apparebit actus naturæ illius planetæ seu bonus, seu malus fuerit.

68 Cum aliquis planeta dominabitur alicui anno, ex annis mundi, in ipso gradu suæ exaltationis apparebit eius significatio, & eleuabitur Rex in Regione illa, & in climate in quo ab ipso significabitur.

69 Impedimentum ☿ à ♄ debet impedire linguam nati, deterius autem si corporaliter coniungitur.

70 Quantus erit timor super infirmum, cum fuerint luminaria hora interrogationis sub terra.

71 Cum fuerit vtrumque luminarium in eodem gradu suæ exaltationis in suo dominio, liberum ab infortunijs, erit natus totius Mundi Rex, & semen eius.

72 Cum fuerit ascendens alicuius natiuitatis medium cęli mundi, fueritque signum mobile, ♈ vel ♑, & ille gradus qui fuerit super linea medij Cęli, fuerit idem gradus, in quo est exaltatio Solis, vel ♃ expandetur nomen eius, per vniuersam terram, & diuulgabitur eius fama.

73 Hæc sunt illa quæ sunt aptanda, vel ex eis aptari potest, scilicet ascendens, pars fortunæ, luminaria signum, cuniunctionis, eorumque domini, signum domini horæ, necnon & locus rei quæsitę eiusque dominus.

74 Ex domino exaltationis & diuisionis & diuisore, necnõ domino aliorum diuisorum radiorum, & ex domino Anni, ex mutatione quoque planetarum in locis & eorum aspectibus, sciuntur accidentia mundi in reuolutionibus annorum.

75 Cum dominus X. fuerit in octaua, timebitur ne mater nati ex illo partu moriatur.

76 Cum fuerit dominus 4. domus impeditus à Domino ascendentis,

timebitur super patrem nati.

77 Nihil prodest prelianti, cum fuerit dominus ascendentis infortuna & ♄ vel sub radijs, qui similiter si fuerit in septima, vel cum eius Domino, obtinebit in prælio, qui prius pugnare cœperit.

78 Infortuna suum locum calefacit & impedit, ☉ vero calefacit & non impedit.

79 Caue ne Rex exeat ad prælium domino ascendentis eunte ad dominum 7.

80 Cum fuerit ♂ cum ☽ in signis septentrionalibus, erit calor maximus: Similiter etiam cum ☉ ierit ad ♄ in signis meridionalibus erit frigus maximum & econuerso.

81 Cum peruenerint infortunæ ad locum conuenientem, non nocebunt, si non fuerit eius significatio in radice natiuitatis: & similiter fortunæ non proderunt, cum non sit ex eis in radice significatio.

82 Impedimenta quæ ventura sunt, in annis alynthię euenient: cum peruenerit annus mundi ad corpora malorum, vnicuique signo da annum.

83 Maius infortunium ♄ est, cum fuerit in signis femininis, sed ♂ cum fuerit in masculinis,

84 Nullus

84 Nullus debet expugnare ciuitatem, cuius dominus fuerit dominus ascendentis anni mundi.

85 Oportet in omni inceptione aptare circulum ad naturam eius, quod quis inceperemus est.

86 Non commendatur ictisal ☉ ad ♂ ex domibus ♀, nec ad ♃ ex domibus ♄ & ☿, neque ad Solem ex domibus ♄.

87 Ex maioribus fortunis est, vt planetæ diurni sint orientales à ☉ in signis masculinis, planetæ vero nocturni occidentales à ☉.

88 Cum Domini triplicitatis luminaris diei fuerint diurni, & orientales, ab eo quoque domini triplicitatis nocturni occidentales: & erunt aucti lumine, erit maius signum fortunæ & fœlicitatis.

89 Punctus orientalis significat pueros, iuuenes, & vniuscuiusque principia. Medium verò Cœli, Reges, legisque Dominos, Iudices & etiam præliorum dominos. Septimus quoque senes atque defunctos mulieres etiam ac inimicos, atque omne venustum. Angulus autem terræ partes & terras, locum etiam in quo natus est infans, horam quoque mortis, & sepulcra demonstrat.

90 Planetæ qui dant grandes diuitias 3. sunt videlicet ♃ ☉ & ☿.

91 Horrenda est omnis inceptio ab eo qui multarum fuerit diuitiarum, in omnibus meditationibus in quibus impedita fuerit coniunctio, vel præuentio, caueat igitur ab hoc.

92 Vniuersalis quęstio natiuitati assimilatur, reuolue igitur annos eius, & super eos iudica.

93 Gaudet ♄ in ♒ sicut ♃ in ♐ gaudet etiam ♂ in ♑ sicut ♀ in ♉ & ☿ in ♍.

94 Sicut addit Genzahar super naturam omnis planetæ, qui cum eo fuerit: ita ☽ minuit ex natura cuiusq; Planetæ, qui cum ea fuerit.

95 Fortior significatio super esse patris est primogenitus, & qui sequuntur dabunt similiter aliquid significationis.

96 Algebuthar fortior est in causa vitæ. Alcochoden autem fortior est in alijs rebus, dominus vero radiorum fortior est quam Algebuthar, & forsitan erunt æquè fortes.

97 Cum morietur natus priusquam transeat vna dies, & vna nox, erit sicut abortiuus, & nullam habebit in aliquo significationem.

98 Reges quorum negocia cito

fiunt

fiunt, & qui cito se vindicant, qui cito etiam perficiunt quod desiderant, sunt quorum ascendens in principio Regni fuerit signum igneum, & similiter medium Cęli: vel alterum fuerit igneum, alterum vero aereum.

99 Cum fuerit dominus ascendentis in bono loco, in terminis fortunarum, fueritque dominus termini boni esse, colligatus ei dabit probitatem ac Regnum, & omne bonum.

100 Cum fuerit in medio cœli significator dirigetur per ascensionem circuli directi. In ascendente vero per ascensiones Regionis, in eo autem quod est inter vtrunque per vtrunque, hoc quidem capitulum narrauit Alchindus.

101 Causa fortunij ac prosperitatis est, vt sint dominus domus ☉, dominus domus ☾ dominusque ascendentis orientales, sint & in angulis, & aspiciant sese ex bonis locis, idest ex △ vel ✶.

102 Multum potens est ille, cui ☉ fuerit in medio Cœli in signo igneo, & ☾ in ♉ cuius aspectus erit siniſter.

103 Valde diuites sunt, & qui diuitijs abundabunt, magnique sunt

nominis, quibus Dominus secundæ fuerit in exaltatione vel domo sua, iens ad dominum ascendentis; maximè autem si fuerit .

104 Vita omnium animantium est secundum gradum ☉ & ☾, & hoc ab altissimo datum secundum Astapham.

105 Cum fuerit fortuna in locis ♂ & significator iuerit ad eam, vel ea ad significatorem, abscindet sicut infortunæ.

106 Auerte oculos à figura, in qua ♂ fuerit in angulo, maxime cum fuerit ascendens ♋.

107 Cum voluerit aliquis aliquid abstrahere, significatore ♄ aspiciente grauiter abstrahet.

108 Si quis postulauerit aliquid ♌ existente in medio cęli cum ♃, & ☾ eunte ad eum, vel si separata ab eo iuerit ad Dominum ascendentis, vel si Dominus ascendentis iuerit ad eum, non pręteribit quin breuiter adipiscatur quæsita.

109 Non est bonum volenti bellare, nec etiam Regi, quod faciat iter domino ascendentis existente in octaua, & si sit in exaltatione sua.

110 Non est ☉ bonus in ascendente hora belli: nec cum domino

ascen-

ascendentis, nisi fuerit ascendens ♈ vel ♌.

111 in ea parte in qua ☉ & ☾ fortunabuntur, erit victoria interrogantibus, veluti si formabuntur ab ascendente vsque ad medium Cœli, vel ab ascendente vsque ad 4 vincet quærens: si in locis alijs fuerit, aduersarius superabit.

112 Oportet maximum impedimentum esse rerum, quæ sunt in potestate signi in quo fuerit planeta cadens, vel retrogradus, aut in malo esse Solis.

113 Signa significant corpora; planetæ verò ea quæ mouent corpora; loca planetarum in circulo eorumque substantiæ, & loca eorum à ☉, significant opus & destructionem.

114 In cuiuscunque natiuitate fuerit ♄ receptor fortitudinum omnium planetarum, & ipse commendauerit eas, & suam Saturno, fueritque receptus ab eo, & vterque orientalis & ascendens in angulo, erit natus magnus, & potens in hoc sæculo, necnon & boni esse, surget etiam nomen eius in orbe.

115 Caue ne sit ♄ cum domino ascendentis, vel in alijs locis exaltatis, quia ipse est deterior cauda.

116 Veri sunt rumores, si fuerint hora nunciationis anguli signa fixa, & ☉ atque ☿ in signis fixis, & si ☾ etiam separata fuerit à fortunis, nec non si fuerit fortuna in angulorum aliquo, cumque ita inueneris, hæc significatio nec falli nec fallere poterit.

117 Prima diei hora vsque ad perfectionem trium horarum, est sanguinis, 3. verò secundæ choleræ rubræ, tertia choleræ nigræ, sed vltimæ 3. phlegmatis, similiter & in nocte. Eodem quoque modo est in quartis mensis Lunaris. Quartæ autem anni sunt Solis.

118 Cui Dominus ascendentis fuerit in dextra Solis, fueritque super ipsum eleuatus, idest ductoriam habuerit, & iam perficiat suam, vt ita dicam orientalitatem, erit amicus Regum, & potentum, diues etiam & magni nominis.

119 Noli festinare in iudicando, cum planetæ adinuicem coniungentur, nisi prius signi naturam consideres, in quo coniuncti fuerint, vtrum sit ex eorum similitudine, nec ne si enim fuerit ex eorum similitudine, confortabis eorum significationem.

120 Cum fuerit dominus xi. ascendentis vel xi. Lunæ aut xi. partis fortunæ circumuentus, à fortunis magis fortunabitur, quam alter aliquis.

121 Cum duæ fuerint infortunæ in gradu 4. domus, & in eodem termino erit natus infortunatus, & valdè miser.

122 Cum planetę fuerint in angulis apparebunt ea, quæ ab eis significabuntur, siue bona siue mala fuerint. Significatio domini 4. circuli est annus, sed & septimi circuli est mensis.

123 Cum fuerint anguli ascendentis signa mobilia, & duæ infortunæ in angulis, misera erit omnes eius vita nati.

124 Cum ☉ fuerit in angulis, confortabit omnem significationem suã: maxime autem, si quam auctoritatem habuerit in ascendente.

125 Festina commutatio non poterit esse nisi à ♂, sicut magna elongatio nisi a Saturno.

126 Status omnium bonorum mutatur de bono ad malum, vel de malo ad bonum, cum mutantur signa, & figuræ planetarum, qui significant super eos de ascensione in descensionem, &

econuerso.

127 ♃ & ♄ mutant res & conuertunt, eritque variationis initium cum mutantur de vna triplicitate ad aliam in coniunctionibus, & ex vna figura in aliam.

128 Meliores coniunctiones duæ sunt, quarum altera est Luminarium, altera vero duorum planetarum ponderosorum. Planetæ masculini sunt qui agunt, fęminini verò sunt in quos agitur, & similiter etiam in signis.

129 Aspice ascensionem Planetæ, & gradum exaltationis, gradum quoque eius casus, nam hæc sunt quæ significant homines, & eorum opera.

130 Si inueneris significatorem in angulis masculinum, & in signo masculino, contrarij verò significatorem fœmininum, & in fœminino signo, aget in eum, idest vincet alterum ille, cuius signum est masculinum, & in masculino signo.

131 Significationes, sunt duobus modis, substantialiter scilicet & accidentaliter, & vtroque modo numerum 7. Planetarum significabunt.

132 Cum duæ infortunæ coniunguntur, & ☉ Saturno in latitudine erit fames, & mortalitas, si vero Martimu-

mutabuntur Reges, & erit multa sanguinis effusio, & prælia in loco, qui signabitur ab ipso signo, & hoc non fallit.

133 Ex ♂ ♄ & ♅ in signis mobilibus cognoscetur commutatio statu & mundi, & ex eorum coniunctionibus in signis fixis iterum.

134 Cum coniungentur duæ fortunæ, coniungeturque Luna Ioui in latitudine, erit iustitia, & quies in terra dirigetur; si autem Veneri, erit alacritas, gaudium, salusque corporum atque prosperitas.

135 Cum ♀ & ♂ fuerint in eodem puncto cum ☉ in loco ♀ & termino, verba nati ab hominibus recipientur, & à nullo repudiabuntur.

136 Heremita, & quasi propheta, nec non cuius verba recipiuntur est ille, in cuius natiuitate ♅ & ♀ in eodem gradu cum Sole fuerint.

137 Famosi Reges in hoc sæculo, & quorum mandata non spernuntur, sũt quorum ♅ & ☽ fuerint in eodem puncto ascendentis ad augem suam.

138 Cui vigor maximus, & posse magnum fuerit, est cui ☉ in medio cœli cum ♄ erit in signo masculino orientalis.

139 Cum ☽ & cęteri significatores re-

remouẽtur ab angulis, non perficientur res ipsæ nisi fuerit quomodo ex itinere, & non ex alio.

140 Cum non fuerit inter aliquem planetarum, & significatorem ictisal aspectus, & fuerit vterque in eodem circulo & ex circulis parallelis in nadir, vel anahat, vel in æquinoctiali itinere, erit melius quam ictisal aspectus.

141 Omnis planeta duo habet signa præter luminaria, quorum vtrumque solam habet domum quoniam eorum lumen est Saturni tenebrositas, ideoque positæ sunt eorum domus contrariæ.

142 Fortunæ sunt fideles & prosperæ, cum fuerint in locis exaltationis ac directæ, necnon & auctæ luminæ.

143 In magnis & exaltatis rerum diuitijs vel initijs laudatur vt sint luminaria in terminis fortunarum sese aspicientia, & vt domini terminorum sint ex rei incipiendæ natura.

144 Res circuli, quæ complectũtur omnia, & quæ maximæ sunt, septem sunt, videlicet principium creationis hominum, anni Solis maximi & sunt 1413. cum autem ascenderit aliquod initium in termino ascendentis radicis cuiuslibet inceptionis, inueneritque duo minuta duorum planetarum gra-

uium.

tium. Scientia horæ Anni, in qua coniungetur in signis, Ascendens reuolutionis Anni mundi, ascendens quoque ☌ vel ☍: quod fiet etiam in hora natiuitatis vel quæstionis.

145 Non accidit super aliquem bonum vel malum, nisi cum mutatur natura, vel similitudo triplicitatis signorum planetarum, quæ sunt eis loci significatores.

146 Cum diuersificantur duo climata, diuersificantur planetarum aspectus, & eorum radij.

147 Cum vero duæ latitudines diuersificantur, circuli eius circularis motus diuersificantur. In hoc autem capitulo, nullus ita perfectè locutus est.

148 Duorum nodorum impedimenta peiora sunt planetis inferioribus, quam superioribus.

149 Figura circuli in quæstionibus magnæ similitudinis est, ad similitudinem animæ quærentis.

150 Cum fuerit ♐ in ☿ directus absque malo aspectu fortunarum, dabit fortitudinem, & Regnum in quo nulla fiet iniustitia.

FINIS.

HIE-

# HIERONYMI CARDANI MEDICI MEDIOL. APHORISMORVM ASTRONOMICORVM SEGMENTA SEPTEM.

# SEGMENTVM PRIMVM.

1 VIta breuis, ars longa; experimentum non noſtri arbitrij, iudicium difficile, oportet autem non ſolum ſeipſum exercere in iudicijs, ſed etiam aliorum, qui ſecundum rationem locuti ſunt, ſcripta perlegere, ac cauſas naturales, quę experimento apparent, inuenire, loca etiam vera ſyderum habere, tum veros progreſſus locorum, ac veritatis amatorem præcipuum eſſe.

2 Scientia caſuum tribus modis perficitur: quod futuri ſint, quod accidans tandem, & quod tunc accidant maximum eſt igitur ſcire, quid horum trium ſignificetur.

3 Cum artes, quæ proprijs ſubiectis inhærent, nihil certi polliceri de futuris poſſint, Aſtrologus nunquam abſolutè quidquam de futuris pronunciare debet.

4 Validas ſyderum conſtitutiones, natura tamen mediocres in pauperibus ad infortunia, in potentibus ad egregia facta reſtabiles, ſi tamen bonæ, cum etiam hoc valdè fuerint, aut ma-

læ

læ fęlicitatem, aut detrimenta significabunt.

5 His quæ non secundum rationem sunt, non est fidendum, neque vt diuturna sint, sperandum.

6 Quibuscunque magnæ eueniunt fœlicitates repentè, his & detrimenta sint, sperandum.

6 Quibuscunque magnæ eueniunt fœlicitates repentè, his & detrimenta repentè magna eueniunt.

7 Syderum locos ante diligenter oportet habere exploratos, quam ad iudicandum venias, tum verò ex coniectura, velut cum Lunæ scimus locum, addito argumento latitudinis, capitis draconis, & reliquorum Planetarum, per Solem.

8 Arithmetica non nisi aliqua ex parte sciri potest. Ob id igitur motus astrorum nunquam perfectè sciri poterunt, nec iudicia quæ ex his, oportet igitur singulis temporum curriculis, ex nouis obseruationibus motus syderum emendari.

9 Melius est longè, pauca recte, & firmiter scire, quam multa erroribus mixta.

10 Bonum est scire, quantum quisque Planeta antecedat singulis, & rursus circuitus eorum, nec non fixa-

rum,

rum, & capitis Draconis.

11 Sunt & præter septem planetas cognitæ Stellæ in octauo orbe, in prima magnitudine 15. in secunda 45. in tertia 208. in quarta 474. in quinta 217. in sexta, 49. obscurę 9. nubilosæ 5. omnes igitur 1022.

12 Partes octaui Orbis inanes, partim ex natura signorum, partim ex natura circumiacentium syderum constant.

13 Principia artis sunt tria, ratio, sensus, experimentum. Principia verò operationum sunt quatuor, Planetæ, partes Cęli fixę & situs.

14 In coniunctione, & quadrato, dirige locum Planetæ & corpus, sed in oppositione, trino & sextili, semper directio loci fit, computata latitudine radij.

15 Scies æqualitatem dierum, & inæqualitatem, quæ prouenit, vel quia Sol mouetur celerius in absidis opposito, quam in absidę, vel quia arcus ab initio, Capricorni ad finem Geminorum, celerius ascendunt arcubus reliquæ medietatis.

16 Cum volueris ex loco syderis habito, per instrumentum, horam distantiæ ab aliquo principio, dando cuilibet parti minuta quatuor horæ,

ope-

operare eum conuersi.

17 Manifestum est igitur, quod differentia tota, quæ contingere potest, erit vnius horæ, minutiarum quinque & secundorum viginti octo, quanquam paulò maiorem, sed absque differentia sensibili eam inuenerit Ptolomæus.

18 Scire etiam conuenit reuolutionem singulorum Planetarum in paruo circulo, quanto tempore fiat.

19 Melius est scire modicum de rebus altissimis, quam multum de humillimis.

20 Astrologia altissima scientiarum est, tum quia de cęlestibus, tum quia de futuris, quorum scientia non solum diuiua est, sed etiam vtilissima.

21 Quædam tamen sciuntur perfectè, vt circulus ascensionis, quædam propinquo modo, vt Solis reuolutio, quędam sciri possunt etsi non sciantur, vt reuolutio superiorum, quædam sub scientia sunt, sed nunquam sciri poterunt, vt ingressus Solis in æquinoctij punctum: quædam nec sciuntur nec sciri possunt, vt mixtiones syderum ac vires.

22 Est autem quoddam supercęleste, quod hominem ad diuinandum iuuat.

23 Nul-

23 Nullus Planetę in ęternum redibit ad priſtinum locum, nec etiam in longiſſimis temporum ſpacijs ad locum priſtinum ſecundum ſenſum, alius à Sole.

24 Stulti negligunt, & contemnunt Aſtrologiam, qui contradicit ambitioſus eſt, qui maledicit fatuus, diuinum enim eſt arcanum, ob id qui naturalibus relictis cauſis, illi tantum inhæret, leuis eſt, oportet igitur illum adiuuare.

25 Difficile eſt iudicare, per ea quæ ſcripta ſunt: longè difficilius, artem, ipſam tradere: difficillimum autem, artem ipſam inuenire.

26 Puer tunc naſci dicitur, cum aerem primum per os inſpirat, extra matris vterum.

27 Cum duplicaueris diſtantiam loci æqualis Lunæ à loco Solis, fit argumentum Lunæ medium, cumque numeraueris partes diſtantię Solis à ſuperiore Planeta per motum æqualem, habebis diſtantiam ipſius Planetæ ab abſide.

28 Et modus erigendi figuram, pro directione talis erit, vt non tolum planetæ, ſed & fixæ cum ſuis dimenſionibus imponantur, fixæ ſigniferi 236. & 27. extra.

29 Et conuenit vt habeas instrumentum Planisphærio simile, magnum valde, diuisum in 3600. cum quo facies directiones sine labore, tam directas, quam conuersas. Et eodem modo pro genituris, pones in tabula magna omnes fixas signiferi, & reliquas magnas extra locum suum ad vnguem, & in limbo exteriore partes & minuta latitudinis, pro imprimendo

30 Est etiam vero simile, vt quilibet Planeta dirigatur per lineam, per quam defertur, vt Sol per eclipticam, & reliqui omnes per circulum suę latitudinis, & sic sciemus fixas, quibus occurrunt secundum corpus, nam directio loci semper est per partus Ecliptice.

31 Cum igitur ita sit, conuenit vt etiam radij, omnes eo modo in illo circulo sumantur, quare oppositi Soli, cum modo Blanchini conueniunt. Oportet igitur scire maximas Planetarum latitudines, & loca in quibus circulus latitudinis eo tempore eclipticam secat, inde quęrere radiationes, & directiones per tabulas primi mobilis, vel cum instrumento.

32 Oportet autem non simpliciter sumere maximam latitudinem, sed il-

lam,

lam, quę tunc maxima est, cum planeta in eo circulo fertur.

33 Manifestum est igitur, Astrologiam constare ex scientia motuum exquisita, & naturali Philosophia, quorum neutrum cum plerique habeant, vtrunque ante hæc nemo, nil mirum est infamiam arti prædecessores nostros addidisse.

34 Est igitur Astrologia, vt pulcherrima, sic laboriosissima, & difficillima.

35 Ex rotunda autem figura, habemus quo loco directio pertingat, naturam partium existentium in domibus, totius similitudinem cœli, reuolutionum concursus.

36 Licet, & inter duos circulos, lineis ductis minuta deprehendere in instrumento.

37 Permutationes absidum, regna, & regiones, & religiones mutant, & Planeta, vel ascendens in his, vel oppositis vim à natura eius contrahunt cuius est absis, puram in absíde, deprauatam in opposito, conuenit igitur hoc scire.

38 Impressiones à genitura, quæ in loco remanent, vsque ad tempus, in quo perfici debent, sunt partim in loco, & partim in materia quæ variatur,

tur, & morborum circuitus declarans eas.

39 Et planetas superiores constat reuerti ad eundem situm cum Sole, Saturnum in annis 59. Iouem in 71. Martem in 79. quos maiores planetarum vocant annos.

40 Luna cum nodo esse dicitur, quoties intra terminos Eclipsium constiterit.

41 Luminare temporis Sol est in die, & crepusculo matutino. Luna in nocte supra terram, & in suo matutino exortu. Duo igitur quibusdam tēporis luminaria, quibusdam nullum.

42 Additiones 360. partium supra anni dies, vsque ad 69. partes, semper in sequentem annum iudicium directionis transferre possunt, in 70. partibus necessario transferunt, & quandoque etiam ad secundum annum, cum in finem reuolutionis directio inciderit.

43 Bonum est ac necessarium etiam scire initia, & fines figurarum Cœli, cum quibus partibus, cœli cor possideant, orianturque, & occidant.

44 Planetæ in quibusdam partibus suorum signorum, magis exaltantur, vt necesse sit hoc scire, in horum autem oppositis deterius se habent.

45 Non ſolum ſcire debet, ſingulis partibus quot anni, veldies correſpondeant: ſed etiam annis, vel diebus, quæ partes.

46 Figurę æquicruriæ dicuntur, quę ad eoſdem ab æquinoctij circulo parallelos terminantur, nam in æquicrurijs eſſent omnes planetæ, qui æqualem, & eandem habentes latitudinem, ſi à polo ſigniferi arcus æquales ducerentur. Qui vero à puncto ſectionis circuli meridiei, & orizonti ducti æquales ſunt, non tamen ęquicruriam figuram poſſunt conſtituere, cum Stellæ illæ ſecundum nullum motum in vno, & eodem circulo ferantur, quæ igitur latitudine carent, æquicruriam conſtituunt figuram, cum in antiſcijs ęqualiter à tropicis diſtantibus fuerint & aliæ eadem ratione.

47 Oportet & menſem appellare, Lunarem reditum Lunæ ad eundem locum, numerando dies per reditus Lunæ ad circulum horizontis, diebus 26. horis 9. minutis 30. ſecundis, ſi igitur conſtabit, vnde alia ratio iudicatoriorum dierum, quam ea, quæ dicta eſt in primo contradicentium.

48 Gloriabuntur multi & quæ ſcripta ſunt intelligere: quos ex prædictionibus agnoſces. Quicunque autem

totum

totum non intelligit, nec vel minimam partem intelligere se sciat.

49 Res veræ ex se ipsis sunt expetendę, scientia enim bonum quoddam est, delectamur autem bonorum expectatione & futura mala vitamus, lenimus, aut leuius ferimus.

50 Multitudo genituratum necessaria fuit experimento, illam peperit facilitas supputandi, vnde ars, ex experientijs enim multis illa constat.

51 Vitæ hominum, perfectis ex se constant circuitibus, corrumpuntur autem nec perficiuntur, obuiantibus syderibus ex casuum varietate, partes igitur fiunt eorundem.

52 Cum Luna in morbis, ad planetas morbo contrarios, maximè autem fortunas accesserit, morbus in melius mutatur.

53 Sol euidentissimus, inde Luna, inde Stellæ maiores, & clariores, effectus habent manifestatiores, vbi igitur ordo, & ratio etiam ordinis erit.

54 Maiora cum sint astra quam Luna, moueanturque, & radijs inferiora illustrent, necesse est etiam, vt maiores quandoque effectus in hæc inferiora producant.

55 Quęcunque vero lentius operantur, diutius protrahunt, effectus suos,

neque enim deliteſcere vis ſyderis poteſt nec aboleri, indicat autem hoc nebula circa Aſinos.

56 Cum vero, ſingularia ex generalibus conſtent, generalia autem ab aſtris gubernentur, vt aquæ æſtus à Luna, neceſſe eſt etiam, ex illorum mixtione, vnumquodque ſingulare agi.

57 Oſtendunt & aſtrorum effectus quædam propria, vt Herculeus lapis, cum ad Boream ſemper dirigatur, & Vigiliarum ortus, & mors.

58 Dei igitur altiſſimi Cœlum eſt inſtrumentum, quo in inferiora agit, impellit regitque.

59 Oſtendunt & artis veritatem, Tiberij, Claudij, Neronis, Domitiani, Adriani, Gordianique Cæſarum experimenta, præterea quę Picinino, & noſtris temporibus acciderunt.

60 Liceat & illius firmitatem, ex ſupremo in vnaquaque genitura fructu colligere. Vnde multi etiam parum exercitati imminentem ſibi ipſis mortem prædixerunt, vt Ioannes Bergomenſis.

61 Luna cum eclipſim patitur, proprio lucet lumine & rubente, vnde plex ei virtus ineſt.

62 Sydera pleraque, quæ in ſignifero

ro sunt, quandoque ab inferioribus planetis obscurantur, quod si contingat, vt proximus temporibus, vt in luminarium eclipsibus considerandum est.

63 Magnis viris, infimæ genituræ, ad eruditionem conducunt: vnde etiam plerunque breuis vitæ, vt Pico Ioannis Pauperibus vero clarè, vt Erasmo.

64 Considerare oportet coniunctiones magnas, medias, & minores tum luminarium, atque etiam mutationes Planetarum tardi gradorum in signis, congressusque ad fixas pro temporum mutationibus.

65 Saturni, & Iouis coniunctio minor fit, singulis annis 19. diebus 325. horis 19. Vnde processus fit per partes 242. min. 59. sec. 9. hoc est autē per signa signiferi 8. par. 2. min. 59. sec. 9. & sic in eadem trigona signorum natura, vt ex ♈ in ♐, partibus fermè tribus procedens. Inde cognoscimus ex ignea in terream, inde in aeream, post in aqueam transire signorum naturam, decem completis reuolutionibus, sub eadem signorum natura, ac qualitate. Manent igitur in eodem signorum trigono, annis 198. diebus 236. communibus. Mediæ autem con-

iunctionis radix, fuit post Nabucdonosor annis 6. diebus 67. cum ♄ & ♃ media coniunctio. in par. 12. min. 23. Arietis celebrata est. Quare magna coniunctio fuit annis 53. diebus 148. ante Nabucdonosoris coronationem, in par 3. min. 21. ♈. Annis igitur ante Christum 800. diebus 98. sumpsit initium magna coniunctio, quæ singulis 794. annis 214. diebus renouatur.

66 Ex his igitur facile est videre, minorum coniunctionum loca, & tempora, per continuam additionem annorum 19. dierū 315. & par. 242. min. 59. sec. 9. & quæ tempora quibus coniunctionibus subijciantur.

67 Maxima coniunctio dicitur, cum transferendo se ex aqueo signo, ♈ ingreditur, vnde prima non talis est, alia enim in Leone præcesserat.

68 Manifestum est igitur, quod Mahometi lex, sub ♌ initium habuit, secundum auctoris genituram in ☌. Sic ferme Lutherani.

69 Tabulæ Ptolomæi, pro supputandis motibus Planetarum antiquis præstantiores sunt, Ephemerides propræsentibus. Tabulæ Zacuti, tabulæque Elisabeth breuitate sua difficiles, nec exquisitæ. Alphonsi mediæ inter Ephemerides, & Ptolomæi. Tabulæ

Ioan-

Ioannis de Linerijs, & Hipparchi difficultate; alterę quod non exactæ essent, exoleuerint. Perpetuorum Ephemeridum Tabulæ, crassa minerua conditæ sunt Ioannis Blanchini Tabulę, falso innituntur suppositio, cum Solis maximam longitudinem in partibus 11. min. 32. Geminorum, Christi in radice, quæ Ptolomæi tempora præteſſit annis pluſquam 140. posuerit, atque alia multa quibus demonſtrationes Ptolomæi haud conſentiunt. Copernici autem nondum perſpecta eſt rectè ſententia, vix enim quæ vellet, dicere viſus eſt.

70 Si ad Nabucdonoſor ad Chriſtum anni 747. communes, dieſque 310. computentur, iuxta Alphonſi placita, error in omnibus accidit planetis, ſecundum Ptolomæi tabulas vt in ♄ vnius motum tranſcendat.

71 Quatuor ſunt ex quibus contingit errare, falſa ratio, falſa computatio, falſa obſeruatio, falſa temporum numeratio. His duobus vltimis, Ptolomæus errauit, aut altero eorum. veriſimilius igitur, prædeceſſorum ſuorum obſeruationes fuiſſe falſas, nam in ipſo non fuit error, nec in ratione, nec in obſeruatione, nec in computatione, niſi forſan in temporum numeratio-

ne, à Ptolomæi igitur temporibus, obseruationes considerare licet vnde Alphonsi tabulæ certiores.

72 Primus mensis est vtero gerentium, ☾ secundum ♄, septimo & nouo non viuunt, qui autem septimus, ac nonus, octauus, ac sextus à Philosopho, & Hippocrate appellantur.

73 Romanorum ergo fuit in trigono igneo, Alexandri imperium in ereo, Persarum potentia in terreo, Maumethi in aqueo.

74 Principium eorum, quæ à casu contingunt, in anima nati est, quæ illum impellit, vt causam illam subeat, anima autem à Cælo secundum Lunæ motum impellitur, non in his quæ à natura sunt.

75 Quæ impedire possunt valida existentia, cum debilia fuerint, procrastinantur, aut minuunt effectus.

76 Eorum quæ in genitura decernuntur necessaria, in genere producuntur per significatores, vt mors, quę verò necessaria non sunt, mutantur, & vicissim sępius redeunt vt filij, diuitię, amici.

77 Considera duos status vitæ, seu tres, per ♄ reuolutiones, & status crementi, per reuolutionem ♃, in secunda cum incipiunt aphrodisia, & opera-

tio-

rationes, per reuolutiones ♂, & annorum dispositiones per ☉, & mensium per ☾, & dierum circuitus ☉ in firmamento, & horarum, & partium per ascendens.

78 Deterius est credere se scire, quæ nesciat, quam ignorare quæ debeat scire,

79 Delectatio est in his quæ iuxta sunt. Gemmarum, cum in loco Solis, aut Iouis. vestium cum in loco proprio. Sed & Iuppiter in ascendente, facit hominem delectari gemmis, & Saturnus in trino Domini ascẽdentis, lapidibus sculptis.

80 In ægrotantibus primam dabis ægroto, septimam morbo, luminaria viribus laboranti, infortunas autem viribus morbi. Sed & octaua domus aliquid significat.

81 Sicut reuolutio anni est ex deterioribus, iuxta directionem apud genituram. Sic morbi initium ex deterioribus illius reuolutionis, iuxta directionem lunarem, à nobis demonstrata in libro de iudicijs, sic & mors in comparatione ad constitutionem initij morbi.

82 Vide quibus delectetur homo, & habebis Planetam predominantem qualitatibus animi. Sic etiam de cor-

pore.

83 Oportet diuidere ascendentem in vno die Cœli quantitatem, qui est partium 360. min. 59. sec. 8. per motum Lunæ in vno die, qui in part. 13. min. 10. sec. 35. & existit verus mensis quod diuiditur, per eundem motum exibit portio vni parti correspondens. Est igitur lunaris mensis dierum 27. h. 9. min. 30. sec. 48. portio partis, dies 2. hor. 5. min. 54. sec. 3.

84 Reuolutiones Lunę non complent in anno circulum totum, sed neque partes signiferi in vita hominis circuunt totum orbem.

85 Esse potest vt processus fiat etiã à loco geniturę per singulos annos in Lunę reuolutionibus.

86 Expulsiones, & decrementa in morbis, non solum ex syderum, sed etiam continentis, communi fit restitutione ac fortuitis euentibus.

87 Luna cum in principio ęgritudinis perseuerantia fuerit vel sub radijs, aut cum cauda, vel Saturno, aut Marte, ingens periculum significat. Quod si senex fuerit, etiam Ioui iuncta aut Mercurio, vel Veneri. Quod si in horum oppositis, vel quadratis idem, sed leuius continget.

88 Quod si cum hoc in locis his à

ge-

genitura etiam inuenta fuerit, procul dubio morietur.

89 Non ęgrotat homo, propter Lunam alicui horum occurrentem in ea hora, nisi directio ad hoc peruenerit.

90 Cum igitur duo ex his conuenerint, & alterum validum fuerit, ęgrotabit homo. Si autem ambo valida sint, ęgrotabit grauiter. Si tertium adest, morietur. In senio autem vt diximus, duo tantum possunt occidere.

91 Mars & Iuppiter & Venus sanguinem, Mars, & Sol bilem, pituitam Luna, & Venus, melancholiam Saturnus, & Mercurius, atram bilem Mars, & Mercurius cum Sole.

92 Si Luna iuncta Ioui aut Veneri, ægrotet homo, hoc si fiat, quia in loco a genitura malo fuerit, seruabitur ęger, si autem in bono à genitura loco, fortuna illa est mortis significatrix.

93 Saturnus longos morbos facit. Venus mediocres, Mercurius varios, Luna reuertentes, vt vertigines, comitiales, podagras; Iuppiter breues, tum Sol, breuissimos Mars: cumque loca principalia, & abscindentia valida vtraque vel debilia fuerint, morbus longus erit, breuis cum altero va-

lido existente, reliquus fuerit debilis.

94 Quęcunque autem de morbis, eadem de salute, & morte dicta erunt, moriuntur enim vel cum directio ad finem peruenerit, vel cum Luna ad locum genituręe deteriorem, vel cum infortunis inimicis applicuerit. Quo fit, vt congressus salutem non minus, quàm mortem decernant.

95 Optima operatio est sphęrę, post planisphęrij, vltima tabularum; in infinita enim multitudine solida sphæra magnum affert auxilium.

96 Est etiam vnicuiq; aliquod proprium, in comparatione ad genituræ locum partem, quod considerare oportet.

97 Quibuscunque sub initijs morborum, cœli constitutio longè lenior est morbo, his a natiuitate morbus sæuitatem contraxit, principalibus locis in praua cadentibus.

98 Considerare etiam solemus, coniunctiones luminarium, præcedentes morbi initia, & ex his etiam de venturis morbis indicamus.

99 Deterior conditio incipientis morbi est, cum morbo sæuo existentes, ad malos deferuntur.

100 Sicut amator diuitiarum, diuitias inuenit, & pęnas solus, sic veri-

tatem

tatem veritatis amator.

101 Maius est discrimen inter Ptolomæi præcepta, quam omnium reliquorum, qui eum secuti secuit sunt, quam inter smaragdum, & lutum. Verisimile autem illum Chaldæorũ, & Babiloniorum scripta miranda multorum sæculorum, nec non Ægyptiorum habuisse.

102 Genituræ Principum, maxime verę, nec subiacent generalibus constitutionibus, nec priuatorum decretis.

Pauperum & seruorum non adeo veræ: subiacent enim Cœlo, ideſt legibus, genituris Principum, & etiam generalibus constitutionibus. Bene igitur dixerunt aliqui, Principum successus astris non subiacere: puri enim sunt.

HIE-

# HIERONYMI CARDANI Aphorismorum Astronomicorum. SEGMENTVM SECVNDVM.

1 QVicunque infortunati sunt ex luminaribus in angulis, necesse est illos biothanatos interire.

2 Considerandæ sunt XIV. Planetarum, & Lunæ nodorum, radiationes atque coniunctiones, quicunque enim plures ex his habuerint, validiores habent genituras.

3 Quicunq; Saturnum in Iouis oppositio habent, nunquam quiescunt.

4 Quicunq; caudam cum Ioue habent, nunquam ditantur.

5 Quibuscunque dominus ascendentis cum infortuna est ac combustus, tum luminaria ambo infortunata in sexta, mortui nascuntur, & matres ipsorum pereunt.

6 Qui-

6 Quibuscunque Saturnus, et Mars in eadem sunt parte signiferi, necesse est in eorum vita magna infortunia accidere.

7 Cuicunque Saturnus, et Mars in Tauro in quarta fuerint in eadem parte constituti, cum ascendens ad radios eorum peruenerit, vel casus ab alto, vel ruina contingent.

8 Domorum contrariarum vires eo magis dessident, quo domus ipsæ validiores fuerunt.

9 Cum cor Cęli idem fuerit angulo decimæ, tantum distat pars remotissima nonæ à decimæ angulo, quantum pars propinquissima vndecimæ; vnde nonam robustiorem vndecima nostri prædecessores admirantur.

10 Luna cum Stellis paruis paruos facit oculos, propriè autem cum dorso Piscis, et in Martis, Saturni, Solisque quadrato.

11 Fixarum robur est à magnitudine, à splendore à natura, à proprietate, à propinquitate eclipticæ, à loco in mundo, à multitudine, à prima apparitione orientali, à loci puritate, à similitudine corporis vel radij Planetæ secum existentis, à circulo positionis.

12 Sol omnibus Planetis præstat, im-

immobilitate, magnitudine, lucis primigenia natura.

13 Quando omnes Planetæ sub Sole fuerint, genitura illa vnum tantum habebit planetã viribus omnium aliarum præditum.

14 Solis virtus omnibus alijs planetis validior est, quia nunquam ab illis tota deleri potest.

15 Reuolutiones temporum quinque modis fiunt, vel reditu Solis ad eundem punctũ, qui prestantissimus est, vel reditu centri planetæ ad eundem ecliptice locum, in quo genete in hominum natiuitatibus Luna, post Saturnus ac Iuppiter precellunt, vel reditu centri parui circuli ad eundem locum, vel reditu Planetæ ad suum locum in paruo circulo, vel reditu Planetæ ad locum, cum quo ab initio conuenerat, sicut est alterius planetæ locus.

16 Eclipsium Solis effectus, potentes sunt, vnde si in florentem messem incidant, sterilitatem afferunt.

17 Considerare oportet tempore eclipsis vires planetæ dominantis, nã non eclipsis, sed illius significatio apparebit.

18 Eclipsium Lunarium quædam tunc, aut etiam antequam eueniant,

im-

imbres afferunt, quædam siccitatem multam, aliæ ventos, aliæ terræmotus, aliæ sterilitatem, quædam incendium.

19 Cum tempore eclipsis, vitæ locus significator in occisoris aut infortunæ non amicæ radijs fuerit, natus periculum vitæ extra ordinem incurret.

20 Signa fixa eruditionem præstant: excipitur Scorpius, mediocria animamores et conuersationem: Virgo excipitur. Mobilia diuitias, excipitur Capricornus.

21 Quibus igitur erraticę in Virgine, Scorpio, & Capricorno omnes, multa mala adesse necesse est.

22 Cum in peregrinis locis, Sol & Iuppiter in opposita vel quadrata fuerit radiatione, Saturnusque in secunda: fuerint autem Sol & Iuppiter in angulo: semel in honore erit, & diuitias magnas acquisitas conseruabit.

23 Dixit Albumasar, Cometes supra Venerem visus est: non igitur in regione est elementari, contra Philosophum. cui igitur in corde cœli, vel alio angulo, vel cum Luminari, vel cum significatore aliquo, ei magnum aliquid nato de illius natura contingit.

24 Promissor ostendit qualitatem,

Mars

Mars malos, Iuppiter bonos filios dabit, filiæ autem meliores sunt, quia Venus, & Luna sunt earum significatrices.

25 Cum ascendens in muto fuerit signo, & Mercurius non in humano cum Stella in qua Saturni vis appareat, natus non rectè omnino loquetur.

26 Signa bicorporea, non sunt necessaria in geminorum natiuitatibus, sed vt supereſſe tantum possint, cum autè per tempus victuri aliquod sunt, rarò accidit, vt non adsint.

27 Omnis planeta orientalis, calidior est, & humidior, sed caue ne præternaturalis te decipiat.

28 Saturnus præest plebi, senibus, infimis, ob hoc cum vitæ inimicus sit, facilè tales omnes pereunt ac gregatim.

29 Maxima quæcunque rara sunt. raræ igitur genituræ, præclara aut miserrima significantes. Cum autem vnicuique formæ reuolutio aliqua rara contingat, cuilibet fermè in cursu longo vitæ rarum aliquid contingit. Hoc autem aut non diuturnum est ob id, & si quod sequitur, plerunque comitetur ad mortem.

30 Luna sub Sole existens cogitabundos, & melancholicos facit, aduritur

nitur enim cerebrum.

31 Est & alter reuolutionis modus secundum naturam, cum locus qui ad ascendens peruenit hora reuolutionis anni, pro ascendente ponitur.

32 Mali sunt animi, quibus Mars est in Mercurij quadrata radiatione.

33 Si Luna in Tauro in secunda, à Iouis quadrato separetur vel opposito, ad Solis trinum iens, is non obscuras acquiret diuitias.

34 Si luminaria & dominus ascendentis, & loci coniunctionis vel oppositionis, sic cadant ab angulis, vt nec ascendens nec locum coniunctionis vel oppositionis aspiciant, nascetur monstruosus.

35 Quod si locis his ac planetis se sic habentibus, infortunæ fuerint in angulis, monstrum erit ab humana natura alienum, & morietur protinus.

36 His vero sic se habentibus rursus, Venere ac Mercurio disponentibus, Ioueque locum ascendentis respiciente, Androginus nascitur, somniorumque interpres, magus, aruspex, præcantator.

37 Cum disponens loca luminariũ fuerit in loco infortunarum, & luminare temporis in eadem parte cum infortuna, in aliquo angulorum, vel fuerint

rint in figura æquicruria in eodem angulo, fueritque latitudo eadem, qui nascitur, cibum non degustabit.

38 Sed nec si ambobus Luminaribus in angulo existentibus vtraque infortuna ex diametro exactè eis opponatur.

39 Rursus Marte post Solem, vel ante Lunam. Saturno verò post Lunã, & ante Solem, ambobus in angulo sic Luminaribus existentibus impeditis, ascendentibusque ad anguli apicem, modica inter Luminaria & infortunas ascendentes existente distantia, infans non nutrietur.

40 Si vero radij fortunarum anteriores Luminaribus posteriores infortunarum, omnibus ad anguli apicem ascendentibus tandiu viuet, donec per Solis aut Lunæ circuitus, aut primi mobilis, infortuna ad locum peruenerit Luminaris.

41 Quod si Luminaribus sic ad apicem anguli ascendẽtibus radij fortunarum posteriores exstiterint, natus viuet, aut viuere potest.

42 Cum vero locis luminarium infortunæ dominantur, & super ea eleuantur, nec aspiciunt ipsa, viuet quidem, sed non longa vita.

43 Nec implebit ãnnum, cum lumi-

minare temporis fuerit in augulo septimæ, idest in apice. Sic enim intellige, cum de ascensu illorum non loquor, & infortuna elevata super ipsũ peregrina, nec fortuna aspexerit locum, nec alius fuerit vitæ significator.

44 Robur rei significatæ est per vim significatoris, debilitatem abscindentis: remotionem impedientis, infortunæ quæ loco non dominatur: & fortunas quæ inter abscindens & significatorem positæ sunt.

45 Si darentur significator annorum alius à significatore vitæ, nemo biothanatus esset.

46 Saturnus habet melleum, & nigrum, Iuppiter albũ & rubrum commixta, Mars citrinum, & rubicundũ, Sol & Luna parentibus similem, Venus roseum, & candidum Mercurius cinereum, & fuscum.

47 Figuræ cœlestes etiam extra signiferum & ascendentes, cum planetæ & fixæ iuxta locum in dando formam debiles extiterint, partem, quam magis possunt, sibi assimilabunt.

48 Cum videris post 50. annos frequentes, & validos morbos, scias quod significator vitæ concussus est, applicante ei infortunæ corpore, vel radio.

49 Si-

49 Signa fixa robur vitæ præstant, maxime Taurus & Leo, maximè que occidunt præcipuè Scorpius, deinde Aquarius.

50 Cum absciſſor fuerit in ecliptica, fueritque in angulo in fortuna, mors erit violenta.

51 Cum in apice 7. loci infortuna fuerit, natus magnis afficietur calamitatibus.

52 Cum infortuna fuerit iuncta Soli in eadem parte, vel Lunæ infortunatæ nato, etiamſi rex fuerit, magna inconuenientia contingerit.

53 Cum in initio Sagittarij, hoc tempore, vel in fine, Mercurius in eadem parte cum Sole fuerit, aſcendens autem Gemini, vel Virgo, natus comburetur. Quod ſi auxilietur fortuna, vitæ periculum euadere poterit; quod ſi Mars locum aſpiciat, nulla ſalutis ſpes eſt.

54 Cum extraxeris figuram ex figura, pones aſcendens decimum ratione eleuationis poli ſuper circuſum poſitionis ſignificatoris, hoc autem maximè in filijs.

55 Compoſitos & pulchros Aries facit, Scorpius mendaces.

56 Mercurius cum in ſummo fuerit parui circuli, facit promptos.

57 Mars in Cancro facit eos, qui volentibus sanguinem detrahunt, in Capricorno qui nolentibus.

58 Cum domini trigonis luminaris potentes extiterint, natus nutrietur, & validus erit. Si autem debiles, & contrarij non, distinguent nunquam bonum à malo.

59 Cum Saturnus dominus ascendentis ad Venerem peruenerit directione, diliget pulchra. At si Venus domina extiterit, turpibus commiscebitur, nec diliget.

60 Mercurius in Piscibus, & Sagittario, & termini eius indicant vafrum, verbosum, deceptorem.

61 Secunda domus multum potest, quia ad ascendens peruenit, quod in ea est in annis melioribus.

62 Pauper non erit, cui Iuppiter dominus est locorum terrenorum: cui vero Saturnus, vel diues non fiet, vel relictis non vtetur.

63 Cum Iupiter & Venus soli, nec iuncti in eadem domo fuerint, in Scorpione, Virgine, Tauro, vel Capricorno, item in Geminis, natus potius vitam ducet amœnam, quam quod sit felix.

64 Iupiter in Arietis septem primis partibus, magna bona præstat mundo,

&

& natis.

65 Iupiter dominus ascendentis solitarius, facit vt diligat natus.

66 Mercurius in Saturni dignitatibus, vel illi congrediens, facit prudentes, odiosos, vitiosos.

67 Eudæmonis locus est, cum Iupiter & Venus miscentur, vel alteri eorum fixa fortunata, vel radius Solis propitius, vel Sol ipse corpore valde propinquus, vel Lunæ corpus, radijvè felices, vel caput Draconis, vel cum Luna capiti Draconis miscetur, aut est in trino Solis, vel in initio Arietis Sole in initio Cancri existente, vel cum felici fixa, vel cum Sole fixa è regijs benigna, aut alia extra signiferum, vel cum Iupiter aut Venus in ascendente, vel regia felix, aut in Cęli corde Sol, aut fixa aliqua, vel Iupiter Venusvè, aut etiam in septimi loci cuspide, cum tamen fixæ clarę & fortunatæ fuerit. Nec contemnes cõgressum Iouis cum Saturno in Libra, Sagittario & Aquario, vel Veneris cum Marte in Piscibus aut terminis Veneris, signis communibus.

68 Cacodæmonis autem locus à Saturno, & Marte & Mercurio & luminaribus, & Stellis maleficis, per radios autem corpore in vnum coeũtib.

69 Cumque locus Eudæmonis impeditur, erit locus quadratus ab eo Eudæmon, si in eo alter aut ipse planeta felix dominetur, fueritque locus purus.

70 Cumque fuerint plures Eudæmones, erit felix in pluribus.

71 Cumque primus illorum impeditur, felix erit rebus in mediocribus, si etiam secundus in humillimis.

72 Cumque Eudæmon potens est, & cadit in domum cadentem, habebit magnam potentiam, in qua opprimetur: si autem debilis, & in angulo, beatus erit in minimis.

73 Cumque Eudęmoni radij infortunarum propinqui sunt, cum magna contentione adipiscetur fælicitatis suę causam: quod si Eudæmonis planeta retrogradus exstiterit, tardè & lentè proficiet, & cum difficultate impetrabit.

74 Cumque Cacodæmon permiscetur Eudæmoni, non habebit malum natus sine bono.

75 Oculus Tauri validior est, sed non in benefaciendo, post quem est Cor Leonis, sed magis respicit animi qualitates, quam fortunam. Post quod est spica Virginis, quæ ad eruditionē, & gratiam facit. Post lancis meridio-

nalis luminosior, & Scorpij cor, in animi qualitatibus malè, pro corpore deteriores, pro fortuna autem ancipites.

76 Vltimi & leuissimi Cacodæmonis locus in alijs causis etiam vtilis est. Verumtamen loci, quos aspicit per quadratum, aut oppositum, aut in loco debili existentes, omnes mali.

77 Cum Luna fuerit in Scorpione, in quadrato Saturni, in Leone, vel in opposito in Tauro existentis per partem, natus vxore, filijsque carebit. Quod si Saturnus in Aquario fuerit, abhorrebit etiam fœminas.

78 Cum cauda fuerit cum Saturno, in quadrato Lunæ cadentis, natus erit tabificus, si fuerit in succedenti. Si verò in angulo, lacerabitur corpus eius. Quod si in quadrato domini ascendentis, erit morbosus toto tempore vitæ suæ, tum magis; si in sexto, vel ex sexto loco.

79 Cum Iupiter in opposito Veneris in tertio loco fuerit, respiciens Lunam trigono, vel sextili radio, natus lucrabitur ex itineribus.

80 Cum Mars & Saturnus coierint in Ariete, natus carebit somno: si in Tauro, claudetur vox eius, & erit rauca.

81 Planeta ad planetam malè vel

benè

benè disponitur, aut ad diuersos planetas, aut ad Stellas, aut sui ipsius ratione.

82 Terrea signa æternas seruant iras. non tamen facilè ab his corripiũtur: celerrimè aerea irascuntur, sed euanescit ira breui: ignea non tam diù, vt terrea iram seruant, sed ad vltionẽ properant: aquea nec subeunt, nec seruant.

83 Taurus, Gemini, Cancer, super vocem dominantur.

84 Signa significans secundùm propriam naturam in omnibus. Taurus enim suprema facit pleniora, validioraque sicut & Leo, sed significantia membrum, significant detrimenta: omne autem signum totum significat corpus.

85 Taurus & Leo vocem faciunt canoram & asperam. Gemini, Virgo, Libra, Saggitarij pars anterior, & Aquarius concinnam. Arries & postrema Sagittarij, & Capricornus mediocrem, & asperam. Cancer, scorpius, Pisces, aphona siue muta sunt.

86 Cum trinus Planetæ locus, seu radius quadratus ad cor cęli peruenerit, significat quod decretũ illius planetæ cofirmabitur, & vim eam recipiet, quia effectum producere poterit.

87 Cui Venus pessimè posita est, is voluptatem nunquam in vita sentiet.

88 In parte orientali, orientales à Sole, veloces motu: in signis orientalibus, inferiores Sole, in angulis, veloces habent successus, tamen maxime si lumine pleni fuerint.

89 Planetæ Orientales candorem significant: occidentales obscuritatē.

90 Meridionales leuitatem, in nodis ambiguitatem, & ancipites.

91 Simile est à quarta, per primam ad decimam, orientalibus Planetis, sexta & quinta etiam combustis, dum sub Sole ingrediuntur, tertia & secunda dum egrediuntur.

92 Cui ascendit Aries, ei sponte, occasiones tristitiæ euenient: cui Taurus ob nimios labores sibi parabit ægritudinem: cui Cancer, ille sibi anxiè amicos quæret.

93 Cui Venus cum fixa fuerit egregia, ei lepos erit in sermone, aut si ea Mercurio vel ascendenti copuletur, vel etiam eius in dominio.

94 Nisi posueris in qualibet re significatores, plures res.

95 Eandem Stellam aut in diuerso situ, vel alio loco, aut cum alijs, idem significare, aut consimile penitus, est impossibile. Similia igitur ex contra-

rijs

rijs magnis fiunt, tamen magis auxilio materiæ.

96 Non est transgressus repentinus in cœli partibus, imò etsi secùs videatur, nec in ipsis significatis.

97 Reuolutiones annorum insequentes producunt effectus, vel quia ex pluribus vna fit, alteraque est ad succedentem præparatio, vel quia à genitura decernitur, quod ex reuolutione perficit, vel ob euentus magnitudinem, vt in morte, vel causarum, vt cum Sol Ioui ad vnguem opponitur.

98 Dominus nonæ domus cum fortuna fuerit, & malè dispositus in comparatione ad dominum ascendentis, recte, sed parùm credet.

99 Cum dominus duodecimæ dominus infortuna fuerit, & domino primæ superior, natus alienis cum iactura inseruiet.

100 Quando Saturnus fuerit cum dextro Orionis humero, natus erit insignis pertinaciæ, & perseuerans, vnde nomen illustre consequetur.

101 Quoniam natura signorum nõ est plenè cognita, natus existimatur esse illius qualitatis, quam decernunt radij antecedentes ascendens.

102 Proportio constitutionis cele-

stis ad corpora humana similis est secundum existimationem rationi infiniti ad finitum.

103 Saturnus cum oculo Tauri generaliter facit magna detrimenta, & vitia animi flagitiosa decernit.

104 Saturnus in quadrato Solis mortem decernens, per strangulationem rei dutæ efficit, vt cum fune, ruina, lapidibusvè obruuntur, & hoc in fixis signis.

105 Sed si in ferarum figuris fuerit, à feris opprimetur, aut cane rabido, & hoc cum mortem decreuerit violentam.

106 Si Saturno in Cancro vel Capricorno, in Quadrato, vel opposito Solis aut Martis, vel cum eis fuerit, in locis humilibus, ruina opprimetur: si in nona, decima, vel vndecima, præcipitio.

107 Si Saturnus in Cancro, vel Scorpione, vel Virgine, vel Piscibus in horum quadrato, oppositovè, vel illis iunctus fuerit, submergetur. Quod si in constellatione nauis fuerit (est autem nunc in Cancro, Leone, & Virgine) submergetur tempestate. est & Orion tempestatum significator, vnde Cancer maxime, inter signa nunc procellosum.

108 Si Saturnus cum his in signis venenosorum, ac tortuosis fuerit, hoc enim natura constat cum Venere, venenum proculdubio bibet.

109 Mars author mortis, in humanis, in quadrato Solis, vel Lunæ interfici illum debere ostendit. causam autem ex loco condisce. nam si cum Veneris potestate mulierum causa: si in secunda, substantiæ. Si autem Mercurius dominetur, à latronibus intercipietur, aut mandato Principis.

110 Signa quæ detruncationem significant membrorum, sunt abscissa, & imperfecto, vt Taurus, vel caput Gorgonis, vel catenæ caput.

111 Quod si ♂ sic fuerit dispositus in Tauro, vel Scorpione, cruciatu peribit, aut comburetur.

112 At si sic depositus, cum Andromeda vel Cassiopea, vel capite Draconis, in nono, decimo, vndecimovè loco fuerit, aut in Cœli imo, suspendetur.

113 Si vero in ascendente vel occidente, vignis, comburetur.

114 Si vero in sublimibus locis, in quadrupedibus, cadendo conteretur.

115 Cum aut Iupiter accesserit, non rectè dispositus ad interfectorem, iudicio peribit.

116 Detrimentum in Marte, est à Luminaribus in morte violenta. In Saturno a Sole vel Marte.

117 Gemini, & Sagittarius, & Pisces, multiplex genus mortis significabunt: quod & Saturnus & Mars cum simul dominantur.

118 Et oportet in hoc versèris experimento longo, propter regionum, & morum varietatem, non enim secus continget, quàm ei qui herbas vult cognoscere. potest enim per longum experimentum inter simillima exiguam perspicere differentiam.

119 Cum vero cum signis violentæ mortis, etiam quartę, infortunæ præfuerint, corpus mortui insepultum iacebit maximè si luminaria illis congrediantur planetis, quæ mortem decernunt violentam.

120 Submersionis igitur notis assistentibus, cadauer à piscibus deuorabitur. Patibuli autem ab auibus, dilacerationis à quadrupedibus, & hæc maximè si in signis auium, aut quadrupedum, aut piscium fuerit.

121 Testimonia diuersa comparabis, magnitudine, robore, multitudine, & temporis ratione.

122 Locum imi cęli si Sol possideat, erit gloria perpetua, eoque magis, si

cum

cum regia ibi fuerit: si Luna, erit etiam memoria diuturna. Si locus coniunctionis ibi fuerit Solis & Lunę, erit celebris, cito tamen interbit. Si infortunę præfuerint, ob flagitia.

123 Considerare etiam oportet, cum quo conueniat dominus octaui loci, ad eum enim differetur hæreditas.

124 Cui in hora mortis Sol in cœli medio fuerit, gloria illustris post mortem diu perseuerabit.

125 In quo homo excellit, in eo etiam planeta optimè dispositus est significator.

126 Plus potest mediocris eruditio cũ optimo iudicio, quàm mediocre iudicium cum optima eruditione. veruntamen & iudicium eruditione perficitur.

127 Electio non proficit, nisi cum conuenerit genituræ, & tempori, in quo elegit.

128 Maleficæ ad malos vsus quandoque proficiunt.

129 In rebus quas latere desideras, Lunam sub radijs Solis positam exspecta.

130 Cum luminaria in eodem minuto coeunt, aut ex opposito, quadratovè se respiciunt, maximum euentum in ea genitura exspectabis.

131 Ascendens inimicorum Regni, est ex opposito significatoris ex septimo loco, ac duodecimo, & generaliter ex descendente medietate.

132 Pestilentiam regionis vnius ex sola dispositione stellarum agnoscere est impossibile.

133 In constitutionibus generalibus etiam cometas, & reliqua incidentia obseruare oportet.

134 Cum fuerit dispositor loci mortis cadens ab angulo, maximè autem in nono loco, & in magna distantia ab ecliptica, & peregrinus, natus extra patriam morietur.

135 Sicuti cor cœli est angulum in pluribus validissimus, sic nonus locus inter cadentes.

136 Mars in Leone per se solus eleuatus, occisores facit, & iracundiam prauam.

137 Saturnus cum fuerit cum capite & respexerit ascendens, aut fuerit eius dominos, malum animum, sed fidelem tamen nunciat: cum cauda autem perfidum etiam.

138 Cum dominus ascendentis fuerit cum oculo Tauri, natus erit occisor & hoc si talis dominus fuerit planeta masculinus, maximè infortuna, vel Sol.

139 Cum Saturnus cum capite exi-

stens

stens aliquid significauerit, in reditu illud perficiet.

140 Mercurius maximè habetatur in humidis signis, sed in Scorpione maleficum facit.

141 Cum Iupiter fuerit in sexto loco retrogradus, & dominus secundi loci in fortuna peregrina, nec fixa adiuuerit, natus erit pauper.

142 Cum Venus fuerit in Virgine, & Iupiter in opposito, natus si habuerit vxorem, illa erit pudica, & boni regiminis, & satis pulchra.

143 Cum Luna fuerit in cancro in cęli corde, nati fortuna inconstans erit.

*Rex Poloniæ Vladislaus IV.*

144 Cum oculus Tauri fuerit cum infortuna ascendentis domina, & in Altridaria conuenienti ceciderit in ascendente, natus eo anno occidet hominem.

145 In exquisitis iudicijs semper domus apex requiratur in imperfectis operibus domus tota.

146 Fuge illius societatem, cuius dominus ascendentis est, infortuna cum nodo, aut mala fixa, nec tua genitura cum illius genitura concors est, nam etiam nolens te offendet.

147 Luna Ioui iuncta vix noxij medicamenti habetat; concocta au-

tem materia iuuat.

148 Luna in fixo signo minus agit medicamentum, in ruminante etiam nauseam excitat.

149 Signa ruminantia, Aries, Taurus, Capricornus.

150 Melius est in purgationibus, vt tam Luna quam dominus ascendentis descendant, & sint sub terra, in vomitorijs, vt ascendant.

151 Tam purgationes, quam vomitoria, & venarum sectiones & incisæ cucurbitulæ, & inediæ fieri debent. Luna in humidis signis existente, horum præcipuum Piscium est, post id cancri.

152 Caue ne Luna existente in Arie. te caput tangas, tum præcipuè si infortuna ibi radios dirigat. Sed si ab initio ibi fuerit infortuna, violenti casus effectum similem producet.

153 Caue etiam ne veste conficias, dum Luna est in Scorpione, magis si luminibus plena, & ea respiciat Mars, celeriter enim lacerabuntur.

154 Acria ne seras, aut colligas, aut reponas, nisi Luna infrà terrã existente.

155 Vites si putaueris, Luna plena lucent in Tauro, Leone, Scorpione, vel Sagittario, nec sorices, nec volu-

cres

cres uvas infestabunt.

156 Caue rursus ne decrescent Luna aut latente, arbores inseras.

157 Si quis diu obseruet, vt decrescente Luna tondeat capillos, caluus fiet: melius etiam oues, crescente ea, tondentur.

158 Frumenta, & cæduam siluam ad opus, decrescente Luna metes, aut secabis, diligentius ad opera egregia, vltima quarta: melius autem longe, si interlunij die: optimum omnium, & ad æternitatem faciens, si is in nouissimum prumæ incidat, Saturnusq; respiciat, & sub terra sit Luna. Cariem enim non solum non sentiunt, sed durissima redduntur.

159 Siluam autem ad ignis materiam, ac lucis, & quæcunque celeriter crescere denuo cupis, nulla resecti habita cura, Luna suprà terram, in prima quarta, Veneri aut Ioui iuncta cædes.

160 Effectus maximè latent, cum significatur peregrinus & cadens, vel sub terra, vel Solis radijs iunctus fuerit.

161 Cum Luna duobus simul planetis aptare nequis, fixæ naturam amborum habenti copulabis.

162 Luna in Tauro, Virgine, vel Ca-

Capricorno, in aspectu Saturni vtili sere, aut planta, aut etiam deijcito, suffoditoque vineas resecturus, in Cãcro rugum genus omne terræ manda, in Libra, vel Aquario hortos cole, & consita, ac arbusta.

163 Cum celeriter perficere cupis, Lunam, & significatorem in mobilibus signis constituens: cum diù manere opus desideras, in fixis. ob hoc difficile est vtrumque assequi.

164 Melius efficitur, quod natura duce astra habet propitia, quàm quod humana industria.

165 Cum Luna fuerit cum Venere, melius ac tutius bilis pellitur, cum Ioue melancholia.

166 Dominus interlunij multum potest in qualitate aeris, & qui respicit eos, tum maximè, si in cardinibus fuerint.

167 Temporũ igitur quatuor initia, ex quatuor interlunijs aliqua ex parte condisces.

168 Rectè inquit Ptolomæus, quod transitus Solis iuxtà stellam illius, ab eo tempore vim mouet. Sed & loci aliquid significantis, effectum præparare ab ea statim die incipit.

169 Cum in alicuius Ciuitatis initio Mars in corde cœli fuerit, necesse est

eam

eam vrbem esse seditiosam. Quod si Saturnus, multa praue operabuntur ciues illi, eruntque laborioſi.

170 Mercurius in Leone facundos facit, in Ariete autem sermone gratos.

171 Mercurius in Libra, vel Aquario ingenium celebre, vt nullibi alias præstat, facit & aliquid in Capricorno.

272 Melior electio in homine est loci habitationis. nam si ascendens vrbis fuerit locus ascendentis, benè valebit. Si cor cęli exaltabitur; si Solis, dignitates proculdubio recipiet; si Iouis, lucrabitur? si Lunæ, felicitatē consequetur omnibus modis.

173 Saturnus inuidiū, Iupiter opibus intentum, Mars furibundum, Sol ambitioſum, Venus delitioſum, Mercurius verſutum, Luna vagabundum facit.

174 Solares, paucum, mundum, ſimplicem cibum volunt: Ioue nati, multum, mundum, ſimplicem: Venus lautum, mundum, paucum; Mercurius paucum, ſimplicem, & indifferentem, Luna multum, immundum, indifferentem; Saturnus paucum, immundum, indifferentem; Mars multum, immundum, lautum.

175 Similiter & in potu. Sol paucum

cum, non vinosum, non affatim: Iupiter paucum, affatim, ac vinosum: Venus multũ non affatim, non vinosum. Mars affatim, multum, vinosum. Saturnus multum, non confertim, sed vinosum: Mercurius paucum, non affatim, vinosum: Luna multum, affatim, non vinosum.

176 In humanis fortunæ signis, humanum, & comem faciunt: infortunæ autem dolosam vrbanitatem, sicut inferis fortunæ agrestem integritatem.

177 Cum ascendens serui fuerit sextum signum ab ascendente domini, benè conuenient.

178 Cum ascendens subiecti fuerit culmen genituræ principis, & loca luminarium commutata, & dominus ascendentis subditi eleuatus supra dominum ascendentis principis in genitura subditi: & dominus ascendentis principis sit inferior aliquo planeta dominante in sexta vel vndecima aut in genitura subditi, tunc princeps ille subditi sui parebit arbitrio.

179 Plurimum potentiæ apud Regem est, cum dominus cœli medij aut loci Solis subditi potens, fuerit in figura regni, ac regis.

180 Magni nascuntur, sub signis magnis, longarum ascensionum, in

initijs,

initijs signorum, sub Planetis existentibus in altitudine eccentrici, & parui circuli, & mundi.

181 Obesi autem iuxta longitudines medias, cum magna latitudine, in signis latis, ac multarum stellarum.

182 Qui Martem habet in ascendente, multis exponetur periculis, & in facie cicatricem tandem habebit.

183 Oculus Tauri in apice ascendentis, scarios facit, ac biothanatos, in occasus aut linea, vtriusq; effectus significatio augetur.

184 Cum nauis mare ingreditur, & Bebenia vel Regia de natura Martis in linea ascendentis fuerit, aut Mars ipse, nauis naufragium patietur; quod si cũ hoc luminaria ceciderint, aut testimonium dederit Marti, aut Saturnus in sublime loco fuerit, nauis illa submergetur.

185 Similiter, si Mars in cœli medio fuerit, hęc eadẽ fermè euenient; manifestum est autem, quod exorientia sidera plus mouent tempestates, indeque in corde cœli sunt, vltimoque occidunt.

186 Maleuolæ, cum in synodo luminarium illa respexerint, aut Luna ad eas peruenit, minus violentei tempestates mouent, quam si exoriantur,

at-

attamen longe diuturniores.

187 Coniunctionis locum, reuolutionem præcedentis, quo in loco ab ascendente fuerit reuolutionis considera. nam magna euenient iuxta domus naturam.

188 Si cum profectio ascendentis ad locum coniunctionis attingit, effectus sequeretur, eodem tempore sẽper cuncta euenirent.

189 In omni planetarum coniunctione, eum planetam dominatorem constitue, qui sublimior fuerit in eccemtrico, & paruo circulo, & qui in loco plures habuerit dignitates, & qui plures stellas suę naturę similes habuerit.

190 Generalia ex singularibus, & ex generalibus singularia, sed alio modo.

191 In coniunctione superiorum ille altior est in paruo circulo a media coniunctione Solis ad mediam oppotionem, qui celerior est. Tardius enim mouetur in paruo circulo, à media vero oppositione Solis, ad mediam coniunctionem, altior est quam tardior.

192 Considerare etiam oportet motus ab absíde, ab imo etiã seu eius opposito, augetur motus, auctusque lumine etiam dicitur, optima igitur con-

stitu-

ſtitutio, cum ibi circulus paruus ideſt in ea quarta parte fuerit. Planeta vero initio ſuæ apparitionis.

193 Matutinus ortus ſuperiorũ eſt, cum Planetam Sol motu ſuo tranſgreditur, ac ſi mane incipit ante Solis orum apparere. Veſpertinus autem occaſus, cum illi Sol appropinquans, in veſpertino crepuſculo ſuper terram exiſtentem occultat.

194 Matutinus ortus in inferioribus eſt, cum Planeta retrocedens à Solis coniunctione, in imo parui circuli abſcedit tantum à Sole, donec ante lucẽ exoriatus: occaſus autem matutinus, cum ſic apparens directus factus ad ſummum tendens parui circuli latere incipit. Ortus autem veſpertinus, cum exacta in ſummo parui circuli coniunctione, planeta mouetur velocius Sole, donec orientialior exiſtens in principio noctis incipit apparere. Occaſus autem veſpertinus cum deſcendẽs donec retrogradari incipiat, Soli tamen appropinquat, vt illo occidente quamuis orientalior exiſtens, minime tamen videatur in crepuſculo veſpertino.

195 Cum ab oppoſitione, quæ eſt poſt tranſitum Solis ſuper capillos Ceti, Luna Saturno iungitur plena lumi-

nibus

nibus, fueritque Saturnus cum stella de natura sua, aut Veneris, aut etiam in cardine, vel eadem latitudine, vel in Scorpione, vredo & carbunculus vinum eo anno auferet.

196 Oportet autẽ scire distinguere inter id, quod perse est, & id, quod est per accidens.

197 Domini trigoni signi ascendentis, pro nutritione, & luminaris pro vita. Sed & validius domino exaltationis, & domus, & trigoni, diuisa tempora tribuis.

198 Cum Sol fuerit cum Gorgonis capite, fortuna non aspiciente ipsum, Dominus autem ascendentis, vel Luna, vel dominus loci luminaris in opposito quadrato, aut coniunctione Martis, nato caput amputabitur. Quod si Sol in sublimi fuerit, lacerabitur corpus viuentis. Si autem Mar ipse, aut dominus qui affligitur, in Geminis, vel Piscibus, corpus eius aut lacerabitur in partes, aut saltem manus illi amputabitur, antequam moriatur.

199 Cum Sol in Leone, aut Sagittario domino ascendentis, aut Lunæ iungitur, Marte aspiciente, aut stella de natura illius ibi existente, natus cremabitur. Quod si Saturnus loco

Martis

Martis affuerit, fumo suffocabitur.

200 Traiectiones aeris, siccitates, & aquarum paucitatem, & vtriusque turbulentiam indicant. Quod si ab angulo ad angulum ferantur, ventum ex ea regione protendunt.

201 Directiones significant temporum generalium partes. Alfridariæ generalia tempora. Sed reuolutiones tempora propria vniuscuiusque rei.

202 Rerum, quæ fiunt, aliæ ex principijs pendent, aliæ ab exterioribus. Directio autem rebus principalibus magis dominatur, reuolutio autem his quæ ab exterioribus.

203 Cometes magnos aliquando nascituros homines indicat: ille autem sub eo nascitur, non qui eius tempore, sed qui in regione, quæ illi subiacet angulo, ac signo. Solque in loco illius aut Luna, reliquum luminare in cardine, & ascendens, similiter, ac dominus ascendentis in cardinibus, cometes cum exoritur aut occidit, aut cœli summum occupat. neque enim vllus hæc omnia cometes facere potest. Tum vero coniunctionem aut saltem oppositionem, natiuitatem illius præcedentem in loco comitis fuisse oportet.

204 Cometes in Oriente maxime exortum significat viri magni legum la-

latoris, & in cœli medio, regis prępotentis, in occasu autem raro, & in succedentibus.

205 Qui aut cum filio cometis participant in genitura, ministri illius sunt.

206 Cometes mutantes leges, si in nono, vel vndecimo loco apparuerint, seditionem in lege, non legem ostendunt nec erit in illa vnum caput.

207 In religione, quę Sacerdotes à coniugio prohibet, & à filiorum generatione, significatores vxorum, declarant concubinas: & filiorum, filios illegitimos, vel adoptiuos.

208 Conuersiones variæ ingenio debentur, vt Mercurio, magnitudini luminis temporum qualitates, & fata, ac germinationes. vnde Soli, ac Lunę prępotentes affectus parui circuli magnitudini, vt Marti, ac Veneri, corporum consistentię, orbium magnitudini.

# HIERONYMI CARDANI Aphorismorum Astrologicorum. SEGMENTVM TERTIVM.

1 QVibuscunque dominus ascendentis est infortunatus cum cauda, & fuerit infortuna in angulo, violenta vtilli mors accidat necesse est.

2 Cum dominus vitę fuerit in parte descendente, diriges etiam eum contrario modo.

3 Cum fuerint multa infortunia secundum idem mortem significantia, non oportet vt expectes directionem absciadentem.

4 Vitæ significator robustus, in morbis naturalibus plurimum iuuat; in casibus autem parum, aut nihil.

5 Cum cauda infortunis dominum ascendentis affecerit, & in reuolutione

ne Luna ceciderit cum illa, & ipsam aspexerit dominus loci mortis, & fuerit ille in loco infortunæ à natiuitate, illo anno morietur.

6 Cum Luna fuerit combusta, ob iracundiam multa mala patietur.

7 Cum dominus mortis secundum naturam peruenerit ad oppositum loci significantis vitam, & fuerit vnus in genitura, & reuolutione, magnum affert periculum.

8 Cum infortunæ dominantur in genitura, & Luna applicauerit fixæ potenti de natura Martis in reuolutione; natus inclinabitur ad homicidia, & futurum est vt ipse periclitetur.

9 Cū Sol miscetur Mercurio, facit crudeles. cor enim eorum est siccum.

10 Cum Mercurius commiscetur Marti, tum hoc est potentissimum ad omne genus violentæ mortis.

11 Cū Luna, & Iuppiter valdè infortunati fuerint, etiamsi reliqua ad libitum aptentur, erit tamen natus infœliciſſimus.

12 Cū Mars fuerit in corde cęli, in Ariete, & radio quadrato Iouem in Capricorno, dominum ascendentis aspexerit, vulnerabitur natus, eodem modo, si in Scorpione Mars ibi, ascendat autem Aquarius, pulset autem Satur-

turnum in Leone.

13 Cum Mars iuxta imum cęli fuerit, cum modo proprio vel Lunæ, quo ad auſtrum tendit, & aſcendens aſpexerit quadrato, natus claudicabit.

14 Quãdo Mars ex Scorpione quadrata radiatione planetam pulſauerit; vel ex oppoſito, habebit ille detrimẽtũ turpe in corpore, quod perſeuerabit vſque ad mortẽ. Idem, ſi Saturnus ex Aquario.

15 Quando Venus fuerit cũ Saturno, & aſpexerint dominũ aſcendentis, pueros amabit natus, vel vbi non admittitur, ſeniculas mulieres, & ancillas ſordidas.

16 In aſcendente omnes corporis partes ſunt, qui verò dãnat planetã, eſt inſpiciẽdus, & in qua domo ſit, & quã vim habeat ad ſignum aſcendens.

17 Saturnus gaudet in Aquario, & Iuppiter in Sagittario, & Mars in Scorpione, & Mercurius in Virgine, & Luminaria in ſuis Locis, & Venus ambigua eſt

18 Mercurius in Leone, Mars in Libra, Saturnus in Capricorno pedes habent.

16 Iuppiter in trino Lunæ dat filios, & diuitias, magis tamen in humanis.

20 Quando Luna & Mercurius in

Tauro iuncti fuerint, erit studiosus,& etiam eruditus.

21 Cum occurrunt genituræ falsæ, aut absurdæ, & non conuenientes significatis, monstrosæ appellantur: Et vt corpora monstrosa in dissectionibus sunt fugienda,arte enim euertunt.

22 Cui Sol in trino,vel quadrato amico Martis fuerit, Mars autē in quadrato Lunæ dominæ ascendentis non amico fuerit,ille à Principe,& populo odio habebitur.

23 Odium significantia in mobilibus, contemptum in vilibus referunt.

24 Quibuscunque Aries, Taurus, Cancer, vel Leo ascendit, his corpus animæ obedit,& robustior vita: robusta autem, si vitæ significator, est dominus ascendentis.

25 Qui respicit locum mortis significator & ipse est:ille autem locum vitæ necessario respicit. ob id decepti sunt antiqui,cum tamen idem in naturalibus accidat.

26 Locus significatoris materiam præstat: significator autem formam, promissor efficientē: respicientes planetę auxilia,& impedimēta rei futurę.

27 Signa significatoris modū mortis, aut promissoris,vel vtriusq; ostendunt.

Cum

28 Cum Venus & Iuppiter, in angulo ſeptimę fuerint,& Luna ex ſuperiore loco eos aſpexerit exiſtens in dignitate,fueritque caput cum illis,vel cum Mercurio, natus ex vxoribus maximas habebit diuitias.

29 Sol & Luna vires ad XV.partes circunquaq;extendunt, Venus ad VIII Mercurius ad VIII.Saturnus ad IX.& Iuppiter ad X.& Mars ad VIII.& Lunæ nodi ad XII.

30 Quando Luna applicatur Marti, facit iraſcibilem, ſi in aqueo ſigno;ſi in terreo,iracundum; ſi Saturno triſtem.

31 Cum planeta applicat alteri in domo vel exaltatione exiſtenti, dat ei vim ſuam, & eo magis, ſi fuerit peregrinus.Quod ſi dominus loci alteri applicet,vim dabit ſine vtilitate, & labores eius irriti erunt.

32 Cum inter duos planetas alius medius interceſſerit, priorum nulla fit virtutis mixtio,niſi per medium ex altero in alerum deferatur.

33 Cum Planeta combuſtus non combuſto proximus extiterit,quod virium ei eſt, illi tribuit.

34 Cum Planeta exit ſignum, antequam applicet alteri, mutabuntur ſignificata illius, & qui in duobus ſignis ſunt res multas in vnum permiſce-

bunt, si iuncti fuerint.

35 Planeta qui primo radios Solis exit, & nulli applicat, puriſſimos effectus oſtendit.

36 Cum vero in ſigno planeta eſt ſolus, vbi nec radij aliorum ſunt, inconcinnitatem declarat.

37 Cum planeta retrogradatione ſua alteri applicat poſt ablatum metum vel ſpem, effectus ad finem perducit.

38 Sol aſſimilatur aſcẽdenti, & cordi cęli. Planetæ reliqui fixis ſtellis.

39 Dirige Planetas, & fixas, & radios etiam planetarum, ad ſecundam domum, pro diuitijs.

40 Natiuitas nõ ſignificat ſuper alios à filijs, niſi in comparatione ad natum.

41 Cum Planeta alteri proximus incipit retrogradari, nec coniũgitur poſtmodum illi niſi alio in ſigno, vel poſt alterius planetæ coniunctionem, fruſtrabuntur ſignificata per illam coniunctionem, poſtquam perfecta exiſtimabuntur.

42 Qui in ſignis breuium aſcenſionum loca habent principalia, obedient alijs vi, vel ſponte.

43 Cum Sol reuertitur ſuper locum promiſſoris, aut abſciſſoris, diſtans ab illo quibuſdam partibus, tantundem adimit virium ex loco ſignificatoris,

aut

aut addit, quanta portio est pars vnius totius distantiæ, hocque idem facit in mensibus Luna.

44 Cui Sol cũ capite in angulo fuerit, maximè in prima, vel corde cæli, pater eius ingenti felicitate fruetur. oportet autem non plus parte vna distare.

45 Cui Mercurius in linea fuerit ascendentis, motu velocissimus, in humano signo; hic bonæ memoriæ, bonique erit ingenij, ac acuti: sed mutabilis in consilijs.

46 Cui luminare temporis, cum constellationibus fuerit, ambo oculi erunt aliquo vitiati.

47 Cui Luna à Venere separatur, in masculino signo, fueritque in constellatione aliqua, vel eũ Regia, vel Bebenia, is luxui, & libidini nimium vacabit, nec ab vllo genere libidinis abstinebit: magnam fortunæ tamen felicitatem consequetur, sed ob venerea periculis subijcietur.

48 Luna plena luminibus cum Marte, præbet opinionem stultitiæ, & vacua cum Saturno, facit stultos verè.

49 Venus cum in corde Solis fuerit, ingentes largitur dignitates.

50 Si Planeta cum corde Leonis Lunam aspexerit, idem efficiet.

51 Mars in Cancro subitam efficit

iram, sed minimè tenacem.

52 Cum fortunarum aliqua cum regia fuerit, & respexerit Solem, vel sub radijs eius fuerit, vel etiam fuerit in parte Lunę, vel ex parte aspiciens amico respectu, natus non vulgarem adipiscetur dignitatem.

53 Amicus aspectus est trinus, & sextilis, vel etiamsi ex quadrato, vel opposito recipiat.

54 Cum Sol fuerit in Libra, vel Aquario cum bonis, & malis, vel solitarius cum fixa, peruenerit que directio mala cum reuolutione, natus decidet a perpetua dignitate prodigiosè. Si vero inciderit vnum eorum tantum, decidet à dignitate, quę non est perpetua, sed ad arbitrium.

55 Luna sub Solis radijs generaliter infelicem exitum decernit.

56 Luna in septimo loco magis facit comitiales quàm alibi, post autem in ascendente, sed ibi potius fatuos, si malè fuerit posita.

57 Si mors hominum, omnibus ex genitura decerneretur, impossibile esset clades magnas aut pestilentias aduenire.

58 Cum in extremis signorum accidunt Planetis impedimenta, in extremis corporis timendi sunt morbi, vt

chi-

chiragra,& podagra, tum etiam vitia, vt claudicationes.

59 Deteriora impedimenta accidũt, cum in fortunæ fuerint in ascendente, & fortunæ in occidente, quam cum contrario modo.

60 Si Mars in nocturna genitura, aut Saturnus in diurna, Mercurium cum Luna impediant, fient comitiales, sufficit etiam, vt Lunam solam, nec illa, nec Mercurio ascendens aspiciente, nec altero alterum.

61 Insani verò, cum Luna sub Sole à Saturno opprimitur; Dęmoniaci, cum ea in opposito Solis a Marte vexatur.

62 Iuppiter, & Mercurius cum dominantur locis impedimentorum, comitialem augent: Sol & Mars, dæmoniacos: Saturnus, & Luna insanos.

63 Tres Planetæ curationes significãt, Iuppiter per pecuniam, & bonum consilium, Mercurius per medicinam, Venus per magiam, auxilium diuinum & somnia, & casum.

64 Cum luminaria, & in Mars, & Venus in masculinis signis fuerint, & maximè Ariete, Libra, Aquario, ac Geminis, mulieres efficientur tribades, & masculi in masculos proni erunt, non tamen pati desiderabunt.

65 Quando si hæc omnia in fęmini-

nis, & maxime in Tauro, Scorpione, & Capricorno, fœminæ secundum naturam se habebunt, viri autem pati desiderabunt.

66 In genituris geminorum, ascendentis dominus, & si in bicorporeo fuerit, & loci coniunctionis dominus etiam si ascendens in fine signi fuerit, quod bicorporeum signum sequatur, sufficiet. Atque alterum sub succedente signo expecta: si vero etiam Luna in bicorpore fuerit, ambo viuere possunt.

67 Luna cum à radijs Martis amicis necessarij, facit natum exerceri, ac corpore agilem, ac robustum.

68 Quandoque accidit, vt qualitates animæ in filijs, consimiles ad vnguem in genitura eis, quæ sunt patris videantur.

69 Mercurius cum nodis, subtilitatem præstat magnam ingenij, fœliciorem tamen cum capite, quàm cum cauda.

70 Quando dominus ascendentis fuerit in bicorporeo peregrinus, natus erit anceps in negotijs suis.

71 Iouis & Veneris trigona radiatio, si natus vixerit, magnam aliquando dabit animi voluptatem.

72 Cum infortunæ luminaria ex in-

feriori

feriori parte pulsauerint, pericula significant, & læsiones cum ex superiori, detrimenta.

73 Cum in septimo loco, in fortuna cum regia Lunam pulsauerit radijs natus magnas patietur insidias & damna.

74 Sol cum Saturno nouæ domui præexistens, vera, & mala omnia dabit. Sol & Iuppiter, aut Venus vera, ac bona. Saturnus, & Venus, mixta veraque Saturnus, & Luna, aut Saturnus ac Mars, vel Saturnus ac Mercurius, falsa ac mala. Mars & Mercurius etiam falsa, ac mala. Luna, & Mercurius aliquando vana, aliquando vera. Venus sola debilis, aut Iupiter, iucunda, attamen falsa.

75 Superiorum genituræ habent ascendens cum Luna alligatum, non cum significatore Patris, & plerunque habent indicia magnorum malorum, & dominus quartæ parum concors, est cum dominus secundæ, & Luna, aut Venus cum Marte, vel Mercurio conueniunt.

76 Adoptiui filij sunt, quorum domino genituræ Saturnus cum Iouis virtute accedit, est quoque Saturnus quartæ dominus. Quod si cum hoc fuerint spurij signa, erit adulteri filius

pro proprio habitus.

77 Primus sextæ significator morbos, secundus seruos, tertius significat animalia.

78 Cum Luna cum Marte conuenerit, erit natus audax, præceps, iracundus, & inconsultus, ac agilis. Si autẽ cum Saturno, lentus, iners, timidus, iniuriæ patiens, dolosus. Cum Ioue, moderatus, prudens, ac boni habitus, cum Sole est ambitiosus, & clari nominis necessario: cũ Venere placidus, mansuetus, iocosus, eneruatus: cum Mercurio, docilis, & acutus, animique subdoli.

79 Cum dominus secundæ fuerit fortuna, vt si Pisces ascendant, & dominus sextæ, erit nato lucrum, vel ex ægris, vel ex seruis, vel ex bestijs idem si alter alteri iungatur.

80 Cũ cõmutantur Planetæ duorũ, in reuolutione beneuoli, fiet amicitiã, quæ finitur. & domini locorum causam significabunt, & si fuerint fortunæ, lucrum, & voluptatem.

81 Cum duo Planetæ eiusdem naturæ simul conueniunt, vel etiam exquisitis radiationibus colligãtur, quod perambo significatur, clarè apparet, vt iucunditas ex Ioue, ex Venere,

82 Maximi omnium sangninis effu-

sores

fores sunt, cum Mars Solis radijs roboratur: post hi in quibus Mars est in Solis dignitatibus potens.

83 Solis commutatio facit amicitiam, propter, honestum, decorum, & gloriam, Iouis ob vtilitatem, Veneris ob voluptatem, Lunæ ob naturæ conuenientiam.

84 Mars & Sol, ac Luna itinera significant, nonaq; ac tertia domus. si eorum significatores cũ luminaribus maximè temporis conuenerit.

85 Planeta quilibet virtutem suam ad actum perducit per luminaria, non quòd luminaria talia significent.

86 Partes Orbis, ex natura Planetarum, & signorum, & cęli partium, & latitudinibus habentur.

87 Sol orientem. Luna occidentẽ, Venus austrum, Mars septentrionem. Mercurius multiformem mutationem ostendunt.

88 Cũ insignis aqueis significatores fuerint, itinerũ, infortuneq; super eas eleuatæ aut fortunæ inimicæ tempestatibus obruentur in itinere.

89 Cũ Iupiter in decimo loco fuerit in trino Martis, ac potens, & Sol cũ capite Draconis, & Luna cum corde Leonis, etiam filius rustici si fuerit, exaltabitur.

90 Cum Planeta aliquis per partē in cuſpide ſeptimæ domus, in domo ſua fuerit, erit mors proculdubio ex natura planetæ illius atque loci.

91 Taurus à proprietate ſignificat præcipitium, humana ſigna latrones: Mobilia ſigna inſidias, & varia impedimenta quadrupedia canum, aut equorū, vel ferarum detrimenta in itineribus.

92 A decima ad primam meridies, à prima ad quartam oriens, à ſeptima ad quartam ſeptentrio: à ſeptima ad decimam occidens.

93 Cauſā itinerum domini ſignificatorum oſtendent.

94 Saturnus potentior eſt ad mortem, Mars ad genus violentæ mortis.

95 Cum Iupiter potenti Stellæ copulatur, aut Sol beneficæ, & Luna fuerit in oppoſito, vel quadrato, magna fortuna cum malo exitu plerunq; decernitur.

96 Si proceſſus eſſet per ſigna ſingulis annis, decimus nonus, ac ſeptimus ſemper ingens periculū afferent:

97 Locum occidentem ex natura propria cōuenit obſeruare, & planetæ aſpicientis, & euntis ad eum motu æquinoctij, vel proprio.

98 Loci propria natura eſt, ex ſtel-

lis

lis ibi existentibus, vel in eodem circulo ascendentibus, vel ex se ipsa, vel dominanantis planetæ.

99 Venus facit homines verecundos.

100 Venus facit obstructiones, colicam, & choleram, morbum per accidens.

101 Mercurius facit comitiales, & melancholicos, vi morbi; Luna autem vt ægritudines.

102 Mors violenta decernitur, cũ infortunatũ vtraque loco mortis dominantur; vel si altera aspiciat, altera dominetur, vel vtraque aspiciente, vel cũ ambæ super dominum mortis eleuantur, vel cum altera cum duobus primis vitæ significatoribus præest, vel cum dominus mortis impeditus fuerit, maximè sub radijs Solis, & infortuna ex toto, loco mortis dominetur, vel si infortuna omnem in loco mortis sibi vindicet potestatem, vt in primis partibus Scorpij.

103 Infortunæ in angulis mortes publicas decernunt, cædem celeriter, ob hoc raro publica mors in senio.

104 Sol publicam mortem vt decernit ferro vel igne, sic Luna suspendium.

105 Cum infortunæ præfuerint &

va-

validæ, mors violenta erit ab initio ad finem. Si mediocres, initium erit violentum, morietur tamen ex morbo. Si autem debiles, mors quidem acerba erit, sed minimè violenta.

106 Quidquid significat coniunctio duorum planetarum, idem decernit coniunctio planetæ, aut radius cum fixa eiusdem naturę.

107 Multi relinquunt Astrologiã, vt vanam, alij vt incertam nobis. Qui autem hęc quæ hic tradita sunt nõ intelligent, vt difficillima destituent.

108 Difficillimũ omnium, est scire locum interfectoris. nam ex hoc habetur & tempus mortis, & locus, & genus, non enim est facile dijudicare, an interficiatur. Sed & ex eo scimus, quæcunque in vita aguntur.

109 Cum igitur debilis, & vnicus fuerit significator, & planeta contrariæ naturæ in loco valido fuerit, ille vel eius radij, sine fortunæ auxilio, proculdubio occidet.

110 Si mortis significator in angulo fuerit, si orientalis, si cursu velox, si in dignitatibus suis, si iuxta nodos suos, si in summo parui circuli, mediocrẽ vitæ significatorẽ solus abscindet.

111 Si mortis genus violentum significatur, promptius, & frequentius abscindit.

Si

112 Si geminata fuerit vis occisoris planetæ per aliū, vel alterius radios, vel sidus aliquod, vitæ autem significator validus extiterit, occidet omninò, cum occisor fuerit per se potens.

113 Maxima igitur ambiguitas est, cum radij fęlices luminarium, aut fortunarum, super locum interficientem ceciderint. frequenter enim seruantur præter spem. alij autem, de quibus sperabamus, vt etiam in morbis medici intereunt.

114 Cū Luna Solis oppositā nebulosis stellis iuncta est, vitio luminum capietur.

115 Capietur & vitio eodem, cum Luna in septimo loco existens, ab ambabus infortunis, ex superiore loco pulsata fuerit. quod si valida fuerit radiatio, cæcabitur.

116 Cum inter significatorē, & promissorem fuerint corpora infortunarū, non abscindentia, vel regiæ malæ, in occursu radij primi cōsentiente reuolutione, absque eo quod ad consimilem perueniat partem, natus morietur.

117 Cometæ immobiles, seditiones, mobiles autem bella indicant ab externis. In cardinibus, regum mortes, in nono loco, religionis iacturam, in octauo, vel duodecimo loco, pesti-

len-

lentiam, aut iacturam segetum, in vndecimo, nobilium mortes.

118 Frustrà querimus beatos, sanctos, ac verè Deo gratos ex sideribus. Si quidem maius est, Deo gratum esse, quam cœli promissa possint polliceri.

119 Rex ille firmiter regnum administrabit, cuius genitura cum regni initio consentit.

120 Quatuor cardines genituræ, sic quatuor elementis assimilantur, vt cui Taurus ascendit, plus terra, post aer dominetur, cui Leo, plus ignis post terra, ac sic de alijs.

121 Quæque genitura cuique in aliquibus dissidet, ac conuenit. oportet igitur cũ hominibus conuenire, in his solum, in quibus genituræ cõueniunt, in cæteris ab illorum communicatione abstinere.

122 Reconditæ rationes rerum docent nos, vt illis credamus, qui autem inter multa falsa, parua miscet vera, nõ est in recitando dicta eius illi quicquam tribuendum.

123 Cũ dominus duodecimi loci, dominũ primi oppresserint, vir ille etsi egregius fuerit, inimicorum tamen potentium odio à multis impedietur. Sed hoc magis, cum constans planeta fuerit, & in fortuna, nec in ascenden-

te

te vim illam habeat.

124 Luna cum in debili loco existens vitæ significator extiterit, Iouis iuncta corpori, in finibus Iouis, ad illum transfert vitæ significatum, fitque significator debilis in qualibet etiam ætate non perfecta, corpus ponderosæ Lunæ vinctum, discrimen non leue affert.

125 Composito ex Ioue, Venere, Luna, & Mercurio, suauitatem eloquij maximam affert. vnde si Iupiter in Virgine, & Luna in Piscibus fuerit, Poetæ fiunt.

126 Habet & Leo præcipuũ quiddam in eloquentia, cor enim est, in quo animi sedes.

127 Pertinacissimi sunt, quorum ascendenti Saturnus præest, & ipse cũ Regia, vel Bebenia.

128 Crudelissimi, quibus Mars eodem modo cum stella de natura Martis, aut Saturni.

129 Sine exemplo artem condere temerarium; cum vno, vel duobus leue; cum pluribus autem negocioſum.

130 Per ordinẽ artem tradere, iucundius legentibus. At per sermones diuisos magis proprium inuentoribus. sic enim vnaquęq; ars iuuenta, & tradita est.

Sin-

131 Singularib. non possumus quicquam determinare: composita sunt innumerabilia. Ob id decet enarrare singularia omnia, pauca etiam generalia, vt ex his infinitum illud, iudicio comprehendi possit.

132 Cum fuerint Planetæ in eadē latitudine, in oppositis partibus erit diminutio oppositionis secundum aggregatum vtriusque latitudinis, idem de quadratis, sed non eodem modo.

133 Recte ne videtur in hoc dixisse Ludouicus Rigius, cum Mercurius & Venus retropedant in Scorpione cum Sole, & Mars est in Geminis vel Virgine, violenti morbi contingunt.

134 Non perueniet ad finem bonum, vixq; fieri potest, vt perseueret in magno gradu, cui nulla ex progenitorū figura genituræ propriæ auxiliatur.

135 Si Sol, & Iupiter, & Mars, vel Saturnus, in trigono igneo fuerint, vel in locis sublimibus, vel cum fixis nobilibus, vel se aspicientes, erit natus magni nominis ratione potentiæ: & si Sol cum Ioue & Mercurio in Aereis, eodem modo erit, ratione industriæ.

136 In augium transmutatione, & regiarum, & magnarum coniunctionum, magni homines nascuntur, quā-

uis.

uis genituræ hoc adeo expreſſe non oſtendant.

137 Dirige Saturnum, vt ſcias ſtatum parentis, & conſtantiam, & agrorum, & ædium conſtitutionem: & Iouem, vt intelligas amicos, potentia, diuitias, & iudicium. Et Martem, vt cognoſcas audaciam, promptitudinẽ contentiones, & pericula, ac flagitia. Et Solem, vt cognoſcas patris ſtatum, exiſtimationem, vitam, & honores. venerem autem, vt ſciamus matrem, ſorores, filias, vxores, ſtatum corporis animique, itinera, famam, rationem. Aſcendens, vt corporis propriæ & animi qualitates agnoſcas. Cor Cœli, vt ſtatum, & dignitates. Secundam autem, vt lucrum, decimam vt artem, & cum his commiſceas, quod non proprium eſt, & rurſus conſideres, quid non proprie ſignificent.

138 Cõſiſtentia Lunę in primo mẽſe generationis, & Mercurij in ſecundo; atque aliorum, qualitatem corporis & animi magis decernit, quàm genitura. Quia verò difficille fuit hoc ſcire, genituram in qua vmbra horum omnium appareat inſpicimus.

139 Quintum ſignum ab aſcendente filios ſignificat, quia eiuſdem naturæ eſt cum ſigno aſcendentis, & ſi fuerint

fint duo signa in ascendente, erunt & nati diuersorum morum interse valde, & nona significat eadem causa filios filiorum.

140 Decima domus artem significat, & secunda diuitias, quæ arte parantur, est etiam in signo eiusdem naturæ, & sexta labores, bestias, & seruos ad artem, & diuitias comparandas necessaria.

141 Si cometes apparuerit in quarto, vel quinto, vel octauo mense, vel decimo prægnantis, natus erit iracundus, & sedicioſus.

142 Consistentia infantis in vtero nihil recipit præter significata corporis, & animi.

143 Luna cum cauda existens, matrem adulteram plerunque significat, ac puerum etiã adulterinum, & malorum morum, sæpius etiam in fortunatum.

144 Cum videris, quod decreta patris non eueniunt ei, qui nutrit filiũ tanquam suum, tunc certus esse debes, quod adulterinus ille est.

145 Antiqui huius artis scriptores, adeo oscitãter, ac ludibrio artem hãc tractauerunt, & in eorum libris exẽpla inuenia, quæ siderum lex non admittit. Vnde non solum illos fugere de-

decet, sed qui eorum libris inniti se fingunt, artem ignorant, & plerique eorum sycophantæ sunt.

146 Qui artem aliquam destruit, longè deterior est imperito, nec vacat mens illius malitia, desidia, & ignorantia.

147 Sol non potest recipi à Venere, nec à Mercurio, nec illos recipere.

148 Optima est genitura, in qua Iupiter Solem recipit: post vbi Lunam; post Saturnum, & Martem post Mercuriu m, & Venerem: oportet autem ex eadem parte esse.

149 Cuique Iupiter est in aspectu Solis, is superbus erit, & sine causa, si non recipiat.

150 Si Reges præponerent ex filijs regno optimam & dignam habentem regno genituram, ac illius initio concordem, nunquam successio regni tolleretur. Quod si cum hoc etiam vni indiuisum relinquatur, illeq; ad artes rege dignas instruatur, non ad aulicos luxus, ac ceremonias, illa successio tandem orbis imperio potiretur.

151 Quatuor quartæ terræ quatuor similes sunt elemẽtis, & sicut nullum, quod ex his constet, perpetuum esse potest, sic tõtus orbis in vnum imperium diu consentire nequit.

Ter-

152 Terrea occidentem occupant, auſtrum autem ignea, orientem aerea, boream aquea.

153 Terrea & aquea bello, Aerea & ignea contemplatione. ob id atroces bello gentes literis ſemper inimicæ fuerunt.

154 Boreales intelligas, qui ſub utriſque polis; auſtrales qui in torrida habitant regione.

155 Aſtrologi, vt diuinatores, peſſimi homines ſunt, deceptores. ac malorum morum: Philoſophi naturales veritatis, ſtudioſi, ac probi. ob hæc Aſtrologus tantũ verax eſt ac probus, quantum in ſua diuinatione adhæret principijs Philoſophiæ naturalis.

156 Aries, Leo, & Sagittarius, ſimilitudine, non proprietate naturæ, ſunt orientalia.

157 Scientia hæc, ſcientia mea nõ eſt. ob hæc nec meus quæ diuina ſunt in aſtra redigere. multis enim videtur ad opinionem de ſe facere, vt impij habeantur.

158 Qui de ſe ipſo multum pollicetur, multorũ errorum eſt autor. Qui diffidit huic ſcientiæ, non eſt idoneus.

159 Qui inconnexa ſcribunt ſimul, volunt videri abſtruſum aliquid docere velle, cum ridiculi ſunt & inanes.

Opor-

160 Oportet authorem veritatis multo magis insistere in falsis destruendis opinionibus, ab alijs traditis, quàm in enarratione veritatis.

161 Sũt & figuræ cœlestes, aliæ ab his, quas nos situ stellarum fingimus, vires habentes. quæ tamen, cum ad stellarum, & erraticarum vim comparantur, aut raros, quanquam graues, aut leues, essi frequentes, effectus producunt.

162 Ambitiosi planetæ sunt Sol, & Iupiter, & Mars. vbi igitur in angulis, & fixis signis fuerint, ambitiosos reddunt, maximè, si locis Lunæ & ascendentis dominetur.

163 Luna in ascendente, diuinandi cupidum, & futurorum scientiæ facit, maxime autem in communibus, ac nobilibus signis.

164 Causa, cur rari euentis prædici soleant ab astrologis est, quoniam imperfecta est ars ex his quæ scripta sunt, ad hanc diem. qui verò excellentes in ea fuere, infantium quidem euentus videre iam senes existentes desperauerunt. Sed iuuenum non adeo certam genituram, tot laboribus indignam iudicarunt.

165 Incõmensuratæ sũt genituræ, vel quia planetæ omnes in vno sunt signo,

gno, aut quia se respiciunt, vel quia omnes cum fixis potentibus, aut in angulo.

166 Cum fuerint planetæ sparsi, nec in vno trigono, homines erunt magis accomodati generaliter, cum in eodem trigono, plus valebunt in vna re.

167 Genituræ, in quibus ascēdens, aut Luna, aut dominus ascendentis, vel Sol, aut plura ex illis, sunt in loco coniunctionis proximæ Saturni. & Martis, & in signis igneis ad fortitudinem homines inclinant. Quod si Sol, & Iupiter eos adiuuerint, erunt duces militum strenui. Hoc idem præstat Capricornus.

168 Sol & Mars in secunda peregrini, aut cauda, effundere substantiam hominem significant.

169 Ille non erit omnino infelix, cui loca principalia fuerint omnia in dignitatibus Iouis.

170 Luna in octauo loco, acerbum in capite, & plerunque exitialem significat, in genitura autem, præcocem mortem.

171 Mora nati in vtero, rarò excedit motum Solis, vsque ad consimile signum.

172 Saturni regressus parte 7. mi-

18. Iouis parte 9. mi. 55. Martis parte 11. mi. 12. Veneris parte 14. mi. 4. Mercurij parte 15. mi. 13. Tempus autem in Saturno regressus, dies 136. in Ioue 118. in Marte 64. hor. 12. in Venere 40. hor. 16. in Mercurio 23.

# HIERONYMI CARDANI Aphorismorum Astrologicorum. SEGMENTVM QVARTVM.

1 GEnituræ mulierum, in vita similes sunt virorum genituris, infortuna ex toto dissimiles: in moribus autem medio modo se habent.

2 Cum plurimi Planetæ in eodem signo, non in eadem parte fuerint, tẽperaturam ad vnum genus, & actiones, inclinabunt, dabuntq; succedentia sibi in annis plurima: sed nil egregium promittunt.

3 Cancri signum, nostro tempore validum existit ob sidera in eo existẽtia, ob magnam coniunctionem, quæ in aqueo signo est, & ob planetarum dominantium robur.

4 Mulier, quæ Martem cum Luna habet, nullo modo casta, & pudica

esse

esse potest.

5 Stellæ, quæ in Hydra, & quæ in cauda Scorpij, & Serpentarij caput, & quæ de natura Saturni, & Veneris, vt Leonis cauda, & Saturni cum Venere congressus, & quæ sunt de natura Lunæ & Saturni, quarum non est exemplum, & congressus Saturni, & Lunæ, & Veneris, & Mercurij, & iterum Saturni, et Martis congressus, et stellæ, naturæ eorum, et etiam Mercurij, et Saturni, et eorum congressus, et quædam puræ Martis, et quędam ex natura Solis et Martis, et iterum luminarium oppositio, et nodus vterque nullo minus, maxime cauda, venenum significant.

6 Superiores Planetæ cum primùm è radijs Solis exeunt, animam nobilē, alacrem, splendidamq; efficiunt: cum radios Solis illico sunt subituri, agrestes, timidas, auaras: cum in statione prima, ancipites, potentes, dolosas: cum in secunda, ancipites, deiectas, debiles: cum in imo circuli parui retrogradantes ante oppositionem, pertinaces, validas, sperantes: post oppositionem pertinaces, debiles, desperantes.

7 Inferiores Planetæ, cum primum è radijs Solis orientales exeunt, lan-

guidas, et sollicitas animas faciunt: at cum primum post occasum apparere cæperint, incrementa omnium demonstrant. cum vero retrogradari volunt, tristes & ancipites: cum ab illa exire festinant, debiles quidē, & omnino in aliorum potestate. dum vero retrogradantur, ad Solis coniunctionem vsque timidos, nec sui iuris: cum vero iam Solem retrogradādo præterierint, pœnitentes, ac diffimulatores. Luna in Solis opposito, perpetuas declarat contentiones, claraque facta? At sub radijs, magna detrimenta, calamitates, insidias inferentem alijs, ac sibi quæ parētur. In prima apparitione, sperantes, ac mutabiles.

8 Debilis est status Veneris, & Mercurij, cum occidentales matutini extiterint, vel orientales vespertini: at apparentium contra potens; mediocris autem, cum in die occidentales vespertini, aut in nocte orientales matutini. possunt enim, sed non perficiunt. At inter mediocrem validumq; proximior mediocri est, cum nocte quidem occidentales vespertini iam sub terrā descenderint; valido propinquior status, cum ante lucem orientales nondum tamen super finitiorem visus ascenderint.

In

9 In perfectis autem genituris, Luna redit ad signum ascendentis conceptionis, vel eius oppositū, vel ad Planetam, cum quo in conceptione fuerat, aut eius aspectu, vel ad signum proprium. Ascendens autem, est locus Lunæ conceptionis, vel eius oppositum, aut locus domini conceptionis conceptionem precedentis.

10 Si loci Lunæ & ascendentis genituræ, & conceptionis commutarentur, non possent in vna die nisi certis paucis momentis homines nasci, esset-què plurium idem fatum.

11 Nullus nascendi certus terminus datur, pleriq; tum à 266. ad 278. diem nascuntur cum perfecti fuerint.

12 Sunt & genituræ solares, cum Sol ad locum ascendentis, aut domini eius, aut ad locum domini coniunctionis, vel proprij loci reuertitur.

13 Saturnus debilis redditur, in locis luminarium, & Martis.

14 Planeta siluester prædominans facit desiderare solitudinem, præcipue Saturnus.

15 Si loci Lunæ, & ascendentis cōmutarentur in genitura, & conceptione, impossibile esset, vt gemelli simul generentur.

16 Si consimilis angulus loco domi-

ni coniunctionis in genitura secundū partium numerorum necessario inueniretur: & necessario esset multorum singulis diebus vna genitura.

17 Saturnus benè dispositus, facit dominandi cupidos, auaros, fallaces, secretorum cognitores & legis, crudeles. Si autem male sit dispositus, inuidos, timidos, lugubres, inuerecūdos, proditores, odio bonos etiam gratuito prosequentes.

18 Malè dispositus planeta dicitur in contrario suarū dignitatum, ingrediens radios Solis, retrogradus, pulsatus radijs infortunarum, occidentalis proximus Solis per 30. partes, cadens ab angulo, male fixe potenti copulatus, impeditus, stans, tardigradus, siluester, diurnus infra terram de die vel de nocte supra terram, nocturnus contrario modo orientalis vespertinus, occidentalis matutinus, & lumine diminutus.

19 Communicare dicuntur planetæ, cum ambo communiter loco vni dominantur: vel cum qui dominatur, respicit alium, aut ei per partes paucas iungitur, aut quod, qui gubernat, reddit virtutem alteri, vel ad illum à leuiore planeta lumen defertur. Quod si coniunctus planeta, aspicienſue, in

lo-

loco nullam habeat dignitatem, homo erit dissimilis sibi, & incompositus. Quod quidem etiam videtur, quamuis non sint in planetis simul dominantibus, contrariæ naturæ, vt Saturno, & Venere, Marte, et Luna, vel Ioue, et Sole et Luna. communicant etiam, cum in loco dominatoris alius planeta dominantur. Solitarius igitur et in suis dignitatibus esse debet, qui solus præest.

20 Assimilari planeta dicitur, quoties in illius dignitatibus, et aspectu fuerit.

21 Cum planetæ duo simul dominantur, erit iudicium ex amborum significato mixtum. Cum autem dominus ipse alteri assimilatur, præcipuam quandam vim obtinebit.

22 Quando Mercurius fuerit Lunæ proximus, natus erit vndequaque similis.

23 Saturnus si Ioui assimilatur, fueritque benè dispositus, erit natus prudens valde, magnanimus, quietus, philosophus, et regni minister. Male autem, sine sensu pertinax, vanis deditus artibus, solitarius, et tædiosus, difficilis, et infortunatus.

24 Saturnus si Marti assimilitetur, benè dispositus, erit pertinax, crudelis,

proditor, temerarius, loquax, iracundus, adulator, Deos, homines, principesq; odio prosequitur, sicarius, nullis flectetur precibus, nullis rationibus, lusor, ostentator, in rebus omnibus immoderatus, laboriosus, miser, nocens, facinorosus, incestus. Si male, erunt hæc validiora, imbelliſque, hoc, fur cum latro, impius, omninoq;, infelix.

25 Eadem fermè erunt, si Mars Saturno assimiletur, nisi quod proprietates Maris magis retinebit. Erit enim audacior, magis iracundus, et præceps minus verò proditor, ac dissimulator, et auarus, ac inuidus.

26 Saturnus si Veneri benè dispositus assimiletur, erit osor mulierum, spernetque formosa, inuidus, et deceptor, ac maledicus, legi suæ non credet. Deũ tamen timebit, occulti consilij, pacificus, verecundus, diuinator, zelotypus, tædiosus, immundiciæ mediocris. Male ebrius, pollutus omni venereo flagitio, pati non solum agere cupiet, etiam ad belluarum concubitum inclinabitur, deteriora his cogitans, maledicus, inuidentissimus, maleficus, immundus, ociosus, & deses miser, ac infortunatus.

27 Si Soli Saturnus assimiletur, erit re-

religiosus, taciturnus, fidelis, melancholicus, mente superbus, crudelis, & hoc, si bene fuerit dispositus. At si male, erit Dei contemptor, auariſſimus, ac superbiſſimus, diſſimulator magnus, & inæqualis.

28 Si Lunæ Saturnus similis bene fortunatus extiterit, vilibus illum implicat exercitijs, sordida amat, & velia, auarus, & pertinax, vetulas diliget, & erit specie benignus, sed deceptor. At si male, miser, periurus, pertinaciſſimus, timidiſſimus, vagabundus, infortunatus, nullius omnino existimationis, etiamsi Princeps extiterit: in vtraque autem dispositione, rei rusticæ amatores facit.

29 Oculus Tauri, vt rectè inquit Ioannes Schonerus, facit natum inquietum, turbulentum, seditione populari gaudentem, interdum bonum socium, si in ascendente, vel cum Luna fuerit.

30 At quod ei opponitur (Scorpij sidus) crudelem, rapacem, præter hæc, violentum, benè tamen fortunatum, si cum Luna fuerit, namque in ascendente, mores solum significat.

31 Oculus autem Tauri, si cum Sole fuerit, cordis pulsum dabit, maximè in sexta, dignitates, sed violentas,

vixq; euadet, quin veneno, aut cordis vulnere pereat, nisi cum eo fortuna fuerit.

32 Hoc & Schonerus rectè dixit, quoniam Venus in Scorpione & Libra, Veneris intentum facit, in Leone autē amatorem, in Tauro musicum, ebrium, gulosum; in Piscibus saltatorem, choreis se delectantem, & euntem per loca amœna libenter; in Geminis, dat delectationem ex angulis, & pingendi, ac fingendi desiderium affert, tum pulsandi musica instrumenta. Sic & in Ariete, delectabitur videre pulchras picturas, audire musicam, et odoribus gaudebit, ac etiam opiparè conditis. Sed in Cancro, nauigationibus, aquis, rebus populatibus, cantu proprio: in Virgine, omni genere voluptatis, nam desiderium est in iecore, facitque gulosos: in Sagittario et Capricorno, saltibus, et equis delectabitur; in Aquario autem cursu. Hæc autem in pueris clariora videntur, qui institutione, aut pudore minus tenentur.

33 Si Saturnus cum Mercurio similis, ac bene dispositus extiterit, facit bonum, ac ad omnia mirabile ingeniū occulta sciet, erit inuidus, versutus, maledicus, sophista. Si male, erit deceptor, fur, nigromanticus, mendax, la-

laborioſus infelix, inuidentiſſimus, conſanguineis odioſus, noctes ducet inquietas.

34 Iupiter facit verecundos, lætos, magnanimos, liberales, iuſtos, pios, alti conſilij, manſuetos, benefactores, felices. Male diſpoſitus prodigos, dæmonibus ſeruientes, ſuperbos, adulatores, contumaces, inuerecundos, vitijs delectabitur, et vilis erit animi, patienſque iniuriarum.

35 Iupiter ſi Marti ſimilis extiterit, erit fortiſſimus, et in re bellica prudētiſſimus, vindex, calidus, crudelis, magnanimus, valde iracundus, honoris cupidus, callidus, felix, ſeipſum ad maiora prouehens: et hæc, ſi fortunatus planeta extiterit. Atſi contra, erit impudens, vilipendens alios, ſuperbus, inobediens, prædo, pœnitens, leuis, infidelis, ſequiſſimus, abſque ſenſu, et ſine conſilio, ſuos diſperdet, temerarius Dei çontemptor.

36 Generaliter autem, cum Planeta malè diſpoſitus fuerit, extremum virtutis, quod vitium eſt, pro virtute ſignificabit, vitia verò ipſa augebit in immenſum, proximaq; illi etiam adijcet.

37 Iuppiter cum Soli aſſimilatur, liberales, cum tenacitate tamen, facit.

splendidos, fortes, iustos, pios, fideles, sapientes, magnificos, magnanimos, felicissimos, denique diuinos, ornatos etiam vestibus, nitidos, mundos, verecundos.

38 Iupiter si Veneri similis extiterit, erit natus pius admodum, amans, gratus, iustus, humanus, splendidus, munificus, nitidus, mundus, ornatus, liberalissimus, ioci, & cibi appetens, probus, fidelis, affinium obseruator, amicos diliget, venereis secundum legem addictus, filiorum & vxoris amans, sani sensus, doctrinam, & scientias, magis colet, quam habebit, candidi animi, propter Deum etiam mala sponte subibit, misericors.

39 Iupiter si Mercurio assimiletur, erit omnium scientiarum peritus, boni ingenij, boni consilij, bonorum morum, beneficus, amabit collegia, amicos, & consanguineos fouebit, diuitias, & honores habebit, & negotia Principum administrabit: erit tamen diuersorum morum, catus, & fraudulentus.

40 Cuicunq: Luna & Mars in Cancro sub radijs fuerint Solis, is, etsi rex fuerit, phagedæna perpetua tenebitur.

41 Iupiter si Lunæ assimiletur, erit bonus, mitis, laborioſus, diues, non

vindex.

42 Mars cum dominus solus extiterit morum, ac benè dispositus, erit fortis, iracundus, crudelis, contemptor aliorum, reget bene milites, malè ciues, deos spernet, arma diliget, destruet aliena, propiaq; immodicus, confidens de se, fortunatus.

43 Mars Soli similis, crudeles, fortes ad summum facit, fidos suis principibus, veloces in operationibus, claros, & iracundos, felices.

44 Si Lunæ Mars similetur, facit contumaces, & maxime laborioſos, vilibus incumbent, & vitam valdè diuersam ducent, itineraq; amabunt.

45 Si Veneri Mars similis extiterit, erit alacer, bonus socius, libidinosus, iocosus, saltator, cum feminis, & pueris ex æquo concumbit, sed mulieres tamen plus diligit, felix valde, deses nec amat, artes vt laboret in eis, zelotypus, facilis ad iram, haud tamen tenax eius, plura tamen vastabit.

46 Mars, si Mercurio assimiletur, erit festinus in negotijs, bonus artifex, potens, laboriosus, versutus, dissimulator, proditor æqualium, instabilis, contumax, variæ fortunæ promptus admodum ad negotia, crudelis, inquisitor, inimicis valdè malus, socijs

fa-

satis bonus, inquietus, luſor, & violentus: nequam autem erit, & rapax, vitia tamen animi diſſimulabit.

47 Solis ſe facit claros iuſtos, fortes, magnanimos, auaros, caſtos, prudentes, ac pios, fideles quoque, ac verorum ſomniorum, amicitiæ cuſtodes, filios non amant, minusq; vxores, honorum, & dignitatum appetentiſſimos, crudeles etiam, & iram ſeruantes, nitidos, & mundos.

48 Veneri aſſimilatus non ſolùm pios, ſed mites, ac miſericordes. vincit enim Veneris miſericordia Solis crudelitatem, quæ leuis eſt. veriſſimorum ſomniorum, nitidiſſimos, ornatiſſimos, ac maxime mundos, candidi animi, mediocriter hilares, moderatos, verecundos, pudicos, iuſtiſſimos, amicitiæ obſeruantiſſimos, non adeo prudentes, parum liberales.

49 Mercurius, ſi mores ſignificet, erit ad omnes artes, ac ſcientias & pronus, & aptus: antiqua, & ſecreta in lucem reuocabit, magnus arithmeticus, mercaturam ſponte amplectetur, etiamſi princeps extiterit, amabit picturã, ſculpturam, & plaſticam artem, acuti ingenij, bonæ rationis, experietur multa, aliqua etiam inuenier.

50 Homo ad ea inclinatur, quæ per

pla-

planetam, in cuius reliqui dignitatibus planetæ extiterint, significantur, atque in his plurimi terminos obseruant. Si quidē Saturnus dominetur, turpibus factis, ac sermonibus, & cogitationibus incumbet. Si Iupiter, lucris, honoribus, & rebus dignis. Si Mars, contentionibus, & vexationi. Si Sol rebus publicis, ac magnificis, cultuique Dei. Si Venus, luxibus & comendo & ornando se. Si Mercurius disciplinis, ac studijs. Si Luna, popularibus rebus, & itineribus, ac rebus alienis tractandis: hoc enim huic Planetæ proprium.

51 Luna si præsit moribus, facit contumaces, varios, obtusi ingenij, vagabundos, viles, timidos, nullusq; seruitij. Malè posita proculdubio stultos facit.

52 Luna Soli assimilata quod rarissimè euenit, facit homines spiritu inflatos, nulli tamen negotio aptos fideles, nulli seruientes, publicis delectantur, ineptos, contumaces, variæ vitæ, ac morum, quoddam diuinum præferunt, ac superstitionibus deditos amāt, maximè magiam, de seipsis multa pollicentur, ingratos.

53 Venus cum Mercurio assimilatur, magnā in artibus exercendis gratiam

tiam affert, & in voluptatibus ex cogitandis callidos facit, Musicæ & Astrologiæ appetentissimos, varios etiam, & ad negocia tractãda maximè aptos, tum etiam leuiter fallaces.

54 Cum Venus assimilatur Lunæ, voluptatem totam ponit in peregrinatione, in rerum publicarum administratione, homo parui ingenij, mollis, & effeminatus.

55 Cum Mercurius Soli assimilatur, facit acutos, iudices bonos, rectos, sapientes, in rerum negotijs expertes, diligunt vaticinia, compti, & modesti, ac sobrij, fideles, ambitiosi, casti, ac tales qui pro moribus ab omnibus laudentur, quanquam nemo ex his comis sit.

56 At cum Mercurius Lunæ assimilatur, agunt negocia etiam dormientes, celeres, mutabiles, versuti, ingrati, vaniloqui, mendaces, varij, mediocris fortunæ. & hoc, si benè Mercurius fuerit dispositus.

57 Cum Luna & Mercurius sub radijs fuerint Solis, in Leone, vel Ariete, aut Sagittario, Sol erit morum dispositor solus, aut cum Marte, vel cũ Ioue.

58 Scire necesse est mensuram vitæ vniuscuiusque sicut ex quatuor ele-

elementis tot genita constant.

59 Natura Solis est quasi media inter naturam Saturni & Iouis.

60 Pessima ei accident, cui Sol cũ fixa mala, & valida, sine fortunæ auxilio extiterit.

61 Omnis immoderata siderum constitutio, in senibus, ac debilibus, mortem affert: in alijs autem violentos casus, & exitia crudelia.

62 Luna cum Mercurio assimilatur, mala est, cum iungitur bona. Saturnus cum Veneri assimilatur, bonus; cum illi iungitur, malus.

63 Luna cum malè dispositа fuerit, magna autem genitura polliceatur bona, multa quidem egregia inchoabit, sed non perficiet, nisi pauciſsima ex illis.

64 Luna in Solis oppositо, morbus, si initium accipiat, ex humorum est abũdantia; si deficiat, ex virtutis imbecillitate.

65 Non malè omnino videtur Copernicus existimasse, Lunam solam circa elementa versari, vt centrũ, nam verè operationes eius sunt à cæteris planetis diuersæ multum.

66 Infortunæ orientales dant morbos: occidentales defectus.

Lu-

67 Luna autẽ cum Sole, & nebulosa in angulo oculum sinistrum amittet.

68 Venus cum Saturno, in septimo loco sociata, cum stella Saturni, aut Marte super ambos eleuato, sterilitas in viris; abortus, vel sterilitas in mulieribus.

69 Quod si cum his Luna Marti applicet, in Cancro, Virgine, vel Capricorno, erit vt ex genitalibus aliquid deficiat. vel peruersum sit.

70 Si Saturnus cum Mercurio, & Sole occidentales ab ipso in angulo fuerint, Marte non aspiciente; nec Ioue, impediietur lingua.

71 Cum vero in cuiuis signis, cum nodis aliquibus, maximè Lunæ luminaria extiterint, in aspectu infortunarum, & in angulo, natus erit gibbus, aut contortus.

72 Cumque Mars, & Luna cum capite fuerint, aut cauda, in duodecima, & Sol et Iupiter in quarta, natus etiam erit gibbus.

73 Vitiliginem dant Aries, impetiginem Cancer, albam impetiginem Libra, Ephelides Capricornus, cum Luna in eis damnata fuerit, generaliter autem exanthemata, ac defędationes.

74 Sagittarius et Gemini faciunt morbos, qui cum casu eueniunt, re-

so-

solutionem, comitialem, attonitum vteri suffocationem.

75 Exedentes viuant omnia, quæ ex acqua, vt Cancer et Pisces, et quadrupedes vt Leo, Capricornus, pessimæ tamen, Cancer, ac Capricornus.

76 Quando significator vnius rei vnus est, atque combustus, res illa ex toto destruetur. Quod si duo, et primus combustus, secundus retrogradus, debilissima euadet.

77 Astrologus ad ea quæ apparent, multum conferre potest, ad ea autem quę futura sunt nihil. non enim eadem est scientia futuri, et partis magis manifestę. Eadem autem est causa effectus et scientiæ, quo ad effectum illum perducimur.

78 Saturnus cum in Martis domibus comburitur, Marsque illū aspexerit, figuras conicas ex vaporibus ascēdentibus sæpè generat: quæ sunt signa futuri terræmotus.

79 Nullius planetæ cū altero, prętterquam cum Luna, exacta coniunctio, vt per seipsam signum ascendens sciri queat, haberi potest.

80 Boreales Planetæ, in declinatione, et latitudine validiores semper australibus, cum reliqua paria fuerint.

81 Infortunis, vt veneno vtaris,

va-

validos enim habent effectus, sed vt illo, tamen parcè.

82 Dixit Ludouicus Rigius, Luna iuncta Marti, in aereis signis, percussionem, ab homine, maximè in Geminis significat. Sed in igneis, in opposito Martis, venenosos, et plerunque exitiales.

83 Cum in aliquo morbo luminaria sunt ambo cum infortunis, vel eorum oppesito in initio ipsius, vix euadet æger ab eo.

84 Longe difficilior est hic liber, quàm magna Ptolomæi compositio, vel magna ars, aut Archimedis Sphæroidica, vel Aristotelis Physica, Platonisvè ænigmata.

85 Repetitio necessaria est in hac scientia, vel ob difficultatem, vel ob necessitatem vel ob vtilitatem ingentem, vel ob contradictionem.

86 Sicut proprium est cordis Leonis facere fortem, et comem; ita cordis Scorpij, rapacem, et præcipitem, ac Caniculæ ambitiosum, ac magnanimum.

87 Per applicacionem Lunę ad fortunas, aut Solis radios, illis non existentibus morbo inimicis, non infelicibus, nec in infortunarum potestate, sálus in morbo acquiritur: per applica-

tio-

tionem autē ad infortunas dominantes, naturæ morbi similes, aut radios malos Solis, simili modo mors fit.

88 Morbi frigidi, et sicci, atque hi sponte longi, à Saturno: breues verò, calidi, et sicci à Sole, vel Marte, incrementum accipiunt. Hi vero Solī natura, sua mortales, frigidi, et sicci, quoniam non aliud mors est: calidī autem et sicci, præfocantes, casu autē, aut permutatione cæteri perimunt.

89 Coniunctio luminariū in Arietē, facit alienationes, et mortes. Si Venus ac Mercurius ibi retrogradi fuerint, hcc idem fermè in Scorpione, et Capricorno, ac etiam in humanis signis.

90 Cum coniunctio ipsa luminarium ceciderit in sexto, septimo vel octauo loco ab ascendente initij morbi, infortuna aspiciēte, æger in mortis periculo versabitur.

91 Mars in ascendente hora initij morbi, morbum facit velocem, vehementem, et partes superiores affligentem, perturbantemque mentē. Quod si cum hoc dispositores luminarium, et ascendentis fuerint: impediti, succedet mors. idem si ambo luminaria ab angulis cadant, nec à fortunis eleuentur.

Quod

92 Quod si sic dispositis omnibus, duobus locis ex his fortunæ potentes dominentur, morbus acutus in diuturnum vertetur, seruabiturque tandem prętęr spem.

93 Traiectiones igneæ, post pluuias multas, morbos incędętes generabunt.

94 Signa circa Solem, in Luna, vel stellis, aut circa eas, tum in cælo valde à naturali cursu aliena, si locum vbi apparent, et figuram cœli cum hoc, ea hora ab initio ad finem obseruabis, intelligere poteris quid significent.

95 Monstra vero, et potentia, clades, et mortes homines, sed non eodem modo, neque statim significant. oportet autem et exortus eorum obseruare. Sed illorum casus, et vis, non est præsentis contemplationis.

96 Quicunque Planeta fuerit in directo corporis Lunę in longitudine, ac latitudine, in corde Lunæ esse dicetur, magnosque effectus producet in genituris. Hoc idem fixæ, ac longè vehementius cum Sole hoc Lunæ loco, si fixa, vel Planeta, in corde eius fuerit, continget.

97 Qui autem natus fuerit, hora eclipsis, maximè, si potentis viri filius fuerit, multitudinis hominum causa erit mortis.

98 Mars facit in ascendente mendaces, inconsideratos, violentosque, ac vinolentos. Saturnus autem mendaces, dololos, sordidos, & auaros.

99 Mars cum dominus ascendentis fuerit in corde cœli, natus habebit potentiam, qua male vtetur.

100 Hermes, rectè dixit, planetas tribus modis amicitia iungi, vel natura, vel radio, vel communibus dominijs. Aspectus autem duplex est amicitiæ, alius quidem secundum naturam, alius quia alter ab altero recipitur.

101 Iupiter potest emendare fortunam, & mores, Venus fortunam tantum. vnde hoc facilius.

102 Venus multum opponitur disciplinis & eruditioni, nec vincitur, nisi à Saturno. ideo eruditi vt plurimũ sunt malorum morum circa venerea.

103 Rumores, qui excitantur, Luna existente in initio Scorpij, vel Capricorni, sunt falsi.

104 Coniunctio vtplurimum validior est oppositione, illa quadrato, ipsum trigona radiatione.

105 Trinus omnis radius bonum affert: sicut omne quadratum, quod est inter dissimilia signa, malum.

106 Trinus Saturni & Iouis non in

aqueis

aqueis signis, longæuum facit, virumque; stabilem, ac prudentem.

107 Magnorum Principum Sol est significator; Iupiter autem magistratuum; Mars operariorum: Saturnus rusticorum; Mercurius qui industria, non labore artes perficiunt. Luna mulierum, & Venus puellarum.

108 Æquales, ac mediocres in affectibus sunt, quibus ascendunt initia Arietis, vel Libræ, aut fines Piscium & Virginis: immoderati autem, quibus initia Cancri, aut Capricorni, vel fines Geminorum & Sagittarij.

109 Luna in Scorpione, vel Piscibus, meridionali ascendente existente, ne incipias fabricare.

110 Cum in ascendente mulieris est signum Martis, & in eo Venus, aut signum Veneris, & in eo Mars, aut Mars dominus ascendentis in cęli corde, adultera erit mulier illa.

111 Cum in exitu principis ad bellum, ascendens, & dominus, tum luminaria rectè se habent ad regni radicem, proculdubio non succumbet ille; & si ad regis genituram sospes erit; & si ad initium regni illius regis, pauca recipiet detrimenta, donec ad prælium peruenerit; & si perse ascendenti luminaria & dominus configurantur, for-

fortiter, ac prudenter se geret.

112 Ascendens significat corpus potius, & dominus illius animum magis.

113 Non solum Luna, sed & dominus loci eius plurimum possunt: natus autem versabitur in his, de quorum natura locus est Lunæ.

114 Domini trigoni loci coniunctionis validi, ac se aspicientes, seruant natos illo mense, si fortunę fuerit debiles, & inualidi magna ex parte perdunt.

115 Iidem autem in genituris loci, ascendentis & Lunæ nutrimentum eodem modo, aut ante nutritionem mortem indicabunt.

116 Robur eclipsis summum est, cum luminaria iunguntur, vel opponuntur.

117 Planetæ orientales non solum celeriter sed & faciliter dant dona sua, & hoc si à Sole fuerint, in mundo autem celeriter, sed non adeo faciliter: hoc etiam contingit, cum occidentales à Luna fuerint, tunc enim Luna exoritur ante illos.

118 Si Saturnus, aut Mercurius in sexto vel duodecimo loco impediuntur, vel etiam in octauo, natus carceri intrudetur. Quod si fixæ malè cum

his, vel cum impedientibus Planetis fuerint, vel Sol cum eis, absque fortunarum auxilio, natus morte mulctabitur.

119 Stellæ Regię aut Bebeniæ bonę cum luminaribus, aut eudemones triplicati, cum in cadentibus locis fuerint, non impedita, fortunam significant insperatam omnino: sed in succedentibus, cum mediocri spe. In angulis autem per successus.

120 Stellæ de natura Mercurij, & Veneris in ascendente, vel cum Luna, vel in corde Cęli, vel cum domino ascendentis, vel in radijs Solis, aut Lunæ, vel cum Sole, vel cum Ioue. Venere, vel Mercurio, significant gratiam, formam, & scientiam. Hoc autem erit in directionibus, aut reuolutionibus tantum, cum à locis principalibus ac moræ fuerint, iunctæque radijs planetarum tantum, in corde tamen cœli largiuntur dignitates, vt etiam cum Sole. At cum in fortunis augent illarum decreta, quæ eis conueniunt, reliqua minuunt.

121 Quæ autem de natura Iouis, & Mercurij ad disciplinam meliores, & ad bonam fortunam, ad vitæ autem tranquillitatem & pulchritudinē ineptiores.

Quæ

122 Quæ autem de Natura Martis, & Mercurij, ad opificia manum, ad bellum, & ad venationes promptos efficiunt, cæterum haud fortunatos, nisi in his, fallaces quoque, crudeles, & malorum morum, ac rapaces.

123 Quæ autem Iouis & Veneris, formosos aut honestos, & probos, diuites suo loco, alijs autem, mulierum amatores. Et hæ Martis naturam si quid aliud maxime frangunt.

124 Quæ verò Martis ac Veneris, repentinas ac magnas felicitates præbent, maximamque incontinentiam, pueros formosos, Sed turpes viros, eædem etiam violentos casus, & gaudia decernunt; infortunia, si à Ioue, vel Venere non iuuentur: hi tamen semper malorum morum erunt. oculum Tauri quanquã quidam Soli Marti tribuant, eiuscemodi proculdubio esse constat.

125 Quæ vero Saturni ac Veneris, inuidos efficiunt, & fallaces, aut in diuitijs mediocriter fortunatos, auaros in honestis, in turpibus autem causis prodigos. Vel si de corpore decernant, nigros oculos, mundos, & comtos, sed tamen fœdos, et malè olentes. Circa Venerem, et mulieres ea probat, quæ alij generaliter refugere solent, et

his nigras, aut nigros diliget.

126 Quæ verò Iouis et Saturni, lentos, et patientes, aut diuites, vel etiam nimium pertinaces: in omnibus grauitatem, et senum naturam referunt.

127 Quæ autem Saturni, ac Mercurij, turpes nimis, aut dolosos admodum, tamen infelicissimos, ac à mulierum, ac filiorum amore alienos.

128 Quæ aut Saturni et Martis, tantundem malorum decernunt, quantum Veneriæ, ac Iouiæ bonorum, oppositis vndique rationibus.

129 Quæ autem Solis ac Martis, crudeles efficiunt. aut turpes, vel infelices, plerunque audaces, vt cum Luna ascendente, vel eius domino, etsi interfectori planetæ associentur, vel Soli, aut Marti, vix euadet, quin igne, etiam si fulgure opus sit, moriatur: pauperes etiam, et ad litteras ineptos, suis locis efficiunt.

130 Martis autem, et Lunæ populares, seditiosos, turpes, vagos, inconstantes, laboriosos, pauperes, infames, oculorum vitijs captos, morteque repentina exitum sortientes, epulones ac bibones immoderatos.

131 Iouis et Martis. fortes, fœlices, promptos, fortunam magnam, et in-

for-

fortunia, vt nihil in illis sit mediocre, præter formam, et mores, qui mixti sunt.

132 Veneris et Lunæ formosos, aut segnes, et luxui immenso deditos, vel benefortunatos, aut mulierum amatores, ac pios.

133 Confidentia hominum est, cũ domini ascendentis, et Planetæ plures in suis fuerint dignitatibus, et cum luminaria, et dominus ascendentis cum fortunis: et cum Luna fuerit lumine ac motu aucta, cumque dominus ascendentis natura talis est, & orientalis à Sole, et in superiore eccenorici parte, ex oppositis autem, maxima diffidentia.

134 Pessimi mores fiunt ab infortunis maxime iunctis inter se, vel cum Mercurio, in septimo loco, post in octauo, inde in nono. Nam Deum tunc non verebuntur, atque hoc magis, si eum habeant in ascendente.

135 Melior est infortuna in ascendente felix, et fortuna in secundo loco, primi tamen differentia maior est.

136 Saturnus in quarto loco, in fixo signo, maximè in Tauro, vel Aquario, firmam significat fortunam, et tamen plerunque malum finem. Quoniam malitia eius frangitur, sed non

tollitur. Mars inobedientes ſubditos, et ſeditioſos, facit.

137 Leues ſunt, quibus aſcendit Taurus, et Aquarius: leuiores quibus Piſces, at leuiſſimi quibus Aries, et inconſtantes: inconſtantes et quibus Cancer, ſed non leues, creduli tamen, quibus vero planeta leuis in aſcendẽte, curſu velociſſimus, prompti, fallaces, et inconſtantes.

138 Quando dominus aſcendentis fuerit in via combuſta, natus confuſus erit in negotijs.

139 Cum infortunæ in decimo loco aſcendenti non amicæ atque ibi peregrinæ fuerint, natus erit ſuſpicione plenus: atque eo magis ſi in corde cęli.

140 Ptolomæus artis radices poſuit, nos autem obſcura eius dicta declarauimus, ſuppleuimuſque deficientia, & ambigua determinauimus.

141 Cauſa autem quòd mille nugas inuenerint Ptolomæo poſteriores, fixas autem reliquerint, fuit quod plurimi ex his ex Gramatica translati artem penitus ignorauerunt, vt Firmicus, Albumaſar, Albubater, Bonatus, atque Pontanus. Alij ſecuti. Alphonſi tabulas, cum loca ſtellarum parte 1. mi. 9. aucta eſſent ſupra veritatem eos qui fixas infelices cum luminaribus

habebant fortunatos cernentes; alios qui non habere videbantur, rursus infelices, crediderunt vanam esse illarũ significationum. Alij ex tanta multitudine, quas præcipuè deligerent non habentes, aut nullam vim inesse voluerunt, vel adeo confusam, vt sub arte non comprehenderetur. Alij proprietates præcipuarum nondum perspectas à prædecessoribus crediderunt. Alij ob rationem diuersarum opinionum in motu earum loca incerta ipsarum existimauerunt.

142 Stellæ fuerunt ad variationem temporum, in paucis interuallis. Alioqui Sol ab initio Arietis ad finem Leonis, perpetuo calore terram quassans, sine imbribus, aut intermissione, sterilitatem, & nimios æstus pareret. Ob hoc etiam diuisa est signorum series in duodecim, alternata illorum natura, ne tamdiu perseuerans Sol in quadrãte vno, nimis vrgeat terram, sed hanc diuisionem Iupiter persingulorum annorum motum facit, par autem erat, hanc fieri à fortuna Solis amica.

143 Sol autem mutationes facit, propter notum in eccentrico, dum velocius, aut tardius mouetur, aut in sublimiori, aut humiliori parte illius, vel ex motu ab æquinoctij circulo, qui

propter ecliptice inclinationem inæqualis est, vel propter velocitatem motus in circulo æquinoctio, quasi parallelo, quę semper inæqualis, ad sequentes, & antecedentes redditur dies quantoque magis ab æquinoctio velociter recedit per ecliptică, maius spatium acquirens distantiæ, tanto minus tardè mouetur quam præcedentibus diebus. contrario autem modo in solstitijs, vbi parallelorum distantia breuissima, sed differentia maxima, occursu etiam stellarum fixarum, variatur illius vis. At cæteræ erraticæ, præter hæc habent vim diuersam, quam inferioribus his influant, vel ex motu in paruo circulo, vel in latitudinem, vel in cõparatione partium, quæ vberius vim ipsius Solis susceperunt.

144 Stationes in Solis distantia in Saturno quidem saltem 108. partes attingere debent, in Ioue 122. in Marte 127. in Venere 27. in Mercurio 16.

145 Planetæ omnes supra terram, in vita, factis, omnibus mortalibus cognitum efficiunt.

146 Cum in coniunctionibus, aut oppositionibus Solis, & Lunę Luna velociter mouetur, in ima parte est sui parui circuli. Cum autem diuidua quasi existens tarde, ipsa est in supre-

mo

mo parui circuli, atque alia eadem ratione.

147 In negotijs bellicis, Mercurius sit in summo parui circuli. Facit enim impigros.

148 Quando Planetæ omnes acuti motus fuerint, ille valde felix erit, facile enim cuncta perficiet.

149 Quæcunque in ascendente, ad animi vires, cum Luna ad sensus & rationem, cum Mercurio ad intellectum. Cor enim ascendens significat, vnde ira, audacia.

150 Radij Planetarum plus ad fortunam impedientes corpora, animos vitiant, aut instruunt.

151 Cum inter significatorem, & promissorem nec regiæ stellæ nec planetarum corpora, aut radij fuerint, proculdubio tunc partes, annuos euentus significabunt.

152 Quando fixę magnæ cum planetis fuerint, vt plurimum obscurabunt fixarum paruarum decreta.

153 Luna iuncta Saturno, plena luminibus, facit prudentes, tenaces, memores iniuriarum: affligit autem cerebrum, & ventriculum, & membrum signo, in quo est, correspondens.

154 Luna in Solis quadrato non recepta, facit humiles corde, & par-

cos: sed tamen, qui in quibusdam rebus sint immoderati, ambitiosos, splédidos, & honoris cupidos.

155 Animæ per Cancrum descendunt, per Capricornum ascendunt. Luna enim, & Cancer, maximè vitales sunt.

156 Quarta Luna nati, vt in adagio est, plerunque sunt infelices. nam luminaria simul in angulis esse nō possunt, nec se se respicere inuicem nec esse insignis eiusdem naturæ.

# HIERONYMI CARDANI Aphorismorum Astrologicorum. SEGMENTVM QVINTVM.

1 QViibuscunque Luna, ascendentis lumina, sub terra fuerit cum cauda Leonis, & Virginis capite Sol in sexta, & Saturnus vel Mars in sua dignitate, in angulo septimæ, perpetua debilitas inerit.

2 Natiuitates fratrum, plerumque habent ascendens vnum. quia locus filiorum in parentibus vnus sæpè existit.

3 Quicunque habent Venerem in eadem parte, in qua Saturnus, vel Mars geminos possident, hi omni erga pueros, & sacras virgines laborant incestu.

4 Dominus secundæ in secunda diuitias significat ex reditibus, in ter-

tia, à consanguineis, vel itineribus. omnis igitur Planeta in domo sua, aliquid facile bonum, aut malum ostendit.

5 Omne impedimentum mali bonum, boni malum.

6 Reditus lucis ad meliorem, bonus est.

7 Æqualia sint, seu simul tres significatores impediantur, seu vnus à tribus.

8 Mercurius in Piscibus, facit impedimentum in lingua, & in sermone absurdum, dicuntque aliud, quam mente conceperint. sic & ascendens.

9 Cum Saturnus est in septima, vel Mars in cœli corde, fiunt detrimenta maiora.

10 Quicunque natus fuerit æquinoctij meridie, vel hoc solo magnus euadet.

11 Absurdæ copulationes sunt, Saturni Martis, & Solis. Itemque Saturni, Veneris, & Lunæ.

12 Mulieres, quibus ascendens, & Luna, & Mars, & Venus, & Mercurius, sunt in bicorporeis, pessimorum sunt morum.

13 Iupiter cum in corde cœli fuerit, iuxta apicem, in Capricorno multam dabit fortunam bonam ex violenta iu-

iustitia, quæ infelicem habebit exitum.

14 Semper autem Iupiter valde potens in genitura, bonum aliquod ingens pollicetur.

15 Cometes valde clarus, ac conspicuus, tum etiam mobilis, ac diuturnus, mutationem alicuius imperij decernit.

16 Saturnus regna acquirit per laborem, fraudem, & infamiam. Mars per rapinas, fortitudinem, & sęuitiam. Iupiter autem per iustitiam, & probitatis opinionem.

17 Famosi viri sunt, in quorum genituris Luna multorum recipit lumen planetarum, aut si fixæ potenti regiæ iuncta fuerit.

18 Diuitias regias, non solus dabit Iupiter, nisi alterius luminarium testimonium accesserit.

19 Canis maior de natura Solis aliquid habet.

20 Cum Sol, & Iupiter nonæ præfuerint, ac in locis Mercurij, Lunæ, & ascendentis, dignitatem habent, altero alterum respiciente, oracula vir ille proferet.

21 Cum inter bonum, & malum modica est differentiam, recte inquit Rigius, tempera à iudicio:

22 Si Iupiter, aut Venus, in secundo fuerint loco, diuitias dabunt: si autem in quinto aspiciente, superstites filios, nisi à Sole, vel Saturno impediantur.

23 Impedimentū duplex est, aliud prohibens, aliud eam datum auferens. primo genere in vxoribus, secundo in diuitijs, vtroque in filiis vtimur.

24 Iupiter & Sol in secunda splendidum efficiunt.

25 Saturnus autem, & Mars, aut Saturnus cum Mercurio in septimo, sordidè auaros.

26 Facilius, ac certius de genitura, quam de tempore iudicamus. quoniā scimus horam natiuitatis, non congregationis vaporum.

27 Non argumentis, aut ambagibus in iudicando vti debemus, aut adulationibus, sed his quæ experimento cognita sunt, cum inconcussa ratione.

28 Cum fuerit ascendens reuolutionis, ascendens genituræ, aliquid promissum in genitura euenit. Sed longe magis, si Luna fuerit etiam in loco genituræ, aut dominus ascendentis in loco aspiciente ex parte locum radicis

29 Dixit Rigius, cum in initio an-

ni

ni reuertentis, dominus genituræ retrogradus, ex inferioribus incipit esse sub radijs Solis, aut si ex superioribus aliquis ab infortuna opprimatur, vitæ periculum eo anno exspecta.

30 Cum dominus genituræ retrogradus est in natiuitate, & vtroque modo cadens, natus erit dejecti animi, imbecillis, ac nihil perficiens.

31 Quod si ipse non talis sit, sed tali existenti applicuerit, erit hoc in quibusdam negotijs tantum.

32 Quàm stultè quidam faciunt, qui volunt solum hærere Ptolomæo, cum ipse ex artis infinita magnitudine, minimam partem nobis tradiderit. Sic enim, si Galenus feciſſet, Hippocratis scriptis contentus existens, medicina careremus.

33 Sol in Leone erigit hominem, nec sinit medicare.

34 Cum Iupiter in reuolutione aspicit Lunam, aut Venerem in ætate perfecta, aut in angulo existit, in radicis loco, hominem inclinat ad coniugium.

35 Cum Leo ascendit, facit hominem non sine spe, & rationis participem non vulgaris. nam Sol in suo circulo omnino æqualiter mouetur. caret enim paruo circulo, nec in latitu-

di-

dinem aliquam etiam inclinatur.

36 Sed si Cancer ascendat, & Luna immobilibus, vel communibus signis fuerit, maximè ab angulo remota, erit credulus, & inconstans.

37 Venus in domibus, vel exaltatione Martis, semper aliquid turpis libidinis pollicetur.

38 Contempores deorum, quibus infortunæ in ascendente, vel angulis, domini loci noni, tamen magis, si in ipso loco nono retrogradæ, & male affectæ. Sed Mars facit, palam deum conuicijs incessentem, Saturnus hæreticum.

39 Coniunctio planetarum in prima, dat sapientiam, in corde cęli regnum, in septimo loco, famosum obitum, in quarto gloriam, aut cadauetis absque corruptione permanentiam.

40 Filiorum genituræ, vsq; ad natiuitatem sequentis, permutant fortunam patris, & alumni. Sed regis noui constitutio, ciuium, donec vixerit, huius autem magis, illius minus.

41 In electione Principũ, & Pontificum, quære significatores vitæ, ac potentiæ, vt in genituris, & compta vitam secundum annos partium in comparatione ad robur significatorũ, & etiam ætatem iam exactam illius.

In

42 In his autem, & medij radij debilitant, aut roborant inter significatorem, & abscisorem.

43 Et Iudicabis de moribus. permutantur enim ex toto quasi, ab eo genere, quo erant in genitura.

44 Effectus Principis ex sua electione, & ex eo ad quod peruenit figura regni.

45 Eclipses luminarium super ciuitates, prouincias, & regna, magis quam super priuatæ conditionis homines, aut etiam super reges, respiciunt enim multitudinem.

46 In ludo ac bello multum confert, si facies tua ad partem cęli amicam respiciat. quod si vterque, diuturna erit contentio. Si nemo, vterque in pugna breuiter cadet, in ludo parua erit differentia, vel tertio succumbetur: si alter tantum, breui ille concursorem suum superabit.

47 Iudicia stellarum vel generalia, vel ex maximè euidentibus, & in rebus magnis proferes.

48 In coniunctione superiorum in aqueis signis, bella magna exoriuntur propter Scorpium, quæ tamen in pacem, non internecionem plerunque rediguntur, propter Cancrum, & Pisces.

49 In oppositione duorum superiorum, fiunt strages, vincetque superior ex illis.

50 In coniunctione Saturni & Iouis, cum capite simul, aut domino loci Venere, vel cum capite existente, vel ipsos aspiciente, legislatores fiunt. Fiunt etiam cum in nona coniunctio acciderit, sed hoc scire est impossibile. Si autem Saturnus in ea superior erit, mendacem, & improbum dices. si Iupiter, contrarium.

51 Qui ea profert, quæ nunquam experientia liceat comprobare, falsus est, & ambitiosus.

52 Finis rerum habetur, vel per periodum significatoris. vel casum qui prouenit ex concursu planetarum, ex quo accidit aliquid quod alteri finem imposuit, vel ex concursu domini imi cęli cum luminari tempora diuidente, & gubernante, idest Sole.

53 Cum quis artem nescit, transit ad ambigua, difficilia, vel mirabilia.

54 Bethen rectè videtur comparasse planetas, qui ab infortunis quadrata radiatione pullantur, eis qui iam in extremam incidunt calamitatem.

55 Sed non rectè existimauit, neque qui author est centiloquij nobilioris animam interrogantis præsen-

sio-

sionem futurorum habere. Hoc enim vt generaliter dictum, omnino falsum, inartificiosum autem penitus, si ad aliquos referatur.

56 Initium Arietis per se bonum est & alacre: turbulentum autem, ac malum Libræ initium.

57 Luna in Aquario, & Piscibus, gratum minimè facit natum principibus.

58 Cum domini trigoni ascendentis ceciderint, fuerint tamen in ascente fortuna, aut fixa de natura fortunæ aut domini trigoni ex primis, natus poterit nutriri.

59 Proportio Martis ad Lunam plenam minor est proportione Saturni ad Lunam vacuam.

60 Saturnus in fixis penuriam annonæ facit, & hominum mortem, vt inquit Rasis.

61 Saturni detrimentum maius est in aquis, Martis autem in terra.

62 Cum fuerit Luna à Planeta impedita, & cogeris electionem ea die facere, pone ascendens signum ex domo, vel exaltatione impendentis.

63 Operationes planetarum numquam cessant, donec contrario, à planeta, aut fixa stella, aut signi parte contrariæ qualitatis impediantur, vel

in

in Solis radios incidant.

64 Cancer, significat aquas pluuias, propriæ, & currentes. Scorpius lacunas, & stagna; maria autem Pisces.

65 Signa mobilia itineribus valde commoda, & celeritatem, & reuersionem indicat: fixa autem pessima.

66 Cum in genitura alicuius Sol geminatur, vt aliquando contingit ex ratione aspectus, ille seditionem mouebit aduersus Principium, aut illustris erit, & hoc cum in eadem hora hoc acciderit.

67 Cumque tres Soles eodem modo, & in ambitu medij circulus completus, ac permanens ad modum Iridis, eo anno, in ciuitate libera, nascetur ex ciuibus Rex: quod si cum hoc stella apparuerit in die lucida, erit eadem hora.

68 Res omnis, quæ celeriter fit ac destruitur, & redit, est de natura Martis.

69 Quæ autem destructa celeriter, nunquam redit, est de natura ambarum infortunarum.

70 Cum Sol fuerit in parte exaltationis in Ariete, & Luna in parte exaltationis in Tauro, Solque in ascendente, vel nona: Aut Sol in Leonis initio, & Luna in Cancri, fueritque Sol in se-

cun-

cunda, vel decima, indicat naturam moliri vitum potentem, ac regię planè authoritatis.

71 Cum dominus cordis cęli, retrogradando ſeparatur à domino aſcẽdentis, princeps auerſabitur natum. quod ſi dominus aſcendentis retrocedendo relinquat dominum cordis cęli, natus principem odio habebit. Hoc idem in alijs domibus ſignificat.

72 Cum Luna, & dominus aſcendentis ad abſidem eccentrici aſcendunt, nec cadunt caſu aliquo, & fortunæ ſe inuicem aſpexerint, natus erit incliti nominis.

73 Cui Ferrariæ quinta Leonis aſcendit pars, hic ſine alio nomen adipiſcetur.

74 Cum moritur natus ante horas 24, erit ac ſi natus non eſſet, cum ſpõtè ſua moritur, & ſimiliter ſi non acceperit cibum, etiam ſi diutius viuat. Qui verò non acceperit, ſed inditum tranſmittit, ſi ſuperuixerit, ſignificatum habet, dummodo triduum ſuperauerit. nutritur enim.

75 Primogenitus maius habet ſignificatum ſuper parentes, completũ autem, donec alter naſcatur filius, cõpletum autem dico eius comparatione ſolum, quod ſignificare poteſt.

Na-

76 Natiuitates regum habeant signum igneum in ascendente, quod si cum hoc cor cęli etiam in igneo sit, optimum erit.

77 Tropica signa, quæ sunt, Cancer, & Capricornus, homines animo, & moribus, & corpore inæquales faciunt: æquinoctia, Aries, & Libra moderatos.

78 Cum Sol fuerit in suo trigono, in corde cęli, in aspectu Lunæ, natus erit potens.

79 Cumque domini loci Solis, Lunæ, & ascendentis fuerint à Sole orientales, ac potentes, natus se ipsum euehet ad magnum statum, modò Luna non obstiterit.

80 Dixit Rasis, cum quis postulauerit aliquid, Luna eunte ad Iouem, cum capite existentem iuxta cęli cor, obtinebit à Deo, & hominibus.

81 Cum Saturnus cordis cęli dominus fuerit, natus difficulter impetrabit à Principibus.

82 Cum fuerit fortuna retrograda, vel debilis, in locis Saturni, vel Martis, contrariam habens qualitatem significatori, destruet ipsum vt infortuna.

83 Quando dominus secundi loci Iouis ad dominum ascendentis pergit,

& maximè, si ille dominus ascendentis Iupiter sit, toto tempore vitæ suæ in diuitijs acquirendis felix erit adeo natus, vt de eo homines admirentur.

84 Cum dominus cordis cęlis retrocedendo applicat domino ascendentis, natus erit multum Principi necessarius.

85 Non incipias iter, domino ascẽdentis, vel loco Lunæ in sexta, vel octaua, vel duodecima existente. Timetur enim carcer, vel morbus, vel mortis suspicio.

86 Signa significant corpora: & planetæ quæ mouent ea: & illorum comparatio ad suum orbem, & luminaria, maxime Solem, exitum ipsarum rerum.

87 Rumores sparsi, Luna cum Ioue existente, & in signo masculino, veri sunt. plerunque hoc tamen non est necessarium, quia opus humanum est, non naturæ.

88 A prima diei hora vsque ad sextam, sanguis prædominatur; inde etiã somni dulces: a sexta ad duodecimam bilis; atra autem bilis inchoante nocte vsque ad medium eius: sex reliquæ horæ pituitæ dedicantur.

89 In omni coniunctione considera locum, & quis eorum sit superior.

Cum

90 Cum dominus ascendentis aspexerit Solem benigno aspectu, vel fuerit orientalis proximus Soli, vel iunctus domino cordis cęlis, natus à regibus diligetur. causam autem habebis ex natura domini ascendentis ipsius, ac illius loco.

91 Cum duæ infortunæ iunguntur (inquit Rasis) inspice cum quo Luna concordat in latitudine, nam si cum Saturno, erit fames, ac lues; si cum Marte, strages, cædes, & regnorum permutatio.

92 Et similiter cum Iupiter, & Venus iunguntur. Luna si Ioui concordet in latitudine, erit iustitia, & quies: si Veneri, gaudia, & voluptas.

93 Cum in eadem parte fuerint Sol, Iupiter, & Venus, natus erit propheta.

94 Cum in eadem parte fuerint, Sol, Mars, & Venus, in Veneris dignitatibus, qui nascetur, fiet rex potentissimus, eumque audient omnes sponte, sed malis quassabitur morbis.

95 Cum Sol, & Saturnus in corde cęli, in eodem fuerint puncto, natus erit maximæ authoritatis.

96 Cum Iupiter & Luna in eadem parte fuerint, ad absidem ascendentes, erit natus in diuitijs felicissimus,

Opti-

97 Optimum ex his, quæ accidunt est, vt luminaria in finibus fortunarum existentia, ex angulis mutuo se aspiciant. post hoc est aspectus Iouis.

98 Climatum differentia facit, vt celerius, aut tardus euentus proueniat, & vt planetæ in angulis sint cadentibus, vel succedentibus.

99 Meridianorum autem diuersitas, vt radiationes sint, ac planetæ propiores angulis, aut succedentibus illis, vel etiam cadentibus, vtque diuersum sit dominium planetarum in figura: quod etiam in diuersitate climatum accidere potest.

100 Liceat nobis præuidere futura ob scientiam eorum, & ob auxilia naturalia aduersus imminentia pericula, non ob electiones ipsas, quæ plus incommodi, ac frequentius, quàm vtilitatis adducere solent.

101 Saturnus in igneis, cum Sol debilis fuerit, facit hecticas. Iupiter autem sanguineas, absque putredine. quod si Mars affuerit, putridas. Mars in illis, ardentes omnis generis. Venus ephemeras. Quod si Mars commisceatur, putridas ex pituita. Mercurius mixtas. Quod si Luna ipsa in eis similis sit, facit pituitosas, ex humore putrescente. At si Saturnus sic exi-

ſtens, cum Marte miſceatur, fiunt melancholicæ febres. Si Mars ſub Sole ſit, in ſexto, vel duodecimo loco in igneis, aut ſic exiſtens in alia domo vitæ ſignificatorem, aut aſcendentis dominum, in reuolutione pulſauerit, aut ad illius radios ſic exiſtentis, eo tempore per directionum dominus aſcendentis, aut vitæ ſignificator peruenerit, febres æſtuoſas, & incendentes, ac pernicioſas, ſimileſque venenoſis efficit. Quod ſi his exiſtentibus, humana ſigna pro igneis ſupponantur, eadem erunt, ſed vt mitiora videbuntur, ſic magis occulta, ac veneni qualitatem præferentia. At ſi cum his Saturnus, aut cauda, caputue, aut Venus combuſta miſceatur, vel ſtella ex generibus venenum decernentium, aut conſtitutio fuerit peſtifera, vel Planetæ hi in Scorpione, vel Leone adurantur, erunt febres hæ omnino peſtilentes, ac pernicioſæ.

102 Proprium prauarum febrium eſt, vt fiant Sole in Leone damnato.

103 Sole valido exiſtente, non fiũt febres exputreſcente materia, niſi caſu.

104 Vt reſiſtimus tertianæ futuræ per vitium humidum, ac frigidum, ac minime putredini obnoxium; & pur-

ga-

gationem bilis ac sanguinis, si febris ex æstu Solis ventura præuideatur; sic quartanæ per Saturni frigus, ac siccitatem decretæ ac præuisæ, per auxilia futuræ quartanæ opportuna.

105 Signa autem aquea febres putridas minantur, & mali moris, sed & putredines, & corruptiones, cum Mars in eis dominatur, præsertim combustus. Terrea autem à putridis febribus, maxime sunt remota.

106 Quando cœli medium, idest cor, fuerit in potestate infortunarum, sic vt illi dominentur, natus mediocrem sed perpetuam habebit exaltationem.

107 Quando Sol fuerit ab octaua ad sextam, & tres superiores à prima ad secundam, natus cum maximis impedimentis semper ascendet, eritque in perpetuo fortunæ augmento. quod si Sol in octaua, & tres superiores in octaua, vel septima, natus ab initio magnis felicitatibus gaudens, semper temporis successu declinabit donec miser euadat, sic & in alijs.

108 Cogimur sæpè aphoristicam breuitatem excedere, vel ob obscuritatem, vel ob egregiam aliquam vtilitatem. non enim tot habiturus est hic liber expositores, quot aphorismi Hip-

pocratis.

109 Cum plures filij eandem consequuntur fortunam, si in pueritia, fit ex genitura parentum perse. Si autem in iuuentute, vel senio, parentum genitura adeo potens fuit, vt filiorum genituras inter se, ac dispositori filiorum, assimilauerit.

110 Mars in mobilibus signis faciles facit ad iram, nullibi tamen magis quam in Cancro, nec minus quàm in Capricorno. Sed & in Cancro linguã plerunque reddit ineptiorem.

111 Saturnus in duodecimo loco, podagram minatur. In sexto autem morbum vt dixi perpetuum, aut sempiternos carceres.

112 Dixit Albubather, & rectè inquam, cum omnes planetæ in sexto loco fuerint, octauo, vel duodeimo, natus non nutrietur.

113 Maximum detrimentum vt non nutriatur à Luna est, quoniam ipsa cerebrum significat, pueri autem conuulsione capiuntur.

114 Anni reuolutio, alia quidem in temporibus, & est Solis ad eundem punctum ab æquinoctio reditus: alia autem in mundo, & est reditus ad eandem fixam: alia autem in genituris. & est reditus ad priorem locum,

ad-

addita tamen parte ecliptica, quantam peragrare potest in vna die naturali.

115 Annus ac dies similis est, dicimus autem diem, cum Sol reuertitur ad locum peragratum. idem etiam in anno statuendum. est enim reditus ac transitus partium, quas in vna die naturali peragit.

116 Luna cum coniungitur, aut Soli opponitur, in absíde sui eccentrici est. cum igitur in quadrato Solis est, optimè posita est.

117 Saturnus ac reliqui superiores, in absíde eccentrici gaudent, & in primis apparitionibus orientalibus, Venus, & Mercurius in opposito absidis sed hi æqualiter non se habent. Luna in opposito absidis eccentrici, & in opposito absidis parui circuli. elementorum enim est domina. opponitur aut absidi eccentrici, cum iuxta Solis quadratum fuerit.

118 Contrarium latitudines magnę sunt: ipsa tamen contigua sunt, ob hęc circa illorum terminos etiã periti falluntur.

119 Cum fuerit Iupiter, aut Venus in medio duarum infortunarum, illis propinquus, dicentur tres infortunæ. hoc autem maximè in Virgine, vel Scorpione, aut Capricorno.

120 Idem autem continget, si Venus cum Marte, & Mercurio, aut Iupiter fuerit, Marte super ipsos eleuato, idemque de Saturno dicendum erit.

121 Cunque Mars cum Sole, & ibi Iupiter, altior autem Mars, aut Iupiter cadens; erit hoc deterius: minus autem in Saturno.

122 Et generaliter, si fuerit infortuna fortunæ cadenti copulata, aut infortuna eleuata, fierint duæ infortunę, nihil fermè iuuantes, & multum nocentes.

123 Quod si fortuna eleuetur, infortuna iuuabit quidē, sed & nocebit, quoniam detrimenta magna facilius est inferre, quàm felicitates, impediuntque detrimenta felicitates, felicitates autem detrimenta impedire nō solent.

124 Filiorum, & parentum dilectio, sicut & fratrum ex genitura filiorum, ex genitura parentum, & ex comparatione vtrorunque sit. manifestum est autem quinque modis fieri. Sed tres maxime considerari debent. nam si dominus filiorum ad dominum geniturę in patris natiuitate accesserit, filij parentibus, obedient; ob hæc autē aliqui obedient alij non: alios diliget, alios autem non. cum his autem erit con-

concordia, & quies, cum alijs autem non.

125 Faba ipsa plena Luna seri debet, sed lens post diuiduam Lunam vltimam. quo tempore, & amuleta doloris capitis auelli solent, vt plantaginis radices.

126 Quicunque oriuntur à 16. Libræ ad 19. Sagittarij partem, nostris in regionibus, ad carceres, & vincula proni sunt. est enim Andromeda in occaso.

127 Infelicem autē fortunam sortiuntur, quibus à 23, ad 27. Tauri ortus est. nam Delphin cor cœli occupat.

128 Sic ingenioſi, ac ſuddoli. quibus ascendens est à 12. ad 20. partem Piscium, triangulus enim cum illis partibus exoritur.

129 Absis Solis ab Ariete ad Cancrum inhabitabilem reddit Australinam partem, Borealem autem habitare facit. A Cancro ad Libram, bene habitabitur Borealis, & Australi dominabitur; à Libra ad Capricornum, Australina habitabitur, sed Boreali parti minime imperabit. à Capricorno ad Arietem, imperabunt Australes Borealibus quasi desolatis.

130 Sol habet aurum, sed Luna ar-

gentum, æs habet Iupiter, ferum Mars cum chalybe, plumbum autem Saturnus, ſtannum Venus, cauprum Mercurius.

131 Metallica autem, vt argentum viuum, ac ſulfur, & calchantum, ac reliqua huius generis, partibus cęli, non autem planetis ſubſunt.

132 Lapides autem ac gemmæ, tũ herbarum, ac arborum ſpecies, proculdubio ſub ſunt fixis, in quibuſdam tamen virtus planetarũ magis apparet.

133 Sol habet micantes Carbunculum, & Adamantem: Iupiter Saphyrum, & Smaragdum, Granatum, & Corneolum: Saturnus Onicem, Iaſpidem, & genus quod ex eo perſpicuum eſt, vocatum Heliotropium, habet & Topaſium: Luna habet Lunarem, & cæruleum lapidem, & Corallum, & Calcedonium: Venus Turcheſiam, Margaritam, Berillum: Mars Garatronium, Magnetem, & Iacintum, ac Ametiſtuum ex perſpicuis: Mercurius Achatem, Ghryſolithum, raros, ac varios pleroſque lapides habet. Qui verò affines ſunt his, ad genus ſuum reducuntur, vt Praſſius ad Smaragdum, Balaſſius ad Carbunculum.

134 Similiter & in arboribus, Laurum

rum habet Sol, & Cinamomum, Myrtum Venus, & vitem, & oleam. Saturnus autem Taxum, & Cupressum, Sorba. Mespila Iupiter Citria, & omnia eius generis, tum Ficus. Mars Robur, & Iuniperum, ac Piper. Luna poma, cerasa, pruna. Mercurius Punica, & Vnedonem, ac Vuam crispam.

135 Plenilunia Lunæ putrefaciunt fruges, & triticum: & occidua Luna seruat cædua ligna.

136 Sol habet lupinum, & vtranque Solarem. Luna vero lunarem lentiscun, caltham, & coluream. Saturnus toxica. Iupiter feniculū, & anisū. Venus amaracum, ozymum, rosam, violas, vaccinia. Mars rutam, absinthium. Mercurius caulem, blitum, daucum, melissophyllon: virgiliæ, virgilias.

137 Luna custodit oues, & omnia animalia amphibia, vt cancros, testudines, & ranas. Saturnus autem salamandras, remoras, torpedines, cochleas, & asinos. Sol hominem, leonem, aquilam, delphines. Venus cuniculos, ceruos, damas, columbas; Iupiter elephantos, equos, sues. Mars tauros, canes, tigres, & pantheras. Mercurius simias, & cercopithecos,

ac feles.

138 Saturnus habet nigrum, Iupiter rubeum. Mars flammeum, ac croceum. Sol splendidum ac lucidum, purum. Venus viride, ac cæruleum. Mercurius ferrugineum, & cinereum. Luna autem candidum.

139 Aries habet Germaniam, Galliam, Britaniam, Basterniam, Syriam, Palęstinam, Poloniam minorem, Burgundiam superiorem, Sueciam, Silesiam superiorē, partem Vvestrię.

Taurus Partiam, Mediam, Persidem, Archipelagi insulas, Cyprum, Asiæ minoris partem maritimam, Poloniam maiorem, Russiam albam, Campaniam, Rhethiam, Heluetiam, Franconiam, Hiberniam, Lotharingiam, Irlandiam, Sueuiæ partem.

Gemini Hyrcaniam, Armeniam, Marcianam, Cyrenaicam, Marmaricam inferiorem, AEgyptum, Angliam, Sardiniam, Brabantiam, VVitembergensem regionem, Flandriam, Longobardiam.

Cancer verò Numidiam, Africam, Bithyniam, Phrygiam, Colchidem, Carthaginem, Francorum regnum, & Scotiæ, & Granatæ, prussiam, Holandiam, Selandiam, Burgundiæ comitatum.

Leo, Phæniciam, Chaldęam. Orchiniam, Galliam togatam, & Italiam, Siciliam, Apuliam, Bohemiæ regnum, Turciæ partem, AEmiliam, & Sabinam.

Virgo, Assyriam, Mesopotamiam, Babyloniam, Græciam, Achaiam, Cretam, Ciliciem, Croatiam, Ducatum Athenienſem, Carinthiam, Sileſiam inferiorem, Atheſanam prouinciam, Rheni vicina, Rhodum.

Libra, Bactrianam, Caſpium, Seres, Thebaidam, Oaſim, Æthiopiam, Trogloditicam, Auſtriam, Alſatiam, Tuſciam, Sundgauiam, Liuoniam, Sabaudiam, Delphinatum,

Scorpio autem Cappadociam, Comagenam. Maragonitidam, Iudæam, Idumæam, Mauritaniam, Getuliam, Nordvegiam, Suetiam Occidentalem, Cathaloniam, Bauariam Superiorem.

Sagittarius, Arabiam felicem, Tyrheniam, Celticam, Hiſpaniam, Portugaliam, Vngariam, Dalmaciam, Morauiam, Sclauoniam. Myſnam.

Capricornus, Indiam, Arrianam, Gedroſiam, Macedoniam, miridem, Thraciam, Albaniam, boſſinam, Bulgariam, Lituaniam, Saxoniam, Moſſouiam, Thuringiam, Heſſiam, Marchiam, Styriam, orcades inſulas.

Aquarius Oxianam, Sogdianam, Arabiam petream, Azaticam, Æthiophiam, Sarmatiam, Tartariam magnam, Daniam, Russiam rubeam, Amaxobiam, Sueciæ partem meridionalem, valachiam, Pedemontanam regionem, Vuestphaliam, Molellanos. Bauariæ partem, Montemferiatum, Alcheyram.

Pisces Phasaniam, Nasamones, Garamantes, Lydos, ac Cilices, Pamphiliam, Calabros, Vuormatiam, & Nordmaniam. Sic enim scripsit Ioannes Schonerus vir in hac scientia exercitatissimus, vt etiam de ciuitatibus. horum autem reddere ratione difficillimum est.

140 Aries autem ex ciuitatibus creditur habere Neapolim, Capuam, Florentiam, Ferrariam, Vincentiam, Veronam, Bergamum, Imolam, Patauium, Brunsuicum, Vtricam, Lindauiam, Cracouiam, Marsiliam, Epidaurum.

Taurus Palermum, Bononiam, Senas, Mantuam, Tarentum, Parmam, Panormum, Thuregium, Lucernam, Herbipolim, Caroloſtadium, Metim, Brixiam, Caput Histriæ, Bolnam, Gnesnam, Nouogardiam, Nanceium, Burgim, Lipsiam, & Senogallia n.

Ge-

Gemini, Cesanam, Viterbum, Taurinum, Rhegium, Vercellas, Louanium, Moguntiam, Babenbergam, Brugim, Villacum, Chitzingum, Hasfordiam, Londinum, Cordubam.

Cancer vero Cõstantinopolim, Thunetum, Venetias, Mediolanum, Genuas, Lucam, Pisas, Lubecam, Treuerim, Magdeburgum, Gorlitium, Bernam, Eboracum, Sanctum Andream.

Leo habet Damascum, Romam, Rauennam, Syracusas, Perusium, Cremonam, Pragam, Vlmam, Confluentiam, Linceam, Cermisium.

Virgo Hierolymam, Alexandriam, Corynthum, Papiam, Nouarram, Aretium, Cumanam, Brundusium, Vuratisuiam, Erdfordiam, Basileam, Heidelbergam, Segniam, Lutetiam Parisiorum, Lugdunum, & Tolosam.

Libra Caietam, Laudem, Suessam, Placentiam, Argentoratum, Viennam Austriæ, Francfordiam iuxta Mœnum, Spiram, Halam Sueuorum, Haylprunam, Vuimpinam, Landishotam, Frinsingam, Mospachium, Veldchirchium, Arelatum, Lysbonam.

Scorpius Foroiulium, Trapezuntium, Aquileiam, Paduam, Vrbinum, Pistorium, Camerinum, Brixium, Tarui-

uisium, Messanam, Gedanum, Monacum, Avchistadium, Viennam Allobrogum Valentiam.

Sagittarius vero habet Volaterram, Mutinam, Coloniam Agrippinam, Nurimbergam, Stutgardiam, Rotenburgum iuxta Tuberim, Iudemburgum, Budam, Caschouican, Narbonam, Auinionem, Toletum.

Capricornus Brandeburgum, Anconam, Tauentiam, Derthonam, Augustam Vindelicorum, Constantiam, Iuliacum, Cleuoniam, Bergam, Gandauium, Machliniam, Vilnam, Oxonium.

Aquarius Pisaurum, Tridentum, Hamburgum, Bremam, Saltzeburgum Ingolostadium.

Pisces autem Parentium, Ratisbonam, Rothomagum, Compostellam, Hispalim, Roanam, Sybilliam.

141 Sol ignem, & aerem, & quæ in eo sunt animalia, custodit, Luna autem aquam, & terram, & horum animantium vitam. propterea talpæ, ac vermes cum Solem vident moriuntur; Belluę, cum terram, aut aquam ingrediuntur.

142 Pestilentiæ igitur accidunt afflicta Solis, per aerem, & Lunæ per aquas.

Si

143 Si Luna fuerit inter Martem, & Solem, vel cum eis, natus erit breuis vitæ.

144 Si Luna ceciderit in septimo loco à dignitate, & descendat tam in eccentrico, quam paruo circulo, erit nimio humore infirmus.

145 Cum luna fuerit in eadem parte cum Sole, & ambo in quadrato, vel opposito Saturni, natus non nutrietur.

146 Cumque ambæ infortunæ fuerit in ascendente, & luminaria cadentia ambo ab angulis, natus non nutrietur.

147 Infortunæ non faciunt monstrosos, nisi cum partibus cœli malis coniũctæ fuerint, & fuerint ipsæ potentes. manifestum est igitur, cur nati monstruosi breuis vitæ sint.

148 Luna cum in Ariete in opposito fuerit Martis per partem, vix nutrietur.

149 Luna cũ inter ambas infortunas fuerit cadens, vel in signo masculino, vix aut nunquam nutrietur.

150 Quicunque Lunam peregrinam iuxta radios quadratos, vel oppositos, infortunæ habet minos quam 17. minutis distantem, magna in nutritione infortunia subibit.

151 Saturnus vitam, & Mars nutrtio-

tionem magis affligit, & Venus nutritionem, ac Luna magis fouet, diuturnam vitam magis Sol, & Iupiter.

152 Optimum etiam est pro vita, vt Luna sit in Tauro, Cancro, vel Piscibus, in ascendente Libra.

153 Si Luna separetur ab infortunato, natus habebit morbos in nutritione, & post etiam multa mala patietur.

154 Qui exponuntur, sunt, quibus Luna est in Solis opposito, vel quadrato ad vnguem infortunati, vel si in opposito aut quadrato Saturni, vel Martis patrem significantis. & similiter accidit aliquando, si ijdem punctum ascendens eodē modo aspiciant. pauci igitur ex his viuunt, & pauci à matre exponuntur.

155 Quod si Lunam sic existentem Iupiter foueat, & ipsa cum regia nobili, vel Bebenia, natus ex ea expositione ad statum sublimem perueniet.

156 Solis vis est calefacere, & producere; Lunæ autem humectare, & aquas mouere; Saturni infrigidare, & Martis excurere, & Veneris aerem mitem facere, ac rorem dare, & Iouis pulchram serenitatem, ac salubritatem inducere, & Mercurij flatus mouere, ac aeris qualitatem sæpè mutare. Cum igitur hæc absque radijs vel

accessibus videris, iudica cum Planetam dominari, & locum, in quo tunc est, esse ex illius precipuis dignitatibus, vel quod fixæ suæ naturæ copulatur.

157 Vitæ Validæ sunt, quibuscunque Aries, vel Leo ascendit, & Sol est in nono, decimo, vndecimo, vel septimo loco, aut Taurus, vel Cancer, Luna vero in his.

158 Quando Sol cadens, aut Luna, aspicitur ab infortuna, in angulo potenti, vt nutritionem non indicet, ipso luminari motu proprio ad ipsam infortunam perueniente, natus vt plurimum ea hora morietur.

159 Quicunque cor cœli est septimus locus suæ ciuitatis, natus ille oppugnabitur in ea, & si fuerit oppositu loci Saturni, vel Martis, vituperabitur, & si ascendens sit locus iste pro cœli corde, non euadet quin in ea malè moriatur.

160 In directionibus, maior securitas est in radijs, post in fixis, vltima in finibus vis est.

161 Plurimus eorum, quibus mors accidit violenta, Mars, aut Venus, ascendentis, vel Lunæ loco dominantur, aut aspiciunt: his quidem propter contentionem, illis ob amorem.

Cum

162 Cum Venus, & Luna & Saturnus præualent, cadent Marte, natus erit timidus.

163 Quando Mars in nocturna genitura, fuerit in quadrato Lunæ crescentis, ac plenæ natus ob impatientiam, & iram sibi negotium sæpè faceſſet.

164 Mars in octauo loco, in igneo vel humano signo, facit insanam vindictæ cupiditatem.

165 Cuicunque Venus non benè posita in Martis infortunati radijs est, ei causa amoris ingentia inconuenientia contingant neceſſe est.

166 Aquea signa faciunt proditores, atque in his Scorpius excellit.

167 Quando Luna domina ascendentis fuerit in Scorpione, natus prodet dominum suum, & si fuerit in figura vrbis, rebelles erunt ciues principibus suis.

168 Mars plerunque malè Mercurio sociatur, facit enim improbos, & inverecundos, circa tamen artes induſtrios, vnde tales plerunque malorum morum.

169 Mars in nona infortunatus plerunque facit mendaces, contemptoresque diuorum.

170 Sicut superiores orientales descen-

scendunt in paruo circulo: occidentales ascendunt, sic in inferioribus contrarium, ad vnguem accidit. motus enim eorũ in paruo circulo cum motu in eccentrico motum Solis superat.

171 Sol omnibus Planetis tribuit vires, Luna autem recipit. ob id decreta Lunæ non omnia nec ex maiore parte sua sunt, sed quia aliorum Planetarum.

172 Cuicunque Mercurius bene dispositus fuerit, Luna autem malè; benè is intelliget, & malè deliberabit. Vnde hi etiam alijs optimè consulunt, rem suam, male gerunt.

173 Mars & Mercurius domini sunt mendacij; Sol, & Iupiter veritatis.

174 Pudoris Sol, & fortunæ, impudentiæ, infortunæ cum Luna.

175 Venus vbi nimis potens in genitura fuerit, & in locis infortunarum, multa ex fędis amoribus expecta inconuenientia.

176 Venus pudorem facit quendam qui tamen Veneris pudor est leuis.

177 Mortes vulgares fiunt, vel elementis affectis, & sunt consimiles, vel natura temporis, cum multis ac diuersis moriuntur morbis. vel casu, cum plurium anaretę inidem tempus coinci-

cidunt. hos autem minus.

178 Genituræ filiorum ex parentum genituris primo prodeunt, post ex patriæ, & regionis, ac fato vniuersi.

179 Cum natus ascendens habet in opposito Lunæ vrbis suæ, in ea vrbe infortunatus erit.

180 Cum vera via nondum nota est in arte, ille rectè agit, qui antiquorum dicta fideliter recitat.

181 Quando Luna in occidente, & Iupiter in oriente, in Martis aspectu, natus fato & Astrologiæ credet, legibus contemptis.

182 Si quis Luna inter infortunas existente superuixerit, Deo non credet.

183 Si Luna & Mercurius, & dominus ascendentis fuerint in bicorporeis, natus hæresis aut alienæ legis particeps fiet.

184 Si Saturnus ex loco debili, Mercurium amica ac exacta radiatione aspexerit, præsertim ex nono, vel tertio loco, natus sciet secreta multa in disciplinis. Quod si ex valido, erunt res magnæ æstimationis.

185 Quadrata radiatio Iouis & Mercurij, facit iudices sacerdotum inaptis, vt Albubather inquit.

186 Nullus Planeta deterius affi-

ci-

citur in retroceſſu, quàm Mars.

187 Simplices ſignificationes ego ſingulas docui, cum aut contrariæ fuerint, eas metiaris, comparabiſque ac iudicabis. ficta enim multa non euenient.

# HIERONYMI CARDANI Aphorismorum Astrologicorum. SEGMENTVM SEXTVM.

1 CVm in reuolutione illius cui vnicus vitæ significator iam debilitatus est, boni planetæ combusti fuerint in alio loco quam in ascendente, & infortunæ Solem aspexerint, supra terram existentes, ac ascendens, & Lunam, vel Luna sub terra fuerit absque mala directione vlla, procul dubio eo anno ille morietur.

2 Cum Saturnus, & Mars se aspexerint, fuerintque luminaria in sexta, octaua, vel duodecima, natus ex morbo incurabili vitam miseram ducet, & tristis viuet.

3 Infortunæ cum dominantur, malos faciunt: cum fuerint potentes, faciunt infortunia.

Si

4 Si genitura debilis fuerit in vita, tribus Planetis simul in reuolutione iunctis, periculum imminet morbi, maxime si in sexta.

5 Cum Luna fuerit in cęli medio in Capricorno, & Saturnus aut Mars in imo, natus erit infamis: quod si Mars fuerit in Tauro, & Luna in Scorpione eodem modo, erit hoc deterius, ac firmius, & erunt toto tempore vitæ suæ multa inconuenientia.

6 Ne laudes ingenium illius, qui habet Mercurium in Tauro vel Virgine occidentalem, multo minus in Capricorno, quamuis egregium videatur; nisi Ioui, vel Veneris, vel Lunæ, vel fixæ ex horum natura societur.

7 Luna cum in Ariete fuerit, bonum ingenium, sed mutabile præstat.

8 Claudicationes, oculorum obliquitates, & crurium, ac reliquæ calamitates, à Luna damnata efficiuntur, quod conuulsionem moueant.

6 Veri motus actiones perficiunt; medij autem sunt, vt illorum exempla.

10 Cum Sol superiorum aliquem respexerit, eandem considera habitudinem illius aspectus in dimidio reuolutionis, & quarta parte, vt aliorum sit 15. aliorum 18. aliorum 20. vel 40.

vel

vel reliquorum.

11 Vehementes etiam sunt reditus ad eadem loca, in tempore reuolutionis, cum Sol planetam aliquem aspexerit.

12 Cum Saturnus, Venus, & Mercurius miscentur, facient virum pollutum omni libidinis genere. Sed si in dignitatibus Solis, erit splendidus præter hoc. Si autem Saturni, & Mercurij, eruditus admodum. Si autem Veneris, erit magis circa feminas, quã pueros, & erit comis, & venustus, in omnibus tamen his venereorum impotentia quandoque laborabit.

13 Sed si Mars, & Venus, & Mercurius misceantur, tunc flagitia eius eruntur immensa, vim stupris adhibebit, & spintria erit, masturbator, crudelis, deceptor, & sine ratione, potens in Venere: fœminas tamen magis diliget pueris.

14 Curua signa sunt Aries, Taurus, Cancer, Scorpius, & Capricornus; conuersiua Cancer, & Capricornus, æquinoctialia Aries, Libraque, bicorporea eadem & communia; Gemini, Virgo, Sagittarius, Pisces; Fixa, Taurus, Leo, Scorpius, Aquarius, autem sunt mobilia. Humana, Gemini, Virgo, Libra, Aquarius, & prima

pars

pars Sagittarij. Aquea Cancer & Pisces, reptilia vt Scorpius, & serpens vterque fera vt Leo, & Pegasus, mansueta vt Canis vterque & Aries : Semifera vt Taurus, & Capricornus, & lepus. inanimata, vt thuribulum.

15 Domus, quæ violentos casus efficiunt, sunt septima, decima, vndecima, duodecima, post prima, & quarta, & octaua, & sexta.

16 Cum luminaria, & fortunæ in angulis fuerint, optimum erit : bonum etiam si sine eis : Malum verò si sine luminaribus infortunæ : pessimum si cum eis.

17 Luna bene fert Venerem : Sol etiam Iouem.

18 Quæcunque vehementia sunt circa animam, etiam pro parte in filios transeunt : quæ autem leuia sunt. talia autem plurima corrigit educatio, validissima vero etiam irritat, mediocria tamen lenit.

19 Quando Iupiter cum Marte, aut Saturnus cum Venere, aut Sol

cum Luna, aut infortuna aliqua, aut regia mala cum aliquo luminarium in eadem parte peregrini fuerint, ingens aliquod malum nato expecta.

20 Cum res ipsæ consequentes sint, malè dijudicat astronomus tanquam de omnino separatis.

21 Egregij mores, & facilitas in tractatione, per se hominem euehunt.

22 Ad regnum adispicendum ex tribus duo semper necessaria sunt, coniunctio familiæ cum successione, bonum aliquod in genitura, & eius conuenientia cum regno.

23 Facile igitur est intelligere, cur facilius, & frequentius amittatur successione, quam propriis viribus partum.

24 Magis propria significatio domini trigoni est super annos infantiæ, domus autem super corpus, exaltationis super fortunam, & potentiam, termini super animi mores.

25 Cum in ætate perfecta reuolu-

tio

tio habuerit Venerem in sextili Mercurii, qui illi in genitura in eodem loco iunctus esset, natus imaginationibus venereis mirum in modum vexabitur, quòd si coniungatur ubi prius erat in sextili, eo anno dilecto scorto potietur.

26 Orientales Planetę matutinalesvè, masculini magis, ac detecti, in operibus suis occidentales, secreti, moles, & effeminati.

27 Saturnus in venereis auget sęditatem, horrorem, turpitudinem, inuerecundiam, & infamiam. Iupiter pulchritudinem, decorem, munditiem, & voluptatem absque infamia. Mercurius detegit, vitiaque multiplicia efficit, ac sæpe ad actus ipsos reuocat.

28 In exercitio, seu arte nati, Planetam qui primo radios Solis orientalis existens egreditur considerabimus. quod si cum hoc alius in cęli medio sit, & Lunam aspiciat, illum assumemus socium. Quod si nullus egrediatur Solis radios orientalis existens, eum assumemus, qui est in

cęli medio. Quod si nullus iuxta cęli cor sit, dominum cęli medij considerabimus, locaque in quibus Mars est, & Venus, ac Mercurius. tales autem cum multi sint fermè semper, & semper fermè hi diuersas exercebunt artes.

29 Oportet autem artem illam, ad quam inclinatur, intelligere. eam verò exercebit, quam reuolutionum series ostendet quod si concordent, natus delectabitur in arte, quam exercebit. si autem validiores fuerint reuolutiones, inuitus exercebit artem. Si autem Planeta ab initio genituræ prævaleat, cupiet artem exercere, sed impedimenta prohibebunt.

30 Si Mars artem significet, cum ferro ars exercebitur. si Sol cum illo communicet, erit etiam cum igne. Quod & si Venus, ad delicias spectabit, vt coquinaria, & farcinatrix, & ientaculorum conditrix, sed & aurifabros facit.

31 Venus autem facit pictores, pigmentarios, & qui vestes miris ornant

modis.

modis. Cum Ioue Physicos, cum Marte chirurgicos medicos, cum Mercurio sculptores, & musicos; cum Saturno deceptores & magos, ac suci ratifices.

32 Cum Venus fuerit artis domina, iuncta Lunæ in libra iuxta apicem sextæ domus, & Luna ad Saturni sextilem, aut trinum applicuerit, erit natus textor vilium pannorum varij coloris, & lauans illos.

33 Mercurius facit mercatores, Arithmeticos, vates, & disciplinis intentos. Sol si cum eo commiscebitur, aurea opera pulchra faciet; cum Sole, Marte, facit chymistas, eo magis si Saturnus adiungatur, facit & adulterinæ monetæ opifices. cum Ioue, facit iurisconsultos, & trapezitas. Si Saturnus, erit procurator alienæ rei, vel etiam miseram in templis supplicando ducet vitam.

34 Cum Saturnus validè artem disposuit, vix euadet filius, ne succedat in arte illa, vt agricolarum, nautarum, onera gestantium, vespillonum, & greges custodientium.

35 Mars & Venus non rectè dispositi, lenoniam significant, rectè dispositi, armorum lusus, & pictarum vestium fabricatores, phrygii, & cimiflones ab his fiunt.

36 Impressoria ars fit Marte, & Mercurio dominantibus, rectæ dispositis, sicut & armorum factrix, & ædificiorum, cum autem malè, aleas, & ludum, & adulterinas tabellas.

37 Saturni, Martis, & Mercurii constitutio, facit monetæ etiam adulterinæ fabricatores, latrones, fures, sicarios, venenorum opifices, falsarum alearum auctores, deceptores, & sycophantas.

38 Luna autem generaliter, diuinatores facit, præcipuè in Tauro, Capricorno, & Cancro, cum ad Mercurii radios, aut corpus accesserit. Si in Virgine vel Scorpione, erit Astrologus, & fascinator, ac veneficus. Si in Sagittario, vel Piscibus, dæmonum & mortuorum societatem habere partim sperabit, partim simulabit. Si in Ariete,

Leone,

Leone, vel Libra, sponte quasi diuinabit, erit & præcantator. Si cum Marte misceatur, erit lanius. Quod si cum hoc Mercurii, Saturni, ac Ioui testimonium allocietur, dissecabit humana corpora, & introspiciet scientiæ causa. Si Iupiter non adsit, erit spiculator, aut magus veneficus. Si Mercurio, & Saturno miscetur, facit circulatores.

39 Luna cum Saturno, eos facit, qui riuos ducunt, & piscatores, & fossores.

40 Signa etiam artes ex se decernunt per genera, humana circa homines: aquea circa aquas, herbas, & fata: quadrupeda, lauros, pastores, ædificatores, coriarios, lanarios, lapidum artifices, metallicorum fossores.

41 Honorati artifices erunt, cum artis significatores validi, & orientales extiterint.

42 Vtilis autem ars, ac sine impedimento, cum fortunæ felices prædominantur: si autem infelices fortunæ, sine impedimento, erit quidem ars,

sed parum vtilis.

43 Cumque hoc scire exquisitè omninò sit impossibile, per genera res erit diducenda. nam præter immensam artium multitudinem, regionis, loci, familiæ, patris religionis, opumque causa, & à diuersis significatoribus eadem ars, & ab ijdem diuersa decernitur.

44 Diuitiarum auctio, per Saturnum fit sensim, repente per Martem, modica ex vtroque.

45 Saturni cum Ioue constitutio, propria est ad hæreditates consequendas, inde Saturni ac Veneris, vltimo autem Saturni ac Lunæ.

46 Iouis ac Veneris constitutio ex sacerdotio diuitias præstat, eademque in fixis, quæ de natura horum Planetarum sunt.

47 Constitutio diuitiarum, melior est succedentium ratione, vitæ autem aspicientium.

48 Iupiter in secunda, vel Luna in prima, aut in prima Iupiter in sua dignitate, vel Luna simili modo in secunda, diuitias præstant.

49 Lu-

49 Luminaria dant manifestas, & splendidas diuitias: orientales planetæ celerius, & manifestius: serius, & occultius occidentales.

50 Si luminare temporis in anguli apice fuerit cum regia, & superiores planetæ orientales ab eo fuerint, inferiores occidentales, natus, etiamsi seruus fuerit, ad regiam dignitatem ascendet. Optimum autem est cœli cor, inde septimus locus, post ascendens, hoc autem magis, si in Ariete, Leone, & Sagittario fuerint, proximè si in aereis signis.

51 Oportet autem in his tempora conuenire, ne prius vitæ significator impediatur.

52 Status hominis ex præcedentibus conflatur, & subsequentibus. sunt autem subsequentia, diuitiæ, mores, robur, amici, ac cætera eiuscemodi. Præcedentia, familia, parentes, ac affines, lex quæ transferri non sinit, coniunctiones magnæ regnum.

53 Cum in angulo sine regia fuerit luminare à planetis circundatum, vt

oportet; erit regni administrator, si in apice fuerit.

54 Cum autem in anguli apice, sine planetarum constitutione, luminare temporis fuerit, erit natus aut inter primos apud regem, absque administratione, aut cum administratione proximus primis.

55 Quartus rei status est, cum luminare temporis, non in apice fuerit anguli, planetæ tamen illud vt oportet circumdederint, aut si in apice anguli, luminare non temporis, sine planetarum, aut etiam cum planetarum testimonio fuerit.

56 Quod si nec luminaria in angulis, nec ipsa à planetis circundentur, erit status eius similis parentibus.

57 At si ab angulis cadant luminaria, & planetæ, erit miser, & dejectus, & forsan in villis, & oppidis versabitur.

58 Quod si præter hæc in cadentibus existentibus luminaribus, aut in fœmininis signis, aut in his, in quibus tristantur signis, absque

fortu-

fortunarum aspectu, erit natus in extremo infelicitatis ac miseriæ positus.

59 Liberam autem ab infortunio, aspectus fortunarum, & amicus infortunarum, verum ad tempus plerunque & itinera & exilium, & mora in aliena patria, aut in villa, & oppidis. exhauriunt enim mala stellarum decreta.

60 Et dispositor loci luminaris ostendit causam potentiæ, & honoris.

61 Si Sol fuerit in parte orientali, à prima ad decimam, Luna autem in occidentali, in viri genitura, iuuenis seni vxori copulabitur.

62 Est autem Luna orientalis, vel à prima ad decimam, vel à coniunctione ad oppositionem. Locus autem à septima ad quartam orientali similis est.

63 Luna si Saturno complicatur, erit vxor laboriosa, & tristis, aut feralis, vilis, turpis, & malæ voluntatis. Si Ioui, modesta, & prudens, aut nimium lasciua. Si Martι, audax,

procax ; indomita , vel adultera, ac pessima. Si Veneris formosa , & iocosa , aut impudens , & adultera , mitis tamen . Si Mercurio, prudens, & recte domum gubernans , aut mendax, & deceptrix : Si Soli , modesta, casta , continens : talis autem constitutio , vt diximus , vix vnquam euenit. Si tamen Sol male sit affectus, erit ambitiosa , & superba , ac intractabilis.

64 Commutatio Solis , & Lunæ in natiuitate viri , ac mulieris , vt significatorum , parit amicitiam , posterior autem concordiam.

65 Commutati dicuntur planetæ, vel cum alter in alterius genitura , locum commutati mutuo occupauerit , vel si aspectu beneuolo id fiat, vel in Luna in viri genitura sit in loco Solis mulieris , in coniugiorum commutatione , vel cum duo planetæ locum eundem possident , vel cum significatores proprij in propria genitura , in loco proprio alterius , proprij significatoris , in aliena genitura fuerint , vel cum planetæ

tæ eaſdem recipiunt viciſſitudines, aut cum Sol in mulieris genitura, oppoſitum locum Lunæ in viri genitura, aut quadratum, ſecundum eandem partem poſſidet.

66 Cauſæ ſeparationis viri, & vxoris, ſunt diuerſæ, ſecundum leges, & in his ingreditur luminarium diſcordia, cum malis aſpectibus infortunarum, præcipuè mutuis.

67 Cauſæ non ducendi vxorem, & cęlibatus in viris eſt Lunæ combuſtio, cum Saturno, item magnum Lunæ à Saturno impedimentum, ac rurſus, concordia genituræ, cum ſacerdotum, & eremitarum principijs cęleſtibus, Sic & in femina, ſi Planeta ſit cum Sole combuſtus, aut Sol à Tauro vehementer opprimatur, aut genitura cum principijs monaſticorum conueuerit. Atque hæc in his qui ſuo iure vtuntur.

68 Concubinæ autem, & pellices, & ſecreta matrimonia, & pueri nubiles à Saturno, Marte, ac Venere decernuntur, abſque luminarium teſtimonio.

monio.

69 Si diuortij significatoribus Venus præfuerit, erit ob adulteria, & veneficia. Si Mercurius, erit publicum. Si Mars, valde infame, violentum, & periculosum.

70 Si Saturnus aut Mars cum Venere conueniant, aut inter se, insignis communibus illis, vt Libra, & Capricornus, natus consanguineam pro vxore habebit. Quod si in ascendente fuerint significatores, erit nouerca, vel soror.

71 Si Sol, ac Saturnus, & Venus in communibus illorum signis fuerint in septimo loco, natus commiscebitur nurui, aut filiæ fratris, vel sororis.

72 Cum Venus Marte potentior extiterit, natus sectabitur nobiles.

73 Planetæ orientales ad pueros magis inclinant, cum in masculinus signis fuerint.

74 Iupiter, Sol, & Mercurius sunt castitatis, & pudoris authores; Venus, & Mars, impudentiæ & libidinis.

Lu-

Luna, & Saturnus vario modo se habent.

75 Quando Mars fuerint cum Hercule, & Luna cum arcturo, fueritque Mars in septimo, nono, decimo, vel vndecimo loco, vel in ascendente, natus occidetur ab hominibus. Idem de Saturno dicemus.

76 Quod si in his locis Mafuerit cum arcturo, & Luna cum Hercule, natus suffocabitur, & hoc quamdiu Hercules fuerit in Cancro: cum autem fuerit in Leone, à feris, vel præcipitio id fiet. Similia de Saturno.

77 Cum conditiones geniturarum multæ non admittant vitam, quæcunque tales in reuolutione accidunt, vitam eo anno adimunt.

78 Cum infortuna in primo, vel septimo, vel quarto loco, vel vndecimo, vel nono, vel duodecimo, fuerit cum oculo Tauri, & Luna cum corde Scorpii, natus iaculo, vel ruina morietur.

79 Cum autem in prædictis locis, com-

commutata vice, Saturnus cum corde Scorpii, Luna cum oculo fuerit Tauri, natus suspendetur, aut ictu teli occidet. idem de Marte dicendum erit.

80 Quæcunque Luna significat, circa corporis detrimenta, idem & dominus ascendentis. Quamobrem in his, qui Taurum aut Cancrum habent ascendens, fit duplicatum infortunium.

81 Quæ autem eueniunt, sic collatis syderibus, eadem fient, si Luna cum infortuna in eadem parte, in eisdem locis cum eadem stella, aut earum altera iuncta fuerit.

82 Quibuscunque infortuna cum capite Gorgonis, Luna autem cum splendida Aquarij, huic mors violenta mandato principis eueniet, colloque læso, vel abrupto morietur.

83 Quod si infortuna sic posita, Luna fuerit cum hydræ lucida, in aquis, vel veneno aliquo peribit. oportet autem in his omnibus infortunam in loco sublimi esse.

84 Quod si infortuna cum Hydræ luci-

lucida, Luna autem cum splendida Aquarij, mergetur aquis.

85 At si infortuna cum splendida Aquarijs, Luna cum capite Gorgonis, strangulabitur.

86 Quod si infortuna sic posita, Luna cum splendida Hydræ fuerit, venenum hauriet.

87 At si infortuna cum hydræ lucida, Luna autem cum Gorgonis capite, & Sol cum splendida Aquarij, etiamsi rex fuerit, solenni die capite plectetur, etsi non exstiterit, rex corpus eius etiam lacerabitur.

88 Si Sol & Mars cum vulture cadente, in sublimi fuerint, Luna autem cum canicula ardente, natus morietur morsu canis rabidi.

89 Quod si contrario modo disponantur planetæ, venenum hauriet, aut mandato magistratus necabitur.

90 Loca sublimia sunt, primus decimus, vndecimus, septimus, nonus, ac duodecimus, his adnectuntur quandoque quartus, & octauus.

91 Cum

91 Cum infortuna fuerit cum vmbilico pegasi, Luna cum cane ardente, natus morietur ex iaculo ignito, vel morsus à feris.

92 Cum infortuna fuerit cum vmbilico pegasi, Luna autem cum splendida lyæ, natus biothanatus erit, multis tamen modis hoc contingere poterit.

93 Cum infortuna fuerit cum dorso pegasi, Luna autem cum cingulo orionis, natus in aquis obruetur.

94 Cum vero contrario modo planetæ disponuntur, occidetur hominum manibus.

95 Cum Luna fuerit inter pleiadas, & infortuna cum corde Leonis, natus à multitudine occidetur.

96 Et si Luna fuerit cum altera canicularum, vel cum cuspide Sagittarij, & ibi, aut in opposito, vel quadrato, Sol cum infortuna maxime marte, natus igne cremabitur.

97 Cum Luna fuerit infortunata in sexta cum constellatione, natus morbo

ob obcæcabitur.

98 At vero hoc magis erit, si à congressu planetæ cum cauda existentis, separetur, fueritque Luna in via lactea, & infortuna in ascendente: tunc enim ambobus capietur luminibus.

99 Infortunia violenta, magis affligunt vnum oculum, morbi autem ambos.

100 Cumque Luna fuerit cum orionis cingulo, sub radijs Solis, natus obcæcabitur. vno saltem oculo.

101 Cum fuerit luminare vnum valdè infortunatum, ex vnius oculi morbo, propter illorum affinitatem, natus ambos amittet.

102 Cumque Sol fuerit cum antecedentes Capricorni, quæ est ex regijs, quoniam est fermè sine latitudine, natus obcæcabitur oculo dextro.

103 Quodque non significat vnum signum validum, ostendunt planeta debilia.

104 Multas genituras felices, infortunium magnum euertit, & tunc

non

non significant per egregium astrorum consensum, nisi super mores, & corporis dispositionem.

105 Et detrimenta valida radiorum Solis à fortunarum aspectu non emendantur.

106 Cum Mars Veneri commiscetur, fiunt clamores, & violentiæ in Venereis, cum autem Saturnus. fœda omnia, cum dolo, ac insidijs.

107 Et non est dubitandum, quod vsque ad adultam ætatem, sufficit consensus geniturarum filiorum, ad eorum ingenia, detrimenta significata per genituras parentum.

108 Luna cum minus perambulat partibus 13. minutis 10. tarda est motu, & in summo consistit parui circuli, & dimetiente minor, tunc igitur lentè effectus suos producit, & siccior est.

109 Obserua locos, vbi quilibet Planeta incipit retrogradari à retrogradiendi tempore, & stationem secundam in directis: & ibi Planetæ

per

per directionem permutabuntur, & eodem modo loca, in quibus iunguntur Soli, vel opponuntur, & abſidem ac oppoſitum eius.

110 Sol alligat planetas omnes corpore ſuo, præcipuè ſuperiores. Saturnus & ipſe hoc corpore ſuo facit, præſertim inferiores, maximè Mercurium. omnes igitur ſtupidi.

111 Quando Venus fuerit domina aſcendentis, cum corde Leonis & Luna cum capite, & in ſextili Martis, nec fuerit impediens in genitura mulieris, mulier illa erit pulchra, & ob pulchritudinem nubet viro potenti, & ex paruo ſtatu in magnas diuitias aſcēdet.

112 Quando Venus cum Saturno fuerit, & Mars, & Mercurius in loco Lunæ, natus erit ſtultus, philoſophum ſe putans.

113 Quando Luna fuerit ſub radijs Solis cum Mercurio, aut Mercurius ſub Solis radijs, Luna diminuta lumine, natus erit ſtultus, ſed nō omnino.

411 Sol in Cācro exiſtens, Luna lumine diminuta ſub terra, erit ſicut aſinus.

115 Quando Saturnus cum Mercurio

curio in ascendente fuerint, & Iupiter eis oppositus, erit autem retrogradus, & in septimo loco, natus erit duri sensus.

116 Mars, & Mercurius, ac Venus, fortunata Luna, vel in Solis domicilio iuncti faciunt histriones.

117 Mars, & Mercurius cum Luna iuncti, maleq; dispositi, fures, aut latrones faciunt. Quod si Saturnus aspexerit eos, vel in septimo loco fuerit, ob scelera dabunt. Sola etiam radiatio mala, Saturni & Martis ex angulo, hoc facere potest.

118 Valde eruditi sunt, quibus planetæ Saturnus, Venus, Iupiter, ac Luna, Mercurium exquisitè respiciunt, vnus ex his non Saturno tamen, nec Luna, in ascendente existente, atque in horoscopo, & nullo alio planeta in angulo, nec ex his ipsis existente, omnis enim planeta robustus in angulo, impedit sapientiam.

119 Venus cum locum cum Marte commutauerit, adulterum facit, atq; eo magis, si illum aspexerit, aut si cum regia de illius natura fuerit.

120 Tribades, ac pedicones fiunt à sex-

sexto ac septimo loco. oportet autem Venerem ac Mercurium commiscerí. sufficiet post hos, quælibet infortuna.

121 Cum grauium scelerum indicia apparent, vide an infortunæ validæ exstiterint. ná si fuerint, premantq; Solem, vel Lunam, vel dominum ascendentis, vel si dominus ascendentis, combustus sit, aut hostis Soli, natus proculdubio pænas dabit.

122 Castitas fit, vel ex sola regia naturæ Iouis, & Veneris inascente existente.

125 Luna si Venerem, tunc maxime domina ascendentis, vel fortunarũ altera, in ascendente existente aspiciat, natum comptum ac pulchrũ facit.

124 Quieti sunt, quibus Luna in Tauro cum Ioue iuncta, vel etiam in Leone, vel Aquario: ijdem mansuet ac bonorum morum.

125 Mars prodigos facit, Iupiter liberales, Venus incontinentes pecuniarum in voluptatibus, Luna tenaces, Sol continentes, Mercurius parcos, Saturnus auaros.

126 Planetæ super terram exisien-

tes

tes in manifestis corporis locis, sub terra autem in occultis significāt morbos.

127 Morbi maxime ex genere sunt domini sextæ domus, aut planetæ in ea existentis, non solum in natiuitate, sed etiam in reuolutione.

128 A Ioue vsque ad Mercurium febres significantur, omnes enim caliditate participant, Lunæ autem caliditas humido obruitur, & Saturnus ab alijs adiuuatur.

129 Singula velle per capita distinguere, infinitum est. cum verò mēsuram etiā adhibere non possis, fallax.

130 Quamgrauis erit iactura membri, cum Luna in obliquo signo sub radijs Solis existens, à Marte in opposito existente pulsatur.

131 Apti ad regnum sunt, quibus Sol est in prima domo, ascendens autem ex quatuor superioribus: post autem, quibus Sol in dignitate sua iuxta cœli cor: proximi quibus Sol iuxta cœli cor ad 25. partes, & Luna in signo fixo; post hos, quibus Luna sub Sole est, in secundo, vndecimo, vel nono loco. Post hos autem, quibus Sol eleuatus

vatus ac potens cum Iove, vel in eius aspectu, post quibus ascendens Leo, & Sol, in quinto, vel quarto loco, vel supra terram elevatus, hoc autem melius.

133 Luna in sublimi valde loco, rarò apta principibus est.

134 Malum est succesturo in regno, ut ascendens sit cum inferioribus, sine superiore, ut Sol cadat ab angulo, & maxime in ♎, vel ♒, vel fœmineo signo, ut sit junctus, vel in aspectu malo infortunæ, ut ☉ sit valde potens in figura, ipsa enim regnis multum adversatur, ut ipsa sit debilis in locis mūdi, ut sit infortunata à planeta, vel fixa mala potenti, ut infortunatæ in angulis prævaleant: ut illę adversis radiis se oppugnēt, aut conjunctæ sint, ut ♀ à ♄ infortunetur, aut sit cadens, vel retrogradus sub radiis, ut Saturnus, aut Venus sint in figura potentissimi.

135 Cum in regis genitura, infortunæ potentes in mundo, & circulis, ac dignitatibus fuerint, luminaribus mediocriter se habentibus, regnū ad hæredes transibit: quod illi amittent.

136 Cum in filii regis genitura, vel eius ministri, plures planetæ in eadem parte fuerint, tum maximè Iupiter, Venus, Mars, & Mercurius in signo

humano, absente Sole, & Saturno, natus infans loquetur, & excidium regni significabit, coniuncta enim est eius genitura cum regni constitutione, quæ portenta, prodigiæ, & miracula producere solet.

137 Successuris in regno, facilior transitus, si Sol in Leone fuerit, adepturis tamen, si in Ariete, vel Sagittario.

138 Quando ☉ in corde cæli peregrinus fuerit in quadrato ☾ existentis in septima, natus erit maximus inter suos, & repente morietur.

139 Examina in genituris omnem Lunæ conditionem, secundū tres modos, quibus exaltatur, usque ad amussim opus est enim illis.

140 Pro rege consule Solem, Mercurium, & Martem.

141 Domum duodecimam, & quartam, & dominos earum & planetas in eis existentes, pro carceribus considera, & Saturnus est proprius eorum significator.

142 Cum infortunæ in angulis, fortunæ in succedentibus: aut Luna combusta, & dominus loci eius felix, aut locus coniunctionis ab infortunis oppressus, & cadens, seu oppositionis, & dominus eius fortuna potens, vel Iupiter cadens, & dominus loci eius fe-

lix

lix ac petens, natus ex infima fortuna, & iuventa miser ad bonum statum perveniet, idem in contrariis.

143 Cum Luna est in loco Iovis, si Iupiter non omnino sit infelix, bonum est.

144 Quando Luna Saturno iuncta in angulo fuerit, etiam si rex fuerit, ad inopiam redigetur, dixit Albubather.

145 Statum dignitatis Sol retinet, ac vitæ robur, is si cadat, dominus loci succedenti tempore dignitatem quidem adaugere potest, vitam roborare non potest.

146 Qui Martem in secundo loco habet, caveat à mercatura.

147 Fortunæ domini, natura sunt Sol, Luna, Iupiter, & coniunctionis locus. Venus autem in quibusdam tantum.

148 Qui genituram habuerit pro divitiis, & honoribus infortunatam, & Lunam cum præclara fixarum, fiet insperato potens, inde iterum redibit miser, magnitudinem euentus, ex statu Lunæ deprehendes.

149 Quando Venus in undecima, Mercurius in duodecima, ☉ in prima, ♃ in secunda, ♄ in sexta, ☽ in nona, fuerint, nato evenient tot, tantaque ut prodigiosa vita eius videatur.

150 Numerum fratrum, sume ex domino ascendentis trigoni primo vsq; ad ascendens, si supra terram fueris: vel ab ascendente ad ipsum, & communi da duos.

151 Communia signa in tertio loco, & vbi est dominus tertij loci, significat fratres ex vno tantum parente, sed hęc leuia quæ dixit Albubather, non omnino falsa.

152 Tardum progressum ex vtero, Luna in aspectu infortunarum significat, & in signo obliquo, & planeta retrogradus aut stans lenti motus in ascendente.

153 Iupiter retrogradus diuitias nō largitur, nisi in fine vitæ, quod si cum hoc fuerit impeditus cū domino eius, nunquam idem si combustus cum suo domino.

154 Iupiter si comburatur in Leone vir ille nunquam erit pauper, neque diues.

155 Quando Sol fuerit cum Saturno, radijs Martis pulsatus, in diurna genitura, patet eo anno morietur. Si vero Luna, in nocturna, mater ex partu morietur.

156 Cum fixa aliqua Mercurio proportionata, ex illius natura, aut benifica ei coniuncta fuerit, natus erit in-

genio, & eruditione illustris.

157 Improba constitutio, ac Neroniana, Antonianaque, Luna & Venere ac Marte coniunctis.

158 Non solum sapientis est, ex genitura euentum, sed ex euentu diuinare genituram.

159 Genituræ domini, quatuor habent vitæ significatores, aut ad summū quicque: si locus coniunctionis adnumeretur, totidem habent filij, vt par est, genituræ enim eorum cum vitæ significato, parentum autem vno minus.

160 Numerus filiorum, à domino primo triplicitatis Iouis ad ascendens, vt Albubather inquit, communibus autem signis duo. Sed melius habetur per reuolutiones, ac directiones, his exceptis, qui non superuivunt.

161 Quando dominus quinti loci, & Iupiter sub radijs Solis fuerint, natus filios habebit absc̄oditos, ac latētes.

162 Quando Mars in Oriente fuerit, & Luna in Occidente filij nati erunt miseri.

163 Quando Sol fuerit in eadem parte cum Saturno, vel cum eo, & Mercurio in corde cæli, Lunam aspiciens, natus morietur sine filijs, quot quot etiam nascentur interibunt.

164 Quando Iouem Mars ex quadrato, vel oppoſito pulſaverit, filiis nati maxima ex parte violenta morte peribunt, tum certè, ſi cum hoc dominum quinti, aut decimi loci.

165 Locus filiorum decimus, ſi nec Sol, nec infortuna in eo, aut dominetur, poſt autem undecimus, inde quintus, tum Iouis, Lunæ, ac Veneris locus cum dominatores extiterint, unus igitur, duo vel plures, aut nullus.

166 Domini trigoni Iovis infortunati, ex paupertate orbitatem præſtant.

167 Iupiter elevatus, ac infortunatus mediocriter, filios perimit, opes ſervat: deſcendens, & humilis, ſed non infortunatus, ſervat filios, & opes non largitur. Sic & in filiis.

168 Cum Luna ad unguem dividua extiterit, natus erit quieti animi.

169 Quando Luna per radios, à ☌ ad ♄ fertur, in nocturna genitura, cauſa mulierum infinita accident inconvenientia.

170 Cum dominum ſeptimi loci Mars, & Mercurius altiores exiſtentes pulſaverint, natus uxorem, vel inimicum occidet, vel etiam veneno, & hoc, ſi eorum alter in aſcendente poteſtate habuerit.

171 Saturnus cum violentam mor-

tem

tem non significat, in septimo, vel octavo loco existens, vel dominator mortem, ex animi tristitia nunciat.

172 Infortunæ peregrinæ in septimo loco, ascendenti dominantes, uxorum, aut inimicorum mortes denunciant.

173 Saturnus, Mars, & caput in quarta, subitam mortem nunciant.

174 Subita mors, vel ob vehementiam, vel ob proprietatem, ut cum Luna in octavo, vel septimo loco fuerit.

175 Causa cur planetam in octava pro morte considerarunt, fuit conversa directio.

# HIERONYMI CARDANI

## Aphorismorum Astrologicorum

## SEGMENTVM

## *SEPTIMVM.*

1 QVibuscunque planeta nullus est supra terram, nec in prima hora ortus sui, non solum longam habere vitam, sed egregium aliquid perficere est impossibile.

2 Cui Luna in sexta fuerit, in infortunæ aspectu morbum patietur incurabilem, atque eo magis, si domina fuerit ascendentis.

3 In morbis tot numera dies, quoties Luna ad eumdem punctum in circulo positionis redierit, sic enim & in Sole numerantur.

4 Ratio dierum iudicatoriorum ad octuagesimum integra peruenit, sed &

cen-

centuagesimum, & centuagesimum vigesimum, quia cæptus pro integro numeratur.

5 Quoties igitur Luna à puncto ad punctum transiens, orbem peragrauit supremum, redijtque ad eundem circulum positionis, toties Solem idem efficere, hoc autem in tempore breuiori necessarium est.

6 Quando Saturnus in Libra fuerit, & Iupiter in Cancro, tunc magnæ in mundo mutationes contingent.

7 Cum Luna in Hyeme, in signo Aqueo, iugitur planetæ retrogrado, pluuia erit vel nix, maxime autem Saturno.

8 Multitudinem vxorum, vbi vnam tantum ducere licet, non ex planetarũ concursu, aut signis communibus venaberis: sed si cum hoc, radij Lunæ, aut corpus eius ad planetas, in ætatibus robustis applicuerint, ac mortis vxorum signa ad sint.

9 Robur vxoris intelliges ex statu, ad quem Luna per directionem eo tẽpore peruenit, sic & in filijs, ac succedentibus fratribus.

10 Parentum autem, ac præcedentium fratrum, à statu significatorum in loco anteriore, per annos totidẽ, quot illi genituræ tempus antecedunt.

11 Cum in mulieris genitura, Mars sub Solis radiis fuerit, mæchabitur cũ vilibus, & servis, si vero illius loco Venus, cum nobilibus.

12 Infortunæ locis filiorum infestæ, si parum fuerint debiles, habebit filios natus, si magis, nati morientur, si maximè, erit sterilis.

13 Cum vero dominus genituræ, infortuna fuerit, nec aspexerit dominos loci filiorum, aut non infortuna existens, aspexerit inimico aspectu, natus filiis erit infensus.

14 Cum loci significatores à luminaribus removentur, erunt filii eius illegitimi.

15 Cum dominus ascendentis fuerit in tertia, fortuna existens, natus inserviet benefaciens consanguineis suis.

16 Cum secundus dominus tertiæ domus fuerit infortuna in ascendente, familiares, & servi nati obedient illi, sed malè afficient eum.

17 Impossibile est aliquem undequaque beatum esse.

18 Cum tertius terræ domus dominus felix fuerit, natus ex brevibus itineribus voluptatem, ac utilitatem capiet.

19 Saturno, & Marte in Sagittario iunctis, & cum cauda existentibus,

per

per oppositum gradiens, si Sol fuerit ultra Libram, nec illi sub radiis, cum ad Cancrum pervenerit, ninget.

20 Cum Saturnus, & Iupiter, ad radiorum, vel corporum conjunctionem pervenerint, fiunt consistentiæ temporum.

21 Saturnus & Mars, & Mars ac ☉, & Mars ac Mercurius, grandines generant, at æstate magis Saturnus, autumno Sol, & Mercurius.

22 Quæ æstate, & autumno grandines pariunt, eadem hieme nives, ac vere.

23 Saturnus ac Luna in siccis temporibus, generant pruinam, & uredinem.

24 Saturnus ad luminaria, & Iupiter ad Mercurium, & Mars ad Venerem portas aperiunt, magnasq; temporum mutationes efficere solent.

25 Cum ab altero aperientium ad reliquum planeta levior defertur, idem fermè contingit, quod eveniret altero alteri applicante.

26 Cum in temporum mutationibus leuis planeta ab altero ad alterum fertur aperientium portas, tum etiam in aliis, natura vincit eius, ad quem defertur.

27 Cum planeta dominus qualitatis

temporis mensis proprij, in signo diversæ naturæ, ac contrariæ fuerit, procrastinabitur aeris constitutio, & similiter si luminarium conjunctio, à loco in quo Sol opus suum incipit, multum distiterit, & si eo tempore, non fit apertio conueniens illi constitutioni.

28 Mars cum Iove si jungatur, in igneis signis, vbi sydera sint tẽpestuosa, etiam hyeme media, grandines efficere possunt, aliter autem niues.

29 Oportet etiam cælum cognoscere regionis, & quo tempore anni sit tẽpestuosum, nec non consistentiam, aut mutationem obventos, tum etiam cui signo regio magis conveniat.

30 Sol habet ultra, ac citra æquinoctium differentias, cęteri præter hoc etiam eclipticam.

31 Qualitates aeris dignoscuntur ex situ planetarum in eccentrico, in parvo circulo, in partibus eclipticæ, & æquinoctii in propria natura, in conjunctione cum aliis, vel per radios, aut ad fixas in delatione luminis, in locis mundi, in hora radiationis suæ, vel in conjunctione luminarium, aut in comparatione ad loca conjunctionum potentium. Atque in comparatione ad locũ Solis qui potentissimus est tum etiam directiones coniunctionum magnarũ,

& tempora, æqualitates eclipsium, & incidentia, ut terræmotus, fulgura, & comætas, & constitutiones planetarum cum fixis, in circulis ascensionum, & loca duorum superiorum, & frequentationes, repetitiones, ac multiplices simul habitus, præter hæc considerare oportet. Atque ex his singularia cognoscere licet.

32 Neque tamen in omnibus, nam excessus magni per se significant, quæcũque autem leviſſima, ut in pluribus, sensum effugiunt.

33 Et qui plus præstat, quàm quod sensu percipi queat, necessario Deo ingratus est, necesse est autem, qui hæc scribat, ad perfectionem attingẽs, eum alia etiam scribere, quàm quæ solo sensu percipi queant.

34 Cum eclipses in terreis, aut cometæ fiunt, sterilitates portendunt ob siccitatem: cum in aqueis ob imbrium abundantiam & sterilitates, & pestes. In aereis ventos, ac seditiones & pestilentiam autem, se nõ semper tamen, in igneis autem bella.

35 Cum sub hyemis fine, aut initio Saturnus Lunæ dominatur, & figuræ cæli, insolita frigora accidunt nubilo tempore, & in his nives expecta.

36 Cum mutatio temporis ab ingressu

gressu Lunę in signum aliquod inceperit, nec radii occurrant impedientes, illa temporis constitutio 52. horis perdurabit.

37 Omnium quę ad aliquam artem augendam maximè faciunt, præstantissima sunt, diligentia, ac iudicium.

38 Ars tunc perfecta dicitur, cum id, quod quærimus hominibus necessarium, haberi potest. Atque his inventis, ac traditis, antiquorum scriptis acquiescere par est, non autem, cum minima pars docetur.

39 Dominus figuræ in affectibus luminarium, est dominus ascendentis & medij cæli, hora exactæ radiationis, aut coniunctionis, in regione, in mundo autem, dominus loci ipsorum luminarium.

40 Saturno ex signo in signum trāseunte, per plures dies fiunt in cælo signa splendida.

41 Sol conjunctus Iovi, præcipuè in aereis signis, aerem temperat. Saturno frigefacit, maximè in Saggittario, & Capricorno. Sed Marti, æstum, & tenebrosum aerem, in vere præcipuè, & insuper morbos.

42 Rasis dixit, Venerem cum in prima Cancri parte fuerit pluvius facere.

43 Cum Saturnus Soli iungitur, frigus

gus augetur, estque hoc argumentum astrologicæ veritatis.

44 Mutationes aeris declarant geniturarum veritatem, & geniturarum exquisita temporum ratio, exactam tēporum rationem in aeris mutationibus.

45 Frigus augetur à Luna, cum plena est, iungiturque Saturno, aut per aspectum ei copulatur. Sic enim illa vicem Solis gerit.

46 Cum vero ☾ vacua, Saturno copulatur, aut ipsum aspicit, siccitas augetur.

47 Saturnus longè frigidior est, quam sit siccus.

48 Cum ad vitam conservandam animantium, ac stirpium, calore plurimo indigeremus, solus Saturnus frigidus inter erraticas creatus est. At vero eo non potente tot calidis planetis resistere, ne per successum temporis mundus adureretur, eclipses Deus molitus est, quæ certis necessario temporum intervallis recurrentes, mundum totum refrigerarent, ob id nec in minori temporis meta hæ geminari queunt, nec vltra certum temporis modum differri. Quamobrem omnes eclipses infrigidant.

49 Plures Planetę sicci creari potuerunt, non solum, quia plures humidi

etiam

etiam sint: Sed quoniam siccitas ipsa, frigore tardius inducitur, & temperatus humor, etiam naturalis necessarius est. calor autem ut major, sic etiam validius vivens reddit.

50 Frigidus per accidens humorem auget.

51 Eclipses ☉, multum refrigerant, ideo generales orbi esse non debuerūt. Lunæ parum refrigerāt, & per se semper exsiccant.

52 Cum multiplicātur Eclipses magnæ, ut ab anno 1539. ad annum 1545. necessario sterilitas succedit sequentibus annis, refrigeratur enim terra, & exsiccatur.

53 Quod si cum hoc imbres copiosi, aut inundationes successerint, quæ aucto frigore nimium evenire persæpè solent, tunc fames dira succedit.

54 Saturnus, & Venus, adjuvant Lunam, ad inundationes, Iupiter autem, & Mars, Solem, ad vehementes siccitates. Sed Mercurius vtrunque auget:

55 Aliorum narrasse observationes, majorem habet fidem in ostendendo non voluntariam esse rationem eorum, quæ scribuntur.

56 Robur maximus Solis facit grādines, minimum pruinas, & nives: me-

diocre

diocre pluvias: juvant autem extrema utraque venti calidi, hoc autem in libro de supernis est declaratum.

57 Mansiones Lunæ ne inspicias, est Lunę vis à loco suo à loco in signifero, à lumine, planetis, ac fixis.

58 Cũ Eclipsis Lunæ fuerit in igneo signo, & Mercurius juxta Solem, erunt venti, hoc idem in oppositione.

59 Eclipsis tres habet vires, potentem ratione conjunctionis vel oppositionis: generalem, quoniam lentè infrigidat, atque ideo in multos extenditur dies: & propriam, quæ à loci dominatore habetur.

60 Robustissimæ constitutiones, si primæ sint, in primis restitutionibus operantur. Si autem debiles in primis validis.

61 Sicut Gemini est ventorum auctor, sic Sagittarius nivium.

62 Oportet autem loci Lunæ dominatorem observare, qui si fuerit Saturnus: duplicatas habebit vires, cum Luna ad ipsum denuo applicatur.

63 Proportio Veneris ad ignea signa, est ut Iovis, & Mercurii ad aerea.

64 Planetæ non immutantur à fixis, juxta temporum rationem, sed roborantur, Sol à Luna excepta.

65 Ex

65 Ex tribus portarum apertionibus, ventos maximè facit ea, quæ Iovis, & Mercurij, aquas Martis & Veneris, grandines aut nives, ac frigus ea, quæ Saturni, & luminarium.

66 Calamitates non fiunt nisi prædominantibus infortunis, vnde in Piscibus, vel Cancro inundationes fieri nequeunt.

67 Saturnus facit inundationes, terræmotus, & niues, ac pruinas, & frigora immensa.

68 Mars, æstus, & incendia, & fulgura, ac grandines, & bella.

69 Mercurius autem ventos exitiales.

70 Communia autem Saturno, & Marti lues, & sterilitates ac seditiones.

71 Oportet & ex ortus, & occasus Heliacos clariorum syderum obseruare, vix enim fiet, ne sub ortu caniculæ siccitates, morbi non vigeant: & sub arcturi occasu imbres.

72 Nisi fixarum ortus, & occasus aliquid facerent, imbres non vno magis tempore, quàm alio fierent, incertus est enim planetarum concursus.

73 Habent & cæli partes, proprietates, nam Pisces, Aries, ac Tauri dimidium, ventos mouent, reliquum Tauri, & quidquid est Geminorum ae-

ris suavitatem, & imbres repentinos, sed Cancer, & Leo, faciunt calorem magnum, & grandines. Virgo autem remittit calores, & imbres præstat. Libra, & Scorpius inæqualitatem aeris dant; Sagittarius nives, & imbres: Capricornus autem frigus: Aquarius autem aquas adauget, cum initio Piscium.

74 Nix maximè fit ab humido subtili, ideo à calidis planetis, & signis iuvatur, ac multiplicatur.

75 Lunaris eclipsis, per tot menses, Solares per tot annos, quotus horarum fuerit numerus, extenditur.

76 His igitur statim mutatio fit, quibus in orientis est linea, maximus autem vigor, quibus in cæli corde.

77 Mutationes temporum, & status, ex ventis plerunque tum regionibus proprius, eos igitur scire conuenit.

78 Austri ex cæli medio, & ex latitudine, & declinatione australi, orientales cum fuerint in angulo orientis, vel à Sole primum orientales euadant. Sic & occidentales, Boreales à latitudine, & declinatione, & imo Cæli, medij cum debiliores planetæ fuerint.

79 Faciunt & ad hoc signa, tum magis, cum Sol in eis fuerit, nam Pisces occidentales ventos, Aries Boreales,

Tau-

Taurus orientales, Gemini Australes plerunque excitant.

80 Quibuscunque Eclipsis tempore medio, dominus loci in ascendentis linea fuerit, his statim vigor effectus accidet, quibus autem in corde cæli ille fuerit, in declinatione eclipsis, his diuturnus, sed non magnus effectus.

81 Eclipses in quarta domo, juxta cæli imum, validiores, quàm in octavo, vel duodecimo loco, & in prima domo, validiores, quam in nona, vel undecima.

82 Quæcumque ex una tantum pendent causa, subtili indigent investigatione, quæ autem ex pluribus, judicio magno, ob hæc exempla quæ adducimus, non exactæ computationis esse necessarium est.

83 Planetarum superiorum quisque tum maximè Mars, paulo plus à Sole distat in oppositione illius, quàm in conjunctione, ideo æquale fermè lumen recipiunt.

84 Luna autē, si supponatur, quod Ptolomæus asserit, rationem habere ex dimetiente quàm 10. ad 187. ad Solis dimetientem, altitudinis autem rationem, ut ad 19. fermè, ad dimidium autem dimetientis terræ, altitudo Lunæ ut 59. ad 1. erit ut in conjūctionibus

plus-

plusquam partes 181. & 360. illuminentur, & in oppositionibus autem ex 360. minus partibus 181.

85 Cum autem Luna majus suscipit lumen, magis quidem exsiccat, cum autem minus, humectat.

86 Incrementa maris Oceani, & Adriatici ac æstus, fiunt maxima, cū Luna Soli opponitur, minima autem in dividuis, mediocria in noviluniis, temporibus mediis decrescūt ad dividuas.

87 Mars maria exagitat, Saturnus pluvias auget, & stantes aquas, Luna autem maria, & flumina.

88 Cum Luna latitudinem habens borealem in Cancro ab oppositione ad Venerem noctu fertur cum maximè in initio signi, ac nocte in cæli corde, aut ascendente, æstus obruet circumjacentia.

89 Sed si cum his Mars opponatur Lunæ, ac Veneri, aspiciatque Saturnus, terra quæ submergetur, pro mari habebitur.

90 Æstus fuit, duabus horis ab ascēsu Lunæ, ad anguli summitatem, & posterà pleniluniis, noviluniique.

91 A dividuis, seu oppositò absidis ad absidem, incrementa majora aquarum, ab apside ad oppositum, seu à pleniluniò, & noviluniò ad dividuas mi-

nora

nota aquarum incremẽta fiunt in dies. Solstitio æstiuo etiam minimi æstus, tum vero nec magni bruma. Maiores autem ab æquinoctio verno, sed maximi autumnali, & præsertim cum apud nos propè venerit.

92 Si igitur iuxta æquinoctia, Luna in Cancro, æstum excitauit plenilunij, aut nouilunij, Saturnus verò sit in opposito, vel quadrato, intumescet æquor, & vicina inundabit, tum vero magis, si cum arcturo Saturnus, aut Luna cum Orione fuerit.

93 In singulis autem diebus, cum sex horis fluat, totidemque refluat, parte ea addita diei, quam Luna peragrat, vt fermè ad sex horas, quarta horæ adijciatur, cum Luna Saturno applicuerit, aut Veneri, æstus augetur, refluxus autem, cum Marti, aut Ioui, ipsa vero ab ortu æstum facit ad cæli cor, consistitque paululum, & concitatæ aquæ etiam augentur, feruntur autem ad maria, cum ad initium fermè sextæ domus venerit perfecto itinere.

94 Proximi septem dies à bruma, totidemque ante eam raro ventis infestantur, halcionijque vocantur. Delphini vespertino occasu dies hyemant. Et cum occidit cor Leonis, Fauonij in-

surgunt, cum arcturus vesperi exoritur, hirundines apparent, iamque ver est, Libræ autem occasus imbres matutinus, & succularum vespertinus, tempestates magnas afferre solet. Capella autem exoriens, matutino imbres affert. Canicula exoriens, simili modo maria, ac terras, & animantium omnium fermè genus concutit. Aquila occidens matutino, Etesias ventos suscitat.

95 Aquilę exortus si in interlunium incidat, omnes præcoces, tum vernos fructus lædi necesse est.

96 Proegonis occasum, qui quadriduo fermè extenditur, aut si florentem messem occupauerit, plenilunium, fruges omnes lædi necesse est.

97 Sed & canis ortus in interlunio, & caniculæ in plenilunio, aut cum Aquila ex oriente vesperi plenilunium: oleas, ac vites florentes tum maximè fructibus priuat, ac etiam in posterum minus fæcundas reddit.

98 Validæ constitutiones, dum florent Sata, si in Lunæ oppositionem incidant, aut coniunctionem, plerumque annonæ inducunt penuriam.

90 Sed & generaliter cum pleni lunia æstate, aut hyeme, nouilunia inflorem, aut primum exitum germinum, fatorumuè inciderint; aut cum ortu,

occasu-

occasuvè potentissimorum syderum, magna calamitas in proventibus est expectanda.

100 Plenilunia æstate frigida, hyeme autem temperatiora, in Saturni vis refragetur. Novilunia autem æstate calida, hieme frigidissima, noctes agere solent.

101 Etesiæ in Ponto ab Aquilone, in Aphrica, & Hispania ab oriente, aliis à meridie perflant, mane quidem à tertia diei hora incipientes, vespere autem desinunt, Bruma Lenis ac paucis diebus spirare solent.

102 Orientales nobis, & austrini afferunt imbres. Venti autem boreales, & Favonii serenitatem. Sed alii aliis.

103 Vergiliarum exortum subsolanum excitat ventum, Favonius Solem existentem in 25. Aquarii parte, suo initio sequitur: duratque diebus circiter novem. At caniculæ exortum, octo diebus antecedens prodromi aquilones, succedunt autē illi post dies duos. Etesiæ quadraginta diebus, quibus caniculæ vis etiam fermè perdurat. Ante occasum arcturi, venti austrini. Corus autem in autumni æquinoctio. Vergiliarum autem occasus excitat aquilonem hyemalem.

104 Corus & Aquilo omnium frigi-

dis-

dissimi, tamen boreas, humidissimi autem aphricus, & auster. Sicci vulturnus, & corus, præterquam cum desinunt. Grandines infert corus, ac septentrio, Nives autem septentrio, & aquilo. Tepidi Favonius, & Vulturnus. Sed calidissimus omnium auster. Dictum autem satis etiam de his in secundo contradicentium medicorum.

105 Noctu Auster vehementior, interdiù Aquilo, mari quoque auster, terræ aquilo.

106 Succedunt plerumque, vel minimis syderum causis, ex oppositi venti, dictum est autem hoc in libro de supernis.

107 Calidissimis, ac frigidissimis temporibus venti rari, ac leves, licet meridie, & nocte media. Sopiuntur & imbribus, ut Plinius existimat, cujus Aristotiles causam reddit, exoriens Sol, vel occidens excitat.

108 Ianuarii 17. Italiæ aquila exoritur matutino, ut Syrigatus auctor est, Februarii primo, cor Leonis occidit matutino, Martii 14. vespertinus arcturi ortus, 19. Aprilis Libra occidit matutino, 28. autem Virgiliæ matutino ex oriuntur. 6. autem Maii, succulę accidunt vespertino. 7. autem aquila vesperi exoritur, 10. autem canis mi-

nor, seu procyon occidit vesperi. Iunii. 11. capella matutino exoritur. die 22. Iulii ortus est caniculæ. 4. autem Augusti aquila matutino occidit. 17. Septembris, arcturus matutino oritur, qui juxta. 27. Augusti occidere heliace cæperat. Procyon autem 17. Iulii incipit matutino oriri. 7. Novembris virgiliæ occidunt matutino. Bruma 13. Decēbris, Delphini occasus vespertini. bus primo Februarii: hæc ita sint nobis.

109 Arbores cum florent, maximè afficiuntur cæli injuriis, similes enim sunt parientibus mulieribus: cum autem fructus edunt, lactantibus, ac nutrientibus.

110 Eclipses cum in florentem arborem inciderint, eius fructus eo anno inferunt penuriam.

111 Annonæ, & fructuum penuria, non ex anni principio ut quidam fabulantur, sed ex aeris temperantia, in humido ac sicco, vel inæqualitate, tum etiam ex pleniluniis noviluniisque, ac ortu syderum, & eclipsibus, tum maximè, dum singula florent, est exploranda.

112 Quicumque autem non potest in singulos dies, de pruina, nive, grandine, imbre, vento, distinctè prædicere, huic ne credas, abundantiam, aut pe-

penuriam frugum, aut vini prædicenti.

113 Nives etiam suo tempore mediocres, frugum indicant abundantiam, occidunt enim vermiculus, & terram calefaciunt.

114 Cum Luna iuerit ex absidis oppositio ad absidem nodis propinqua, & iuxta Solis viam, ad Solem appropinquans vel eius oppositum, cum nimboso sydere, vel in aspectu Saturni, ab oppositio absidis abscedens, imbres diuturnos commovet.

115 Omnes magnæ constitutiones in hyeme ad nives proclives sunt, & in vere ad ventos, & in æstate ad grandines.

116 Constitutiones syderum, quæ ventos in superioribus commovent, nõ vocamus ventosas, quia pluvia plerumque, vel vix subsequitur. Si autem descendat ventus, non commovet pluvias, nec nives, & tunc eum magis sentimus, vocamusque ventum.

117 Cum validę cõstitutiones fuerint, ac contrariorum planetarum, venti contrarii excitantur, unde nubium congregatio, inde nix, aut grando.

118 Ex superioribus, nullus præter Iovem pluvias. ex inferioribus, nullus præter Mercurium, siccitates facere

potest.

119 Cum fuerint calidi, & humidi planetæ, cum stellis calidis, & humidis, ac in signis similibus, turbulentum, æstuosum, ac insalubrem aerem efficient.

120 Facillima res est geniturarum, sed haud certissima; post temporum constitutionis, post frugum, & vini abundantiæ, aut penuriæ, ultimo autem Luis, Bellorum autem scientia nulla propemodum est.

121 Nulla eclipsis omnino, toti orbi penuriam, aut pestem pronunciare potest. Pestis autem ex his, quatuor annis durare nunquam potest.

122 Detrimenta rerum fiunt maximè locis, quæ subsunt ascendenti, & qui in aspectu sunt constitutionum, & his qui eidem subsunt trigono.

123 Incommensurata quæcunque constitutio annonæ penuriam, & in animantibus perniciem parit.

124 Quando absides infortunarum fuerint in aqueis, maximè in Cancro, & Scorpione, fient inundationes: cum in igneis sterilitates, & conflagrationes: cum in terreis, terræmotus maximi: cũ in aereis, lues. Oportet autem & stellas locis consimiles esse. hæc autem in sua media coniunctione.

125 In coniunctionibus, serenitatem, in oppositionibus luminarium, & aliorum planetarum magis pluvias expectare oportet.

126 Serenitates à Sole, ac tribus superioribus: imbres à tribus inferioribus, ob hæc serenitates cum magnis caloribus, ac frigoribus imbres omnes tepidi.

127 Planetæ, veloci motu suo, siccitates inducunt, stantes autem ventos, retropedantes aquas.

128 Luna, humidis in signis existens, magis ad vitam conducit, in siccis autem, ad actiones civiles.

* 129 In religione, ubi sacerdotes carent uxoribus, necessario sacerdotum initium habet Saturnum potentem, & Venerem debilem.

130 Mercurius, cum fixis felicibus, de natura Iovis, Martis, vel Solis dat vulgarem eloquentium, tum magis, si magnæ fuerint, cum syderibus Saturni, ingenium profundum, & hebetem persuadendi vim.

131 Mercurius maiorem habet vim ad artes infra terram, ad eloquentiam supra.

132 Facundia in scribendo, vel inorando aliena lingua, constat ex præceptis, ac natura, ideo nemo potest

esse perfectus.

133 Lunæ dispositio in sacerdotio significando apud Christianos, & Saturni major est, ut hic impediat, illa impediatur.

134 In voluntariis actionibus coguntur homines ab astris, ob affectum cum ignorantia.

135 Planetæ maximam habent innocendo vim per tantum temporis, quantum durat retrogradatio futura.

136 Et vis in orbe suo, ac in signifero, per spatium sui retrocessus, alia sui luminis.

137 Cumque in hora revolutionis planetæ superiores, vel etiam alii, in loco significatoris conjunguntur, expecta aliquid magnum ex genere promissorum per illum.

138 Astrologia igitur, ut ad genituram comparatur, ex parte est necessaria, ex parte autem similis contingenti.

139 Ea prædixisse quæ futura sunt, & scripsisse quæ postmodum incognitis prolatis genituris verificantur, quoad artis magnitudinem, & illius scientiam, paria sunt. Quo autem ad vulgi opinionem, prior experientia longe antecellit.

140 Difficillima pars inventionis artis, est initium.

141 Inferiores duplici modo possunt esse ante Solem, accedentes supra longitudinem mediam, & accedentes infrà, post autem accedentes infra, & recedentes supra, sic motu aucti cognoscuntur.

142 Cum in locis significatorum, conjunctiones validæ acciderint, parum faciunt: multum autem in locis promissorum.

143 Significatores loci esse possunt, promissores necessario erraticæ, syderæ, partes.

144 Cum in locis promissorum in revolutione contigerint constellationes hora revolutionis, eodem anno perficientur, cum alia hora, in adventu loci promissoris ad locum significatoris.

145 Cum erratica aliquid detrimēti per radios trinos, aut sextiles hostilis significaverit, perficiet illud proculdubio in oppositis, vel quadratis.

146 Debiles consistentiæ à validis constitutionibus sub illarum apparitionibus evincuntur, mediocres paulo ante, validæ in ipsa constitutione. Mediocres autem consistentiæ à mediocribus, similiter à validis paulo ante, validæ à validis paulo post, & aliæ eadem ratione.

147 Stationes planetarum, maximè Martis, peſſimæ, atque in his deteriores ſecundæ.

148 Quibus Luna Saturno copulatur in revolutione, & ipſe quadrata radiatione aſpicit dominum aſcendentis, eo anno morbus animi corpori nocebit.

149 Cum directio non potuerit lunaris pertingere ad planetam, fiet illud in quadrato, vel oppoſito.

150 Cum fortuna peregrina iungitur infortunæ peregrinæ ſuper eam elevatæ, fit infortuna, & malum à dimidio loci eſt.

151 Cum Mercurius fuerit in Martis conſtellationibus, natus erit mali intellectus.

152 Additiones, quæ fiunt per proceſſum Solis, in annua revolutione, transferunt fermè ſignificata per tot dies poſt revolutionem, quot ſunt anni, qui tranſiverunt.

153 Si Luna fuerit in duodecimo loco, melius eſt, ut ſit in Capricorno, & ſub Solis radiis.

154 Genituræ, quas impoſſibile eſt eſſe bonas, ſunt cum utraque infortuna in eadem parte alteri iungitur luminarium, vel cum luminaribus in fortunæ ſingulæ ſingulis iunguntur, vel cum

Luna

Luna sub radiis Solis est cum Saturno aut Marte, vel ubi omnes planetæ in tertia, sexta, octava, ac duodecima sunt, vel cum infortunæ in angulis sunt connexæ, luminaria autem, & fortunæ cadunt, vel cum luminaria cadunt ab angulis, & omnes planetæ sunt retrogradi, vel cum luminaria ambo, ambæque fortunę infortunantur, vel cum solus Mars supra terram extiterit, non connexis aliis planetis invicem, nec in angulo existentibus.

155 Cum planetæ fuerint juxta longitudines medias, nihil ex hoc significabunt, nisi mediocritatem, quæ in pluribus optima est.

156 Omnis planeta quanto magis est terræ propinquus, eo impressiones celerius recipit.

157 Quando Mars fuerit in parte ipsa cordis cæli, vim non habens in ascendente, si vixerit natus, omninò interficietur.

158 Antiscia, quæ ex ascensionibus æqualibus sunt, animos uniunt hominum, sed quæ æqualiter à tropicis distant, planetarum vires jungunt.

159 Ejus, qui in aliena habitat regione, revolutionem facies secundum utrunque meridianum, verum tamen est potentior primæ.

160 In civilibus actionibus semper confer genituram, ac revolutionem, ad loci in quo habitas initium.

161 Cum post 40. annos, Luna cum Saturno in genitura conveniente, vel cum planeta in illius dignitatibus existente, ipsa in revolutione fuerit cum Saturno, corpore, & cum eadem latitudine, vel plena luminibus in opposito, atque oppositа latitudine, à sexta ad octavam, natus proculdubio attonito morbo cõcidet, & ex eo morietur.

162 Cum Luna in Ariete cojerit, liquida conservat, maxime in frigidis regionibus: cum in Leone, farinam, maximè in calidis regionibus.

163 Cum Mars, & Mercurius juncti fuerint, Lunamque, aut ascendentis dominum in sexto, aut septimo loco existentem pulsaverint, immodicam declarant siccitatem.

164 Non solùm capita anguium, id est nodi, sed etiam ventus, ideſt maximæ latitudines vires habent, hi quidẽ circa corpora, illa vero circa animam.

165 Clarorum virorum genituræ, quorum significatores in genituris patrum infelices fuerunt, in divitiis, ac honoribus vitam laboriosam usque ad senectutem nunciant, inde per successiva incrementa, ad magnos status illi per-

pervenient. Vnde ex his patet, nullas magis esse dissimiles vitas, quàm eorum, qui eodem momento nascuntur.

166 Genituræ validę regna mutant. Debiles autem ab illis immutantur, & fortunam illorum sequuntur. Validas autem dico, etiam quæ malis potentibus subjiciuntur.

167 Significatores loci mortis, cum fixis splendidis existentes, mortem prę cognosci facient. Martis, & Solis, quia violentæ, & cum mandato reliquorum errantium, prodigiis.

168 Civitatum excidia prę sagia habent, nam interitus significatores cum insignibus fixis necessario eunt.

169 Cum in domibus ascendentis aut Luna in opposito, aut quadrato fuerint infortunarum, in revolutione, natus detrimenta magna patietur. Si autem cum illis fuerint, peraget mala, & detrimenta inferet. Quod si cum hoc locis inimicis, infortunæ dominentur, patrabit, & patietur.

170 Reges subiicientur secundum corpus, & elementa, his quibus privati. Sed in cæteris, quæ ad fortunam pertinent, oportet adesse regni ipsius testimonia. Et quod est inferius, supra superius vim per se non habet, nisi tantum per consecutionem.

171 Luna cum in conjunctione fuerit media Solis, centum habet parvi circuli, non solum cum centro Solis, sed & parvi circuli Veneris, & Mercurii, unde mirabiles sequuntur effectus. Manifestum est autem, & centrum parvi circuli proprias vires habere.

172 Ante 40. annum paucis significator vitæ concutitur, repugnante lege naturæ, quibus autem unicus existens concutitur, impossibile est, eos ad sesagesimum annum pervenire.

173 Quicunque his præceptis rectè utetur, sciat, futuras res maxima ex parte prædicare posse, & quæ nos fecimus, ac majora longe faciet, si tamen cælum esse divinum instrumentum rectè intellexerit.

FINIS.

APHO-

# APHORISMI VARII

## INCERTI AVCTORIS.

1 QVi naturaliter Astrologiæ benè affectus fuerit, certiora profectò judicia pronunciabit.

2 Diversi eruuntur effectus stellarum secũdùm diversas materiæ dispositiones, quare debet Astrologus optimè examinare diversas subjectorum recipientium naturas, & qualitates.

3 Quoniam semper materia determinat formam, fit, ut nos liberè per [redacted] es nostras determinemus stellas ad inferenda nobis detrimenta.

4 Formæ, quibus agunt corpora cęlestia, dicuntur imagines, quibus subjiciuntur formæ inferiores: sunt autem illæ plurimæ in signis, decanis, & gradibus; in singulis etiam stellis seorsum, & in pluribus simul.

5 Imagines sensibiles octavæ Sphęræ plurimæ sunt, & multæ fiunt quotidie ab ipsis Planetis; quæ omnes considerari debent ab Astrologo; habent enim

enim magnam efficaciam in hæc inferiora.

6 Figura non activa (ut quidam Platonici opinantur) sed forma, quâ substantia agit.

7 Cum is, qui consultat figillationem constellationis moventis, exhibet, quò sufficienter rem illam conjecturare possis.

8 Habent signa partes eterogeneas elementi, & Cælo respondentes, quas terminos quinque Planetarum appellamus.

9 Quoniam imagines, & mutationes inferiores subijciũtur inferioribus, ideo sagaciter per similitudinem, & analogiam oportet indagare actiones, & significationes corporum Cælestiũ.

10 Partes nostri corporis et neæ sunt, ac proinde secundum propria temperamenta diversis Planetis subijciuntur.

11 Triplices sunt retum significationes; naturales, accidentales, & speciales, suntque primò considerandæ speciales, secundo accidentales, tertio naturales.

12 Sol, & Mars sunt ignei; Martis destructivus, Solis verò calor correspondet igni cælesti vivificanti.

13 Mercurius est calidus, & frigidus;

ſiccus, & humidus in primo gradu ſecundum aliquos: ſed habet naturam indifferentem, & convertibilem.

14 Venus eſt frigida in ſecundo gradu, humida in tertio; Luna frigida in tertio, humida in quarto. Iupiter calidus in ſecundo, humidus in primo. Sol calidus in tertio, ſiccus in ſecundo. Mars ſiccus in tertio, calidus in quarto. Saturnus frigidus, & ſiccus in quarto.

15 Efficaciſſimi ſunt Planetæ ſuperiores; inferiores autem ſunt debiles, & de facili à ſuperioribus patiuntur, recipiunt fortunium, vel infortunium.

16 Planetæ ſuperiores quia plurimum reſiſtunt, non facilè recipiunt infortunium, vel fortunium à radiationibus inferiorum.

17 Mitigantur infortunia Saturni, & Martis, ſi eorum loca à Iove benè diſpoſito fauſto aſpectu protegantur.

18 Cùm Planeta fortuna in fortuna fuerit conjunctione, attemperat; aut ipſe fuerit ſine infortunio.

19 Efficaciſſimæ omnium in agendo ſunt ſtellæ fixæ; quia ea, quæ cauſant, ingentia ſunt.

20 Stellæ fixæ immitantur naturam, & actionem errantium; quare illarum actiones ad eas inferunt.

21 Luna habet naturalem mutabili-

ta-

tatem quamdam, quare facilè communicat nobis influxus aliarum stellarum.

22 Tunc maximè communicat Luna mundo inferiori actiones, & influxus aliarum stellarum, à quibus separatur, quando velox cursu est.

23 Tripliciter immutantur Planetę, ratione primatum qualitatum; ratione domorum, & ratione significationum.

24 Pręest Saturnus contemplationi, & memoriæ. Mars audaciæ, & fortitudini, si fortunio non carentes sint benè dispositi.

25 Degenerāt à propria natura Planetæ retrogradi: nam fortunæ fiunt infortunæ, & mali fiunt deteriores.

26 Pejora inferunt detrimenta Planetæ, quando sunt stationarii, quàm retrogradi.

27 Diminuit malitiam mali aspectibus, & auget bonitatem fausti receptio Planetarum sese aspicientium, præcipuè si sit fortis.

28 Planeta existens in angulo efficacius producit effectus, remissè in cadentibus.

29 Ne fidas sextili, aut trino aspectui in signis violentis; neque ex signis, in quibus Planetæ sese aspicientes essentialiter patiuntur.

30 Quæ non exegerint Planetæ in

aſpectibus notabis, an ea agant per Antiſcia: habent enim Antiſcia efficaciam, & intra aſpectus ſunt enumeranda.

31 Rarò aliquis Planeta ſit fortuna in octava, aut duodecima, propter earum malignitatem.

32 Qualitates Saturni, & Martis cõjunctione non attemperantur: ſed permixtæ confunduntur, & nocent plurimùm.

33 Notabiliter infortunantur Planetæ per hæc accidentia; per combuſtionem, & rettogradationem, peregrinationem, detrimentum, & Caſum.

34 Conſiderandæ ſunt variæ Planetarum velocitates, & tarditates in eorum motibus: quia cum ille varientur, diverſificantur etiam aſpectuum accidentia.

35 Rarò applicatur Saturnus alteri Planetæ, quare propter hoc ſignificat magnos Principes, & ſtabiles Monarchas.

36 Accidit partilis aſpectus intra differentia trium graduum; Platicus contingit per ſemidiametrum orbium planetarum.

37 Virtus Planetæ in ea domo eſt, cujus initium Planeta præcedit ſpatio non majore quinque graduum.

38 Fines ſignorum convenientes nõ

videntur constituere domos; sed signa sequentia.

39 Cognosce simplices Planetarum naturas: quoniam ex eis cognosces omnes illorum mixtas significationes.

40 Occulta loca significant domus, quæ horoscopum non vident, sexta, & duodecima.

41 Applicatio significat rem futuram; separatio præteritam; & differentiæ temporis ostendunt.

42 Faustus effectus melior accidit in signo bicorporeo; nocivus fit pejor, quia propter naturam signi duplicatur.

43 Pejor est configuratio Lunæ, & Martis, si Luna sit crescens; quia auget calorem.

44 Planeta combustus minuit suam significationem, quamvis fortuitus fuerit.

45 Luna infortunatur in via cõbusta cum Capite Draconis, & in aspectu Martis sit crescens, & in Saturni diminuta.

46 Planetæ alicujus rei significatoris ostendet fortes effectus signum, & domus figuræ, ubi ille reperitur.

47 Conjunctio significatorum per retrogradationem significat rem etiam inopinato futuram non sine violentia.

48 Prima domus significat caput; secunda

cunda collum ; tertia bracchia , &c. Quare Planetæ in his existētes pro suis dispositionibus efficiunt membra fortuitò.

49 Nè fidas semper sextili aspectui; quia in medietate cæli ascendente , & in signis rectè ascendentibus quadrato similis est , si signa contrarias habent naturas.

50 Planeta in angulo fortitudinem, nō fortunium aquirit; fortunium verò, aut infortunium accidentaliter subsequitur juxta dispositionem Planetæ.

51 Non semper est dominator , seu Almuten Planeta , qui plura habet suffragia essentialia.

52 Elevatur Planeta super alterum tripliciter ; in latitudinem , in Auge , in motu eius in parte dextra maximè per quadratum aspectum.

53 Memorabile aliquid significant plures Planetæ conjuncti in eodem signo.

54 Domus figuræ , cui rei significator dominatur , significat occasionem , per quam effectus producitur.

55 Actio significata à Planeta sub radiis fiet occulta ; quod si Mercurius eum aspiciat , illam revelabit.

56 Planeta stationarius, quasi homo valdè cogitabundus , & dubitans de re

ali-

aliqua.

57 Retrogradus est quasi homo pœnitens, vel malè habens.

58 Mali in sexta, octava, duodecima augent malitiam, nisi sint in suis dignitatibus, domibus, aut exaltationib.

59 Effectus Planetæ orientalis citò solet apparere, occidentalis tardè.

60 Actiones Planetarum in medio Cœli, vel septima, fiunt valdè manifestę.

61 Nisi Saturnus infortunetur aliūdè, infortunatur in duodecima, ubi gaudet.

62 Fortunium augent illa signa, & gradus, ubi essentialiter fortunantur simul Iupiter, & Venus. Et è cōntra augent loca, ubi simul patiuntur Saturnibus, & Mars.

63 Parūm utilitatis speres ex fortunis in suis detrimentis, vel casibus.

64 Constellationes Nativitatis habitualiter membra disponūr; quæ deinceps succedunt exequutivè etiam per dispositionem Geneseos Nati.

65 Domus decima, & ejus dominus significant actiones, quibus occupabitur in servitio Reipublicæ Natus.

66 Terribilia detrimēta causant Saturnus, & Mars infortunati, stationarii, & in angulis.

67 Lascivas inclinationes efficit Ve-

nus

nus Martì commixta, nisi à Iove benè, & cum receptione videatur.

68 Saturnus elevatus supra Venerem efficit Natum impeditum erga mulieres; Venus supra Saturnum efficit libidinosos.

69 Commixto Mercurii, & Martis inclinat ad latrocinium.

70 Caput Draconis significat augmentum; Cauda diminutionem, undè ex accidenti fiunt fortunæ, & infortunæ per naturam Planetæ cui conjunguntur corpore.

71 Debilitatur membrum, quando in eius signo, vel domo reperitur Planeta infortunatus, & dominibus signi, & domus, simul est infortunatus.

72 Directiones significatorum, aut promissoris significant accidentia generalia temporum; profectiones particularia.

73 Dispositio Planetę significatoris alicujus personæ, & omnia eius accidentia ostendunt statum per accidentia personæ significatæ.

74 Planeta in dignitate essentiali alterius commiscet significationes cum illis alterius.

75 De re aliqua non prius judicium proferas, quàm optimè examinaveris omnes significationes rei quæsitæ.

76 Efficaciter inclinat ad res suę naturæ Planeta existens in angulo.

77 Infortunia patietur Natus in iis, quæ subiiciuntur Planetæ infortunati domini; de infortunatis cõtrariũ iudica.

78 Mars cadens, & in signo fęminino, vel cum Venere positus pusillanimem efficit.

79 Habebit odio Natus res, quę subjiciuntur Planetæ, à quo separatur Venus, & Luna per malum aspectum.

80 Planeta dominus alicuius domus ad aliam translatus commiscet significationes suæ domus significationibus eius, ad quam transfertur.

81 Si applicaveris dominos Ascendentis domino alterius domus, vel in quãvis alia domo, Natus solicitabitur & cupiet res Planetæ, vel domus, cui miscetur.

82 Translatio, & collectio virtutis significat consecutionem rei significatę interventu alicuius rei, vel personæ.

83 Si Planeta applicuerit domino Ascendentis; vel dominus alterius domus fuerit in prima, sine labore obtinebitur res ab aliis significata.

84 Personam, vel rem, cuius interventu aliquid consequeris, cognosces ex Planetæ natura translatoris, vel collatoris, & significatione domus, cui

do-

dominabitur.

85 Planeta existens in aliqua domo (licet ei non dominetur) specialiter significat personam, & res illius domus.

86 Diuturna, & robustior erit vita, in cuius Genesi omnia Hylegialia sint fortunata.

87 Infausta dicitur Genesis, in qua infortunæ occupaverint angulos, fortunæ sint cadentes, maximè si infortunetur dominus Ascendentis.

88 Omnia Planeta significator alicujus personæ ostendit pro sua dispositione statum personæ significatæ.

89 Quando domus aliqua nō significaverit rem, quam scire cupis, judica per Planetam, qui naturaliter eam significat.

90 Si Planeta aliquis neque accidētaliter, neque naturaliter significaverit rem, considerabis accidentia Planetæ similia, vel contraria rei quæsitæ.

91 Accidentia imminentia ex dispositione Planetæ in se ipso eognosces; adventitia verò ex dispositione, quam recipit ab aliis.

92 Si Planeta alicujus significatoris applicuerit alio malo aspectu nocumētum significatur.

93 Infortuna in signo aliquo, vel domo cum parte fortunę portendit vitiū,

vel

vel morbum inseparabilem illi mẽbro, quod subijcitur illi signo, aut domui.

94 Prohibitio per malum aspectum impedimenta significat in re obtinenda: si vero sit per bonum promittit auxilium in rei consequutione.

95 Refrænatio significat rei futuræ destructionem per personam significatam à Planeta refrænante.

96 Frustratio significat rei destructionem per personam significatam à Planeta frustrante.

97 Destructionem rei significatæ abscisio luminis, & virtutis.

98 Quando Planetæ significatores alsumpserint chronocationem præstabunt, quæ in genere significarunt sivè bona, siuè mala.

99 Mercurius est generalis significator qualitatum animi, sed particulariter benè inspiciendi sunt Planetę pro singulis animi potentiis, & functionibus.

100 Planeta dominus alicujus domus qualitates secundum suam naturam dat significatas eius domus.

101 Substantiæ rei, quam scire cupis, cognosces ex dispositione Planetæ significatoris in seipso & domo, in qua fuerit.

101 Affirmationem formę, aut prę-

di-

dicatum de subjecto, aut negatur, judicabis ex præsentia Planetarum, aspectibus, collatione, & translatione significatorum.

103 Qualitatem, & accidentia rei significatæ colliges ex fortunio, aut infortunio significatorum.

104 Cùm rebus substantiæ in fortuna dominabitur, fortè ex rebus illicitis, vel illicito modo acquiretur.

105 Maxima felicitas significatur ei, qui stellas plures habuerit in suis domibus, & exaltationibus, maximè in congruis figuræ locis.

106 Si luminaria infortunentur prope stellas nebulosas, cæcitatem, vel grande vitium minantur in oculis.

107 Considerans gradibus partiales, Azemena, & augumētantes fortunam, plurimùm cognosces ex eorum natura.

108 Impeditur ferè in omnibus, qui luminaria habuerit infortunata cum Iove cadente.

109 Pessima est constellatio, si Luna utrique infortunæ copuletur; vel si ab uno separetur, & alteri jungatur.

110 Affectus animi cognosces ex Almuten supra Mercurium, & Lunam.

111 Affectus animi particulares cognosces ex Planetis in angulis; ex applicationibus, & separationibus; ex

Mercurio, & eius positione, & ex domibus.

112 Physiognomiã generaliter ostẽdit Almuten super Lunam, & Horoscopum: sed particulariter singulorum membrorum singuli Planetæ.

113 Stellæ mores, & habitus acquisitos non ostendunt: sed tantùm impetus, & inclinationes naturales.

114 Gemelii, qui in eodem partu nascuntur, non æque naturaliter nati sunt: sed posterior quasi partu violento venit in lucem.

115 Mirifica dona naturalia, quibus homines plures præditos cernimus, proveniunt ab oriente stella fixa, vel certo gradu in eas virtutes sigillato.

116 Gemelli, qui succesive nascuntur in omnibus conformes sunt; præterquam in rebus significatis à diuersitate graduum in figura ascendentium.

117 Si post conjunctionem significatorum, qui significat rem, applicaverit domino octavæ, res ipsa post sui cõplementũ destruetur, aut parũ durabit.

118 Si aspectum significatorum prohibeat significatio contraria rei, quæ debet aspectu fieri, impedietur.

119 Ex cõstellationibus in figura filii, ægritudines Parentum cognosces; nam agũt constellationes filii in Patrẽ.

120 Mul-

120 Multæ actiones ſignorum mutantur pro mutatione imaginum ſtellarum ijs conreſpondentium in figura.

121 Planetę infortunę in angulis pigritiã, & impedimẽtũ cauſant; fortunæ cauſant agilitatem, & promptitudinẽ.

122 Maximum futurum cognitum efficiunt Mercurius, & Sol in Aquario in qualibet cæli ſtatione.

123 Feliciſſima erit Geneſis, in qua tres Planetæ fuerint in ſuis domibus, aut exaltationibus, & in angulis.

124 Miſeriam perpetuã dant Saturnus, & Mars in angulis; Iove, & Venere infortunatis in cadentibus.

125 Solicitabitur variis negotiis, in cuius Geneſi Mercurius variis Planetis applicuerit.

126 Saturnus in angulo efficit Natum ſuorum fratrum natura, aut accidenti mortem.

127 Dominus Genituræ ſi ſit agreſtis; & in ♌, vel oppoſitione reperiatur, ſilveſtres inclinationes cõmunicat.

128 Venus in ſeptima quadrato aſpiciens Saturnum in medio Cæli reddit frigidum in coitu.

129 Si dominator Phyſiognomię ſit dominus quartæ, Patri aſſimilatur Natus, ſi decimæ Matri.

130 Saturnus Cardinalis, & reſpiciat

Mercurium quadrato, vel oppoſito, filios denegat.

131 Vitioſum caput, aut cervicem, vel lumen oculorum tribuit Mercurius Luna, & Saturnus juncti, & à Saturno vel Marte junctis, vel tetragono ſiniſtro Mercurius, & Luna vulnerati.

132 Saturnus retrogradus in conjunctione poſitus in decima minuitur præcipitium.

133 Æqualem potentiam habent Planetæ in triplicitate, & termino, ac ſi extiterint in domo ſua, ſed non producitur ſimilis effectus.

134 Caput Draconis cum datore annorum addit vitę trientem Natu. Minuit Cauda. Titidem innuit Mercurius qualitates, & naturas, quot Planeta aſpexerit.

136 Sol in quinta, & undecima negat liberos.

137 Ad omnes artes erit Natus ineptus, ſi Mercurius ſit retrogradus, vel tardus extra ſuam domum, & exaltationem ſine aſpectibus Planetarum.

138 Si ſtella membrum infortunans ſit orientalis, impedimentum membri efficit; ſi occidentalis, ægritudinem.

130 Alterius oculi vitium patietur Natus, ſi Luna ſit in angulo, & in ipſo iſtanti accedat conjunctio, vel oppoſi-

tio

rio cum Sole.

140 Si Luna sit angularis, Mars, vel Saturnus Soli sint orientales, eisque Luna applicuerit malo aspectu utroq; lumine capietur Natus.

141 Maximè nocet in re Conjugii Venus in horoscopo cum Saturno collocata.

142 Si Venus sit in septima malè afflata à Saturno, & uterque commutet locum suum, eleveturque Mars supra Venerem, vel eam aspexerit ex opposito, filios denegat.

143 Planeta stationarius efficit Natum contemplationi deditum, & consideratum.

144 Si Mercurius, & Luna non conplicentur inter se, neque cum oriente: Mars vero orientalem teneat angulum per diem, vel Saturnus per noctē, Natus fiet insanus.

145 Si ambo luminaria sint in signis masculinis in genituris fœminarum, quę nascuntur fœminæ, erunt Virgines.

146 Si Venus, & Mars, vel alter eorum sit in signo masculino, Natus erit Venereus.

147 Si Luna & Mercurius se nō respexerint, nec cum oriente, & Saturnibus sit per diem in angulo, vel Mars per noctem, Natus erit epilepticus.

148 Si luminaria, vel conditionarium fuerit obsessum in angulo à fortunis, potentiam, felicitatem, & honores promittent.

149 Si dominus Ascendentis in decima elevetur super signum, nobilitatem Natus excedet majorum.

150 Si duo diversa signa constituãt dominiũ, substantia eius erit multiplex.

151 Si dominus exaltationis Ascendentis sit fortunatus in septima, accidet honor in senectute.

152 Si Planeta fortunatus sit in decima, & signo decimæ, efficiet potentiam manifestam; si verò nõ sit in signo decimæ, minus manifestam.

153 Luna sub radiis cum Saturno significat vitam agendam in cælibatu.

154 Numerum conjugum venaberis ex numero applicationum Lunæ ad alios Planetas, quos geminant signa bicorporea.

155 In Genituris virorũ considerãdæ qualitates Lunares: fęminarum Solares, in utrisq; Veneris pro Conjugio.

156 Si Marti Venus juncta fuerit, & recedat in Genitura fęminæ, puella juniori viro desponsabitur: si Venus subsequitur Marti, puellæ juniori Vir erit major natu.

157 Si Mars associetur Iovi, & Veneri,

neri, excitabit ad actus Venereos.

158 Si dominus quintæ sit peregrinus in prima, dabit filios adulterinos.

159 Luna occidentalis à Sole, & cadēs, plurimas peregrinationes portēdit.

160 Pars fortunæ in tertia, nona, vel in domibus Martis, si à Planetis, qui primæ, aut tertiæ dominantur, aspiciatur, itinera plura pollicetur.

161 Dominus Ascendentis peregrinus in domo Martis, & Planeta significator Magisterii positus in nona, significat majorem partem vitæ extra patriam.

162 Parentum nobilitatē cognoscēs à signis, & gradibus, in quibus fuerint Planetæ Parentum significatores, & à Planetis in quarta collocatis.

163 Dominus quartæ fortunatus in prima, vel secunda significat Natum obtenturum bona Parentum.

164 Dominus Genituræ bonus, & in termino malo, significat Natum ex ignobili genere ortū, sed per se nobilē.

165 Dominus Genituræ bonus, & in termino bono, significat nobiles Parentes.

166 Ne obliviscaris distinctionis temporum per Chronocatores; quia quę significarunt in radice, exequentur tempore suæ distributionis.

167 Quę Planetę significant in radice aſpectu commixti, efficaciter complebunt, quando in ſua chronocatione redierint ad eandem configurationem.

168 Profectiones ſignorum ſunt valdè efficaces, quando congrediuntur cũ promiſſoribus in radice, aut revolutione; vel cum ipſorum radiis.

169 Efficaces sũt trãſitus Planetarũ pro loco Hylegalia, & cardines figurę.

170 Periculoſa eſt chronocatio domini octavę cum luminaribus, vel domino Aſcendentis; vel cum Planeta exiſtente in octava: præcipuè ſi in radice Chronocatores hoſtiliter ſe reſpexerint.

171 Cognoſces ex diſpoſitione Planetarum in radice, ubi ſint futuri utiles, vel nocivi Nato.

172 Ægritudines, & debilitates patientur membra, quorum Planetæ, aut ſigna notabiliter infortunantur, eritq; qualitas detrimenti ſecundum qualitatem infortunii.

173 Tempora particularia futurorum cognoſces ex revolutionibus annuis, & menſtruis.

174 Profectiones menſurnæ oſtendunt diem, & horam futuri eventus in revolutione menſurna, ſi loca Planetarum benè examinantur.

175 Pessimus erit annus saluti Nati, in quo plura Hyligialia pervenerint ad loca nociva, & maleficorum.

176 Si locus Lunæ in partu fuerit Ascendens in conceptione, atque ideo Almuten super Lunam, & Ascendens ostēdēt generaliter nati Physiognomiā.

177 Ex particularibus eventibus quotidianis verificabis Horoscopum revolutionis mensurnæ, & Genituræ.

178 Planeta, qui redierit in revolutione ad locum radicis alterius, cōmiscet significationes suas cum illis alterius.

179 Si Planeta in revolutione redierit ad locum radicis, renovat suas significationes.

180 Si dominus alicujus domus nativitatis sit in alia domo revolutionis, commiscet utriusq; domus significata.

181 Si Planeta existens in aliqua domo radicis reperiatur in alia in revolutione, miscebit utriusq; significationes.

182 Si Planeta infortunetur in revolutione annua, apparebunt effectus, quādo ille applicuerit corpore quadrato, vel oppositō Planetæ domino signi, in quo fuerit.

183 Singulis annis sunt singula signa profectionalia in revolutionib. annuis: profectiones verò incipiunt à locis Hy-

legialibus, cardinibus, & Planetis.

184 Considerãda est dispositio Planetæ domini anni tàm in radice, quàm in revolutione.

185 Habẽt maximã efficaciã in revolutionib. Planetę divisor, & particeps.

186 Si Planeta applicuerit in revolutione ad locum radicis, effectus illius apparebit, quando ipse fuerit potentior Domino anni.

187 Si planeta applicuerit ad locum alterius, effectus apparebit quando in illo anno ambo fuerint conjũcti.

188 Specialis significator morbi est ille Planeta infortunatus, in quo malo aspectu separatur significator.

189 Ostendit etiam causam ægritudinis dominus Ascendentis, si alicubi reperiatur infortunatus.

190 Dominus anguli orientalis si sit infortuna, ægrotus erit mali regiminis; si verò sit fortuna, benè se habebit ad oblata.

191 Quinta domus, & eius dominus, ostendunt medicamenta, & eorum malitiam, vel bonitatem.

192 Secunda domus, & eius dominib. ostendunt ministros ægrotationis.

193 Pessima est applicatio significatoris ægroti ad maleficum existentem in angulo.

194 Mor-

194 Morbus chronicus est, cuius duratio transit ultra mensem. Acutus, & acutissimus non habent durationem.

195 Si Planetas plures inveneris morbi significatores, morbus ex pluribus erit complicatus.

196 Significator morbi in signo bicorporeo significat recidivam, aut in aliam transmutandam ægritudinem.

197 Periculosus erit morbus, si significator ægroti radicis, vel decubitibus dominium habuerit in quarta.

198 Illud signum, quod aspexerit morbi significator, & signū, in quo fuerit, ostendent mēbra morbo laborātia.

199 Infortunium Mercurii lædit phantasiam, & potentias interiores, ac proinde significat deliria, & pessimum omnium infortunium à Marte.

200 Malū signū est ęgrotāti, si morbi significator sit in 6: dominus sextę in octava, vel dominus octavæ in sexta.

201 Significator morbi si fuerit in Azemena, aut cum parte Azemenæ difficulter sanabitur morbus.

202 Infortunium Mercurius à Marte in signo terreo præcipitium, aut suspensionem minatur ex Phrenesi.

203 Si Mercurius infortunetur à Marte, vel si respiciant malo aspectu, vel alter eorum eodem radio Horosco-

pum, vel significatorem morbi, vel sit in signo septentrionali, diligenter servandus est ægrotus, ne furore correptibus sibi mortem inferat.

204 Mercurius significator morbi mixtus Saturno; vel Saturnus significator mixtus Mercurio, veneficia, & incantationes ostendunt.

205 Impedimentum Planetæ cadit super membra Planetæ, quemadmodum impedimentum signi, vel domus, cadit super membrum signi, & domus.

206 Nocét Iupiter, & Venus ægroto dominantes sextæ, vel octavæ, vel sint significatores morbi.

207 Pessimum testimoniũ est, si dominus Ascendentis, aut Lunæ fuerint combusti.

208 Si Planeta significator ægroti applicat Planetę fortunę, deinde infortunæ, morbus recidiuus continget ægrotanti.

209 Gravis morbus erit, si eo anno, in quo signa profectionalia locorum Hylegialium fuerint impedita.

210 In decubitu ægroti considerabis motum Planetæ facientis morbum per certos numeros graduum, ut morbi mutationes cognoscas.

211 Morb. chronicus regulatur motu Solis, vel Planetæ morbi causatoris,

Mor-

Morbi acuti motu Lunæ.

212 Accelerantur, vel retardantur puncta critica in morbis acutis pro tardo, vel celeri motu Lunæ.

213 Manifestæ accidunt crises, si Luna pervenerit ad signum, quod in utraque qualitate contrariatur ei, in quo fuerit in principio morbi.

214 Necesse est, ut punctum criticum sit, quando Luna pertingit suum quadratum, vel oppositum: Sed accidit, quando pervenerit ad terminum proximum, qui sit contrariæ qualitatis signo, ubi sit principio morbi.

215 Si Luna perveniens ad angulum criticum invenerit Planetas benevolos & debeat convalescere ægrotus, accidet crisis facta; si debeat mori, crisis erit fallax.

216 In morbo lethali, si perveniens Luna ad angulum criticum invenerit planetas nocivos, crisis erit mala; sed certa.

217 Si in morbo lethali Luna in angulo critico invenerit Planetas nocivos mala contingit crisis; sed infida.

218 Si crisis contingat in signo violento, & in angulo critico Luna aspiciat Martem, Saturnum, vel Mercurium similem eis, accidet crisis cum sævis accidentibus.

219 Si

219 Si in puncto critico Luna inve-nerit Planetas beneficos, & nocivos; crisis accidet non completa.

220 Iupiter, & Mercurius, licet cõ-trarientur hujusmodi morbifico, si sint in puncto critico, & accidat crisis, erit infida, & obscura.

221 In rebus incipiendis nõ erit bo-na Luna in prima, quia ibi infortunatur.

222 Locum habitationis eliges ex Planetis fortunatis in Genesi.

223 In plenilunia humiditate mem-brum signi, in quo reperitur, ne tãgas; ideo est nociva sanguinis missio è bra-chiis Luna existente in Geminis.

224 In exhibendo vomitorio sit Lu-na in signo vomitante, & in prima me-dietate signi.

225 In purgationibns ægrotantium nocet Luna si Iovi feliciter configure-tur; quia Iupiter corroborat naturam, & impedit purgationem.

226 Sit Luna in triangulo eius hu-moris, qui debet purgari; infortunetur, & cadat ab angulo Planeta, qui domi-natur eidem humori mala decernet.

227 Non est bona missio sanguinis, si Luna infortunetur in sexta, octava, vel duodecima domo.

228 In medẽdo morbum acutissimũ electionem Astrologicã ne observato,

quia

quia natura morbi non fert moram sine periculo ægrotantis manifesto.

229 Si Planeta retrogradus ascēdat, quādo medicina purgativa propinatur, evometur.

230 Constellationem pro re incipiēda ne sumas, nisi cùm dispositio Genituræ convenerit; alioquin poterit inferre nocumentum, cùm eligis.

231 In condendis ædificiis cave, ne Luna, aut dominus quartæ applicuerit Planetę retrogrado; quoniam significat citam ruinam.

232 In ædificiis, & iis rebus, quæ durationē indigent, utere signis fixis; in rebus, quæ parum durant, puriora sunt mobilia.

233 Pro medendo membro debent esse liberi ab infortuniis Luna, & dominus Ascendentis; ascendat signum eius membri, & in eo sit Luna.

234 Cùm mederis oculis, sit Luna fortunata, crescens lumine, nec sit in signo terreo.

235 Si aliquid petis à Principe, collocabis Iouem cum Capite Draconis in medio Cæli.

236 In electionibus aptabis Lunam in suis mansionibus per cæteras mansiones octavi orbis: habent enim maximam efficaciam.

237 In

237 In omni electione debent etiam esse liberi Luna, & dominus Ascēdētis.

238 Si debitis constellationibus naturas debitas convenienter disponas, multiplicabis has virtutes.

239 Obediunt inferiora superioribus ejusdem ordinis, ab eisque reguntur, conservantur, & virtute augentur.

240 Quia quælibet constellatio in materia similem influit; ideo conjunctionem debitam eorum, quæ conveniunt constellationi, multiplicabis.

241 Destruuntur res inferiores à superioribus; quando superiores sunt ordinis contrarii, ac præsunt inferioribus.

242 Vbi times Venerem appone Saturnum; aliquādo enim oportet uti infortuniis, quando nociuę sunt fortunę.

243 Cōsiderabus transitum stellarū fixarum super regiones, & urbes; inde enim cognosces statum, gradus mutationem eorum locorū, & Provinciarū.

244 Grandes solent Imperiis causare, & rerum honoribus mutationes trāsitus augium in diversa signa, & diversos terminos.

245 In magnis conjunctionibus utere profectionibus; ut tempora grandiū mutationum Vrbium, & Climatum cognoscas.

246 Luna, & dominus anni ostendūt

po-

populos; Sol & decima Reges; Iupiter & nona ecclesiasticos.

247 Si bella significantur, notabis angulum figuræ, ubi reperitur Mars; nam ab ea parte venient hostes.

245 Vincent populi, vel nationes, cujus Planeta elevabitur super reliquo in magno principio.

249 Maximam aeris frigiditatem efficiunt Sol, & Saturnus, si jungantur; præcipuè in signis Australibus.

250 Cùm Almuten Eclipsis, vel magnæ conjunctionis pervenerit ad signa angularia; & Eclipsis, & magnæ conjunctiones accidét effectus significati.

251 Dominia signorum super provincias, & urbes cõformitatem nullam habent cum rebus metheorologicis.

252 Ne fabrices figuram in puncto apparitionis Cometæ; quia non est verum punctum, cũ Cometa habeat augmentum, & diminutionem.

253 Post magnas conjunctiones, vel Eclipses in signis aereis solent apparere Cometæ; cùm Planetæ superiores redeunt ad aspectus.

254 Ne obliviscaris imaginum stellarum fixarum, in quibus accident Eclipses, vel conjunctiones magnæ: quia secundum has accidunt notabiles effectus.

255 Si

255 Si Planeta significator fructus, & dominus fructus partis ascendunt ad augem, prætiũ fructus valdè carũ erit.

256 Planeta malevolus tenens anni dominium, quamvis fortunatus, fructibus generaliter nocet, prẽterquam propriis; Contrarium efficiunt Iupiter, & Venus.

257 Repentinas, & vehementes mutationes aeris efficiunt apertiones portarum.

258 Timendi tetræmotus, quando Mercurius retrogradus fuerit cum Saturno, vel in quarta, vel signo terreo.

259 Signi medii Cæli, & dominus eius, præsunt Populo solum pro vita; seu duratione dominii Regis.

260 Si in radice temporis Mars, & Planetę superiores sunt angulares in signis, rationalibus, & se aspiciant opposito, vel quadrato, aut applicatione sine receptione, bellum, vel infortunia accident in Mundo.

261 Dominus decimæ respiciens quadrato, vel opposito, vel applicatione dominum quartæ; vel si sit in secunda mundi, vel dominus anni tributa regia populis imponentur.

262 Si Planetæ infortunæ sint in signis terreis, nociuę saluti erũt seminib. & oleribus, si in aqueis Piscibus; si in

aereis

aereis volatilibus.

263 Si Iupiter, & Venus sint in signis igneis lætiora fient seminata in locis montuosis; in signis terreis fœcundiora erunt loca plana.

264 Conjunctio Martis, & Saturni in sexta, vel octava, maximè in signo rationali, significat grandem pestem.

265 Caveant à prælio Principes, quando Sol, vel dominus decimæ (simul Lunæ vel domino undecimæ) sit in signo infortunato à Marte.

267 Victoria non est speranda à militibus regni, in cuius signo Mars sit retrogradus.

268 Considerabis motum stellæ ad plagas mundi inter constellationes, & signa ubi inceperit, vel finierit, pro cognitione effectus illius.

269 Pessima erit elementorum, & populi constitutio, quando Saturnus, & Mars infortunati occupavérint angulos; cadant verò fortunæ.

270 Mercurius cum Planeta infortunato in undecima iniquas leges significat ferendas.

271 Si dominus Ascendentis, vel Marti, vel Lunæ adjunctus elevetur super dominum medii Cæli, & Sol infortunetur, rebellabunt subditi diversis Principibus.

272 Si

272 Si in principio temporis, ubi Mars,& Iupiter se videant per quadratum, aut oppositum,& teneãt angulos, accidẽt cõtẽtiones adversus Principes.

273 Efficaces effectus destructionis Provinciarum; nova regna, bella, & similia debentur causis universalibus; & particulares particularibus.

274 Nocivæ, & valde periculosæ sunt Eclipses luminarium,si accident in gradu Horoscopi, sivè prope gradum.

275 Effectus lunaris Eclipsis regulantur mensibus; Solares annis.

276 Notabimus imagines decanorum, in quibus accident Eclipses; nam secundum illos verificantur effectus.

277 Patiente aliquo mẽbro, vel urbe, præter infortunium alicujus signi, patientibus etiam aderit.

278 Adveniente cõstellatione superiore cessat effectus præcedentis inferioris,quantum ad effectus eorum contrarios.

279 Immutant aerem ortus, & occasus stellarum cum luminaribus, & transitus Lunæ circa illos, vel per earum gradus.

280 Conjunctiones, oppositiones, & quadrata superiorum,efficiunt aeris mutationes venientes, significationes mensium; sed hęc non possunt efficere

aspe-

aſpectus inferiorum.

281 Efficaciam habet in aerem ſtella, cui primò jungetur Luna poſt conjunctionem, oppoſitionem, vel quadratum cum Sole.

282 Conjunctio ſuperiorum efficacior, & utilior inferiorum.

283 Planeta angularis in figura de mutatione aeris maximam habet efficaciam in tempore.

284 Si in figura particulari de mutatione aeris fuerit in loco Almuten, finis, vel principium ſigni ad judicium ne præparato; poteſt enim error contingere.

285 Radiationes efficaces Planetarum impediunt qualitatem ſignificatam in quarta.

286 Aſpectus immutantes aerem ſunt efficaces, quamdiu durant applicationes: in ſeparatione autem nihil efficiunt.

287 Belli mutationes oſtendit in revolutione anni Planeta, à quo ſeparatur Mars.

288 Dominus anni ſi ſit malevolus, & Almuten quartæ, bellum ſignificat in ea quarta, præcipuè ſi Mars fuerit angularis.

289 Si Planeta fortunæ ſit dominus anni, dat abundantiam fructuum.

290 Si fortuna dominus anni sit bene esse, dabit fructus suos, denegabit alienos; si fuerit male esse, omnes denegabit.

291 Per tot milliaria extenditur qualitas aeris significata versus Ortum, & Occasum; quot comprehenderit idem terminus Ascendentis.

292 Miros effectus producit magna conjunctio in signo regio; & magna regna stabilire solet, si Sol aspiciat.

293 Vtere profectionibus, & directionibus in principiis sectarum, ut cognoscas accidentia primarum gentium.

294 Dominium signa quædam habent super Provincias, & Vrbes ad similitudinem nostræ.

295 Maxima detrimenta significantur in revolutione, in qua Saturnus reperiatur extra domum, & exaltationem in angulo Orientali.

296 Saturnus retrogradus in prima domo sub ingressu Solis impedit ventos.

297 In revolutionis prima domo Mars significat terræmotum in illa regione.

298 Mutationes aeris, quæ pluribus continuò diebus eadem ferme hora fiunt ab Ortu, & Occasu Solis, cum stellis fixis proveniunt.

299 Mutationes Planetarum in signis, & latitudinibus, efficiunt sensibiles mutationes in aere.

300 Commixtio Iovis, & Martis in signis humidis dat tonitrua cum repentina pluvia.

301 Commixtio Saturni, & Martis conjunctione, oppositione, vel quadrato efficit temperiem; sed potius vehementem turbam qualitatum, & prauos humores.

302 Luna cum Saturno in signis aqueis efficit frigiditatem, & pluviam, si quarta lunaris sit humida.

303 Iupiter excitat ventos Septentrionales; Saturnus Orientales; Mars Occidentales; Venus Meridianos, & Australes. Mercurius commixtos, & pro ratione aliis applicationis.

FINIS.

# ASTROLOGIA APHORISTICA

*AVCT. NOMINATI*

HIERONYMI MANFREDI,
CVNRADI DASIPODII, ET
BETHEM.

# APHORISMI ASTROLOGICI

## *Incerti Auctoris.*

1 CONstellatio particularis reducit ad actum suo tempore ea, quæ significauit constellatio vniuersalis, & Superior.

2 Potentior causa destruit significata contrariæ causæ minus potentis.

3 Ad maximam auctoritatem, & statum perueniet Natus, in cuius natiuitate Iuppiter, & Mars virtutem suam dederint Saturno.

4 Planetæ omnes, vel plures in angulis reddunt Nati actiones valde Illustres, & cognitas: omnes verò illi cadentes obscuram efficiunt totam vitam Nati, eumque remissum in suis actionibus.

5 Si Planetæ in natiuitate nullis, aspectibus, aut paruis se viderint, varia erit Nati vita, cuius actiones aliæ alijs non copulabuntur.

6 Impedimentum, & vitium in oculis patietur Natus, si alterutrum luminarium cum Stella nebulosa fuerit infortunatum à malefico, præsertim in prauo figuræ loco.

7 Ordo, & significatio domorum applicatur etiam signis incipiendo à Domo cuiuslibet planetæ respectu significationum, & potentiæ illius.

8 Variant Planetæ per singulos gradus significationes suas eodem modo, quo variant per singulas Domos figuræ.

9 Planeta, qui simul fortunio, & Infortunio afficitur, secūdùm vtrumque operatur. Sed, si pluribus Infortunijs opprimatur, infortunatus erit absolutè, producetque absolutè prauos effectus.

10 Coniunctio & oppositio per lineam diametralē distant, & duo quadrati intermedij diametraliter quoque opponuntur; quare quadrati ad Coniunctionem, & oppositionem, & coniunctio, & oppositio ad quadratos perpendiculares sunt; atque ideo illæ quatuor configurationes sunt valdè potentes in suis operationibus.

11 Nu-

11 Numeri pares frigidis elementis assimilantur, ideòque morti, maximè quartus, & octauus, quia ille quadratus est binarij; hic autē est cubicus, qui finem perfecti operis, vel perfecti corporis significat.

12 In alterationibus elementorum fructuum, & partium corporis maximam potentiam habent significatores naturales. In inclinationibus autem animi potissimi sunt significatores speciales; in vtroq; genere possunt significatores accidentales.

13 Stellæ fixæ non coniunctæ planetis multò minores effectus habent, quam planetæ ipsi, sed coniunctę planetis vehementissimos producunt effectus.

14 Influxus, qui elementa inmutant, nos quoq; alterare dicimus: sunt tamen multi effectus, qui animalibus, & alijs mixtis, à Stellis, & Cœlo fiunt, qui tamen elementa non inmutant, vnde Cœlum mediatè, & immediatè in nos operatur.

15 Corpora Cęlestia causæ sunt equiuocę, quare homo liberè se subijcit huic, vel illi cælesti impressioni.

Vndè nisi Astrologus perfectè nouerit subiecti dispositionem, & statum facilè mendax euadet in iudicio.

16 Pro imbecillitate Ingenij humani fit sine culpa, vt perfectus etiam Astrologus, non vera, sed similia veris proferat.

17 Sunt puncta in Cœlo ex certo respectu significatorum inuenta, quæ futuros euentus significant minori tamen efficacia, quàm planetæ.

18 Planeta almuten super Lunam, & Mercurium, nisi sit angularis, minorem potentiam habet super inclinationem, quàm planetę in angulis positi.

19 Iuppiter, & Venus in sexta, vel octaua, vel duodecima extra propriam domum, & exaltationem pro Infortunis debent reputari.

20 Ne fidas Ioui, aut Veneri, si dominium sextæ, au toctauæ, aut duodecimæ habuerint, & extra domum, & exaltationem sint inuenti.

21 Saturnus, vel Mars, si in domibus, vel exaltationibus fuerint, felicitatem prestabunt secundum suam naturam, minorem tamen extensiue

quam

quàm Iuppiter, & Venus.

22 Vitia planetarum in geneſi corrige per optimam educationem, quia inclinationes vincuntur, & conſopiuntur ab habitibus moralibus, cum Stellæ directè non habeant potentiam ſuper animam.

23 Sol tenet & ingenium, qui in domo Saturni ſine prauis aſpectibus tarditatem in intelligendo efficit, ſed profundam præſtat meditationem.

24 Quæ ſpectant ad operationes intellectiuas, à decima ſignificantur; quæ pertinent ad appetitum, ſignificantur ab vndecima, & duodecima; quæ ſpectant ad intellectum, cognoſcuntur ex nona, & octaua Domo.

25 Duo genera mutationum recipit homo, quædam ſunt propriæ, quæ à natiuitate pendent, & aliæ ſunt communes, quæ à principio communi cauſantur, ſcilicet à coniunctionibus magnis eclipſibus. & reuolutionibus annorum mundi.

26 Applicatio Domini Aſcendentis ad plures planetas partim fortunatos, & partim infortunatos variam fortunam, variaque accidentia ſignifi-

cat in toto cursu vitæ.

27 In omni re, quam indicare volueris ex figura natiuitatis oportet, vt facias quæstiones an sit, qualite si, & reliquas, quæ inquirunt causa rei significatæ.

28 Dispositio Lunæ tribus diebus à principio natiuitatis indicat multa accidentia nato euentura per totam vitam.

29 Periculosa erit significatoris vitæ directio ad maleficos circa finem spatij vitæ generaliter significatæ.

30 Considera an gradum abscisorem proximè sequantur radij fausti alterius fortunæ maxime Iouis, quoniam per illos poterit Natus liberari à magno vitæ periculo.

31 Praua chronocrasia, & nociua anni natiuitatis reuolutio circa finem vitæ generaliter significatæ possunt interimere etiam sine vlla directione.

32 Planetarum radij quotidiani ad gradus, ad quos pertingit profectio, vel annua directio quotidianos euentus solent causare.

33 Planeta Infortunatus propter

signum

signum, in quo est, damna significat interna, & infortunium, quod prouenit ab aspectu, significat damnum à causa externa.

34 Coniunctiones, vel oppositione, vel quadrati aspectus trium Superiorum, vel Solis ad superiores delent significationes aspectuum luminarium, quandiu illi durant.

35 Particularis temporis dominator non immutat absolutè aerem; sed respectu qualitatis generalis temporis.

36 Necesse est diuersos Planetas diuersis partibus vitæ hominis præesse, quia videmus pro diuersis ætatibus mutari temperamentum, & inclinationes hominum.

37 Numerus applicationum significationis alicuius rei significat numerum rerum, sed Planeta, ad quem aliqua fit applicatio, in signo bicorporeo numerum duplicat.

38 Dominium signorum super loca assumitur à noua loci fundatione, vel à conuenientia loci, vel signi dispositione.

39 Si aliquis Planeta sub radijs occultum

cultum aliquid significauerit, illud reuelabitur, quùm ille Planeta exierit de subradijs.

40 Si significator actionum, vel dominus ascendentis in principio suæ orientalitatis fuerit, & in angulo, efficaciſſimus, & diligentiſſimus erit Natus in suis actionibus.

41 Applicatio Lunæ ad Planetas inclinationes, & primos motus significat.

42 Si plures Planetæ circa partes vltimas signorum fuerint, paruam durationem rerum significatarum significant.

43 Si plures Planetæ circa partes vltimas signorum fuerint podagram nato minitantur

44 Caput Draconis, vel Cauda in quinta, vel cum domino octauæ, vel in prima, vel octaua mortem ex veneno significare videtur.

45 Sol aut Luna in octaua, vel decima infortunatus, in signo aereo cum capite, vel Cauda, mortem significant ex suspensione.

46 Saturnus in octaua, vel in angulo maximè in quarta in signo aqueo,

gradu-

gradùque puteali naufragium, ſubuerſionemque minatur.

47 Conſtellatio patris in natiuitate filij euentuum Patris cauſa, eſt continuata à natiuitate Patris.

48 Planeta ſignificator actionum fortunatus in alterius exaltatione ſignificat, quòd Natus fiet excellens in rebus eius planetæ, in cuius domo reperitur.

49 Planeta ſignificator actionum in ſua decima, vel in ſuo angulo dominium, & honorem Nato ſignificant acquiſitum ſuo proprio valore, & induſtria.

50 Sol Dominus decimę, vel vn. decimæ collocatus, ſi omnes Planetas habet occidentales à ſe intra nonaginta gradus ad maximos honores, & dignitates Natum exaltabit.

51 Si Saturnus Dominus Orientis, vel in Orientali angulo exiſtens ſuſcipiat virtutes omnium aliorum Planetarum, tale munus Natus habebit, vt reliqui omnes illo indigeant.

52 Euentus magnę coniunctionis ad actum reducuntur, quando alm. uten eius peruenerit ad ſuam domum,

vel exaltationem, vel ab angulo figurę coniunctionis redierint ad aſpectum, vel quando conſtellatio, Eclypſis, vel annuæ reuolutionis ſimilis fuerit ſignificationis.

53 In maximis coniunctionibus,& in Natiuitatibus Vrbium, & Prouinciarum, & gentium vtere directionibus, & profectionibus pro inueniendo tempore euentuum.

54 Si aliquod accidens pluribus eueniat, à Planeta tardi motus illud proueniet.

55 Quilibet Planeta ſignificat vitium; aut virtutem naturalem, prout ipſe fortunatus, aut infortunatus fuerit in natiuitate.

56 Violentam mutationem ſignificat planeta, qui retrogradus ab vno ſigno ad alterum tranſierit.

57 Omnis planeta retrogradus accidentaliter fit humidus.

58 Luminaria, & Dominus aſcendentis peregrini in ſignis contrariæ naturæ debilitatem, & morbos efficiunt.

59 Vnuſquiſque planeta exhaltationem ſuæ naturæ conuenientem è

terra

terra haurit, & in aerem eleuat; vnde nascuntur venti varij, & diuersi Cometæ.

60 Motus, & color Cometæ à planeta fit generante.

61 Cometæ per se sè nihil significant, præter ventos, & aeris siccitatem, sed eclypsis aut magna coniunctio, à qua Cometa generatur, reliqua significat accidentia.

62 Praua constellatio est applicatio, si Planeta applicans fuerit in detrimento, vel casu eius, cui applicat, & hic etiam in detrimento, vel casu sui, vel applicantis.

63 Eclypses subterranei efficaciam etiam habent in nostro Emisphærio, sed aliquantò minorem.

64 Lunæ, & Solis, Eclypsis in Ariete aut Leone, si dominetur infortuna, maxima damna minatur plebi à Principibus, & Nobilibus.

65 Si magna coniunctio fiat in Ariete, vel in Leone, & in ea eleuetur Luna, vel Dominus ascendentis super Solem, vel Dominum decimę rebellabunt populi aduersus proprios Principes.

66 Si ascendens fuerit Scorpio, vel finis signi mobilis, & Luna fuerit in ♍, vel cum planeta retrogrado, rumores, qui dicuntur, sunt falsi.

67 Qui Solem, aut Dominum medij Cœli in medietate ascendente sui eccentrici habuerit, amator honoris, & altitudinis erit; qui verò eos planetas habuerit in medietate descendente, contemptor erit honorum.

68 Qui Lunam, vel Dominum ascendentis fortunatum in auge epycicli sui habuerit, à rege pomouebitur.

69 Rem illam odio habebit Natus, in cuius imagine octauę Spheræ fuerit planeta nociuus.

70 Pessimas inclinationes nato attribuent Saturnus, & Mars, infortunati in angulis figuræ.

71 Significator aliquis vitæ retrogradus in auge, vel prope augem eccentrici Saturni casum à præ alto edifitio minitatur.

72 Significator vitæ Infortunatus in perygeo Saturni significat, quod casu ædifitij obruetur, vel in aquis submergetur.

73 Significator honoris fortunatus

tus in auge ecentrici Iouis ad summas dignitates Iouiales eriget natum.

74 Dominus medij Cœli Orientalis à Sole, & fortunatus acumen ingenij attribuit; Occidentalis verò, & fortunatus acumen, sed tardum Ingenium efficit.

75 Dominus nonæ occidentalis à Sole, & fortunatus tenacem præstat memoriam; orientalis, citò apprehendentem, sed diu non conseruantem.

76 Si Mercurius fuerit in angulo fortunatus, & nullum planetam aspexerit, natus erit amator scientiarum, & ingeniosus, sed nullius scientiæ peritus.

77 Stellæ in corpore producunt quasdam temperies, seu qualitates ex quibus nascuntur passiones, per quas anima indirectè inclinatur ad bonas, vel malas operationes.

78 Voluntas humana, quia libera est, quamuis à sensu moto à stellis alliciatur ad consentiendum apetitui, tamen in contrarium potest operari, quia eius operationes non pendent ab organo corporeo; sed tractus sępius

homo

homo à passionibus sensitiuis solet appetitui obedire: quare actio stellarum in voluntatem, nec directè, nec indirectè potest: sed occasionaliter mouet.

79 Quia intellectus in suis operationibus non reflexis pendet ab organo corporeo, in quod directè Sydera agunt, ideo indirecte in intellectum Sydera agunt, quia non potest non operari secundum bonam, vel malam dispositionem organi, vt patet in phrenetico; vel melancholico.

80 Effectus contingentes compositi, cum nõ efficiant vnum ens per se, non possunt habere vnam causam simplicem; sed plures, quæ coniunctæ effectum producunt.

81 Constellatio, quæ vehementer irritat, inclinatque si eam sequaris, & facilitatem, & potentiam, & virtutem ad rem illam absoluendam tribuit, vnde mirę operationes in naturalibus quotidie videntur.

82 Quæ ordinatè fiunt à natura in mundo inferiori, causam in Cœlo debent habere, quia ordinatio, & ornatus in Cœlo sunt; in elementis autem

res

res sunt sine ordine propter materiæ lubricitatem, & repugnantiam, nisi in quantùm à Cęlo regulantur.

83 Quemadmodum imagines, & colores transferuntur; similiter, & qualitates occultę ab stellis ad corpora inferiora transmittuntur.

84 Vnaquęque stella corpora inferiora sibi subiecta corroborat: quare virtutes, & naturales potentiæ rerum inferiorum augentur, si debitis temporibus suis syderibus ritè adaptentur.

85 Mutationes trigonum ab vno signo ad alterum vehementes, & durabiles mutationes efficiunt in Prouincijs, & Gentibus.

86 Longitudo, latitudo, & declinatio stellæ locum suorum effectuum in orbe terrarum significare possunt.

87 Luna tenet ea, quæ corporis, vicemque totius naturæ; quare idem significat, quod est Ascendens.

88 Significator ægroti applicans planetæ subterraneo maximè in quarta posito, qui alteri super terram extra octauam virtutem non dederit, mortem significat.

89 Ma-

89 Maxima ſuſpitio erit de morte, quando in principio morbi Luna, vel Dominus Aſcendentis combuſtionem ingreditur.

90 Maximum lunæ creſcentis lumine infortunium eſt, ſi prauo aſpectu applicauerit Marti, aut decreſcens Saturno.

91 Nota accidentia, quæ Vrbibus, vel Regionibus proueniunt in figura vniuerſalis principij; illa enim manifeſtum faciunt dominium ſignorum ſuper ea loca.

92 Mutatio aeris, quæ per plures dies eadem feræ hora ſimiliter incipit, ab ortu, vel occaſu planctæ cum ſtella fixa cauſatur.

93 Ex mutationibus aeris, quas ſtellæ fecerint, colliges, quid illę efficiunt in hominis ſanitate, alijſque accidentibus ad horam natiuitatis.

94 Accidentia Nati in primo anno natiuitatis per profectiones, & directiones annuas facile indicabunt maiora accidentia, quæ prouenient in toto vitæ curſu.

95 Notandæ ſunt imagines quadraginta octo ſtellarum fixarum, &

quæ

quæ sunt in singulis faciebus, & gradibus, & quæ à planetis quotidie fiunt inter se se, & cum stellis fixis.

Hæc omnia contingent, volente Deo, cui subsunt sydera, & orbes.

GEN-

# CENTILOQVIVM
# HIERONYMI
# MANFREDI

Clariſsimi Philoſophi, Medici, & Aſtrologi.

## *De Medicis, & Infirmis.*

1 QVamuis Medicina de ſe ſit ſcientia perfectiſſima; Medicus tamen in opere ſuo ſine Aſtrologia non eſt perfectus,.

2 O quantus error eſt periti Medici Aſtrorum cognitione penitus carentis; quia nec Medicinarum exhibitio, nec flebotomia, nec quodcumq; aliud opus eius rectè fieri poteſt. Inſuper neque ægritudinis natura, neq; quem finem illa conſequi debeat, ſine Aſtrorum obſeruatione perfectè poteſt cognoſci. Vnde, & Egyptiorum antiquiſſimi ſcientiæ Medicinali, Aſtrologicam adiunxerunt, vt vtraque

via procedentes in suo opere certiorem finem attingerent.

3 Bonus Medicus erit ille, in cuius Natiuitate Mars, & Venus fuerint corporaliter, vel aliquo beneuolo aspectu coniuncti. Similiter Venus, & Mercurius: Perfectus autem Medicus erit ille, in cuius Natiuitate Mars, & Venus fuerint iuncti in sexta.

4 Magnus erit profecto error Astrologi in interrogationibus de infirmo, cum septima, & eius Dominus fuerint impediti: Differas igitur interrogationem, aut non loquaris super illam timore erroris.

5 Cum interrogationibus de infirmo, aut in principijs ægritudinum fuerint septima, & eius Dominus impediti, remoue medicum ab ęgroto.

6 Cum in Natiuitate alicuius fuerit Luna in coniunctione, aut maleuolo Solis aspectu, & in aliquo angulo mixta Stellis nebulosis, significat morbos inseparabiles in oculis; Et si Luna in eodem signo cum Sole, vel in signo oppositio fuerit, & in aliquo angulo, & infortunæ de maleuolo eis associentur; siquidem vespertinales à

Luna;

Luna; matutinales à Sole, ammittet Natus vtrumque oculum. Et si solum vnum luminare ab infortunis suo modo hoc patiatur, alterum tantum oculum ammittet. Et deterius ex angulis est Ascendens, & septima, & oppositio de aspectibus.

7 Si ambo luminaria fuerint in sexta infortunata, Natus sine aliqua dubitatione cęcabitur. Et si vnum tantum, in vno oculo patietur; Similiter erit, si aliquod luminare fuerit Dominus sextæ, & infortunatum; & vniuersaliter non poterũt oculi eius euadere grande nocumentum, in cuius Natiuitate fuerint luminaria impedita.

8 Quando luminare temporis iunctum fuerint corporaliter cum aliqua infortuna, vel post luminare temporis ascenderit aliqua infortuna, cęcabitur natus. Et si hoc infortunium fuerit in angulo, vel cum eis fuerit Dominus Ascendentis, cæcabitur in pueritia; Et si non fuerint in angulo, nec cum Domino Ascendentis cęcabitur in senectute.

9 Quando signum sextæ Dominus

fuerit

fuerit Libra, & Mars in eo, dolores significat oculorum.

10 Cum fuerit malus orientalis, significat impedimēta, de quibus non speratur curatio. Et cum fuerit occidentalis, ęgritudines significat, de quibus speratur sanatio. Et maius est infortunium Saturnus, cum fuerit in signis masculinis, & Mars in fœmininis.

10 Natus tunc erit surdus, quando fuerit Dominus sextę Mercurius, & infortunatus à Saturno; maximè verò si fuerit in sexta. Similiter erit auditu damnatus ille, in cuius Natiuitate fuerint Iupiter, & Saturnus damnati supra Terram, & in locis malis, retrogradi, vel combusti.

12 Impedimentum Mercurij à Saturno est impedire linguam; deterius autem quando corporaliter coniunguntur; maximè verò in Ascendente, vel septima, & in eodem signo cum Sole, & Mercurius fuerit occidentalis; aut cum fuerit Mercurius super Terram coniunctus corporaliter Saturno, aut maleuolo, & in signo muto, fueritque infortunatus; sc. in loco ma-

lo

so retrogradus, vel combustus, & peregrinus, erit similiter lingua damnatus, & mutus.

13. Damnabitur in olfactu ille, aut morbos patietur in naribus, in cuius Natiuitate Mars, & Venus super terram fuerint impediti.

14 Non ammittet sensum, neque intellectum, in cuius natiuitate Luna iuerit ad Mercurium, aut aspectum eius.

15 Epileptici sunt hi, in quorum Natiuitatibus Luna, & Mercurius non complectuntur ad inuicem, neque vllus eorum, cum Ascendente, & cum hoc fuerit Saturnus in Natiuitatibus diurnis significator qualitatis animæ, & in angulo; & in nocturnis Mars. Et signa facientia epilepsiam, maximè sunt Sagittarius, Gemini. Amentes autem sunt eodē modo preterquā quod Saturnus est in angulo in nocturna, & Mars in diurna; maximè verò si in Cancro, Virgine, vel Piscibus. Demoniaci vero sunt quando, cum hoc Saturnus fuerit Dominus loci Lunæ, & ipsa sub radijs, aut Mars Dominus loci Lunæ; & ipsa in oppositio

Solis

Solis maximè autem in Sagittario, & Piſcibus.

16 Lunatici, vel fatui, aut homines leuis cerebri erunt hi, in quorum Natiuitatibus fuerit Mars in angulo terræ, in maleuolo Solis, aut Mercurij cum Saturno in Aſcendente, in oppoſito Martis; aut Luna cum Marte in Aſcendente in oppoſito Saturni; aut Luna, & Dominus Aſcendentis cum Mercurio infortunato à Marte; aut Luna in Aſcendente in Quadrato Saturni à Medio Cęli, & Oppoſito Mercurij; aut Luna ſeparata à Saturno, & coniuncta Marti, vel ſeparata à Marte, & coniuncta Soli, aut Marti inter Solem, & Lunam in eodem ſigno; aut Luna cadens lumine infortunata à Marte in Sagittario, vel Piſcibus, aut Sol in Oppoſito Aſcendentis in termino infortunæ ab ambabus infortunis impeditus, & non inſpectus à Domino Domus ſuæ; aut Luna & Sol infortunati in ſexta, vel ſeptima in eodē gradu; aut ambæ infortunæ in Aſcendente in Oppoſitio Mercurij, & in omnibus his ſint fortunæ abſentes.

17 Quando Iupiter, & Sol fuerint dam-

damnati sensus, & intellectus damnationem significant.

18 Sol est sicut calor naturalis virtutis cordis custodiens; & Luna est significatrix corporis: Cùm igitur luminaria damnata fuerint, infortunis super ea eleuatis damnum, & debilitatem totius corporis faciunt.

19 Cùm fuerint infortunæ in angulis, & luminaria eis corporaliter applicuerint, aut in eorum opposito, gibbositatem, aut claudicationem, aut alicuius membri destructionem significant; maximè si Luna in altero Nodorum fuerit, aut in signis infirmantibus; quæ sunt Aries, Taurus, Cancer, Scorpius, & Capricornus; & adhuc magis in initio, vel fine.

20 Cancer, Capricornus, Scorpius, & Pisces infirmitates generant, quæ corrodendo incedunt; vt impetigines, lepras, & similia. Leprosi similiter sunt in quorum Natiuitate Luna separatur à Sole, & iungitur Saturno sine aspectu fortunæ. Aut Luna in Ascendente cum Saturno, & Marte in aliquo signo aqueo. Aut Iupiter, vel Venus fuerit dominus sexrę

& ab infortuna damnatus. Similiter cùm Luna fuerit.

21 Arcthetici, Podagrici, & dolore iuncturarum patientes sunt, in quorum Natiuitate Saturnus, vel Mars fuerit in sexta, vel duodecima; infortunans Dominum sextæ, maximè si sexta fuerit signum Capricorni, Aquarij, vel Piscium. Et vniuersaliter quando Saturnus, vel Mars in aliquo prædictorum signorum fuerit, debilitatem, vel alios morbos in partibus inferioribus ab inguinibus significat.

22 Paralitici, aut tremuli sunt, in quorum Natiuitate Luna fuerit in angulis cum Saturno, & Saturnus sub radijs combustus: similiter quando sexta, & Dominus eius infortunatur à Saturno, sine radio fortunæ.

23 Sthomatici sunt in quorum Natiuitate Mars, & Saturnus fuerint in sexta, vel duodecima infortunantes Lunam, vel Dominum Ascendentis, maximè vero si signum sextæ fuerit Cancer; Similiter quando Sol fuerit sub terra infortunatus, & Luna de nocte, maximè in sexta. Epatici vero sunt quorum Iuppiter fuerit Dominus

nus sextæ ab infortunis de maleuolo aspectus. Aut Luna Domina sextæ fuerit infortunata à Marte. Similiter si Dominus Ascendentis, & Luna & ambo infortunentur à Marte; aut cum Mars sub terra fuerit infortunatus; & damnum facit Mercurius infortunatus sub terra.

24 Splenetici sunt qui habent Lunam dominam sextæ infortunatam à Saturno; aut fuerit Dominus Ascendentis infortunatus in septima; aut Saturnus Dominus Ascendentis infortunatus à Marte, aut quomodocunque infortunatus Saturnus sub terra. Pulmonici, Phthisici, & suffocationem aut helitus habentes, aut circa pulmonem dolores; qui Lunam habent in angulo terræ coniunctam Marti, vel Saturno, vel ab eis infortunatam; similiter si Venus fuerit Domina sextæ infortunata in signo igneo. Cordiaci verò, & debilis cordis sunt in eorum Natiuitate Sol fuerit Dominus sextæ, aut Dominus partis infirmitatis, & ipse infortunatus.

25 Venus infortunata à Saturno dolorem testiculorum facit, maximè

si fuerit in Ascendente. Similiter Venus cum Marte in octaua, aut Luna, Venus, & Mars iuncti in maleuolo Saturno. Impotens coitu erit ille, qui habuerit Venerem iunctam Saturno, maximè in decima, vel octaua. Aut Lunam iniunctam Saturno in maleuolo aspectu Veneris; aut Saturnum in sexta, vel in duodecima in signo humido in fortunantē Venerem. Sterilis vero, & impotens in pregnatione, si fuerit femina & habēs Lunam, & Venerem in signo sterili, infortunatas à Marte, & Saturno. Aut sit Saturnus in septima, vel decima infortunans Iouem, & Lunam. Aut Venus fuerit cum Saturno, & Luna in sexta, vel duodecima infortunata. Et si fuerit Masculus Saturnus in Ascendente in oppositione Veneris. Aut Venus in signo sterili infortunata à Saturno. Aut Venus in domo Saturni, maximè infortunata ab eo. Et qui habuerit Venerem iunctam Mercurio, & ambo sub radijs castrabitur.

26 Emorroides patiuntur, qui Saturnum, vel Martem habent in septima, aut dominum Ascendētis in septi-

ma

ma cum Marte, vel radio maleuolo ab eo. Aut fuerit Dominus Ascendentis infortunatus in septima, sine radio fortunę. Aut Saturnus in Ascendente in oppositione Martis in Scorpione sine aspectu fortunæ. Aut Luna Domina sextæ in septima, maximè infortunata.

Dissenteriam verò, & dolorem intestinorum, & ventositatem substinebunt hi in quorum Natiuitate Mars fuerit in Ascendente, & in Scorpione, sine aspectu fortunæ. Aut Mars de die cum Cauda Draconis in quarta, vel septima, aut Saturnus cum Cauda in septima.

27 Maius infortunium Luna à Marte, est cùm fuerit aucta lumine; & à Saturno cum fuerit diminuta. Time ergo super infirmum, cùm in principio ægritudinis fuerit Luna sic infortunata. Maiusq; infortunium Martis ad significatores, potentiorque est in infortunando, cùm fuerit in signis masculinis, Orientalis, & de die, & è contra in Saturno. Et hoc modo erit augmentum prosperitatis Iuppiter in septentrione, & Venus in Meridie.

28 Ascendens Aries, & prima habet caput; secunda, & Taurus collum, & guttur; tertia, & gemini manus, brachia, & humeros; quarta, & Cancer pectus, pulmonem, mammillas, & sthomacum; Quinta, & Leo cor, epar, & splenem; Sexta, & Virgo intestina grossa, vmbilicum, & cætera, quæ in ventre inferiori continentur. Octaua, & Scorpius renes, vesicam, genitalia, anum, fæmora, nates, testiculos, & vuluam. Nona, & Sagittarius supremam coxarum medietatem, extra partem testiculorum. Decima, & Capricornus inferiorem partem coxarum, & genua. Vndecima, & Aquarius crura. Duodecima, & Pisces pedes; & primam partem membri possidet. Secundà verò secundam, tertia tertiam. In membro igitur illo erit ægritudo, in cuius signo, vel Domo fuerit Dominus Ascēdentis, aut significator, vel Luna infortunata. Et si fuerint infortunati supra terram, erit egritudo in parte dextra, & si sub terra, in parte sinistra.

29 Arietis morbi sunt Epilepsia, narium, aurium, oculorum, dentium,

& oris

& oris dolores, & cæteræ eorũ ægritudines, scabies, impetigo, serpiligo, pustulæ, & vestigia macularum in facie; Tauri sunt omnes ægritudines colli, & gutturis, sicut scropholæ, & cętera apostemata ibi nascentia. Geminorũ sunt ægritudines ex sanguine, maximè in manibus, brachijs, humeris. Cancri morbi sunt pruritus scabies, lepra, punctura, faciei depilatio, & paucitasbarbæ, pustulæ, impetigo, & serpigo. Leonis morbi sunt ij, qui in corde fiunt, & in cæteris membris, quæ possidet Leo. Virginis morbi sunt, qui in intestinis gracilibus fiunt. Libræ morbi sunt vrinæ, retentio, fluxus sanguinis inferior, & tenebrositas oculorum. Scorpionis morbi sunt oculorum impedimenta, tinea, cancer, lepræ, scabies punctura faciei, pustulæ, impetigo, serpiligo, & depilatio, & vniuersaliter membrorum omnes, vrinæ, & genitalium, quæ possidet Scorpius. Sagittarij morbi sunt cæcitas, febris, casus ab alto, & morbi ex bestijs aduenientes, membrorum abscissio, & morbi qui fiunt in coxis. Capricorni

morbi sunt scabies, pruritus, lepra, pustulæ, impetigo, serpiligo, mutitas, surditas, febris melancholica, caligo oculorum, & morbi, qui coxis, & genibus adueniunt. Aquarij morbi sunt in tibijs contingentes icteritia nigra, melancholia, & venarum incisio. Piscium verò morbi sunt in pedibus aduenientes, scabies, pruritus, lepra, pustulę, &c. Cum igitur aliquid horum ceciderit in sexta, vel Luna, vel Pars fortunæ, aut Dominus Ascendentis, vel significator in aliquo horum signorum fuerit infortunatus, erit ægritudo de natura illorum. Distingue ergo inter ea ad sciendum ęgritudinis naturam.

30 Cùm Saturnus dederit ægritudinem erit ex frigiditate, cùm verò Mars, vel Sol erit ex caliditate, & siccitate. Discurre igitur in omnibus signis hoc modo, scies à qua infortuna significatores infortunentur ad sciendum membrorum ęgritudines eorumque naturas.

31 Non obliuiscaris etiã locorum, quos habent Planetę in signis secundum Egyptios; Nam in Ariete Saturnus

nus habet pectus; Iuppiter Cor, Mars, Caput, Sol testiculos, & coxas; Venus pedes, Mercurius tibias; Luna genua. In Tauro, Saturnus Cor, Iuppiter ventrem, Mars Collum, Sol genua, Venus caput, Mercurius pedes, Luna tibias. In Gemini Saturnus ventrem, Iuppiter inguina, Mars spatulas, & manus, Sol crura; Venus collum; Mercurius caput, Luna pedes. In Cancro Saturnus inguina; Iuppiter verenda; Mars pectus, Sol pedes, Venus manus, & humeros, Mercurius collum, & Luna caput. In Leone, Saturnus verenda; Iuppiter testiculos, & coxas; Mars cor; Sol capur; Venus pectus; Mercurius collum; Luna, & Mercurius manus, & humeros. In Virgine Saturnus habet testiculos, & coxas; Iuppiter genua; Mars ventrem; Sol collum; Venus cor; Mercurius pectus; Luna manus, & humeros. In Libra Saturnus genua; Iuppiter tibia; Mars inguina; Sol manus & humeros; Venus ventrem; Mercurius cor; Luna pectus. In Scorpione Saturnus tibias; Iuppiter pedes; Mars verenda; Sol pectus; Ve-

nus inguina; Mercurius ventrem, Luna cor. In Sagittario Saturnus pedes, Iuppiter caput; Mars testiculos, & coxas; Sol cor; Venus verenda; Mercurius inguina; Luna ventrem. In Capricorno, Saturnus caput; Iuppiter collum; Mars genua; Sol ventrem; Venus testiculos, & coxas; Mercurius verenda; Luna inguina. In Aquario Saturnus collum; Iuppiter manus, & humeros; Mars tibias; Sol inguina; Venus genua; Mercurius testiculos & coxas, Luna verenda. In Piscibus, Saturnus manus, & humeros; Iuppiter pectus; Mars pedes; Sol verenda; Venus tibias; Mercurius genua; Luna testiculos, & coxas.

32 Saturnus de membris hominis habet interiora auris, splenem, thomacum, & vesicam: De humoribus melancholiam cùm fuerit ascendens ad augem in eccentrico: Et flemma acre, cùm fuerit descendens. De ęgritudinibus habet phthisim, catharrum, paralisim, hidropesim; quartanam, ethicam, podagram, morphæam, lepram, cancrum, solutionem ventris, spleneticam passionem, cæterosque

morbos,

morbos, qui frigiditatis occasione proueniunt. De virtutibus habet virtutem nutritiuam.

33 Iuppiter de membris hominis habet tactum, pulmonem, costas, cartilagines: De humoribus sperma, & sanguinem. De morbis periplemoniam squinantiam, pleurisim, apoplexiam sanguineam, & spasmum: & cephalagiam cardiacam, cæterasque ægritudines, quæ occasione ventositatis, & sanguinis, maximè peccantis in quanto proueniunt. De virtutibus habet digestiuam, & augumētatiuam.

34 Mars de membris hominis habet autem, cum Iouis participatione; fel, renes, venas, testiculos, & dorsum, per quod defluit sperma, & epar. De humoribus choleram. De morbis febrē tertianam, erisipelam, & pustulas, cum rubore, & asperitate, ac fæditate, ignem sacrum, pauorem, & cogitationes horribiles inquietantes, abortum, appetitumque carnium putridarum, & vniuersas ægritudines ex calore, & siccitate prouenientes. De virtutibus habet irascibilem, & attractiuam.

35 Sol de membris habet oculum deſtrum, maximè in viris, cor, cerebrum, & medullas, fæmora, & neruos. De morbis habet læſionem oris, fluxum rheumatis ad oculos, & infirmitates calidas, & ſiccas. De virtutibus habet virtutem vitalem,

36 Venus habet de membris odoratum, ſperma cum Ioue participe, ſpinam dorſi, nares, lumbos, matricem, vmbilicum, & omnia genitalia, carnem, atque pinguedinem. De morbis habet frigiditatem, & humiditatem Epatis, ſtomachi, & cordis apoſtemata humida, fiſtulas, & humorum ſuperfluitatem, & præcipuè morbos frigidos, & humidos circa genitalia. De virtutibns habet appetituam.

37 Mercurius de membris habet linguam, memoriam, & partem cogitationis, fel, & nares. De morbis habet perturbationem mentis cogitationes horribiles, inquietudinem animi, maniam, melancholiá epilepſiam, tuſſim, abundantiam ſputi, & quandoque habet morbos, qui ex ſuperflua ſiccitate proueniunt, & damnum

in

in felle. De virtutibus cogitatiuam habet.

38 Luna habet de membris gustum; deglutitionẽ, stomachum, ventrem, pudenda mulierum, & oculum sinistrum, & secundùm aliquos cerebrum, & pulmonem. De morbis habet paralisim, obliquitatem vultus, membrorum commotionem, & cæteros morbos, qui ex opilatione neruorum proueniunt, vt epilepsiam, appoplesiam, & quidquid fuerit ex frigore, & humiditate. De virtutibus habet naturalem, & expulsiuam.

39 Significator occidẽtalis chronicas, orientalis vero nouas ægritudines demonstrat. Considera ergo separationem Lunę à Planetis, & hoc deseruit in interrogationibus.

40 In cuius Natiuitate fuerit Ascẽdens Taurus, vel Scorpius, ipse erit causa suarum ægritudinum, & frequenter infirmabitur ex inordinato regimine.

41 Quinta Domus cum eius Domino, epatis dispositionem ostendit à qua vrinæ sumuntur significationes.

42 Prima hora diei, vsque ad tres

horas

horas temporales est sanguinis; secundæ aliæ tres horæ sunt choleræ rubeę: tres aliæ sunt choleræ nigræ: & vltimæ tres sunt flegmatis: similiter & in nocte. Eodem quoque modo est in quartis mensis lunaris, & in quartis anni.

43 Cum fuerit Ascendens, & Luna damnati, & eorum Domini salui, erit ęgritudo in corpore, & non in spiritu; Et si fuerint Ascendens, & Luna salui, & eorum Domini damnati, erit ægritudo in spiritu, non in corpore. Et si hi omnes fuerint damnati erit ægritudo, in vtroque. Similiter si in fortuna aspexerit Ascendens, & non Lunam, erit infirmitas in spiritu, & non in corpore; & si è contra, erit infirmitas in corpore, & non in spiritu; & si vtrumq; aspexerit, erit infirmitas in vtroque.

44 Sextæ Dominus in Ascendente, vel in decima collocatus, morbum manifestum denuntiat; In septima vero, vel in quarta occultum; Pariterque in nona, vel vndecina manifestum; in alijs vero locis, occultum.

45 Planeta Retrogradus, longitudinem

dinem ęgritudinis, & corporis consumptionem facit; statio Planetarum vomitum, & æmigraneam. Planeta vero combustus mortem. Casus autem, & detrimentum Planetarum, malum, & periculum in ægritudine adducit. Cum igitur Dominus Ascendentis, vel Almuten, aut Luna alicui applicuerit Planetæ, iudica in eis secundùm statum Planetarum, quibus applicant.

46 Signa mobilia mutationem infirmitatis faciunt, eamque facilè remouibilẽ reddunt. Signa fixa longam, & durabilem, tardèque mutabilem, & remouibilem: Communia verò recediuam, & quod plus est vna. Considera igitur signum sextæ Domus, & signum in quo fuerit Dominus eius, & Dominus, vel Almuten Ascendentis, & Lunæ infortunati, & iudica secundùm quod inuenies.

47 Luna propria est corpori propter consimilitudinem, in operatione; Cum igitur in inuasione ægritudinis fuerit infortunata, periculosum vtique, & timendum; Communes igitur significationes Domini Ascendentis,

tis, cum significationibus Lunæ de bono, & malo.

48 In morborum principijs si fuerit Luna in loco infortunæ natiuitatis, vel quadrato, aut apposito, eius erit egritudo difficilis valde; & multo validior, si Luna etiam in initio ægritudinis ab eadem infortuna fuerit damnata. E contra verò egritudo leuis, si loco infortunæ fuerit fortuna; nisi ægritudinis complexio cum illa fortuna conuenerit, & hoc dic postquam noueris quantitatem ægritudinis.

49 Cùm in initio ægritudinis Luna fuerit in sexta Natiuitatis, aut quarta, septima, octaua, duodecima, & in vtroque tempore ibi fuerit infortuna, aut maleuoli infortunæ alicuis radij, mortem omnino denunciat, nisi fortunæ, vel infortunæ radius in eo loco, in altero duorum temporum extiterit.

50 Cùm Luna in principio egritudinis in loco suo natiuitatis fuerit, & à maleuolo infortunata, aut à Domino triplicitatis, principio anguli terræ natiuitatis, graue vtique periculũ ostendit. Deterius verò si etiam in radice,

dice tale supra Lunam ceciderit infortunium.

51 Cum fuerit Ascendens infirmitatis contrarium, aut inimicum figuræ Natiuitatis 5. 7. 8. 4. 6. aut 12. & non peruenerit annus reuolutionis ad illam figuram pessimum erit.

52 Si Luna in principio ægritudinis ad locum applicauerit solis Natiuitatis, & antequam ad quadraturam solis applicetur, fuerit in signo suæ Natiuitatis. *felicitatem ægritudinis ostendit.*

53 Non nocet fortunarum aspectus malus, sicuti non prodest infortunarum bonus, nisi fuerit cum receptione.

54 Quantus timor erit super infirmum cùm fuerint hora interrogationis, vel inuasionis ægritudinis luminaria sub terra. Vita enim omnium animantium est secundum gradus Solis, & Lunæ.

55 In interrogationibus de infirmis da Ascendens, & Dominũ eius, aut Almuten in figura infirmo; septimam, & eius Dominum, fini quem habebit infirmus, & infirmitas. Ex

sexta & eius Domino scies infirmitatẽ; & ab octaua, & eius Domino, mortem; Et iudica secundùm statum vniuscuiusque horum in significatione eius.

56 Si Luna, & Sol, ac Almuten, vel Dominus Ascendẽtis fuerint salui, Domino octauę non associato sine dubio liberabitur ęger. Similiter si duo ex his tales fuerint; & si è contra morietur.

57 Cum Almuten, vel Dominus Ascendentis fuerit in suo casu infortunatus, & combustus, cum hæc quidem tria testimonia fuerint simul inuenta, aut duo ex his, mortem designant, & deterius est si sit ingrediens sub radijs.

58 Quando significator fuerit debilis, & Dominus octauæ fortis, horrendum valde; similiter quando Dominus octauæ infortunat Dominum Ascendentis; Aut quando Dominus Ascendentis fuerit in octaua, & Dominus octauæ in Ascendente, fortunis non aspicientibus; pars etiam fortunę infortunata, multum portendit.

59 Si Dominus Ascendentis fuerit

in

in octaua receptus à Domino octauæ, nec ipse recipiat eum liberat post desperationem.

60 Timendum est valde super infirmum, cùm Dominus Ascendentis, & Luna applicant Planetæ existenti infra terram; sperandum autem, si applicant Planetæ existenti supra terram.

61 Octauæ Domino Cardinem Medij Cæli peragrante, ac permeante, Domino quidem Ascendentis sub terra quomodocunque timendum.

62 Verendum est valde si in Ascéndente, vel octaua, aut cum earum Domini fuerint maleuolæ stellæ; & si beneuolæ omnino securum.

63 Beneuolis receptis non obest aduſtio, neque Luna. Considera igitur in omnibus receptionem Planetarum, si vis rectum dare iudicium.

64 Si Luna velox, cursu, & crescens lumine de beneuolo Domino Ascendentis applicuerit sub terra existente, maximè cum receptione, salutem accelerat; quanto magis si Dominus Ascendentis applicuerit, qui existat super terram.

65 Si

65 Si Dominus Ascendentis fuerit in sexta, aut Dominus sextæ in Ascendente ægritudinis longitudinem, & laborem denunciat. Hoc idem facit applicatio Domini Ascendentis de maleuolo, cum domino sextæ, aut è contra. Et si de beneuolo citò futuram salutem ostendit. Et infortuniũ Dominus duodecimæ ad Ascendens, & Dominum eius est sicuti infortunium Domini sextæ, licet non tantùm. Dominus enim sextæ macerat, & desiccat, & quasi in defectum propellit.

66 Cùm fortunæ fuerint potentes, & victrices, iudica bonum; cum vero infortunæ, malum.

67 Applicatio domini quartæ corporaliter, vel ex maleuolo ad dominum octauæ, longitudinem ægritudinis, & tandem mortem significat si dominus quartæ fuerit infortuna; si vero fortuna, aut de beneuolo ad inuicem applicent, finis erit bonus.

68 Cùm dominus Ascendentis infortunatur à domino secundæ non nisi ægrum cum magnis expensis liberari, aut mori designat. Et vniuersaliter à cuiuscumque domus domino infortu-

fortunetur infortunium de natura illius domus ergo superueniet.

69 Non debet Medicus de infirmo confidere, donec Luna, vel dominus Ascendentis non transiuerit Planetam combustum, aut Planetam ingredientem casum, vel detrimentum suum; & si ambo significatores fuerint in hoc damnamento, mors omnino expectanda.

70 Cùm fuerit Sol in Ascendente, salutem largitur infirmo; Et si fuerit in sexta remouet ægritudinem. Et si comburerit dominum octauæ vincit infirmitatem, & mortem, & sanabit infirmum. Est enim Sol candela Cæli; spiritus clarificans, & ornans signa, in quibus est, & comburens inimicos vitæ.

71 Non iudices mortem infirmo, si Iuppiter iungit Soli, quamuis dominus Ascendentis applicuerit domino octauæ.

72 Si Luna, vel dominus Ascendentis applicuerit domino octauæ, vel eius maleuolo radio, aut è contra, fueritque dominus octauæ fortuna, longitudinem ægritudinis, & laborem; sed

non

non mortem significat. Si vero infortuna, omnino mortem, nisi Ioui, vel Lunæ fuerit iunctus.

73 Non poterit euadere infirmus, quando luminare temporis, & Almuten Ascendentis fuerint damnati à domino octauæ, vel quartæ.

74 Cùm in exitu Lunę de combustione incæperit ægritudo, augebitur quidem, donec venerit ad oppositionis gradum.

76 Indorum regula talis est; Numeres annos ab hora natiuitatis, vsq; ad principium ægritudinis, & in nato qui stetit in vtero nouem mensibus multiplica, prædictos annos per quinque, & diuide per nouem. Et si steterit in vtero per septem menses, accipe pro quolibet anno vnum diem, & diuide per septem. Aut numera signa, quæ sunt inter Solem, & Lunam in Natiuitate, & per hunc numerum diuide prædictos, & si aliquid remanserit post diuisionem, euadet; & si nihil morietur.

77 In morbis, quidam sunt dies, & horæ, quibus declarantur mutationes eorum ad bonum, vel ad malum

veloci-

velociter; & sunt dies critici, seu pugnæ. Et hoc erit cum Luna ad quadratum, vel oppositionem sui loci peruenerit initi ægritudinis. Vndè fit vt septimus quatuordecimus, & vigesimus, vel vigesimus primus dies critici à Medicis appellentur; Dies autem indicatiui, quibus iudicium sumitur ad criticos dies, de salute, aut morte, mortisue periculo, sunt medietates quadratorum, ideo fit vt quartu; vndecimus, & decimus septimus, dies indicatiui numerentur; & hic accipitur quadratura, vel aspectus per circulum directum, & non per gradus æquales: & hoc erit si procellerit ęgritudo secundùm qualitatē naturalem, & non acciderit error, qui disturbet infirmum. Cum igitur in principio ægritudinis inueneris in prædictis locis fortunam, tam de fixis, quam de erraticis, alterationem prosperam significabis. Si verò infortunam, alterationem aduersam, nisi fuerit ipsa infortuna ægritudini contraria, & fortuna ei similis; Et Luna in his angulis, semper significat morbos acutos, & Sol prolixos.

78 Tempus mortis aut deteriorationis infirmi erit cùm significator, aut Luna peruenerit ad corpus, vel radios malos infortunæ concordantis cum infirmitate. Aut cum peruenerit ad gradum octauæ, vel ad dominum eius. Aut ad dominum sextæ, vel duodecimæ; Aut numera gradus, qui sunt inter significatorem, & infortunantem Planetam, cui applicat, & da dies, menses, & annos. Cum enim fuerit significator inter Ascendens, & decimam, erunt dies, vel horæ; Et cum inter decimam, & septimã erunt septimanæ, vel menses; Cum verò inter septimam, & quartam, erunt anni, secundum quod fuerint signa mobilia, communia, vel fixa. Et Saturnus cuilibet gradui dat mensem, vel annum. Mars verò diem, vel mensem. Et si significator tendit ad combustionem, tempus mortis erit in gradu combustionis. Et qualibet die, qua Luna applicuerit infortunæ concordanti cum ægritudine forticabitur infirmitas, maximè si Luna fuerit in termino infortunæ. E contra verò dic de applicatione significationis, & Lu-

næ ad fortunam, quæ non est similis ægritudini pro melioratione, vel salute.

79 Cum in ægritudinis principio Luna fuerit infortunata tunc morietur, vel deteriorabitur æger. Cum iterum Luna ad illam infortunam, vel eius radium applicuerit, & si fortuna in nullo duorum temporum Lunam aspexerit, proculdubio non euadet. E contra verò de fortuna, & fortunæ radijs dicendum ad salutem, vel melioritatem infirmi.

80 Si inter dominum Ascendentis, & dominum octauę fuerit applicatio de beneuolo, domino quidem octauæ existente infortuna, periculosum, & temendum; sed non mortale nisi aliæ aduersæ concurrant constellationes.

81 Humiditates corporum in prima, & tertia, quarta accedunt; in secunda, & vltima quarta recedunt; quo fit, vt deteriora sint vulnera, & incisiones factæ in prima, & tertia, quarta, quam in secunda, & vltima.

82 Præcaueat Medicus in prima visitatione infirmi ab hora Saturni, & ♂; si enim accesserit in hora Satur-

ni morietur infirmus, aut grandes anxietates, & tarditates patietur Medicus in curando infirmum, nec eum sanare poterit, nisi fortè vsque ad desperationem. Et si in hora Martis accesserit erunt lites, & dedignationes inter eum, & infirmum, & modicum lucrum. Hora vero Iouis, & Veneris multum laudatur. Aliæ vero horæ mediocriter.

83 Signa terrea in ægritudinibus cronicis comendantur, maximè verò Taurus. Pone igitur Lunam in aliquo ex eis, & in angulis, & penitus non applicet Saturno, nec eius radijs. Et cum fuerit à stomacho supra infirmitas, incipe curam Luna in Ariete, Tauro, Gemini, vel Cancro; Et si à stomacho ad tibias sit Luna in Leone, Virgine, & Libra, vel Scorpione; & si in inferiori parte corporis sit Luna in alijs signis, & semper sit Luna fortunata ab infortunijs salua.

84 Melior est extractio sanguinis cum ventosis in secunda medietate Lunæ, & in flebotomia in prima medietate; & non est bona flebotomia Luna in Geminis, sicuti non est bonum

vti

vti ventosis, Luna in Tauro, maxime his signis Ascendentibus; & melius signum in ventosando est signum aereum, vel igneum; vt si Luna in eo, & Ascendens sit illius naturæ.

85 Caue cum flebotomas, ne Luna sit in signo communi, quia aut flebotomator percutiet venam plus vna percussione, aut erit necesse minui alia vice ad modicum tempus. Præterea caue, ne Luna applicet Marti per corpus, vel de maleuolo, ne forte vena vltra modum vulneretur, & sanguinis fluat multitudo. Non est tamen malum, vt ei applicet de beneuolo. Et similiter caue ne quomodolibet applicet Saturno, quia, aut sanguis non exibit, aut congelabitur, aut flebotomator patietur anxietates, & labores in suo opere. Similiter hæc accident, si hora Saturni fuerit flebotomia, & si fiat minutio Luna applicata ad Martem, post minutionē mouebitur cholera, & si Saturni mouebitur melancholia, & si fuerit cursu vacua mouebitur flegma.

86 Bonū est in flebotomijs, quod

Luna sit in Ariete, vel Libra, & salua; optimum autem si sic, tunc ad Iouem, vel Venerem applicuerit, quia non timebit de ea minutione flebotomator. Imo sentiet se leuem, eritque ei proficua, maluſque exibit sanguis, & renouabitur bonus.

87 In flebotomijs, & pharmacis cauendum, ne Dominus octauę misceatur cum Luna, vel cum domino Ascendentis; Similiter ne Luna, & dominus Ascendentis sint in quarta, vel octaua; nec etiam dominus octauæ sit in aliquo angulorum. Non laudatur etiam, quod Luna sit in Ascendente.

88 Meliora signa in accipiędo purgatoria sunt aquatica, & secunda medietas Libræ, sit dominus Ascendentis coniunctus, vel de maleuolo applicatus Planetæ sub terra existenti. Et si pharmacum fuerit in forma electuarij Cancer est melior; & si in forma pillularum Piscis. Et si fuerit potio, Scorpius, & secunda medietas Libręe.

89 Caue in laxatione ventris; ne dominus Ascendentis applicet corporaliter

raliter , vel per aſpectum domino Medij Cæli,& Luna exiſtente in ſigno ruminante ; ſi enim hæc omnia adfuerint, mouebitur medicina ſurſum , & euomet eam .

90 In medicinis purgãtibus per inferius , ſigna ruminantia ſunt valdè mala;ſicut in vomitiuis ſunt valdè bona . Et maximè laudantur in vomitiuis Aries , & Taurus , maximè cùm Luna fuerit lumine diminuta , & deſcendens in latitudine ; & remoue infortunas , & caueas à quadrato aſpectu Solis , maximè in Ariete .

91 Cùm aliquod morbum corporis euacuare volueris,fortifica ſignum illius membri cum fortunis , & remoue ab eo infortunas . Et cum humorem melancholicum euacuas , bonum eſt vt Luna applicet Ioui beneuolo.Et ſi flegmaticum Soli, & ſi cholericum Veneri . Et caue , ne Planeta cui applicat Luna , vel dominus Aſcendentis ſit retrogradus , quia medicina euometur .

92 Si quis purgatorium accipit Luna coniuncta Ioui alleuiabitur , & minuetur opus eius . Confortabitur

enim natura supra medicinam, & eius destruet operationem ; nam in purgatorijs melior est Lunæ applicatio ad Venerem, quàm ad Iouem.

93 In medicina constrictiua, sit Luna in gradibus suæ exaltationis, applicans Ioui, maximè si Luna, & Iuppiter, ac dominus Ascendentis fuerint declinantes ad Arctos; & caue in hoc à Venere, & Marte.

94 Tangens membrum ferro, & Luna in signo illius membri, periculosum est.

95 Non est bonus vomitus Luna in Leone, sicuti non est bona circumcisio, nec partium circa vesicam incisio, Luna in Scorpione.

96 In oculorum curationibus multum commendatur, vt Luna sit aucta lumine, & numero, & libera ab infortunijs, & ab omni radio Martis euasa; Et iterum caue ne Mars sit in Ascendente; est enim Mars magnus Dominator omnium membrorum corporis.

97 In enumatis, siue euomatis administratione, meliora signa sunt Libræ, & Scorpionis; & caue ne dominus

nus Ascendentis aspiciat dominum sextæ, sed applicet Veneri.

98 Cùm Balneum exiccatiuũ administrare volueris contra ęgritudines frigidas, & humidas, sit Luna in signo calido, & sicco, & applicet Soli, aut Marti de beneuolo; Et si balneum madefactiuum, sit Luna in signis aqueis, quod si in Cancro, de beneuolo applicet Ioui, & si in Piscibus, Veneri, & si in Scorpione eorum alterutri.

99 Cùm madefacere, vel infrigidare, humectare, vel deriuare volueris, fac Ascendens signum illius naturæ, & pone Lunam, & dominum Ascendentis in signo eiusdem naturę, & caueas semper ab infortunijs.

100 In omni opere tuo, quod circa corpus humanum exercere incipis, fuge horas Saturni, & Martis, & elige horas Iouis, & Veneris.

# CVNRADI DASIPODII

## Aphorismi Astrologici.

1 EX calido, frigido, humido, sicco, primis inquam qualitatib procedunt secundæ qualitates. vt asperitas, exustio, incisio, & his similia, ex quibus tertiæ, vt vocant, sicuti semen generandi, lac, &c. Rursus & his similitudine substantia fiunt aliæ qualitates, opere quidem sensibus manifestæ: sed ratione operis occultiores, quas catharicas vocant; ab his denique aliq intellectu obscuriores, quæ nominantur proprietates.

2 Ita Astrologi suas habent πείρας: vt exempli gratia, Luna in Cancro, & tertia domo. Saturno in Libra, & sexta domo; immoderatam frigiditatem, humidamque intemperiem in cerebro ratione Lunæ operabitur: pectus angustũ, & debile ob easdem qualitates effecit, & ab his qualitatibus immoderata pituita ob debilem naturalem

calorem à Saturni ſiccitate factam generabitur: quæ in pulmones deſcēdet; ab his tertia procedet diſpoſitio, ſpirandi difficultas, ab hac corporis extenuatio tabes propter exſiccationem, in corde factam propter prohibitam reſpirationē cum frigiditate iunctam: namque tam pulmo, quam pituita frigida ſupponuntur.

3 Sic ergo ex Cancri, & Saturni immoderata frigiditate, & humida qualitate, immoderata Lunę, & Cancri, tertio ex robore Saturni in Libra, quarto ex ſexta domo, quæ morbos ſignificat: denique ratione primarum qualitatum in tabis cognitionem deuenimus. Has progreſſiones diligenter annotare oportet: at huius diſciplinę calumniatores videant, eſſe φυσικὸν τῆς ὑγιγνήσεως τρόπον apud Aſtrologos, & ἁρμοζοντα τῇ φιλοσοφίᾳ τρόπου.

4 Tempore æquinoctiorum, & ſolſtitiorum medicamenta non ſunt exhibenda.

5 Iuxta rationem motus Lunæ critici dies ſunt inſtituendi.

6 Luna in obſeruare debent Agricolæ in ſeꝛā lis, inſerendiſq; arboribus,

atque

atque seminibus serendis.

7 Ex aspectu syderum nautæ motus ventorum, & temporum qualitates deijudicare debent.

8 Tria faciunt ad hyemis temperiē Mars in Cancro, & eone, Saturnus in Aquario, & Iuppiter cum Sole: nam Saturnus cùm plurimum abest frigus augeri non potest, Mars vero est quidem paruus Sol, deniqne Iuppiter cum Sole calorem illius maximè auget, & fouet.

9 Hyems sæua, & æstas temperata fiet contrarijs rationibus: vt si Sol, Mars, Iuppiter absint in Aquario, & Saturnus in Cancro, vel Leone.

10 Quicquid in vniuerso fit, seu ad tēporum mutationes pertineat, seu ad generationem, interitumue Plantarum, aut animalium: id totum ad syderum motus, & naturas atque configurationes referri debet, atque ex his præcognosci.

11 Quantò sydus maius est, ac motus velocior: eò ēt opera syderis sunt manifestiora, vt opera Solis manifestissima sunt post Lunā, inde Veneris postea Mercurij. Nam vt Mercurius

celer est: ita Venus robustior ob magnitudinem, indè Saturnus, post Iuppiter atque hæc in comparatione ad Solẽ, Mars verò habet obscuriora opera, quia seriùs Soli iungitur: deinde etiam minor est, quàm Iuppiter.

12 Stellarum fixarũ opus manifestius est opere trium superiorum: earum inquam, quæ conspicuæ sunt magnitudinis, aut saltem mediocris, cum parua latitudine: minus verò, quàm Mercurij, & Veneris ob tarditatem motus.

13 Quoad opera Luna, fixę stellæ ostendunt opera manifestiora, & maiora, inde Saturnus post Iuppiter, Mars, Venus, Mercurius.

14 Planeta leuiores sæpius redeũtes congressus alterius, qui tardiùs mouetur, seu per coniunctionem, seu per radios eis applicetur: quod polliciti sunt ab initio, sæpius repetendo confirmant, & augent.

15 Aeris qualitates difficulter cognoscuntur, quia cõgressus, & cõfigurationes stellarum non reuertuntur, & configurationes cęlorum, nostris temporibus, non sunt similes neque esse possunt

possunt antiquis, quarum similitudine ars ipsa confecta est.

16 Maior est vis astrorum, quàm vt quisquam eam æstimare possit, nam legum, & imperiorum mutationes, & naturæ miracula (non inquam illa quę diuina fiunt prouidentia) quæ varij ad varia referunt, ab his prodeunt.

17 Notissimi stellarum congressus sunt hi: Lunæ cum fixis, Lunę cũ Sole Lunę cum Saturno atq; alijs Planetis. Solis cum fixis, & cum Planetis. Mercurij cum Sole, & cum fixis, postea cum alijs Planetis. Veneris cum ijsdẽ stellis. Deniq; Saturni, & Iouis reliquorum vix notę sunt, Saturni quidẽ cum Ioue propter tarditatem motus: Martis verò propter parui orbis, quo defertur magnitudinem: hodie tamen acuratiore studio congressus stellarum obseruantur, & annotantur.

18 Astrorum promissa minuuntur, augentur, & peruertuntur multis de causis: quales sunt natura seminis, patria, educatio, consuetudo, & ea quæ hæc consequuntur, atque ab his pendent.

19 Per

19 Per Astrologiam præcognoscere possumus mutationes, quæ fiunt per aeris transmutationem, & in mutato aere ambiente simul, primò corpora nostra primis qualitatibus immutantur: inde corpus, & animus: vnde temperaturæ, sanitas, morbi, breuitas, & longitudo vitæ, & quæ vnicuiq; coram sunt coniuncta, vt corpori res familiaris, atque conuictus, animo, existimatio, & dignitas, ad quæ corporis, & animi incommoda accedunt casus.

20 Res quæ ex syderibus ex generalibus constitutionibus eueniunt non sunt vnæ sed plures, & hæ variæ atque multiplices.

21 Sunt quædam constitutiones generales adeo potentes, vt homines per eiusmodi graues adfectus terræ, aquę, aeris superentur.

22 Si Mars in eone fuerit cũ Sole calor, & siccitas producitur; indè multæ acutæ febres, vno loco magis, quàm alio, plus in viris quàm in mulieribus, & biliosis, atque exercitatis, quàm pituitosis, & in ôtio degêtibus, & in his qui multo vini potêtis potu, & Aromatibus vtûtur quàm qui cô-

trarijs

trarijs; & in pestilentibus locis quàm in salubribus.

23 Maximè illustres effectus sunt Solis, & Lunę, & stellarum fixarum illustrium, quæ proximè ad viam Solis accedunt.

24 Omnis Planeta, & omne sydus talem habet virtutem, qualem habet impressionem.

25 Quæ æqualitet mouentur tepescunt; quæ verò modò velociter, modò tardè, qualitates magis excitant, non autem substantiam mutant.

26 Sol secundùm substantiam calidissimus est, secundùm qualitatem impressam moderatè calidus, atque paululum siccus.

27 Virtusomnium syderum consequitur magnitudinem syderis, seu potiùs luminis, quę consistit in corporis magnitudine, luminis claritate, & densitate.

28 Vniuscuiusq; syderis proprium lumẽ est diuersum ab alijs magnitudine, multitudine, tenuitate, & celeritate: quod vero reflectitur Solis est puriſſimum, atque tenuissimum, & densissimum.

Ve-

29 Velocitas motus in Luna maximè cõsideranda est, & plurimum facit: postea in Mercurio, & Venere: nam motus velocitas in superioribus non tantum facit, quantùm in inferioribus.

30 Planetarum habitus, non solùm ad Solem, sed & ad Lunam considerandus est, Iuppiter cum Sole, & Luna fœcunditatis autor est.

31 Omnia astra proprio, & Solis lumine prædita sunt; Luna quidem plus alieno, cætera proprio, aut æqualiter, sed valde pauco.

32 Nullus superiorum potest esse valde humidus, nec vllus inferiorum valdè siccus.

33 Luna, & Mercurius faciunt instabilissimos homines, quia neuter eorum quiescit vnquam.

34 Lunę motus, quia est perpetuò manifestus ideo lunaticorum instabilitas est omnibus cognita, vndè etiam stultitia nominetur.

35 Mercurij instabilitas dubia, & nõ adeo manifesta; idcirco calliditas appellatur, & speciem prudentę habet, quamuis verè prudentia non sit, sed quædam natura instabilis, & dolosa.

36 Luna

36 Luna luminibus plena maximas adducit felicitates: quoniam calida satis est pro luminis ratione, vacua verò nobis benefacit.

37 Mercurius Oriëtalis à Sole remotus, & Lunę propinquus, aut illius cõfigurationibus, humectat, quantum enim Sol calefacit tantum Cumectat.

38 Iuppiter temperamentum supremum habet, & maximè beneficus est, quia calor humido perfectè dominatur.

39 Venus mediocriter temperata est propter humidi abundantiam, vndè etiam mediocriter est temperata.

40 Luna minus tẽperata ideo minus benefica, propter caloris paruitatem, parum enim dominatur humido.

41 Luminis magnitudo prima est in Sole, postea in Ioue quo ad robur: inde in Luna, quo ad dẽsitatem, ac terræ propinquitatem post in Venere, Marte, Mercurio, Saturno.

42 Luminis temperies in Ioue optima est: postea in Venere, deinde in Luna, in Mercurio mediocris atque mutabilis, praua in Marte, pessima in Saturno.

43 Sol

43 Sol maxima omniũ fortunarum est, neque Planeta alius magis est beneficus, neque magis temperatus.

44 Orientales Planetę, humidiores sunt occidentalibus quantitate luminis, non qualitate.

45 Stellæ fixæ maiores sunt efficaciores, paruæ imbecilles.

46 Stellæ agunt lumine, & vis illarum est qualis in effectu videtur.

47 Stellæ fixæ, quia plurimùm à terra absunt, & proprio motu tardissimè ferũtur: ideo vis illarum ad terram non pertenit, sed misceatur alijs Planetis.

48 Stellæ fixæ proximiores lineæ Ecliticæ beneficio Planetarum qui illis iunguntur, vires suas ad nos transmittunt.

49 Stella fixa similis cũ Planeta similis habet euidentissimos effectus, cum contrario obscurissimos, cum dissimili, & alterius generis incertos, & qui fermè nisi post euentum dignosci possunt.

50 Stellæ fixæ cũ Sole maximos effectus habent circa vitam; honores, cũ Luna circa fortunam post cum Ioue Saturno, Marte, Venere, Mercurio.

Plane-

51 Planetæ in oppositione, & Quadratis Solis si in ipsis pūctis fuerint, ita se habēt: in primo stationis primę puncto: tantò sunt calidiores, quantò humidiores; antea humidiores, quàm calidiores: post ficciores, quàm calidiores: in ipso oppositionis puncto, tantò calidiores, quantò ficciores: tunc verò est, ac si nihil caliditatis aut ficcitatis addidissent: protinus verò fiunt ficci, atque frigidi: sic vt ficcitas augeri incipiat, vsq; ad medium spatij, quod est vsque ad stationem secundam inde ficcitas remittitur, frigiditas verò augetur vsque ad medium inter stationem secundam, & occultationem, ibi vltimo consistit, & fit debilissimus.

52 Cor Cæli est validius omnibus, postea ascendens, sed in vita, & affectibus animi atq; corporis, ascendens est validius quia magis est proprium, postea domus 7. 11. 9. 8. 2. 6.

53 Liberi nascuntur, qui significatores habent in signis imperantibus, serui in obedientibus.

54 Planeta in signis cōtrarijs ab his, in quibus exaltatur, aut dominiū habet, aut trigonum, virtus illius diluitur,

tur, & debilitatur, atque id tam maximè, cum contraria fuerit vis Planetæ naturæ signi.

55 Iuppirer præstat tẽperamentum, quia virtutes, & boni mores, & naturæ robur consistunt circa tẽperantiam; idcirco Iuppiter hæc omnia significabit, & simul diuitias, & honores, talia enim ex moderatis proueniunt actionibus, & nunquam ex extremis.

56 Ex deterioribus cõcursibus, qui in cœlo fiunt, sunt coniunctio Saturni, & Martis in Cancro, maximè tempore Eclipsium.

57 Causę vniuersales effectuum sunt potentiores causis singularibus, & generaliores, minus generalibus.

58 Causa debilis vniuersalis, non potest vincere validam propriam.

59 Causa vniuersalis vincit singularem vbi par est magnitudo effectuum significatorum.

60 Causa vniuersalis, in comparatione ad proprium effectum, potentior est quàm singularis.

61 Ex Eclipsibus magni effectus proueniunt.

62 Iudicia tẽporũ in magnis euentibus

bus ex Eclipsibus sumuntur, partes verò temporis, quæ intercipiuntur inter Eclipses, ex stationibus, & ex ortibus heliacis Planetarum.

63 Quæ minus manent, maiores effectus, & efficaciores producent, quàm quæ diu.

64 Quædá in generalibus causis plus possunt, quædam in proprijs, & singularibus. Coniunctiones enim, quod lumine constent, pluribus diebus manent, oppositiones vnica die transeunt.

65 Coniunctiones magnæ, nisi ab Eclipsibus vim recipiant, non sunt magnifaciendæ: sunt tamen quædam generalia, quæ ex magnis habentur coniunctionibus.

66 Coniunctiones in signis aqueis, quia est trigonus Martis significant multa bella, & inuentiones operũ mechanicorũ propter Martẽ, & morbos malignos, cõtagiosos propter Virginẽ; Cancrũ, & mixtionẽ Martis, cum Venere, & Luna, & hereses graues, & magnas; Mahumeti, & aliorum quorundam dogma, lex, & religio sub eo trigono initium habuit.

Coniun-

67 Coniunctiones in signis igneis,& trigono Arietis si fiant, tũc mundi imperia, & monarchiæ constituuntur propter Solis & Iouis dominium. Qui significant tranquillitatem in mundo, apparent etiam sapientes, & insignes viri: magnę sterilitates propter dominium Planetarum calidorum, parumque humidorum.

68 Coniunctiones in signis terreis, & Tauro si fiant:tunc terræmotus generantur, & inundationes, & plures Cometæ propter Capricornũ in quo dominatur Saturnus,& Mars;& debilitates præfectorum, qui sunt Veneris & Lunę, dissoluunturq; quæ parata sunt sub trigono aqueo.

69 Coniunctiones in signis aereis, si fiãt:& trigono Geminorũ dissoluentur Monarchiæ per trigonũ Arietis factæ, & loco eius traducetur Monarchia in aliam partem, & propter dominium Saturni, & Mercurij erunt multi sapientes,atque artes vigebunt: erunt etiam multi deceptores, & homines improbissimi: vigebunt quoque vitia,& libidines,& propter Mercurium multi apparebunt cometæ.

70 Omnia principia actionum prius sunt in rebus naturalibus, quàm volũtarijs, atque artificiosis, naturalia nomino, homines, plãtas, belu as, pisces, elementa; ipsa etiam artificiosa, vt impetu feruntur naturali veluti grauitate, vel impulsu; & mentes hominum, vt appetitu feruntur naturali, atque vincuntur: vt verò consilio agunt, parum, aut nihil habent principij ab astris.

71 Stellæ verticales magnã habent vim, & sunt illæ quæ tantam habent declinationem ab Æquinoctiali, quãta est eleuatio Poli, illius Regionis.

72 Stellæ quę simul in eadẽ regione ascendunt, aut Mediũ Cæli obtinent, aut descendunt: plurimum eodem tempore possunt, quia vires inter se commiscent.

73 Stellę quę semel in die perueniũt ad communem intersectionem Horizontis, & Meridiani sunt potentissimę: quia singulis diebus cum in illo sunt puncto, erunt cum omnibus planetis, ac fixis in vno circulo positionis, sunt autem illæ quæ tantam habent declinationem, vel septentrionalem

vel

vel meridionalem quantum est complementum eleuationis poli ad 90. gradus.

74 Si quis singularium rerum prędictionibus operam dare vult, non poterit nisi comprehensione generaliorum ad illas venire.

75 Mercurius dominus medię partis habitabilis omnes leges in medio promulgat, & ex illo in extrema perueniunt.

76 Mercurius per se non potest legē dare, sed socius Saturni dat legem Iudæorum, quæ est duriſſima: si socius fuerit Iouis Christianorum legem: si Martis Mahumeticam: si Veneris Idolatriam.

77 Trigonus Arietis, Leonis, Sagittarij est Christianorū; eius dominus Iuppiter, quia Sol est cōmunis. Trigonus Tauri, Virginis, Capricorni, Idololatriæ, eius dominus Venus, Luna verò cōmunis. Trigonus Geminorū, Libræ, Aquarij Iudęorum, eius dominus Saturnus, nā Mercurius est communis. Trigonus Cancri, Scorpij, Piscium Mahumetarum dominus eius Mars.

78 Effectus Eclipsium inchoati, augẽtur, vel minuuntur, aut per nouilunia, aut plenilunia, vel quadratas radiationes luminarium, cum inciderint in locos autores effectus hoc est in locos Eclipsium, aut illi configuratos: idest ex trigono respicientes: nam si concordant augebunt, si non concordant minuunt.

79 Stellæ quę disponunt loca Eclipsiũ, si nouiter emergunt, aut occultantur, aut stationem ingrediuntur, vel nocta emicant, augent, vel minuunt effectus. Augent quidẽ dũ è Solis radijs emergunt, in stationibus sunt: etsi enim debiliores sint: quia tamen firmè manent in vno loco, plus operantur: debilis. n. assiduè assistens plus operatur, quam validus vagans. Minuunt verò effectus, cum occultantur planetæ dispositores, & noctu emicantes, & retrogradi.

80 Quotiescunq; fuerit vnus locus tãtum significator alicuius rei, potentiorem in illo loco pro dispositore accipiemus; si verò duo, aut plures loci fuerint significatores, principalis erit, qui plus habet potestatis in primo lo-

co:inde etiam illi ex ordine adiungentur, qui reliquis locis primi imperabunt.

81 Si ambigua fuerit dominij ratio, præponetur illæ qui in angulo fuerit, vel potentior, vt in domo, exaltatione &c. Et qui maioris sectæ, vel conditionis erit, vt directus retrogrado, orientalis, occidentali.

82 Signa æquinoctialia sanctiunt dominium, super status legum, vt sunt sacra, cærtmoniæ, hæreses, sacerdotia, Pontificatus &c.

83 Signa tropica significant mutationes aeris, legum, morum, &c.

84 Signa fixa res fixas significant, vt ædificia, & his similia.

85 Signa communia, significant homines, reges, magistratus, &c.

86 Regiones quæ æquinoctiali proximæ sunt, magis afficiuntur à Planetis; quæ verò à septentrione, & meridie sunt posite minus afficiuntur à planetis, itaque ab Eclipsibus minus, sed à stellis fixis magis.

87 Benefica si fuerit domina Eclipsis, & cardinis, & dominetur ciuitati aut prouintiæ, in quam significata incidũt,

& à maleficis non impediatur plurimùm illis locis benefaciet : quod si aliqua harum conditionum defecerit, minus iuuabit.

88 Malefica si prefuerit Eclipsi, & cardini, atque locis affectus per Eclipsim, vel vincatur à beneficis parum oberit, & multo minus si vtrumque adsit.

89 Maleficæ si regionibus, ciuitatibus, vel prouincijs, seu locis adfectis non dominẽtur, nec à beneficis impediantur deterius adficient : ac quantò validiores, tantò pessimæ.

90 Planetarum bonorum semper est benefacere, & dominari locis subiectis Eclipsi, & id semper prodest, seu bonum augendum sit, seu malum minuendum.

91 Robur stellæ bona, & mala auget, sicut imbecillitas minuet.

92 Qualitas tempestatũ non solùm ex natura signorum, partiumq; illorum tàm in longitudine, quàm latitudine : verùm etiam ex natura signorum, quæ contra Zodiacum sunt, est inuestiganda.

93 Omnes effectus significatorũ generaliter reducuntur ad tres dispositiones

tiones. Naturam significatoris bonam, vel malam, aut mediam: ad debilitatem, vel robur; ad qualitatem, quod sit felix, vel infælix. Ita vt optimi effectus fiant cum benefica fuerit robustissima, fæliciſſima: peſſimi cùm malefica fuerit robuſtiſſima, infeliciſſima; media ex his cognoſces.

94. In vna quaq; genitura opportet redigere quendam locum in Cælo, vt pro vita, pro diuitijs, pro honoribus, &c. & ad illa loca cæli totum reliquum Cælum comparare, atque iuxta illam comparationem iudicare.

Compilatore And. Arg. authore dicto incerto.

# CENTILOQVIVM BETHEM.

1 HVnc inchoabo librum de consuetudinibus in iudicijs stellarum.

2 Scias quod quando planete sunt retrogradi sunt vt vir infirmus: stupefactus: sollicitus.

3 Cadens vero est quasi mortuus cui non est motus.

4 Combustus vt captiuus, incarceratus, vituperatus absque posse.

5 Stans ad retrogradationem vt sanus à quo recedit sanitas, sed remanet parum de ea.

6 Stans ad directionem vt eger postque conualescit, & videt initium sue sanitatis.

7 Obsessus vt timens inter duos hostes, idest quando est inter duas infortunas.

8 Quando est inter duas fortunas vt homo comedens: bibens: secu-

rus ab omni malo, & timore.

9 Quando infortunę aſpiciunt planetam à quarto, vel etiam ipſe eas: eſt, vt homo cui incipit iam ſua mors, & vindicta, & decoratio.

10 Quando planeta eſt in aſpectu ſui hoſtis: eſt vt vir timens hoſtem ſuum.

11 Quando eſt cum hoſte ſuo: eſt vt vir pugnans cum hoſte ſuo.

12 Quando eſt cum planeta ſibi amico, & ſimili; eſt vir cui exhibetur hoſpitalitas, & complexus.

13 Quando eſt in domo ſocij ſui: eſt vir cum ſocio ſuo.

14 Quando eſt cadens à domo ſua, vel à domo exaltationis ſue: eſt vt vir abſens à domo ſua, aut ciuitate ſua.

15 Quando eſt in domo ſua, aut domo exaltationis ſue: eſt vt vir in domo ſua, & perficitur iudicium, & voluntas ſua, & completur, quod vult fieri.

16 Quando verò eſt in domo ſua, aut domo exaltationis ſue retrogradus, eſt vt eger vir in domo ſua.

17 Quando eſt combuſtus in domo ſua, vel domo exaltationis: eſt vt

vir

vir quem incarcerauit dominus ſuus in domo ſua, aut rex ſuus.

18 Quando eſt cadens: eſt vir vexatus timidus.

19 Planeta fortunatus quando eſt retrogradus eſt quaſi infortunatus, & planeta fortunatus cadens ab angulis, vel aſcendentibus: eſt vt vir ſperans fortunam, & non inuenit.

20 Planeta fortuna quando eſt retrogradus, & eſt cum infortuna conuertitur natura fortunæ ad infortunã, & corroboratur infortuna planetæ.

21 Planeta infortuna quando eſt in domo ſua directus, & eſt cum planeta fortuna conuertitur ab infortuna ad fortunam,

22 Quando planeta eſt in poſtremo ſigni eſt recidens vel recedens.

23 Quando eſt in primo gradu ſigni eſt debilis virtutis in iudicijs, & quæſtionibus.

24 A primo autem gradu ad 15. eſt accedens: ſecundum à 15. ad 25. eſt completus.

25 Si eſt in poſtremo ſigni eſt recedens, & tunc eſt vt vir recedens à domo in qua moratus eſt.

26 Planeta agrestis in ascendente in quo habet auctoritatem est singularis in iudicio, & dispositione.

27 Planeta in domo non sua; est vt vir in domo aliena pulsans iam deprimitur iudicium suum; nec est ei auctoritas.

28 Quando est cum sole sunt vires eius debiles, & suum diminuuntur iudicium.

29 Planeta in postremo signi existens retrogradus transmittit iudicium suum, & debilitatur lumen suum, & aufertur ab eo claritas sua.

30 Quando est in domo sua retrogradus, & in grada septimo à sole est vt vir in domo sua, & super se est custodia scilicet vir potentior eo, & affectat fugere timorem eius, & vituperationem, & superbiam.

31 Planeta in domo inimici sui est vt vir in domo alterius inter quos iam aduenit odium, & ira.

32 Planeta in domo sua directus: liber ab infirmitate, & infortunis significat perfectionem quæstionum, & perscrutationis, & complementum, & consecutionem interroganti.

33 Quan-

33 Quando luna separant à planetis significat supra præteritum.

34 Quando luna continuatur cum planetis significat quid est futurum.

35 Luna separata à Saturno accidunt ligationes, & tristitiæ, & inuentiones mali, & casus.

36 Luna separata à Ioue accidunt gaudium, & lætitia, amicitia, confirmatio dotium addimentum in familia, & filius, & seruus, & hæreditatibus: additio etiam in censu: multiplicatio fortunarum dissolutio infortunij, & casus.

37 Luna separata à Marte accidunt rixæ contrarietates mali reuolutiones, dolores, ligamenta, mortes, effusio sanguinis, falsa testimonia, filij fornicationis, & meretricum remotio zelotypie, vt in lectionibus conceſſio prohibiti: coitus masculini: præpositus mulieri, potatio vini passarum, & vini, & quodlibet inebriabili, vulnera, abscisio natorum, dispositio syrupporum, qui faciunt descendere filios à matrice ad vuluam, & planitiem terræ.

38 Luna separata à Sole accidunt

ægritudines, sollicitudò, timor, mors, incarceratio, inuentio mali, & decoratio, dolores, casus ægritudo, ligatio, captiuitas, æquitatus, exercitus populùs res terribiles.

39 Luna separata à Venere accidunt fornicationes, loci, risus, gestellationes, cantus vestimenta, serica, colorationes, varietates.

40 Luna separata à Mercurio accidunt secundùm quantitatem applicationis Mercurij cum fortuna vel infortuna.

41 Luna applicata cum aliquo planetarum significat de futuro secundum applicationem Lunæ cum planetis.

42 Luna mane fortunata laudabiliter qui quæsierit in illa die de negotio, aut Natiuitate illi gratum erit fortunatum in omni interrogato.

43 Luna mane infortunata, aut corrupta quæsitum in illa die non est gratum in quæstione, & quilibet natus non durat, si durat debilis est in vita sua.

44 Luna iuncta Saturno dies illa mala in omni opere, & quæstione.

45 Luna

45 Luna iuncta Ioui dies illa bona in omni operæ, & quæstione.

46 Luna iuncta Marti dies ingrata in omni opere.

47 Luna iuncta Soli dies illa vituperanda in omni opere: nisi in eis quę vult aliquis abscondi; si quis ægrotauerit morietur illa causa.

48 Luna iuncta Veneri dies illa grata in omni opere; præcipuè cum fuerit quæstio de nuptijs, & reuersione mulieris dissolutè.

49 Luna iuncta cum Mercurio dies illa bona in omni opere; præcipuè pacisci dotes: obuiare scriptoribus, & dispensatoribus: bonum est emere, vendere, computare.

50 Quando Luna opponitur Saturno dies vituperanda in omni opere: non est aptum proponere in ea nec lucrosum.

51 Quando Ioui dies laudabilis in omni opere: præcipuè in requirendo veritatem: pacisci dotes quęrere de pactis, immitari res, senum computare dispensatoribus res, eundo prope, vel longe bonum.

52 Quando opponitur Marti dies illa

illa nihil in omni opere.

53 Quando Soli dies illa nihil in nullo opere bonum.

54 Quando Veneri dies laudabilis in omni opere præcipuè in coitu, & rebus mulierum quærendo amicitias, & societates earum: reuerti mulierem separatam bonum: aptum etiam est iter agere.

55 Quando Mercurio dies media in omni opere.

56 Luna in quarto aspectu à Saturno dies illa laudabilis in omni opere: præcipuè obuiare regibus principibus regni, & nobilibus non est bonum iter in ea: exitus illaudibilis: eger morietur in ea.

57 Luna in quarto Iouis dies laudabilis: maximè in determinando vnitatem, & quærere coniugium, & accessum ad nobiles: & his qui præsunt regno fundare ædificia; gratum est exire die illa de quolibet facto: in illa die læthabitur factor.

58 Luna in quarto Martis illaudabilis in omni opere: maximè ouiare regi, quærere negotium in illa non est bonum nubere: eger morietur: aut

exhibit

exhibit de eo sanguis, aut plaga.

59 Luna in quarto Sole dies vituperanda in omni frenetico: maximè obuiare regi, & nobilibus, & quęreræ quid est apud eos de negotijs, & causis.

60 Luna in quarto Veneris dies laudabilis in omni opere: præcipuè segregare se cum muliere: inducere nouas vestes: exercere res nobilitatis: ludi, conuiuij, coniugi, coytus, emptio bestiarum, seruorum, intrare balnea, ornare exhire ad quærendum quietem.

61 Luna in quarto Mercurij dies bona præponendo vendere, emere miscere regibus: computatio maioris domus, & librorum legere libros, & scientias.

62 Luna in sextili aspectu Saturnij dies bona, & obuiare senibus, & vilicis: inspicere in causis suis, & negocijs, & rebus suis, & incedere in decuratione suarum rerum: concordare omni negotio determinando, & auditui viri, & certè amicitiæ, & misceri magnis viris associari suis consilijs alijs consiliarijs.

63 Luna

63 Luna in sextili Iouis die bona concordare in illa obuiatione a caldęis iudicium iustorum quęrere numereum, & omne opus bonum: nubere; iter agere: miscerį nobilibus, & altis viris firmare res grandes; constringere regnum præsentarı conuiuijs, & nuptijs.

64 Luna in sextili Martis dies bona: melius quid est in ea est obuiare ducibus, & prouisoribus armorum: exercitus distribuere arma peruidere de bellis bonum est ventosare accipere pertiri æquos.

65 Luna in sextili Solis dies bona: præcipuè obuiare senibus villicis prouisoribus ciuitatis: obuiare regibus, principibus regis nobilis quærere negotia: cogere regnum incedere in negotia sua.

66 Luna in sextili Veneris dies bona in omni opere: pręcipuè in miscendo mulieribus, & impuberibus siue castratis maioribus dominabus: quærere amicitiam quamlibet conuiuium præparationem spectantium: induere nouas vestes.

67 Luna in sextili Mercurij dies bona:

bona : locis, & pactis dotum computationi : obuiationi villicorum prouisoribus in omni opere, & mercari.

68 Luna in trino aspectu Saturni dies bona in omni opere, maximè obuiare senibus dominis regni, & regi laudabile : in ea colere terras, & fundare ædificia, & inspicere in rebus antiquis.

69 Luna in trino Iouis dies bona in omni opere, maximè quærendo veritatem, & determinando omne opus bonum, & amorem Dei : est bonum obuiare regibus alcaldibus, & nobilibus.

70 Luna in trino Martis dies bona in rixis, venatione, obuiare regibus, bonum emere bestias disponere de bellis : mittere nuntios : præsentationes in bello : electio aciei, & manipularum.

71 Luna in trino Solis dies bona in omni opere melius est in ea obuiare senibus regi opus terrę prouidere cuilibet operi : bonum obuiare principibus nobilibus : ligare vexilla : cogere regnum omne factum bonum.

72 Luna in trino Veneris dies bona in

na in omni operę melius in ea eſt quę-ſtiones de ligatione connubij, & induere nouas veſtes eſt apta: præparare iræ ad tendas, & cauſas: amorum ſponſalia emere beſtias ancillas obuiare: ſenioribus inſpicere in conuiuijs, & nuptijs operari imagines, & cauſas amorum.

73 Luna in trino Mercurij dies bona ligare obuiare villicis, & ſcribis prouidere de omnibus factis.

74 Saturnus in aſcendente infortunat quæſtionem apud quærentem ſi fuerit retrogradus apud quæſtionē, & radat, & aggrauat deſolat, & frangit.

75 Saturnus in decimo terrę quę-rentem: ſollicitat negotia fiunt cum fortuna, & accidit in quæſtione corruptio.

76 Saturnus in ſeptima corrumpit quæſtionem, & facit contingere apud quæſtionem corruptionem negotij, & mutat negocium ab infortuna ab infortunam.

77 Saturnus in quarta facit contingere in quęſtione fortunam in principio rei, & trahit infortunatum ad corruptionem.

78 Iuppi-

78 Iuppiter dissoluitur quod Saturnus ligat.

79 Similiter Venus quod ligat Mars.

80 Quando Luna separatur à fortuna soluit quod ligat Mercurius.

81 Planetæ superiores quando opponuntur Soli: impediunt, & corrumpunt negocia, & impediũt quęstiones.

82 Saturnus in quarto à Sole significat processum negocij tamẽ terminat ad infortunã, & corruptionem.

83 Saturnus in quarto Iouis, aut oppositio suo aufert malum, & dissoluit oppressionem, siue impressionem suam.

84 Saturnus in quarto, & opposito & coniunctione Martis prohibet lætitiam, & prȩcipitat negocium, & corrumpit, & impedit quæstionem.

85 Saturnus in decima Veneris, aut coniunctione, aut oppositione complet omnem quæstionem in illicito, & in obedientia, & si fuerit secundum diuersitatem obedientiæ dico dicimus reuertetur aufert pudorem, & corrumpet.

86 Saturnus in quarto Mercurij,

aut

aut oppositione, aut coniunctione corrumpit quęstionem, & desolat negocia, & facit superfluere superfluitatem.

87 Iuppiter in quarto Saturni, aut oppositione, aut coniunctione vetat eius corruptionem, & vertit ab infortuna ad fortunam.

88 Iuppiter in quarto Martis, aut coniunctione, aut oppositio prohibet eius generationem, & corruptionem, & impressionem.

89 Iuppiter in quarto Veneris, aut coniunctione, aut oppositione significat supra complementum quæstionis, & finem gratum cum illo.

90 Iuppiter cū Mercurio in quarto, aut coniunctione, aut appositione significat super perfectionem quęstionum, & determinationem negociorum, & perfectionem suam, & additionem fortunæ, & res bonas.

91 Quando planeta infortuna fuerit in ascendente, & in secunda domo sit fortuna quærens transmutabit ab infortuna ad fortunam.

92 Quando planeta infortuna fuerit in ascendente, & in domo secunda

planeta

planeta infortunata : mutabitur quæstio de fortuna ad infortunam.

93 Quando planeta fortis fuerit in ascendente, & in vno angulorum planeta mutabitur quæstione de fortuna ad infortunium.

94 Quando dominus ascendentis fuerit in via combusta corrumpetur negocium, & rogatum.

95 Quando fuerit infortuna in decimo, aut quarto ab ascendente tremebunt corda, & accidet infortuna, & priuabitur quæstio, & recidet.

96 Quando planeta infortuna fuerit in ascendente, & in secunda domo sit fortuna complebitur quæstio, & minuetur negotium cum lętitia, & lucro famoso.

97 Quando planeta infortuna fuerit in ascendente, & in secunda domo sit infortuna recedet quæstio, & procedet ad infortunam.

98 Quando ascendens minuitur in ascensionibus, & dominus suus est in loco descendente in sexto, aut nono quærens sperabit res quas non consequetur; & quando erit fortuna in tertio ab ascendente, & infortuna in

ascen-

ascendente: querens erit prauæ applicationis ad negocium.

99 Planeta quum euenerit perdens de tempore ascensionis quærens consequetur infortunam in fine negotij sui post determinationem eius, & adeptionem.

100 Quando planeta infortuna erit in angulis receptus dabit, & applicabit quærentis negocium: tamen accipiet ab eo, quod dedit sibi: scientia receptionis est quando fuerit planeta in domo sui, aut domo exaltationis suæ saluus ab infortuna.

FINIS.

...sächsische Staats-
...archiv-Bibliothek
1 ... Aug. 2013
BUBI Rep.Nr.: 72879



© SUB GÖTTINGEN/GDZ